Pt I.

Mangalākosha.
Pt. I.

Mangal Koshe I Part

मङ्गल कोष

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दोंका तात्पर्य्य प्रकाशक

प्रथम भाग

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जन मण्डलीमण्डन कालिन्ब्रौनिङ्गसाहब एम०ए०

पूर्व डैरेक्टर वीरेश के समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर प्रदेश सीतापुर ने अति परिश्रम से रचना किया

अब

श्रीयुत विद्या गुण ग्राहक, गुणियन सुख दायक जान० सी० नैस्फील्ड साहब अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश ने गौरनानपदीय पाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के उपकारार्थ अङ्गीकार कर

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यंत्रालयमें सीसाक्षरोंसे मुद्रित कराया ॥

जनवरी सन् १८७७ ईसवी ॥

मङ्गल कोष

अर्थात्

संस्कृत भाषा आदि शब्दोंका तात्पर्य्य प्रकाशक

प्रथम भाग

जिसको

श्रीमद्विद्वज्जन मण्डलीमण्डन कालिन्ब्रौनिङ्गसाहब एम०ए०

पूर्व डैरेक्टर वीरेश के समय में

मुंशी मङ्गलीलाल साहब मुख्य पाठक पैंतेपुर
प्रदेश सीतापुर ने अति परिश्रम से
रचना किया

अब

श्रीयुत विद्या गुण ग्राहक, गुणियन सुख दायक जान० सी०
नैस्फील्ड साहब अवध देशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश ने
पौरजानपदीय पाठशालान्तर्गत विद्यार्थियों के
उपकारार्थ अङ्गीकार कर

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के यंत्रालयमें सीसाक्षरोंसे मुद्रित कराया ॥

जनवरी सन् १८७७ ईसवी ॥

भूमिका॥

दोहा।

बन्दिप्रथमपरमात्मा कारणकरताजोय।
ग्रन्थकारकेअर्थमधि करैअनुग्रहसोय॥ १॥
सिधिदातागुणगणविमल सुमतिबढ़ावनहार।
करताहरतापालका तासुचरणआधार॥ २॥
गुरुज्ञातावाणीविशद सुमतिसम्बुद्धिसदाहि।
करिप्रणामतनमनवचन करोंकोषचितचाहि॥ ३॥
ईसासनविधुमुनिगयन धराफरवरीमास।
संवत्विक्रमद्वीपचष नभमहितपखविलास॥ ४॥
आनंदमङ्गलसहढ़मन पैंतेपुरचटसाल।
कोषरच्योलखिग्रन्थबहु समनशब्दजञ्जाल॥ ५॥

जानना चाहिये कि यह आधीन मतिमन्द मङ्गलीलाल कायस्थ श्रीबास्तव सरहीग्राम ज़िलअ शाहजहांपुरका निवासी १५ मई सन् १८५४ ई० से सरिश्तहतालीममें कि २३ वर्ष के अनुमान हुये नौकर है और अब, मुख्यपाठक अर्थात् अफ़सरमुदर्रिस मदर्सह, पैंतेपुर प्रदेश सीतापुरका है कुछ काल से हिन्दी भाषा के कोषके खोजमें यत्न करता था और बहुधा कोष फ़ारसी भाषा आदि मिलित दृष्ट आये जिनसे कुछ प्रयोजन हिन्दी भाषा कें विद्यार्थियों का नहीं निकल सक्ता कोई ग्रन्थ हिन्दी भाषाका ऐसा

दृष्टि गोचर न हुआ जिसकी सहायता से हिन्दी भाषानुरागी विद्यार्थी रामायण आदि ग्रन्थों में संस्कृत भाषादि शब्दों का अर्थ शिक्षक की कृपा विना विचार करलेते, यद्यपि बहुतेरे ग्रन्थ नाम माला आदि भाषा पद्य में पाये गये तथापि वे सब निरनुप्रास अर्थात् बेरदीफ़ हैं उनमें भी शब्दार्थ शीघ्रता से नहीं मिलता है जब तक समस्त पुस्तक मुखाग्र न हो, इसलिये आधीन ने निम्न लिखित पुस्तकों और बहुत अन्य भाषा ग्रन्थों के शब्द जो देखे और सुत थे इकट्ठा करना प्रारम्भ किया कि जिसमें सामान्य भाषा विद्यार्थियों को लाभहो और जब बहुतसे शब्द सार्थ इकट्ठा हो गये तब श्रीमन्निखिल सुखसमाज विराजमान विमल धामि-कानेक सुखसमाज समान सामन्तोपहारी छतकनकमय गजाश्व शब्दायितद्वारदेश प्रोद्दण्ड प्रचण्डाखण्ड विपक्षवीरप्रोद्भटभट समूह सङ्कुलान निर्द्दयातिशयतीव्रणधार सहायीकृत खड्ग दिग्विजयी विनोदानन्दित महाभूताधिपशिव श्रीयुत कालिन् ब्रौनिङ्ग साहब एम, ए, अवधदेशीय पाठशालाध्यक्ष वीरेश की आज्ञानुकूल वर्ण-माला के अक्षरानुहारि निजशिष्य सीताराम और हरदेव दत्त की सहायता पाकर सानुप्रास करके मङ्गलकोष नाम रख—उक्त साहब वीरेश साहसी की प्रतिष्ठित प्रतिष्ठा में निवेदन किया, तब साहब सुजान गुणवान ने दृष्टिगोचर कर आज्ञा दी कि यह पु-स्तक और अधिक की जावे और सहायता के निमित्त हिन्दीकोष छपा किया और एक ग्रन्थ तसलीसुल्लुग़ात द्वितीय भाग जिसमें भाषा शब्दों को फ़ारसी भाषा लिखी है हस्तामलक हुवा फिर सन् १८७२ ईसवी में यह कोष और अधिक किया गया परन्तु

इसी अवसर में उक्त पाठशालाध्यक्ष वीरेश की नागपुर प्रदेश यात्रा से ग्रन्थकार के मनोरथ हृदय के हृदयमेही रहगये थे कि दैवयोग से हमलोगों के आनन्ददायी स्वकिसी मदुद्दाम गुणगण ग्राम विस्फुरत्कमलमुखभरत विशदी कृतानेक सङ्गीत प्रकारास्मदीय विद्या प्रचाराग्रणीय गुणिजनजेगीयमान यशोदा नन्दकन्द कर्म्म पराक्रम श्रवण रसास्वादानन्दार्थिमनोभिलषित विविध पदार्थ दानसंसक्त मानस श्रीयुत जान्, सी, ेस्फील्ड साहब एम, ए, पूर्वोक्त नागपुर गामी के स्थान पर अवध देशीय पाठशालाओं के डैरेक्टर पबलिक इन्स्ट्रक्शन् वीरेश नियतहोय ब्रह्म लोकसे सुशोभित हुयेऔरग्रन्थको कृपाकटाक्षसे अवलोकनकरतेही आधीन के परिश्रम सफल करने के हेतु सकलकलाध्यक्ष मुन्शी नवलकिशोर वर्म्म के मुद्रालय में सीसाक्षरों से मुद्रित होने के लिये आज्ञा दी अब यह ग्रन्थ अति सावधानता से छपकर दोभाग में श्रीमहाशय की अनुमति से तैयार हुआ इस कारण सम्पूर्ण विद्वानों की उत्तम सेवा में निवेदन है कि जिस शब्द की लिपिवा अर्थ आदि में रंचकविभेद वा अशुद्धता पावें उसको कृपा दृष्टिसे शुद्धकर लेवें मेरी मूर्खता पर ध्यान न देवें क्योंकि इस अज्ञान मूर्तिने पूर्वोक्त साहब वीरेश पराक्रमी की अभिज्ञता देख अपनी मूढ़ता विदित की ॥

यथा सोरठा ॥

साहब पाय प्रवीन सबै जनावत विज्ञता ।
पदवी कर्माधीन सब पावत संसार मह ॥ १ ॥

जाकर गुण गण चक्र लखि भागत भव मूढ़ता ।
यथा देखि शशि वक्र तम नहिं आवत निकटही ॥ २ ॥

दोहा ॥

अति प्रवीण गाहक चतुर नित प्रति करत समोद ।
श्री बुधिवर विज्ञान मय सुयश छयो चहुं कोद ॥ ३ ॥

सवैया छन्द ॥

कीरति सोहत देश विदेश प्रसिद्ध महा गुण ज्ञान बड़ाई ।
साहब कालिन ब्रोनिंगधों रविदेखि गई कुधिरैनि पराई ॥
मूढ़खगामि अबूझनिशाकर मन्द रहे सब ठाम छपाई ।
ज्ञान गुणादि सरोज प्रफुल्लित वद्य सरोवर देत दिखाई ॥ ४ ॥

दोहा ॥

विद्यमान कीरति विमल कवि पण्डित मनुहारि ।
धन्यबाद भाषत सबै आदर दानि विचारि ॥ ५ ॥
सुनि अभिज्ञता स्वामिकी चित उछाह अधिकान ।
रच्यो कोष मंगल सुरुचि निजमत लखि सन्मान ॥ ६ ॥
श्री कालिन् ब्रोनिङ्ग जू गमन गजपुरहि कीन ।
कोश छपन की आश तब मनसों मैं तजि दीन ॥ ७ ॥
ग्रन्थ रचत जो श्रमकियो जान्यऊ भावे काज ।
दैव योग सें तुरतही सजी तासु पुनि साज ॥ ८ ॥
करुणालय ताही समय विद्याचय गुणराशि ।
नैसफील्ड साहब इहां आये सुयश प्रकाशि ॥ ९ ॥

भेडैरक्टर अवध के विद्याकेरि प्रचारि ।
पोत बीच जनु उदधि सों सबकंहलीन उवारि ॥ १० ॥
गुणगाहक धनदायकहि लैके मैं निज कोश ।
जायदिखायऊंनिज प्रभुहितासु शरणकरिपेश ॥ ११ ॥
तासु छपन की शीघ्रही आज्ञासाहब दीन ।
यन्त्रित सो अब यह भयो जोमैं निर्म्मितकीन ॥ १२ ॥
निज स्वामी सों विनययह करत अहोंमन लाइ ।
करहिं प्रकट यहि कोशको देशदेश चलिजाइ ॥ १३ ॥
कीन परिश्रम मैं बहुत करत ताहि निर्माण ।
चहऊं पारितोषिक अधिक यहही आश प्रमाण ॥ १४ ॥
गुणी जांचि हैं श्रम अधिक चतुर जांचिहैं भूल ।
दोष अदोष दुहून को कविके हृदय न शूल ॥ १५ ॥

ग्रन्थनामानि ॥

(१) श्रीरामायण भाषा तुलसी दास कृत ॥
(२) रामचन्द्रिका केशव दासकृत ॥
(३) व्रजविलास व्रजवासी दासकृत ॥
(४) नाममाला नन्ददास कृत ॥
(५) अनेकार्थ नन्ददास कृत ॥
(६) तत्व संज्ञा चन्दन कवि कृत ॥
(७) सप्त शतिका विहारी लालकृत ॥
(८) वैद्य निघंट मदन सिंहकृत ॥
(९) अध्यात्म प्रकाश सुखदेव कृत ॥

(१०) हिन्दी कोष पादरी आदम कृत ॥

(११) अन्य भाषा बहुग्रन्थ ॥

चिह्न ॥

नाम पुल्लिङ्ग =	ना० पु०	नाम स्त्रीलिङ्ग =	ना० स्त्री०
गुण वाचक =	गु०	सकर्मक क्रिया =	स० क्रि०
अकर्मकक्रिया =	अ० क्रि०	अव्यय =	अव्य०
सर्वनाम =	सर्व		

प्रकट होवेकि

बहुत से शब्द अप्रचलित इस ग्रन्थ में लिखे गये उनके उदाहरण अमर कोषादि संस्कृत और भाषा ग्रन्थों में से दिये हैं और जहां २ उचित होवें बड़े २ कवि लोग और उदाहरण दे देवें ॥

अ० अव्य० देवनागरी वर्णमाला का प्रथम अक्षर जिस शब्द के प्रथम में इसका सम्बन्ध होता है उसका अर्थ उलटा होजाता है यथा अकारण अर्थात् कारण रहित और स्वरादि शब्द के पहिले जब आवे तब अन होजाता है यथा अनन्त अर्थात् अ अन्त।

अंकवार० ना० स्त्री० गोदी, कोला।

अंगरखा० ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

अंगिया० ना० स्त्री० चोली, वस्त्र विशेष।

अंगीठी० ना० स्त्री० पात्र, जिसमें आग रखते हैं।

अंगूठी० ना० स्त्री० जो आभूषण अंगुली में पहिनते हैं।

अंगोछा० ना० पु० देह पोंछने का वस्त्र, रूमाल।

अंत० ना० पु० अन्त, समाप्ति, पूरा।

अंतर० अव्य० अन्तर, फ़रक।

अंतर्गति० ना, स्त्री, भीतरीचाल

अंतरिक्ष० } ना० पु० छत्त। ऊपरकी जगह।
अंतरीक्ष० }

अन्तर्यामी० गु० अंतर्जामी, जो दिलमें रहे यह शब्द ईश्वरके लिये है।

अंतर्ध्यान० गु० अन्तर्ध्यान, छिपजाना, गुप्त-होना।

अंत:पट० ना० पु० भीतर का वस्त्र।

अंधाकुंवा० } ना० पु० कुआं, जो कूड़ा आदि से भरगयाहो।
अंधकूप० }

अंधेर० ना० पु० अन्याय, उपद्रव।

अंधकार० गु० अंधेरा।

अंब० ना० पु० आम।

अंबर० ना० पु० आकाश कपड़ा।

अंबारी० ना० स्त्री० हौदा जो हाथी पर रखते हैं।

अंश० ना० पु० भाग, हिस्सा: दर्जा जो ६९½ मील का होता है।

अंशी० गु० भागी अर्थात् हिस्सेदार।

अंशु० ना० पु० किरण।

अंशुमती० ना० स्त्री० शालपर्णी।

अंशुमान्० ना० पु० सूर्य, सूर्यबंशी राजा वि०।

अंशुमाली० ना० पु० सूर्य, चन्द्रमा।

अंस० ना० पु० कन्धा।

अकृत० ना० पु० निर्बंशी, विन व्याहा।

अक्खड़० गु० उजाड़, बेबाक़।

अकच्छ० गु० नङ्गा, मेहरा, वस्त्र रहित।

अकण्टक० गु० बेखटके, बेधड़क।

अकथ० } गु० जो कह
अकथनीय० } के योग्य न हो
अकथ्य० } जो वर्णन रहि
होवे।

अकनि० अ० क्रि० सुनिके, राम
यश यथा (तुरंग नच
वहिं कुंवर बर अक
मृदङ्ग निशान)।

अकम्पन० ना० पु० राक्
बिशेष० कम्पहीन।

अकर्कश० गु० कोमल, नर

अकर्म० ना० पु० अपरा
कुकर्म।

अकर्मक० गु० कर्म रहित ध
ना० क्रिया अर्थात्
कर्त्ता की शक्ति
होवे।

अकर्मण्य० गु० निकम्मा, बेक

अकलङ्क० } गु० निर्दोष
अकलङ्कित० } दग

अकल्याण० गु० कल्याण रहित अमङ्गल।

अकवार० ना० स्त्री० अंकवार।

अकस० ना० स्त्री० बैर, अदावत

अकस्मात्० अव्य० अचानक, निमित्त हीन।

अकाज० ना० पु० काम का बिनाश, खराबी।

अकाम० ना० पु० व्यर्थ, निष्फल, काम हीन।

अकारण० ना० पु० निमित्त हीन, बेमतलब, बे सबब।

अकारय० गु० व्यर्थ, निष्फल।

अकारान्त० गु० जिस शब्द के अन्तमें अकार होवे।

अकाल० ना० पु० दुर्भिक्ष, कुसमय, क़हत।

अकालफल० ना० पु० कुसमय के फल, बे मौसमकी बस्तु, दुर्भिक्ष की वस्तु वा फल।

अकालमृत्यु० ना० पु० कुसमय में मरना, धोखेमें मरना, बे मौत मरना।

अकाश० ना० पु० आकाश, प्रकाश हीन।

अकिञ्चन० गु० कङ्गाल, कुछ पास नहीं, केवल भगवान भरोसे।

अक्रिय० गु० कुछ नहीं करता, करने के योग्य न होवे।

अकुण्ठ० गु० तीक्ष्ण, तेज, विनाश रहित।

अकुताना० अ० क्रि० ऊबना, घबड़ाना।

अकुताहो० गु० ऊबै, घबरावै।

अकुल० गु० कुछ जाति नहीं, नीच घराना। ना० पु० विशेष ईश्वर।

अकुलाना० अ० क्रि० व्याकुल होना, घबड़ाना।

अकुलीन॰ } गु॰ धाकर, कुल
अकुलीना॰ } हीन, नीच।

अकेल॰ } गु॰ दुःखी, एकही।
अकेलो॰ }

अक्रूर॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्र जीकेचचा। गु॰ जिसका अन्तःकरण कोमल हो।

अखण्ड॰ गु॰ समस्त, सम्पूर्ण, खण्ड हीन।

अखर्व॰ गु॰ समस्त, बहुत।

अखल॰ गु॰ अखिल, ना॰ पु॰ देवता, रुद्र।

अखाड़ा॰ } ना॰ पु॰ जहांमल्ल-
अखारा॰ } युद्ध होता है, अंगनाई।

अखिल॰ गु॰ समस्त, सम्पूर्ण, बिल्कुल।

अखेट॰ ना॰ स्त्री॰ मृगया, शिकार।

अखयवट॰ } ना॰ पु॰ अक्षय
अखयवृक्ष॰ } वृक्ष।

अख्याति॰ ना॰ स्त्री॰ अपयश, अयश, बदनामी।

अग॰ ना॰ पु॰ पर्वत, अग
जहां जा न सके।

अगम॰ } गु॰ जहां जाय
अगम्य॰ } सके, जो बूझने
योग्य नहीं।

अगर॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि, प्रसि

अगस्त॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशे

अगस्ति॰ } ना॰ पु॰ मुनि वि
अगस्त्य॰ } जिन्होंने समुद्र
सुखा दिया थ

अगणित॰ गु॰ बहुत, जो गि
न जावे, बेहिसाब।

अगवानी॰ ना॰ स्त्री॰ अ
जाकर लेना, पेशवा

अगहन॰ ना॰ पु॰ न
महीना का नाम।

अगाऊ॰ अव्य॰ पहिले से, आ

अगाध॰ गु॰ अथाह, अत्य
गम्भीर।

अगार॰ ना॰ ॰ घर, आ

अगास० ना० पु० अपराध, दोष, नाममालायां, अघ अगास होलन अहित औगुण जो कलुषीय।

अगुआ० ना०पु० मार्ग दिखाने वाला, सन्देशी, आगे चलने हारा, प्रधान, चौधरी।

अगुण० गु० औगुण, गुणहीन, ना० पु० ईश्वर।

अगुरु० ना०पु० जिसका गुरु न हो, नीच, ह्रस्व।

अगूढ़० गु० सुगम, जो गूढ़ नहीं।

अगूढगन्धा० ना० स्त्री० हींग।

अगोचर० गु० अदृश्य, अलख, अज्ञेय।

अगोटना० } स० क्रि० चौकी
अगोरना० } देना, रखाना।

अगौनी० ना० स्त्री० अगवानी।

अग्नि० ना० पु० आगि, अगुआ।

अग्निका० ना० स्त्री० कलिहारी।

अग्निजिह्वा० ना० पु० देवता।

अग्निमाली० ना० स्त्री० चीता बूटी।

अग्निमन्थ० ना० पु० अरणी।

अग्निमुखी० } ना० पु० भिला-
अग्निवक्त्रक० } वां वृक्ष।

अग्निवल्लभ० ना० पु० राल, रार।

अग्निशिखा० ना० स्त्री० केशर, ज़ाफ़रान्।

अग्निसंस्कार० ना० पु० दाह देना, मृतक को जलाना वा उसके हेत क्रियाविशेष।

अग्निहोत्री० ना० पु० आगि-पूजने हारा, ब्राह्मण जाति विशेष।

अग्र० ना० पु० मुख्य० आगे० प्रथम भाग।

अग्रगण्य० गु० जो पहिले होवे, वा गिना जावे।

अग्रगामी० गु० आगे चलने-हारा, पेशवा।

अग्रज० गु० जो पहिले प्रगट हुआ होवे, बड़ा।

अग्रता० | ना० स्त्री० पु० अगुआ
अग्रत्व० | पन, ना० पु० पेशवाई

अग्रशोची० ना० पु० गु० पहिले शोचने वाला प्रथमही समझने हारा, दूरअन्देश।

अग्रसर० गु० वा० पु० मुखिया, प्रधान, पेशवा, आगे चलने हारा, सर्दार।

अग्रहायण० ना० पु० अगहन।

अघ० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह, अघासुर दैत्य।

अघटित० गु० अयोग्य, जो पूरा न परै।

अघाई० गु० पूरी, भरी।

अघाना० अ० क्रि० अफरना, आसूदः होना, गु० सन्तुष्ट, धनवान।

अघारि० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र जी।

अघासुर० ना० पु० दैत्य विशेष, जिसको श्रीकृष्णचन्द्र ने वध किया था।

अघी० गु० पापी, दोषी।

अघोर० ना० पु० भयानक, अचूक, शिवकृत मन्त्र, धर्म विशेष, श्री महादेव जी।

अघोरपन्थ० ना० पु० धर्मविशेष।

अघोरपन्थी० | ना० पु० जो अघोर पन्थ का सेवन करे।
अघोरी० | मलादि संयुक्त, सर्व भक्षी।

अघ्न० गु० मारने हारा, ना० पु० मारण, हनन।

अङ्क० ना० पु० अक्षर, गोदी कनियां, चिन्ह, संख्या गिन्ती के नव अक्षर, निशानी।

अङ्कदुन० ना० पु० दुःख, पीड़ा नाममाला। (बिधुरक देन अरु अंकदुन गहन हजिन अघनाच)।

अङ्कन।० अ० क्रि० मोल ठहरना, परीक्षित होना।
अङ्काना।० स० क्रि० मोल ठह-राना, खाना।
अङ्कित० गु० चिन्ह किया गया, लिखित, परीक्षित।
अङ्कुर० ना० पु० बीज बोने से जो अंखुआ पहिले नि-कलता है।
अङ्कुश० ना० पु० आंकुड़ी जिस से महावत हाथी को मारता है।
अङ्कोल० ना० पु० औषधि प्रसिद्ध।
अङ्ग० ना० पु० अवयव, शरीर, देह।
अङ्गद० ना० पु० बालिकापुत्र, भूषण, बाजूबन्द।
अङ्गदा० ना० स्त्री० नाम चन्द्रमा की एक कला का, वा शरीर कीदाता।
अङ्गन० ना० पु० आंगन, सहन।
अङ्गना० ना० स्त्री० पत्नी, जोरू, स्त्री, आंगन।
अङ्गवना० अ० क्रि० सहना, गवारा करना।
अङ्गराग० ना० पु० उबटन, केसर चन्दनादि का शरीर विषे मर्दन।
अङ्गारक० ना० पु० मंगल भंगरा, पौदा।
अङ्गाङ्गिभाव० ना० पु० शरीर के अवयवों का सम्बन्ध।
अङ्गिरा० ना० पु० मुनि विशेष, बृहस्पतिजी के पिता।
अङ्गीकार० ना० पु० स्वीकार, क़बूल, मंजूर।
अङ्गुल० ना० पु० आंगुल।
अङ्गुली० ना० स्त्री० हाथ का अवयव।
अङ्गुष्ठ०, अङ्गुष्ठा० } ना० पु० अंगूठा।

अङ्गूठा० ना०पु० अङ्गुष्ठ।

अङ्गूठी० ना० स्त्री० अंगुठी, मुंदरी।

अङ्गेठी० ना०स्त्री० इंगीठी।

अचगरी० ना० स्त्री० अनुचित, अकरकर्म, ब्रजविलासे, यथा--सुनो महरि निज सुत की करनी। करत अचगरी जात न बरनी॥

अचम्भा०
अचम्भव०
अचरज० } ना० पु० आश्चर्य, ताज्जुब।

अचल० गु० जो चल नहीं सक्ता ना०पु० पर्वतादि।

अचला० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।

अचानक० अव्य० अकस्मात्, एकाएक ना० पु० कल-कत्ता के निकट नगर विशेष।

अचानचक० अव्य० अकस्मात्, नागहान।

अचाना० स० क्रि० भोजन कर के मुख धोना।

अचार० ना०पु० आम इत्यादि का जो बनता है, और आचार।

अचिन्त० गु० चिन्ता रहित, निधड़क।

अचूक० गु० जो न चूके, ठीक।

अचेत० गु० संज्ञा रहित, बेहोश, मूर्छित।

अच्छत० ना० पु० अक्षत, घाव रहित।

अच्छा० गु० भला, सुडौल, सुन्दर।

अच्युत० गु० स्थिर, अचल-विशेष, ईश्वर।

अच्युताग्रज० ना०पु० श्रीबल-देव जी।

अछेह० गु० बहुत, बिहारी लाल सप्तशतिकायां, धरे रूप गुण को गरब फिरै अछेह उछाह।

अज० अव्य० आज, अब, ना० पु० ब्रह्मा, बकरा, ईश्वर, शिव, यौवन, और आभरण, गु० जो पैदा न होवै वा उपजा किसी से न हो।

अजगर० ना० पु० बड़ासांप, अज़दहा सांप।

अजगुत० गु० अद्भुत, अजायब।

अजगन्धा० ना० स्त्री० बबरी पौधा।

अजन्म० गु० जिसका जन्म न होवे।

अजय० गु० जय रहित, जो जीता न जावे। ना० स्त्री० बीर भूमि जिले की नदी विशेष।

अजया० ना० स्त्री० अजा।

अजर० गु० जरा रहित अर्थात् जो बूढ़ा न हो। ना० पु० देवता।

अजलोक० ना० पु० अयोध्या जी, ब्रह्मलोक।

अजवीथी० ना० स्त्री० सफ़े... दी जो छोटे २ घ... तारा गणों की आका... में दीख पड़ती है।

अजहूं० अव्य० अब भी, अभी...

अजा० ना० स्त्री० बकरी, माया...

अजात० गु० जन्म रहित, जो... न उपजे।

अजातअरि० | अजातरिपु० } ना० पु० राज... युधिष्ठिर।

अजान० गु० अज्ञान, मूर्ख... नादान।

अजामिल० | अजामील० } ना० पु० नाम... एक मनुष्य पापि... ष्ठका जो नारा... यण कहके मर... और मुक्ति पाई।

अजित० | अजीत० } गु० जो जीता न... जा सके, ईश्वर।

अजिन० ना० पु० सिंह इत्यादि... का चर्म जो ब्रह्मचारी... लोग बिछाते हैं।

अजिर० ना० पु० आंगन, सहन।

अजीर्ण० ना० पु० कुपच, बाई, नवीन।

अजैां० अव्य० अब तक, अभी।

अज्झल० ना० पु० अच् और हल अर्थात् स्वर और व्यञ्जन।

अञ्चल० ना० पु० आंचल, अंचला, वस्त्र का अन्त।

अञ्जन० ना० पु० काजल, सुरमा।

अञ्जलि० } ना० स्त्री० दोनों
अञ्जली० } हाथ का सम्पुट।

अञ्जि० क्रि० अञ्जन लगाकर।

अञ्जित० गु० अञ्जन अर्थात् सुरमा लगाये।

अटक० ना० स्त्री० रोक, प्रतिबन्ध, सिन्धु नदी।

अटकना० अ० क्रि० रुकना, लगना।

अटकल० ना० स्त्री० अनुमान, प्रमाण, अन्दाज़।

अटकलना० स० क्रि० ताड़ना, बूझना, जांचना।

अटका० ना० पु० श्रीजगन्नाथ जी में प्रसाद पकाने का पात्र वा प्रसाद।

अटकाना० स० क्रि० रोकना, ठहराना।

अटकाव० ना० पु० रोक, प्रतिबन्ध।

अटखेल० गु० खिलाड़, चञ्चल।

अटखेली० ना० स्त्री० खिलाड़पन, चञ्चलाहट।

अटन० अ० क्रि० फिरना, घूमना, ना० पु० ऊपरकीकोठरी।

अटना० अ० क्रि० समाना, भर-जाना, फिरना।

अटपट० गु० उलट पुलट, गोल बात।

अटपटी० गु० अशोच, अनरीति

अटल० गु० पूरा, दृढ़, अचल, जो न टले।

अटवी० ना० पु० बन, जङ्गल

अटा० } नाo स्त्री० ऊपरकी
अटारी० } कोठरी, कोठा।

अटाला० नाoपुoढेर, सामग्री

अटूट० गुo जो टूट न सके।

अटेक० गु० जो टेक रहितहो, सहारा बिना।

अटेरन० नाo पुo फेंटी, चरखी, घोड़ेको चक्कर देने का स्थान।

अटेरना० सoक्रिoफेंटी बनाना, घोड़े को चक्कर देना।

अटेरि० नाo पुo नगरविशेष।

अटोक० गुo टोकबिन, अछेड़।

अट्टहास० नाoपुo ठट्ठा मारके हंसना।

अट्टालिका० नाoस्त्रीoअटारी

अठतालीस० गुo चालीस और आठ ४८।

अठतीस० गुo तीस और आठ ३८।

अठवारा० नाo पुo आठवां दिन, सप्ताह।

अठसठ० गु० साठि और आठ ६८।

अठहत्तर० गुo सत्तर और आठ ७८।

अठाईस० गुo बीस और आठ २८।

अठानवे० गुo नव्वे और आठ ९८।

अठारह० गुo दश और आठ १८।

अठासी० गुo अस्सी और आठ ८८।

अठेल० गुo जो ठेला न जावे।

अड० नाoस्त्रीoझगड़ा, विरोध, हठ।

अड्ड० नाo पुo मंडी अर्थात् दिसावर की वस्तु का उतार, गुo झगड़ालू, टर्रा।

अड़ना० अ० क्रिo रुकना, हठ करना।

अडूसा॰ ना॰ पु॰ बांसा अर्थात औषधि वि॰ ।

अडोल॰ गु॰ जो न डुले, अटल

अणि॰ ना॰ स्त्री॰ मोनी, अनी, नोक ।

अणिमा॰ ना॰ स्त्री॰ अन्तर्ध्यान होनेकीशक्ति, सिद्धि विशेष।

अणु॰ ना॰ पु॰ अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु ।

अण्ड॰ ना॰ पु॰ अण्डा, आंडा ।

अण्डकोष॰ ना॰ पु॰ आंड कटाह ।

अण्डज॰ ना॰ पु॰ गु॰ जो अण्ड से उपजे ।

अण्डा॰ ना॰ पु॰ अण्ड॰ रण्ड ।

अण्डाकार॰ } गु॰ अण्डे के
अण्डाकृति॰ } डौल ।

अतनु॰ ना॰ पु॰ कामदेव, शरीर रहित ।

अतर्क॰ गु॰ जो तर्क रहित है, बेदलील ।

अतर्क्य॰ गु॰ जो लखा न जावे, बे दलील ।

अतल॰ ना॰ पु॰ सातपातालों मेंसे एक ।

अतलस्पर्श॰ गु॰ अथाह, अगाध

अतसी॰ ना॰ स्त्री॰ अलसी, जिसका तेल निकालते हैं ।

अति॰ अव्य॰ जिस शब्दके प्रथम इसका मेल होता है उसका अर्थ अधिक लिया जाता है यथा अति सुन्दर अर्थात् अधिक सुन्दर ।

अतिकण्टक॰ ना॰ पु॰ जवासा

अतिकाल॰ ना॰ पु॰ अबेर ।

अतिकाय॰ ना॰ पु॰ रावणका पुत्र ।

अतिकुचै॰ अ॰ क्रि॰ समिटै, सकुचै, झूलै, रामचन्द्रिका, यां, यथा-कपि बर बाणी उगे उरडीठि त्वचा तिकुचै सकुचै मतिवेली ।

अतिगुहा॰ ना॰ स्त्री॰ शाल पर्णी औषधि।

अतिचम्बुल॰ ना॰ पु॰ लाल अरण्ड।

अतिजिह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ कलि-हारी।

अतिथ॰ } ना॰ पु॰ यात्री,
अतिथि॰ } पाहुन, संन्यासी।

अतिपराक्रम॰ ना॰ पु॰ बड़ा प्रताप।

अतिपान॰ ना॰ पु॰ अधिक मदिराका पीना।

अतिपार्श्व॰ गु॰ बहुत निकट।

अतिरक्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ ऊ-धाहोली औषधि।

अतिरसा॰ ना॰ स्त्री॰ रास्ना, औषधि।

अतिरिक्त॰ गु॰ अतिशय, अ-धिक।

अतिवक्ता॰ गु॰ बकवादी, जो बहुत बके।

अतिबला॰ ना॰ स्त्री॰ बलि...
औषधि।

अतिविकट॰ गु॰ बहुत दुर्ग...
जिस हाथी में औगुण है...

अतिदृष्टि॰ ना॰ स्त्री॰ बहु...
वर्षा।

अतिव्ययक॰ गु॰ उड़ाऊ, ब...
खर्च कर्ता।

अतिव्याप्ति॰ गु॰ स्त्री॰ अलक्ष्य...
लक्षण का गमन।

अतिशय॰ गु॰ बहुत अधि...

अतिशीत॰ गु॰ बहुतशी...

अतिसार॰ ना॰ पु॰ पेटो...
संग्रहणी।

अतिस्थूल॰ गु॰ बहुत भार...

अतीत॰ गु॰ होचुका, यती...
रहित।

अतीस॰ ना॰ पु॰ औषधि, ...
शेष।

अतीसार॰ ना॰ पु॰ अतिसा...

अतुल॰
अतुलित॰
अतोल॰
गु॰ जो तोला नहीं गया॰ जो तोलने के योग्य नहीं, बहुत।

अत्यंशु॰ ना॰ पु॰ सूरज।

अत्यन्त॰ गु॰ अतिशय, बहुत।

अत्यन्तसुन्दर॰ गु॰ बहुत-सुन्दर।

अत्यल्पतर॰ गु॰ बहुतही थोड़ा

अत्यावश्यक॰ गु॰ बहुत आवश्यक, बहुत जरूरी जिसके बिना निबाह न होसके।

अत्युग्र॰ गु॰ बहुत कठिन, ना॰ पु॰ हींग।

अत्युत्तम॰ गु॰ बहुत अच्छा।

अत्युत्तमा॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्य अप्सरा।

अथ॰ अव्य॰ अनन्तर, आरम्भ, उपरान्त।

अथर्वण॰ ना॰ पु॰ नाम चतुर्थ वेद का।

अथवा॰ अव्य॰ वा, या, प्रकारान्तर, किम्बा।

अथाई॰ ना॰ स्त्री॰ बैठक का स्थान, समूह, चौपाड़।

अथान॰ गु॰ अचार, खटाई, बेठिकाने।

अथाह॰ गु॰ गम्भीर, अगाध, गहरा, ना॰ पु॰ खोह।

अदत्त॰ गु॰ जो नहीं दिया गया, देने के योग्य नहीं है।

अदत्ता॰ गु॰ स्त्री॰ अविवाहिता।

अदर्शन॰ ना॰ पु॰ दर्शना भाव गु॰ लुप्त अगोचर।

अदवायन॰ ना॰ स्त्री॰ पांइती की रस्सी।

अदाता॰
अदानी॰
गु॰ लीचड़, अनदेना।

अदिति॰ ना॰ स्त्री॰ कश्यप की स्त्री, देवमाता।

अदिष्ट॰ ना॰ पु॰ विपत्ति भाग्य कर्म।

अदृश्य० गु० जो देखा न जावे, अगोचर।

अदेय० गु० जो देने के योग्य नहीं।

अदेव० गु० दैत्य जो देने के योग्य न होवे।

अद्धी० ना० स्त्री० दमड़ी का आधा, कपड़ा विशेष।

अद्भुत० गु० अनोखा, अजायब।

अद्य० अव्य० आज।

अद्यापि० अव्य० अब तक।

अद्रक० ना० स्त्री० अदरक, कन्द विशेष।

अद्रि० ना० पु० पर्वत।

अद्वितीय० } गु० जिसके समान दूसरा नहीं गु०

अद्वैत० } एकता-आत्मा-नी भेद रहित।

अध० अव्य० नीचे, ना० स्त्री० ऊंगा औषधि।

अधकपाली० ना० स्त्री० आधा सीसी अर्थात आधे शिर की पीड़ा।

अधगो० ना० स्त्री० गुदा, शंका करने की इन्द्री।

अधन० }
अधनी० } गु० कङ्गाल, ग़रीब।

अधबर० अव्य० आधी दूर अर्थात् मध्य।

अधम० गु० नीच, कुत्सित, धर्म-रहित।

अधमाधम० गु० अति नीच।

अधर० ना० पु० नीचेका होंठ, ओष्ठ, अन्तर, गु० मध्य।

अधरबुद्धि० गु० नासमझ, नादान।

अधरामृत० ना० पु० होठों में की मिठास।

अधर्म० ना० पु० पाप, अन्धेर, अन्याय, अथवा धर्म रहित।

अधर्मी० गु० अन्यायी, पापी।

अधि० अव्य, जिस शब्द के प्रथम में इसका संयोग होता है उसका अर्थ साहिब वा मालिक वा हाकिम का होता है यथा नराधि अर्थात् नरों का मालिक।

अधिक० गु० बहुत।

अधिकता० ना० स्त्री० } ना० पु० बहुतात,
अधिकत्व० ना० पु० }

अधिकरण० ना० पु० सातवां कारक विशेष।

अधिककोण० ना० पु० कोना जो सम कोण से अधिक हो।

अधिकाई० ना० स्त्री० बढ़ती सरसाई बहुतात।

अधिकाना० स० क्रि० अधिक करना, बढ़ाना।

अधिकार० ना० पु० पदवी, ओहदा, योग्यता, स्वामित्व, राज्य, बपौती।

अधिकारी० गु० पाने के योग्य स्वामी, पुजारी, पण्डा।

अधिकार्द्धि० गु० बहुत सम्पदा।

अधिकृत० ना० पु० नियुक्त, देखने वाला, जांचने वाला, पदाधिकार।

अधिप० ना० पु० नायक, मालिक, राज नीति, प्रतिपालक, वा प्रजापालक।

अधिपति० ना० पु० अधिप।

अधिवास० ना० पु० निवास, सकूनत।

अधिभू० ना० पु० नायक, स्वामी मालिक।

अधिमास० ना० पु० लोंद, मलमास।

अधियाना० स० क्रि० आधा करना।

अधिराज० ना० पु० महाराज, राजाधिराज।

अधिरूढ़० ना० पु० सवार, असवार।

अधीन० गु० वशीभूत, आज्ञाकारी ।

अधीनता० ना० स्त्री० आधीनता, परवश, दूसरे के इख़तियार में रहना ।

अधीर० गु० उतावल, धीरज रहित, व्याकुल, चञ्चल ।

अधीरता० ना० स्त्री० उतावली, व्याकुलता ।

अधीश० ना० पु० स्वामी, मालिक ।

अधूरा० गु० अधबना, अनबना ।

अधेड़० गु० आधी आयुर्दाय व्यतीत भई ।

अधेला० ना० पु० पैसेका आधा ।

अधेली० ना० स्त्री० रुपया वा मुहर का आधा ।

अधो० ना० पु० नरक, नीचे ।

अधोबन्धन० ना० पु० ज़ेरबन्द, नीचेका बन्धन विशेष ।

अधोमुख० गु० शिर झुकाये वा शिर नीचे और पांव ऊपर किये हुये ।

अधोयोनि० गु० नीचयोनि ।

अधोलोक० ना० पु० पाताल, नरक ।

अध्ययन० ना० पु० पाठपढ़ना, सीखना ।

अध्यक्ष० ना० पु० स्वामी, प्रधान, मालिक ।

अध्यात्म० ना० पु० आत्मज्ञान, ईश्वर विचार ।

अध्यापक० ना० पु० पाठ पढ़ानेहारा, शिक्षक ।

अध्यापन० ना० पु० पाठ पढ़ाना ।

अध्याय० ना० पु० पाठ, पर्व्व, प्रकरण, टुकड़ा, बाब, हिस्सा ।

अध्याहार० ना० पु० वाक्य को पूरा करने के निमित्त बाहिर से शब्दले आना ।

अध्याहृत॰ गु॰ अध्यहार, किया गया शब्द।

अध्वग॰ } गु॰ बटोही, यात्री,
अध्वनी॰ } मुसाफ़िर।

अध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ राह, मार्ग, बाट।

अन॰ अव्य॰ निषेधार्थी शब्द, नहीं।

अनख॰ ना॰ पु॰ बुरा।

अनखाई॰ गु॰ जो बुरा मान गया।

अनखाना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना, बुरा मानना।

अनगढ़॰ गु॰ अनबना, अनसीखा जो वस्तु आपही आप बनी हो।

अनगढ़ा॰ ना॰ पु॰ अनगढ़।

अनगढ़ी॰ ना॰ स्त्री॰ अनगढ़।

अनगणित॰ गु॰ जो गिना नहीं वा गिना न जासके, वा हिसाब में न आवे।

अनघ॰ गु॰ निष्पाप, निर्दोष, बे गुनाह।

अनङ्ग॰ ना॰ पु॰ काम देव, राजा जनक, गु॰ देह रहित जो तनमें न होवे।

अनजाना॰ गु॰ बिना पहिचाना।

अनट॰ ना॰ स्त्री॰ गांठि।

अनत॰ अव्य॰ अन्यत्र, और स्थान में।

अनधन॰ ना॰ पु॰ सम्पत्ति वा लक्ष्मी अर्थात् अन्ननाम लक्ष्मी।

अनन्त॰ गु॰ जिसका अन्त नहीं वा भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को जो सूत में १४ ग्रन्थि देकर पूजते हैं और बाहु पर बांधते हैं बहुत॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा, आकाश, विष्णु जी, शेषजी, लक्ष्मणजी।

अनन्तकाल॰ गु॰ बहुत दिन।

अनन्तर॰ ना॰ पु॰ अत्यन्त, समीप, पीछे, दूसरा, अव्यवहित।

अनन्ता॰ ना॰ स्त्री॰ धरती, जवासा।

अनन्य॰ गु॰ एक भाव, एक भरोसे।

अनपढ़ा॰ गु॰ मूर्ख, कुपढ़ा, अज्ञानी।

अनपायन॰ गु॰ अचल, दृढ़।

अनबुझा॰ गु॰ जो समझा न जावे।

अनमन॰ } गु॰ घाबरा, उदास, बेदिल।
अनमना॰ }

अनमिल॰ गु॰ मेल रहित, ना दुरुस्त।

अनमिष॰ गु॰ समय, बिना मिस, बे उज़र।

अनमेल॰ गु॰ अनमिल।

अनमैल॰ गु॰ मैल रहित, उज्ज्वल, साफ़।

अनमोल॰ गु॰ जिसका मोल नहीं अर्थात् जो बहुत अपूर्व है।

अनयास॰ गु॰ बिना परिश्रम, बेमिहनत।

अनरस॰ ना॰ पु॰ रस रहित, झगड़ा, फीका, मिलों में अन बनाव।

अनरीति॰ ना॰ स्त्री॰ कुचालि, असन्मान, अनादर।

अनर्गल॰ गु॰ निर्बाध, स्वेच्छक।

अनर्घ॰ गु॰ अपूज्य, अमूल।

अनर्थ॰ गु॰ अर्थ हीन, अनुचित, बेमतलब।

अनर्थक॰ गु॰ निष्प्रयोजन, निष्कारण, झूठा।

अनल॰ ना॰ पु॰ पावक, अग्नि आग।

अनलपक्ष० ना० पु० पक्षी विशेष जो सर्वदा काल आकाश में उड़ा करता है और जब ईश्वरेच्छा से उस के गर्भ होता है तो अण्डे को आकाश से छोड़ देता है और वह अण्डा पृथ्वी पर पहुंचने के पहिलेही मार्ग में पक फूट कर बच्चा बन जाता है और उड़ने लगता है और अपने माता पिता का स्मरण कर ऊपर लौट जाताहै, (यथा विचार मालायां) अनल पक्षको चेटुवा गिरयो धरणि अरराय, बक्र अलीन यह लीन है मिल्यौ तासु को धाय।

अनवकाश० ना० पु० अवकाश रहित।

अनवट० ना० पु० भूषण विशेष जो स्त्रियां पांव के अंगूठे में पहनती हैं।

अनवस्थित० गु० बे ठिकाने, रंग रंग की।

अनशन० ना० पु० उपवास, लङ्घन।

अनश्वर० गु० जिसका नाश न हो, जो न मिटे।

अनसीखा० गु० अनपढ़ा, अज्ञानी।

अनसुनीकरनी० स० क्रि० आना कानी करना।

अनसूया० ना० स्त्री० अत्रि मुनि की पत्नी।

अनहित० गु० स्नेह रहित, शत्रु, बैर, बुराई।

अनहोना० गु० असम्भव, जो होनहार नहीं।

अनाकुर० ना० पु० वृक्ष, पेड़

अनाचार० ना० पु० कुचाल, आचार रहित।

अनाज० ना० पु० अन्न, ग़ल्ला।

अनाजक० ना० पु० काला-अगरु।

अनाड़ी॰ गु० भद्देसल, निर्गुणी, नवसिखा।

अनाथ॰ गु० दु:खी, जिसका कोई रक्षक न हो, यथा बिधवा, पिता हीन पुत्र।

अनादर॰ ना० पु० अपमान, तिरस्कार।

अनादि॰ गु० जिसकी आदि न हो यथा ईश्वर।

अनामय॰ गु० रोग रहित, निर्दोष।

अनामिका॰ ना० स्त्री० तीसरी अंगुली।

अनायास॰ ना० पु० यत्नबिना, निरुपाय।

अनावृष्टि॰ ना० स्त्री० सूखा, पानी न बरसे।

अनाश्रम॰ गु० बिन मकान, बिना ठिकाने, और चारों आश्रम रहित।

अनाहत॰ गु० वह शब्द जो ब्रह्माण्ड में अखण्ड होता है, ना० पु० चक्र विशेष।

अनिरुद्ध॰ ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का पोता।

अनिर्वचनीय॰ अनिर्वाच्य॰ } गु० जो कहने के योग्य नहीं है।

अनिल॰ ना० पु० पवन, वायु, हवा।

अनिश्चित॰ गु० जो निश्चय नहीं किया गया।

अनिश्चितता॰ ना० स्त्री० जिसका निश्चय नहीं है उसकी स्थित।

अनिष्ट॰ गु० अप्रिय, अरुचि।

अनी॰ ना० स्त्री॰ सेन, बरछी, और बाण आदि की नोक।

अनीक॰ ना० पु० मत्था, ना० स्त्री० सेन, समूह।

अनीकिनी॰ना॰स्त्री॰ सेना, फ़ौज ।

अनीति॰ ना॰ स्त्री॰ कुचाल, अन्याय ।

अनीश॰ना॰पु॰ ईश रहित, जीव ।

अनीह॰गु॰चेष्टा रहित,तृष्णा रहित ।

अनु॰अव्य॰ यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ, कभी पुनः कभी सादृश्य,कभी निषेध, कभी सङ्ग,कभी पीछे,कभी समीप का होता है ।

अनुकम्पा॰ना॰ स्त्री॰ कृपा, दया,रहम,मेहरबानी ।

अनुकरण॰ना॰पु॰ किसी के पीछे काम करना, किसी की प्रति वा नक़ल करना ।

अनुक्त॰ गु॰ जो उक्त नहीं, ना॰पु॰ दृष्टान्त ।

अनुक्रम॰ना॰पु॰क्रमसे, परिपाटी, रीति ।

अनुक्रोश॰ ना॰ स्त्री॰ दया, कृपा, रहम ।

अनुकारी॰ ना॰ पु॰ नौकर, सेवक ।

अनुकूल॰ गु॰ प्रसन्न, सहायक, व्याधि हीन ।

अनुख॰ ना॰ पु॰ आलस, बुराई ।

अनुखाल॰ ना॰ पु॰ किसी नदी का एक भाग किसी देश में प्रविष्ट हो थोड़ी दूर और भेद न करै उसका नाम अर्थात् छोटा खाल ।

अनुग॰गु॰ सेवक वा सेवकिन, पीछे चलैया ।

अनुगत॰ना॰ पु॰ आश्रित ।

अनुग्रह॰ना॰ पु॰ कृपा,दया, मेहरबानी ।

अनुगामी॰ गु॰ सेवक, पीछे चलने हारा।

अनुचर॰ ना॰ पु॰ साथी, सह-चर, दास, सेवक।

अनुचरी॰ ना॰ स्त्री॰ दासी, सेवकिन्।

अनुचित॰ गु॰ अयोग्य, जो वाजिब न हो।

अनुज॰ ना॰ पु॰ छोटा भाई।

अनुजा॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी ब-हिन।

अनुत्तर॰ गु॰ उत्तरहीन, म-हज्जन, श्रेष्ठ।

अनुताप॰ ना॰ पु॰ पश्चात्ताप, शोच।

अनुतारा॰ ना॰ पु॰ तारे के पीछे का तारा।

अनुदिन॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन, नित प्रति।

अनुनासिक॰ ना॰ पु॰ जो नासिका से निकले।

अनुपल॰ ना॰ पु॰ पलका सा-ठिवां अंश।

अनुपस्थित॰ गु॰ जो उपस्थित न होवे।

अनुपान॰ ना॰ पु॰ औषधि आदि के साथ और जो कुछ मिलाय के पीते हैं।

अनुप्रास॰ ना॰ पु॰ समान जातिके वर्णोंसे रचित-पद, समूह, रदीफ़।

अनुभव॰ ना॰ पु॰ मानसज्ञान, अटकल, विचार, ध्यान।

अनुभूति॰ ना॰ व्याकरण के आचार्य का नाम है जि-न्होंने सारस्वत बनाई और अपने चित्त के स्थिर निश्चय को भी कहते हैं जिसका पर्याय अनुभव है

अनुभाव॰ ना॰ पु॰ महिमा बड़ाई।

अनुभूत० गु० बीता, जो मनसे जाना गया है।
अनुमति० ना० स्त्री० अनुज्ञा, आज्ञा, सम्मति, सलाह।
अनुमरण० ना० पु० एक चिता में विधि पूर्वक शरीर का दहन, सती होना।
अनुमान० ना० पु० अटकल, युक्ति से जो निश्चय होवे।
अनुमित० गु० विचारागया।
अनुमोदन० ना० पु० प्रशंसा वा बड़ाई करना।
अनुयायी० गु० पीछे जानेवाला, सेवक।
अनुरत० गु० मग्न, रत, मस्त।
अनुराग० ना० पु० स्नेह, प्रीति, थोड़ी ललाई।
अनुरागी० गु० प्रियतम, दोस्त।
अनुराधा० ना० स्त्री० सत्रहवां नक्षत्र।
अनुरूप० गु० सदृश, समान, तुल्य।
अनुरूपक० गु० समान करनेवाला, प्रतिमा।
अनुरोध० गु० अपेक्षा, उपकार, रोक, मुवाफ़िक़, अनुरूप होना।
अनुरोधी० गु० विरोधी।
अनुलाप० ना० पु० दुखित-वार्त्ता।
अनुवह० ना० पु० मुख्य पवन।
अनुवाद० ना० पु० पुनःकथन, बात का पक्ष करना, हठ करना।
अनुशयना० ना० स्त्री० नायिका विशेष।
अनुशाखा० ना० स्त्री० पीछे की डाली, प्रशाखा।
अनुशासन० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।
अनुसन्धान० ना० पु० कामना, पीछे लगाना।
अनुसरना० अ० क्रि० पीछे चलना वा आना।

अनुसार॰ ना० पु० सदृश, तुल्य, अनुरूप होना अथवा अनुरूप, मुवाफ़िक़।

अनुस्वार॰ ना० पु० बिन्दु जो अक्षर के मस्तक पर देते हैं।

अनुहर॰ ना० पु० तुल्य, अनुहार।

अनुहरण॰ ना० पु० चुराना, उठालेना।

अनुहार॰ }
अनुहारि॰ } गु॰ तुल्य, सदृश, समान, योग्य।

अनुपम॰ }
अनुपमा॰ } गु॰ उपमा रहित अर्थात् सबसे भला, एकता, बेनज़ीर।
अनूप॰ }

अनूठा॰ गु॰ अपूर्व, निराला, नया, अजायब।

अन्यून॰ गु० सब, बिल्कुल।

अनृत॰ ना० पु० झूठ, मिथ्या।

अनेक॰ गु॰ बहुत, एकसे अधिक।

अनेकवर्णात्मक॰ गु० जिस शब्द में एकसे अधिक वर्ण हों।

अनैसी॰ ना० स्त्री० अनुचित, कुदृष्टि।

अनैसे॰ गु० कुदृष्टि, क्रोध दृष्टि, रामायणे यथा, अजहुं अनुज तव चितव अनैसे।

अनौषधि॰ गु॰ जिसकी औषधि नहीं, लादवा।

अन्त॰ ना॰ पु॰ समाप्ति, शेषभाग, सीमा, दूसरी जगह, अव्य० निदान।

अन्तक॰ ना॰ पु० काल, यमराज।

अन्तकाल॰ ना॰ पु० मरने का समय।

अन्तःकरण॰ ना० पु० मन, बुद्धि, चित्त, और अहङ्कार।

अन्तःकोण॰ ना० पु० भीतरका कोना।

अन्त:पाती० गु० अन्तर्गत, भीतर ।

अन्त:पुर० ना० पु० घर जिस-में रानी आदि स्त्रियां रहती हैं ।

अन्त:सम्पात० ना० पु० भीतर छूना ।

अन्तड़ी० ना० स्त्री० आंत ।

अन्तर० अव्य० बीच, फ़र्क़, ना० पु० भीतर, समय, भेद, हृदय ।

अन्तरङ्ग० ना० पु० आत्मीय, अपना ।

अन्तर्हित ० गु० छुपजाना, ग़ायब होना ।

अन्तरा० ना० पु० गीत के पह-ले पदको छोड़ के जो पद हैं, अन्य, मध्य, बाहिर ।

अन्तरापत्ति० ना० पु० गर्भ ।

अन्तरित० गु० छुपना, ग़ायब होना ।

अन्तरिया० ना० पु० तिजारी, ज्वर विशेष ।

अन्तरीप० ना० स्त्री० टापू, धरती की नोक जो समुद्रमें चली गई हो ।

अन्तर्वेद० ना० पु० देश जो गङ्गा यमुना के मध्यमें है ।

अन्तस्थ० गु० बीच में, दूरवाला, अन्त का ।

अन्तावली० ना० स्त्री० आंत ।

अन्तिम० गु० अन्त का ।

अन्तेवासी० ना० पु० पीछे रहने वाला, दूर रहने वाला, शिष्य ।

अन्त्य० गु० अन्तका, पिछला ।

अन्त्यज० ना० पु० धोबी, चमार, नट, बरट, किरात, मेद, भिल्ल, पीछे उपजा, नीच जाति ।

अन्त्याक्षर० ना० पु० अन्त का अक्षर ।

अन्ध० गु० अन्धा ।

अन्धक० ना० पु० दैत्य विशेष जो सदाशिव से लड़ा था और मारा गया ।

अन्धकबन्ध० ना० पु० दैत्य-विशेष।

अन्धकरिपु० ना० पु० श्री-महादेव जी।

अन्धकार० ना० पु० अन्धेरा।

अन्धकारि० ना० पु० श्री-महादेव जी।

अन्धला० गु० अन्धा।

अन्धसुत० ना० पु० दुर्योधना-दि सौ १००।

अन्धा० गु० नेत्र हीन।

अन्न० ना० पु० पक्क ओदनादि, अनाज।

अन्नकूट० } ना० पु० अन्न का ढेर लगाना।
अन्नपर्वत० } हिन्दुओं में त्योहार दीवाली के दूसरे दिन होता है।

अन्नप्राशन० ना० पु० बालक को पांचवें वा छठे मास खीर चटाना, माड़ चाटन।

अन्ना० } ना० स्त्री० दाया, दाई
अन्नी० } धाय।

अन्य० गु० दूसरा, भिन्न, कोई और।

अन्यच्च० गु० अन्यभी, और भी।

अन्यथा० अव्य० और प्रकार, प्रकारान्तर, अशुद्ध, झूठ।

अन्यथाचरण० ना० पु० उलटा व्यवहार।

अन्यथासिद्धि० ना० स्त्री० और प्रकार से ठहराना।

अन्यदेश० ना० पु० और देश, ग़ैर मुल्क।

अन्यदेशीय० गु० परदेशी, विदेशी।

अन्यपुरुष० गु० जो परोक्ष में है, आन नर।

अन्यरक्त० ना० पु० लालजंगा। यथा, अन्यरक्तः हस्तफलाव-सिरःकपिपिप्पली। इति निघण्टे।

अन्याय० ना० पु० अनीति, उपद्रव।

अन्याय्य० } गु० अयोग्य, अधर्मी,
अन्यायी० } ज़ालिम।

अन्यत्र० अव्य० और कहीं।

अन्योन्य० गु० परस्पर।

अन्वय० ना० पु० एकका एकके साथ सम्बन्ध, कुल।

अन्वहं० गु० निरन्तर, सत्यकर।

अन्वित० गु० संयुक्त, मिलित।

अन्वेषण० ना० पु० अनुसन्धान, खोज।

अन्वेषिणी० ना० स्त्री० खोजने वाली, ढूंढ़ने वाली।

अप० अव्य० जिस शब्द के प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ, कु० निकृष्टता, विरुद्धता, भिन्नता, आसन्नता इत्यादि होता है सर्व० आप।

अपकर्म० ना० पु० कुकर्म, बुरा काम।

अपकार० ना० पु० अनिष्ट, बिगाड़, द्वेष, अधर्म।

अपकारी० गु० द्वेषी, कुकर्मी।

अपकृष्ट० गु० अधम, न्यून, छोटा।

अपक्क० गु० जो पक्का न होवे।

अपघात० ना० पु० निज करसों आपको मारना।

अपचय० ना० पु० टोटा, घाटा, हानि।

अपजस० ना० पु० कलङ्क, अपमान, अपयश।

अपटु० गु० जो काम करने में प्रवीण नहीं, निर्बुद्धि।

अपडर० ना० पु० झूठ डर, निज ओरसे डर।

अपत० गु० पापी, बेइज्जत।

अपति० ना० स्त्री० अनादर, अपमान।

अपत्य॰ना॰ पु॰ सन्तान, औलाद।

अपथ॰ना॰ पु॰ कुमार्ग, मार्ग रहित।

अपथ्य॰गु॰ जिसके खाने से रोग अधिक होवे अर्थात् जठरानल जिसे न पचा सके।

अपना॰ सर्व॰ निजका, स्वकीय।

अपनाइत॰ना॰ स्त्री॰ घराना, कुटुम्ब, सम्बन्ध।

अपबस॰गु॰ स्वाधीन, अपने वश में।

अपभय॰ना॰ पु॰ झूठ, डर, अपडर।

अपभाषा॰ना॰ स्त्री॰ गंवारी बोली, वा यवनादिकों की बोली, फ़ारसी आदि।

अपभ्रंश॰ना॰ पु॰ अपशब्द, अशुद्ध शब्द।

अपमान॰ना॰ पु॰ अनादर, इज़्ज़त घटाना।

अपमानी॰गु॰ जो अपमान के योग्य है।

अपमृत्यु॰ना॰ स्त्री॰ अनमौत, रोग हीन मरना, अकाल मृत्यु।

अपर॰ ना॰ पु॰ तगर औषधि, गु॰ दूसरा, अन्य, विरुद्ध।

अपरम्पार॰गु॰ जिसका पार नहीं है, अनन्त।

अपरा॰ना॰ स्त्री॰ जूही।

अपराजय॰ना॰ पु॰ पराभव हीनता, हारि।

अपराजित॰गु॰ जो जीता न जावे, ना॰ पु॰ श्री सदा शिवजी, श्रीविष्णु नारायण।

अपराजिता॰ना॰ स्त्री॰ देवी विशेष, पुष्प विशेष, जिस को विष्णुक्रान्ता व कौआ गोड़ी कहते हैं।

अपराध॰ना॰पु॰ दोष, पाप, घात, अधर्म।

अपराधी॰गु॰ पापी, दोषी, अधर्मी।

अपराह्न॰ना॰ पु॰ तीसरा पहर।

अपरिचित॰गु॰ जाति वाचक शब्द जिससे परिचय न हो, जिससे पहिचान न हो।

अपरिमित॰गु॰ जो नापा नहीं गया, बहुत।

अपर्णा॰ना॰ स्त्री॰ पार्वती।

अपलक्षण॰ना॰ पु॰ अपशकुन, बुरे चिन्ह।

अपलोक॰ना॰ पु॰ अपयश, बदनामी।

अपवर्ग॰ना॰पु॰ मुक्ति, मोक्ष, निजात।

अपवाद॰ ना॰ पु॰ निन्दा, अपयश, चवाना, बुरी बातें आन को कहना, अनियम शब्द।

अपवादी॰गु॰ अधर्मी, जो अपवाद करे।

अपवित्र॰गु॰अशुद्ध, छुतहरा, नापाक।

अपवित्रता॰ना॰स्त्री॰ अशुद्धता, छूत, नापाकी।

अपशकुन॰ना॰पु॰ बुरा शगुन।

अपशब्द॰ना॰पु॰ शब्द जो अशुद्ध है।

अपश्य॰गु॰ जो देखा न जावे।

अपसव्य॰ गु॰ दाहिना भाग अङ्गकावा दाहिना हाथ वा कांधा वा जज्ञदान में अंगोछा दाहिने कांधे पर रखना, विरुद्ध।

अपस्मार॰ना॰पु॰ रोगविशेष, जिसको मिरगी कहते हैं।

अप्सरा॰ ना॰ स्त्री॰ स्वर्वेश्या, परी।

अपहरण॰ना॰ पु॰ हरलेना, लूटलेना, लूटना।

अपहर्त्ता॰ } गु॰ चोर, डाकू, लुटेरा।
अपहरता॰ }
अपहारी॰ }

अपह्नव॰ ना॰ पु॰ छिपाव, नकार।

अपक्ष॰ गु॰ पक्ष रहित।

अपाक॰ गु॰ जो पका नहीं है।

अपाङ्ग॰ ना॰ पु॰ नेत्र का अन्त भाग, कटाक्ष।

अपादान॰ ना॰ पु॰ पांचवां कारक।

अपान॰ ना॰ पु॰ गुदा, नीचे की वायु, पाद, प्राण विशेष, सर्व, अपना।

अपाप॰ गु॰ पाप रहित।

अपामार्ग॰ ना॰ पु॰ ऊंगा।

अपार॰ गु॰ जिसका पार वार नहीं है, अनन्त।

अपावन॰ गु॰ अशुद्ध, नापाक।

अपूत॰ गु॰ निर्वंश, कुपुत्र, कपूत।

अपूर्ण॰ गु॰ जो अभी पूरा नहीं भया है।

अपूर्णभूत॰ गु॰ अभी व्यतीत नहीं भया।

अपूरब॰ } गु॰ जो पहिले कभी नहीं देखा, अनूठा
अपूर्व॰ }

अपि॰ अव्य॰ निश्चय, ठीक, भी

अपिधान॰ ना॰ पु॰ पोशाक, वस्त्र।

अपीड़॰ ना॰ पु॰ शिखा भूषण

अपेय॰ गु॰ जो पीने के योग्य नहीं है।

अपेल॰ गु॰ अचल, जो टल न सके।

अपेक्षक॰ गु॰ अपेक्षा करने हारा, निसबत करने हारा, अनुरोधक।

अपेक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ अनुरोध, आशा, भरोसा, रिश्तह, निसबत।

अपेक्षित॰ गु॰ आश्रित, अपेक्षा किया गया।

अपौरुष॰गु॰ जिसके साध्यता नहीं है, नाताक़त ।

अप्रकाश॰ना॰ पु॰ अंधेरा, जो प्रकट नहीं है ।

अप्रतिहत॰गु॰ जिसकी रोक नहीं है ।

अप्रतीत॰गु॰ प्रतीति रहित, अर्थात् जो विश्वास के योग्य नहीं है ।

अप्रत्यय॰ना॰ पु॰ अविश्वास ।

अप्रत्यक्ष॰ गु॰ जो देखा न जावे ।

अप्रधान॰गु॰ मुख्य नहीं है, जो सर्दार नहीं है ।

अप्रबन्ध॰ना॰पु॰ बेबन्दोबस्त, प्रबन्धहीन ।

अप्रमाण॰गु॰ बहुत, प्रमाण रहित, असत्य ।

अप्रसन्न॰गु॰ जो प्रसन्न नहीं है, गंदला, नाख़ुश ।

अप्रसिद्ध॰गु॰ जिसको कोई नहीं जानता है, गुप्त ।

अप्राकृत॰गु॰ जो प्राकृत नहीं है ।

अप्राप्तयौवन॰ ना॰ पु॰ लड़का, नाबालिग़ ।

अप्रिय॰गु॰ अहित, जो प्रिय नहीं है ।

अफरना॰ अ॰ क्रि॰ अधिक भोजन से पेट फूलना, अधिक धनवान होना ।

अफराना॰ स॰ क्रि॰ अधिक भोजन कराना ।

अफल॰गु॰ निष्फल, व्यर्थ, बेफ़ायदह ।

अब॰ अव्य॰ इस समय, इदानीं, ना॰ पु॰ पानी ।

अबतक॰ } अव्य॰ अभी तक,
अबतलक॰ } इस समय तक ।

अबभरण॰ ना॰ पु॰ पानी भरना ।

अबल॰ गु॰ निर्बल, पौरुष रहित ।

अबला॰ना॰ स्त्री॰ नारी, स्त्री॰ गु॰ बलहीना ।

अबस० गु० निर्बल, वशरहित ।

अबार० ना० स्त्री० विलम्ब, देर, कुसमय ।

अबुध० गु० मूर्ख, मूढ़, अहमक़, दैत्य ।

अबूझ० गु० नासमझ नादान ।

अबूझा० गु० बिना समझा, अनजाना ।

अबूझित० गु० जो बूझा नहींगया ।

अबेर० ना० स्त्री० अबार ।

अबै० अव्य० अभी० गु० अनिश्चित ।

अब्ज० ना० पु० कमल, अर्ब, चन्द्रमा, देव वैद्य, शंख, वृक्ष विशेष ।

अब्द० ना० पु० वर्ष, साल, संवत् ।

अब्धि० ना० स्त्री० सगड़की, सीपी । समुद्र ।

अभक्त० गु० जो भक्त नहीं, भक्तिहीन, जो हिस्सह नहीं हुआ है ।

अभङ्ग० गु० जिसका नाशनहो

अभय० गु० निर्भय, निडर ।

अभया० ना० स्त्री० हर्रे ।

अभरण० ना० पु० गहन... आभूषण, ज़ेवर ।

अभरम० गु० पतिहीन, निड...

अभाग० } ना० पु० दुर्गति...

अभाग्य० } विपत्ति ।

अभागा० ना० पु० } गु० भ...

अभागी० ना० स्त्री० } गय ही... निपत्त ।

अभाव० ना० पु० अनहोन...

अभार० गु० हलका ।

अभाव० ना० पु० अविद्यमा... नाश, मृत्यु, अनहोना ।

अभास० ना० पु० छाय... प्रतिबिम्ब ।

अभि० अव्य० सबदिशितें, य... जिस शब्दके प्रथम ... संयुक्त होता है उसक... अर्थ यथा, आगे, प्रत्ये... इत्यादि होता है ।

अभिगम्य० अ० क्रि० आपुजा... कर ।

अभिचार० ना० पु० मन्त्र जिस्से बधकिया जाता है ।

अभिजित्० ना० पु० मुहूर्त्त विशेष, इक्कीसवां नक्षत्र ।

अभिधान० ना० पु० नाम, कोष ।

अभिनव० गु० नया, नूतन, नवीन ।

अभिनन्दन० ना० पु० सराहे, सम्मति, सलाह ।

अभिप्राय० ना० पु० मतलब, सारार्थ, अर्थ, आशय, कारण ।

अभिभूत० गु० पराजित, बलहीन ।

अभिमत० गु० वाञ्छित, इच्छानुसार, सम्मत ।

अभिमान० ना० पु० अहङ्कार, घमण्ड, ग़रूर ।

अभिमानी० } गु० अहङ्कारी,
अभिमान्य० } मग़रूर ।

अभिमुख० गु० सम्मुख, सामने, वर्तमान ।

अभिरत० गु० संयुक्त, मिलत ।

अभिराम० गु० सुन्दर, सुखद, रमण ।

अभिरामी० गु० रमने वाला ।

अभिलाष } ना० स्त्री० इच्छा
अभिलाषा } मनोरथ, तमन्ना ।

अभिवन्दन० ना० पु० नमस्कार करना ।

अभिवाद० ना० पु० दुर्वचन, कुवचन, और बुराबतकहाव ।

अभिवादन० ना० पु० चरण ग्रहण, पूर्वक नमस्कार ।

अभिषिक्त० गु० जिसका अभिषेक भया हो ।

अभिषेक० ना० पु० जलछिरकना, शान्ति, स्नान, पदकीप्राप्तिकेलिये पहिली क्रिया विशेष राज्य तिलक ।

अभिसार॰ ना॰ पु॰ नायक, रति।

अभिसारिका॰ ना॰ स्त्री॰ नायिका, सेनापत्नी।

अभिसारिणी॰ ना॰ स्त्री॰ नायिका।

अभिज्ञ॰ गु॰ प्रवीण, क़दरदान, गुणग्राहक।

अभी॰ अव्य, इसीसमय।

अभीत॰ गु॰ निडर, अभय।

अभीप्सित॰ गु॰ प्रिय, वाञ्छित, मनभावित।

अभीशु॰ ना॰ पु॰ जीव, प्राण।

अभीष्ट॰ गु॰ प्रिय, वाञ्छित, मनभावित।

अभूत॰ गु॰ जो व्यतीत नहीं भया, अभाव।

अभूतरिपु॰ गु॰ शत्रुरहित।

अभेद॰ } गु॰ ऐक्य, परस्पर
अभेव॰ } सम्बन्ध, प्रकट।

अभ्यन्तर॰ ना॰ पु॰ भीतरी, भीतरका।

अभ्यास॰ ना॰ पु॰ साधन, चिन्तन, कर्तव्य।

अभ्र॰ ना॰ पु॰ आकाश, मेघ।

अभ्रक॰ ना॰ पु॰ अबरक, धातु विशेष।

अमङ्गल॰ गु॰ मङ्गल रहित, अशोभा।

अमत्त॰ गु॰ सीधा, सावधान, होशमें।

अमर॰ गु॰ जो न मरे, ना॰ पु॰ देवता, निरङ्कार, अवि-नाशी।

अमरपुर॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा दे[वता] का नगर विशेष इन्द्र, विष्णु, शिव, लोक, स्वर्ग।

अमरस॰ ना॰ स्त्री॰ आमका रस।

अमरावती॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्र-पुरी।

अमरीहत॰ ना॰ पु॰ कच[...]

अमर्याद०
अमर्यादा० } ना० स्त्री० अनीति, अवज्ञा, असन्मान।

अमल० गु० निर्मल, उजला, मादक वस्तु, राज्य।

अमलतास० ना० पु० बन्दरलाठी, औषधि विशेष।

अमात्य० ना० पु० मन्त्री, दीवान।

अमान० गु० सीधे स्वभाव, मान रहित।

अमाना० अ० क्रि० समाना, भरना, खपना।

अमान्य० गु० जो मानने के योग्य नहीं है।

अमानुष० गु० मनुष्यता रहित, विना मनुष्य।

अमावस०
अमावस्या०
अमावास्या० } ना० स्त्री० कृष्ण पक्ष की समाप्ति की। तिथि, वदी १५

अमार्ष०
अमर्ष० } गु० ईर्षा रहित, अक्रोध।

अमिट० गु० जो मिट न जावे, वा मेटा न जासके।

अमित० गु० जो नापा नहीं गया, बहुत।

अमिय० ना० पु० अमृत, आबहयात।

अमियमूरि० ना० स्त्री० सजीवन बूटी।

अमिल० गु० खट्टा, जो न मिले।

अमी० ना० पु० अमृत।

अमुक० सर्व० कोई, वह, अमका, फलाना।

अमूल० गु० जिसकी जड़ नहीं है।

अमृत० ना० पु० पीयूष, सुधा, विष, पानी, देवता, गु० जो न मरे।

अमृतफल० ना० पु० आंवला।

अमृतवल्लरी० ना० स्त्री० गुरच, गिलोय।

अमृता॰ना॰ स्त्री॰ हर्र, गुरच, फटकरी, नाम-चन्द्रमा की एक कला का ।

अमृताह्व॰ना॰ पु॰ ख़रबूज़ा, यथा अमृताह्वो दशाङ्गुलो, इति निघण्ट: ।

अमृतेश॰ना॰पु॰ देवता, इन्द्र ।

अमेध्य॰ना॰ पु॰ विष्टा, मल ।

अमेय॰गु॰ अप्रमाण, यथा श्री भगवान्, जिसका प्रमाण कोई न जान सके ।

अमोघ॰गु॰ जो व्यर्थ नहीं, सफल, अचूक, फलदाता, ना॰स्त्री॰ नदी विशेष ।

अमोघा॰ना॰ स्त्री॰ हर्र ।

अमोल॰गु॰ मोल रहित, अपूर्व वस्तु, बेक़ीमत ।

अम्बत॰गु॰ खट्टा ।

अम्बक॰ना॰ पु॰ नेत्र, आंख, यथा त्र्यम्बक, अर्थात् त्रिनयन, शिव ।

अम्बर॰ना॰ पु॰ आदर, आकाश, वस्त्र ।

अम्बरमणि॰ना॰ पु॰ सूर्य ।

अम्बरा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती ।

अम्बरीष॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष ।

अम्बष्टकी॰ ना॰ स्त्री॰ माई औषधि ।

अम्बा॰ना॰स्त्री॰ माता, महतारी ।

अम्बारी॰ना॰ स्त्री॰ हाथी पर का आसन विशेष ।

अम्बिका॰ना॰स्त्री॰ माई औषधि, माता, देवी, पार्वती ।

अम्बिष्ठा॰ना॰स्त्री॰ रायलता,

अम्बु॰ना॰ पु॰ जल, पानी ।

अम्बुज॰ना॰ पु॰ कमल ।

अम्बुद॰ ना॰ पु॰ मेघ ।

अम्बुधि॰ना॰ पु॰ समुद्र ।

अम्बुपति॰ ना॰ पु॰ वरुणदेव।

अम्बुवल्लरी॰ ना॰ स्त्री॰ जल, पिप्पल।

अम्बुवह॰ ना॰ पु॰ मेघ।

अम्बुवासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मछली, कुम्भी।

अम्बुस्तृत्॰ ना॰ पु॰ मेघ।

अम्बुज॰ ना॰ पु॰ कमल।

अम्भफल॰ ना॰ पु॰ आवीसेव, यथा अम्भफलःचापःइति निघण्टः।

अम्भोज॰
अम्भोरुह॰ } ना॰ पु॰ कमल।

अम्मा॰ ना॰ स्त्री॰ माता, मा, चची, यह शब्द अरबी का है।

अम्र॰ ना॰ पु॰ अम्ब, आम।

अम्ल॰ गु॰ खट्टा, खटाई।

अम्लान॰ गु॰ निर्मल।

अम्लिका॰ ना॰ स्त्री॰ इमिली वृक्ष।

अम्लवेतस॰ ना॰ पु॰ अमल बेत।

अय॰ ना॰ पु॰ लोहा, रामायणे यथा-अयमय खगड्न जखमय अजहूं बूझ अबूझ।

अयं॰ अव्य॰ सर्व, यह।

अयन॰ ना॰ पु॰ वर्ष का आधा अर्थात् उत्तरायण वा दक्षिणायन, मार्ग, घर।

अयथार्थ॰ ना॰ पु॰ अन्याय, अन्धेर।

अयमात्मा॰ ना॰ पु॰ यह जीव।

अयान॰
अयाना॰ } गु॰ भोला, नादान, मूर्ख।

अयुक्त॰ गु॰ अनुचित, विना मेल।

अयुत॰ ना॰ पु॰ दश सहस्र, १००००।

अयोग्य॰ गु॰ अनुचित, असमर्थ, बेजा।

अयोध्या॰ ना॰ स्त्री॰ अवध की प्राचीन राजधानी जहां श्री रामावतार भया था।

अयोनि॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

अरगट॰ ना॰ पु॰ छुपाव, घूंघट।

अरगा॰ गु॰ अलग, भिन्न।

अरगाना॰ स॰ क्रि॰ अलगाना, अ॰ क्रि॰ अलग होना, ना॰ पु॰ चुपलगाना।

अरगानी॰ ना॰ स्त्री॰ चुप, चुपकी।

अरगे॰ अ॰ क्रि॰ हठ किया।

अरझना॰ अ॰ क्रि॰ उलझना, फसना।

अरणाता॰ ना॰ पु॰ देश विशेष।

अरणी॰ ना॰ स्त्री॰ अग्नि प्रचारक काष्ठ विशेष।

अरण्ड॰ ना॰ पु॰ रेंडी का वृक्ष, अण्ड वृक्ष।

अरण्य॰ ना॰ पु॰ जङ्गल, वन।

अरना॰ ना॰ पु॰ जङ्गली भैंसा।

अरनी॰ ना॰ स्त्री॰ जङ्गली भैंस।

अरबराना॰ अ॰ क्रि॰ घबराना, हरबराना।

अरराना॰ अ॰ क्रि॰ विनारोक गिरने का शब्द।

अरराय॰ गु॰ विनारोक, विना सहारा।

अरलू॰ ना॰ पु॰ स्योना वृक्ष।

अरविन्द॰ ना॰ पु॰ कमल।

अराजक॰ गु॰ राजाविनादेश।

अरि॰ ना॰ पु॰ वैरी, शत्रु, दुश्मन।

अरिल॰ ना॰ पु॰ छन्द विशेष,

अरिष्ट॰ ना॰ पु॰ अशुभ, मृत्यु दायक, रोग, नीब वृक्ष।

अरिष्टक॰ ना॰ पु॰ रीठा।

अरिहा॰ ना॰ पु॰ शत्रुनाशक, शत्रुघ्न।

अरी॰ अव्य॰ स्त्रीका सम्बोधन ।

अरु॰ अव्य॰ और, पुनः, ना॰ पु॰ कुल्हड़ा ।

अरुचि॰ ना॰ स्त्री॰ मतलाई, अनिच्छा ।

अरुण॰ ना॰ पु॰ लालरङ्ग, सूर्य, लाल अरयड, सूर्य का सारथी ।

अरुणचूड़॰ }
अरुणशिखा॰ } ना॰ पु॰ मुर्गा ।

अरुणा॰ ना॰ स्त्री॰ जपापुष्प, गुड़हल का फूल ।

अरुणाई॰ ना॰ स्त्री॰ लाली ।

अरुणारे॰ गु॰ लाल ।

अरुणोदय॰ ना॰ पु॰ सूर्योदय के पहिले दो मुहूर्त, सूर्योदय ।

अरुष्क॰ ना॰ पु॰ भिलावां ।

अरे॰ अव्य॰ नीचनरका सम्बोधन, गु॰ अड़ा, हठा ।

अरेव॰ ना॰ पु॰ अपराध ।

अरोग॰ गु॰ भलाचङ्गा, रोग रहित ।

अरोग्यशिवी॰ ना॰ स्त्री॰ किरवाली ।

अर्क॰ ना॰ पु॰ सूर्य, मदारवृक्ष, स्फटिक ।

अर्कपुष्पी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंधाहोली ।

अर्कविषदा॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ी कटाई ।

अर्गजा॰ ना॰ पु॰ सुगन्धि, द्रव्य विशेष ।

अर्गजी॰ गु॰ जो अर्गजे से रंगा गया ।

अर्घ॰ ना॰ पु॰ पूजा करने की एकरीति, आठ वस्तु को मिलाय के ईश्वर हेत अर्पण, सूर्य की पूजा करके जलदेना, मोल ।

अर्घा॰ ना॰ पु॰ पात्र विशेष जिसमें देवता को स्नान कराते हैं वा जलदेते हैं

अर्चक० गु० पुजारी।

अर्चन०) स० क्रि० आराधना,
अर्चना०) पूजा करना।

अर्चा० ना० स्त्री० पूजा।

अर्चि० ना० पु० आंच, टेम, ज्योति, चमक।

अर्चित० गु० पूजित।

अर्जन० ना० पु० उपार्जन, कमाई, प्राप्ति।

अर्जना० स० क्रि० कमाना, उपार्जन करना।

अर्जुन० ना० पु० वृक्ष विशेष, सफ़ेद, सुवर्ण, सहस्र बाहु, पाण्डु का तीसरा पुत्र, ककुभ वृक्ष, धवल।

अर्णव० ना० पु० सागर, समुद्र।

अर्थ० ना० पु० अभिप्राय, निमित्त, तात्पर्य्य, धन, दौलत, माने, मतलब।

अर्थशास्त्र० ना० पु० धन के उपार्जन करने का शास्त्र, नीतिशास्त्र।

अर्थसाधन० ना० पु० रीठा, अर्थ का ठीक करना।

अर्थात्० अव्य० जाने, अर्थयह, यानी।

अर्थानुरोध० ना० पु० नाम के अनुरूप होना, अर्थ के अनुरूप।

अर्थान्तर० ना० पु० दूसरा अर्थ।

अर्थी० गु० धनी, वादी, अर्थवक्ता, प्रयोजन युक्त, ना० पु० याचक, अरथी, ना० स्त्री० लाश, ताबूत, टिकटी।

अर्दावा० ना० पु० मोटा पिसान।

अर्द्ध० गु० आधा।

अर्द्धचन्द्र० ना० पु० आधा चन्द्रमा।

अर्द्धचन्द्रिका० गु० कालानिसेत, आधीचांदनी।

अर्द्धजल० गु० आधापानी मरणकाल।

अर्द्धरात्रि० ना० स्त्री० आधी राति।

अर्द्धाङ्ग० ना० पु० आधाशरीर, शीताङ्ग ।

अर्द्धाङ्गी० गु० शीताङ्गी, ना० स्त्री० पत्नी ।

अर्पण० ना० पु० दान, देवता को भेटदेना ।

अर्पना० स० क्रि० अर्पणकरना ।

अर्ब० ना० पु० सौ किरोड़-१०००००००००।

अर्बुद० ना० पु० दशकिरोड़, पर्वत विशेष ।

अर्भक० ना० पु० पुत्र, शिशुगर्भ ।

अर्यमा० ना० पु० सूर्य्य ।

अर्वाक्० गु० नीच, अग्र, पहिली ।

अर्घपर्श० ना० पु० शुद्धकरने के लिये जल छिड़कना, छूना ।

अर्हन्त० ना० पु० जैनी ।

अल० अव्य० अत्यर्थ, समर्थ, पूरण, ना० पु० आभरण, आलस, बङ्कतायत ।

अलक० ना० स्त्री० बालों की लट, घूंघर ।

अलक्त० ना० पु० कुसुम्भ, महावर युत ।

अलकावली० ना० स्त्री० एक ओरके बालों कीलटें ।

अलख० गु० अगोचर, अनदेखा, जो पहिचाना नजावे, यथा ईश्वर ।

अलग० गु० भिन्न, जुदा, लगाव नहीं ।

अलगनी० ना० स्त्री० रस्सी जिसपर कपड़े धरतेहैं ।

अलगर्द० ना० पु० पनिहां सांप, यथा अलगर्दो जलव्याल: इत्यमर: ।

अलगा० गु० भिन्न, निर्बन्ध ।

अलगाना० स० क्रि० जुदा करना, अ० क्रि० जुदा-होना, अलग होना ।

अलङ्कृत० गु० अलङ्कार युत, आभूषित ।

अलङ्कार० ना० पु० भूषण, गहना, और शास्त्र विशेष।

अलङ्ग० ना० स्त्री० ओर, पार।

अलभ्य० गु० जो मिलने के योग्य नहो।

अलम० अव्य० बहुत, ढेर।

अलम्बुषा० ना० स्त्री० स्वासा जो मुखसे निकलती है, ज्ञान सारावल्यां यथा मुखमधिअलम्बुषाविश्रामित कुहूलिङ्ग के देश विरामित।

अलवाई० गु० थोड़ेदिन की ब्यानी, राम चन्द्रिका यां यथा, ज्यों सुतको सुरभी अलवाई।

अलवेश० गु० बहुतायत, अतिशयालवेशःइत्यभिधानः।

अलस० ना० पु० आलस्य।

अलसाना० अ० क्रि० औंघना।

अलसी० ना० स्त्री० तीसी अतसी।

अलक्षण० ना० पु० दुष्टचिन्ह

अलात० ना० स्त्री० बनेठी।

अलान० ना० स्त्री० हाथीबांधने की ज़ञ्जीर जिसके आंदू कहते हैं।

अलाप० ना० पु० आलाप उच्चारण।

अलापना० स० क्रि० आलापना

अलाव० ना० पु० धूनी, कूरा

अलि० ना० पु० बिच्छू, भ्रमर वृश्चिक ना० स्त्री० सखी

अलिक० ना० पु० माथा, झूठ

अलिन० ना० पु० भ्रमर, ना० स्त्री० स्त्रियां।

अलिनी० ना० स्त्री० भ्रमरी भौंरी।

अली० ना० स्त्री० सखी दूती, सखी।

अलीक० ना० पु० झूठ, मिथ्या

अलीन॰ गु॰ अयोग्य, अनुचित, बेमेल।

अलीक॰ गु॰ अयोग्य, झूठ।

अलेख॰ गु॰ अत्यन्त, अगणित, बहुत।

अलैयाबलैया॰ ना॰ स्त्री॰ निछावर, और दीवाली में पूला जलाय के नचाना।

अलोन } अलोना } गु॰ लोन रहित, फीका।

अलोप॰ गु॰ छुपा, बिगाड़ा, नष्ट, प्रकट।

अलोपना॰ स॰ क्रि॰ छुपाना, गुप्तकरना।

अलोल॰ गु॰ अटल, थिर, ना॰ स्त्री॰ खेलकूद।

अलौकिक॰ गु॰ जो लौकिक नहीं है अर्थात् परलोक का, लोकातीत।

अल्प॰ गु॰ थोड़ा किञ्चित्।

अल्पतर॰ गु॰ बहुत थोड़ा।

अल्पधी॰ गु॰ लघुबुद्धी, ना समझ।

अल्पनिद्रा॰ गु॰ स्त्री॰ थोड़ा सोना।

अल्पज्ञ॰ गु॰ कमसमझ, थोड़ा-जानकार।

अल्लूक॰ ना॰ पु॰ आलूतरकारी।

अव॰ अव्य॰ जिस शब्दके प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी, भिन्नता, कभी फैलान का होता है, कभी नास्ति, कभी अनादर।

अवकाश॰ ना॰ पु॰ औसर, सावकाश।

अवकेशी॰ गु॰ बांझ।

अवगति॰ ना॰ स्त्री॰ ज्ञान, वा बुरीदशा।

अवगाह॰ ना॰ पु॰ अथाह।

अवगाहन॰ ना॰ पु॰ स्नान। तैरना, थाह लगाना।

अवगाहि॰ अ० क्रि० थाह-लगाके।

अवगीत॰ गु० निन्दित, दुष्ट, ना॰ पु० निन्दा, दोष।

अवगुण॰ ना॰ पु० खोंट, दोष।

अवघट॰ गु० कुघाट।

अवचट॰ गु॰ एक दृष्टि, एकाएक।

अवडेरि॰ अ० क्रि० बहकाय, धोखादेकर, रामायणे यथा, पञ्च कहैं शिवसती बिवाही, पुनिअवडेरि मराइनिताही।

अवतंस॰ ना० पु० पताका, शिरोमणि।

अवतरना॰ अ० क्रि० उतरना, प्रकटहोना।

अवतार॰ ना॰ पु० ईश्वर का मनुष्यादि के रूप से पृथ्वीतल पर प्रकाशित होना, जन्म।

अवतारिक॰ अवतारी॰ } गु० परमात्म ईश्वर अवता लेनेहारा, यथ राम, कृष्ण।

अवदात॰ गु० उज्ज्वल, उत्त सुन्दर।

अवदीच॰ ना० पु० गुजरात ब्राह्मणों की जाति।

अवध॰ अवधि॰ } ना० स्त्री० वचन मर्याद, सीमा, समय वा श्री आयोध्या ज वा उसके आर पास का देश प्रसिद्ध।

अवधान॰ गु० चौकस, साव-धान, ना० पु० चौक-साई, बचन।

अवध्य॰ गु० जो बध करने के योग्य नहीं है।

अवधूत॰ ना० पु० जोगी, शिव पूजक।

अवधूतनी॰ ना० स्त्री० जो-गिन्।

अवनी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, ज़मीन।

अवनीश॰ ना॰ पु॰ राजा, बादशाह।

अवन्तिका॰ }
अवन्ती॰ } ना॰ स्त्री॰ उज्जैन नगरी, नदीविशेष।

अवम्॰ ना॰ पु॰ तिथिक्षय, गु॰ नीच।

अवयव॰ ना॰ पु॰ अङ्ग वा शरीर का भाग।

अवराधक॰ गु॰ सेवक, ध्यानी।

अवराधित॰ गु॰ सेवित, ध्यान-किये गये।

अवराधना॰ स॰ क्रि॰ सेवा करना।

अवरुद्ध॰ बंधा हुआ।

अवरेखना॰ स॰ क्रि॰ लिखना, लकीर करना।

अवरेखी॰ स॰ क्रि॰ लिखी, लकीर की।

अवरोध॰ ना॰ पु॰ बन्ध, रोक, अटक।

अवलम्ब॰ ना॰ पु॰ आश्रय, आसरा, सहारा।

अवि॰ ना॰ पु॰ पर्वत, शेष, सूर्य, रक्षक।

अविलम्बित॰ }
अविलम्बी॰ } गु॰ आश्रित, ल-टकता, पम्पी

अविलरि॰ ना॰ स्त्री॰ पांति, पङ्क्ति, कतार।

अवलोकन॰ ना॰ पु॰ दर्शन, दृष्टि, देखाव।

अवलोकना॰ स॰ क्रि॰ देख-ना, ताकना।

अवश॰ गु॰ पराधीन, असमर्थ

अवशिष्ट॰ गु॰ शेष, उच्छिष्ट, बाक़ी।

अवशेष॰ ना॰ पु॰ शेषबचा, बाक़ी रहा।

अवशेषित॰ गु॰ जो बाक़ी र[हा] गया।

अवश्य अव्य० चाहिये, निश्चय कर्त्तव्य, ज़रूरी।

अवसर॰ ना० पु० सावकाश, घात, समय, मौक़ा, इत्तिफ़ाक़।

अवसान॰ ना० पु० अन्त, समाप्ति, आख़िर।

अवसेरि॰ ना॰ स्त्री० देर, राह देखना, वाट हेरना।

अवस्था॰ ना० स्त्री० दशा, उमर, हालत, और दुर्दशा।

अवज्ञा॰ ना० स्त्री० अपमान, निन्दा, अनादर, तुच्छ करना, आबरू उतारना।

अवाई॰ ना० स्त्री० नगिचाई, आमद।

अवाक्॰ ना० पु० गूंगा, मूक, मौनी।

अवाच्य॰ गु० अकथ्य, मौनी, निरर्थ, कुवच।

आवाधी॰ गु० स्त्री॰ सुखरूपी, वाधारहित।

अवाध्य॰ गु॰ बिना वाधा, अतर्क्य।

अवाध्योपकर्म॰ गु० वाधार-हितकर्म, अतर्ककर्म।

अवारी॰ ना० स्त्री० दुकान, पङ्क्ति, रामायणे यथा चारु बजारु बिचित्र अवारी, मणिमय बिधि जनु स्वकर संवारी, अ-स्वारी।

अवास॰ ना० पु० घर, मकान।

अविकल॰, **अविकलित॰** } गु० निश्चिन्त, आनन्द।

अविकार॰ ना० पु॰ विकार रहित।

अविकारी॰ गु॰ जन्मादिवि-कार रहित।

अविगत॰ गु० व्यापक।

अविगति॰ ना० स्त्री॰ ज्ञान।

अविचल॰ गु० अचल, थिर, क़ायम।

अविचार॰ ना० पु० भूल, अन्याय, नादानी।

अविचारी॰ गु० विचाररहित, अन्यायी।

अविदूरि॰ गु० पास, निकट।

अविद्या॰ ना॰ स्त्री० भूल, अज्ञानता, माया, विद्याहीन।

अविनय॰ गु॰ ढिठाई, चञ्चलाहट, गुस्ताख़ी।

अविनाश॰ ना० पु० नाश रहित, कुशल।

अविनाशी॰ गु० कुशल, जिसका नाश न होवे।

अविनीति॰ गु० चञ्चल, ढीठ।

अविन्दु॰ गु० विन्दु रहित।

अविरल॰ गु० निरन्तर, अभेद।

अविरोध॰ ना० पु० चैन, सुख, आनन्द, गु० विरोध रहित।

अविरोधिनी॰ ना० स्त्री०
अबिरोधी॰ ना० पु॰ } गु०
सुखी, बेखटके।

अविलम्ब॰ ना० पु० शीघ्रता, जल्दी, चल।

अविलम्बित॰ गु० शीघ्र, जल्द

अविवादी॰ गु० जो विवाद न करे, शान्त।

अविवेक॰ ना० पु० अविचार, अज्ञानता, गु० जोविवेक रहित हो।

अविवेकी॰ गु० विचार हीन, अज्ञानी।

अविशेष॰ गु० समान, जो विशेष नहीं।

अविश्वास॰ ना० पु० अप्रतीति, बेएतबार।

अविश्वासी॰ गु० जिसको प्रतीति नहीं वाजो किसी की प्रतीति न माने।

अविच्छीण॰ गु० निरन्तर, अखण्ड, पूरा।

अवेगी॰ ना० पु० बिधार औषधि गु॰ जो बेगतारहित हो

अवेर॰ ना० स्त्री॰ ढील, विलम्ब, कुसमय।

अबेला० ना० स्त्री० कुसमय, बेवक्त।

अव्यक्त० गु० जो व्यक्त नहीं अर्थात् मालूम नहीं।

अव्यय० ना० पु० स्वर्ग, अक्षर, गु० जो व्यय नहो, जिस शब्दकाकारकत्वन हो, कृपण।

अव्यवस्था० ना० स्त्री० जो शास्त्र से सम्मत नहीं है।

अव्यवस्थित० गु० जो ठीक नहीं है।

अव्यवहारित० गु० त्यागित, छोड़ा हुआ।

अव्यवहित० गु० मिला, व्यवधान रहित।

अव्याप्ति० ना० स्त्री० लक्ष्य में लक्षणका जोनहींजाना, प्रकटमें प्रकटता रहित।

अव्याहत० गु० बिनरोक, मायानित, रामायणे यथा अव्याहत गति शम्भु प्रसादा।

अशकुन० ना० पु० अपशकुन, बुरा शगुन।

अशकुनी० गु० अपशकुनी, बुरेलक्षणयुत।

अशक्त० गु० निर्बल, लाचार, असमर्थ।

अशक्ति० गु० निर्बल, असमर्थता, शक्ति रहित देव।

अशक्य० गु० असाध्य, शक्यता रहित।

अशङ्क } गु० निर्भय, निडर,
अशङ्का } बेखौफ़।

अशन० ना० पु० भोजन, खाना।

अशनि० ना० पु० वज्र।

अशरण० गु० रक्षा रहित, पनाह नहीं।

अशास्त्र० गु० जो शास्त्र से बाहर है।

अशास्त्रीय० गु० जो शास्त्र में उक्त नहीं है।

अशिव० गु० मङ्गल रहित अशुभ।

अशिष्ट० गु० जिसका व्यवहार निन्दित है।

अशुक० गु० अशोक, अदुःख।

अशुचि० गु० अपवित्र, अशुद्ध, नापाक।

अशुद्ध० गु० अपवित्र, जोठीक नहीं है, ग़लत।

अशुद्धता० ना० स्त्री० अपवित्रता, चूक, भूल।

अशुभ० गु० अमङ्गल, जो अच्छा नहो, ना० पु० पाप, दोष।

अशेष० गु० सम्पूर्ण, सारा, समस्त, सब।

अशोक० ना० पु० वृक्ष विशेष, सुख, चैन।

अशोभा० गु० अनगढ़, कुरूप, ना० स्त्री० सुन्दरता रहित, शोभा हीन।

अशौच० गु० नापाक, अशुद्ध।

अश्म० ना० पु० पत्थर।

अश्मरी० ना० स्त्री० पथरी, वा मूत्र कृच्छ्ररोग।

अश्मभेद० ना० पु० पाषाणभेद।

अश्रद्धा० ना० स्त्री० घिन, चिढ़ अविश्वास।

अश्रु० ना० पु० आंसू।

अश्रुपात० ना० पु० आंसुओं का गिरना।

अश्लेषा० ना० स्त्री० श्लेषा, नवां नक्षत्र।

अश्व० ना० स्त्री० घोड़ा।

अश्वगन्धा० ना० स्त्री० असगन्ध औषधि।

अश्वतर० ना० पु० खच्चर।

अश्वत्थ० ना० पु० पीपलवृक्ष।

अश्वपति० ना० पु० वहराजा जिनके पास बहुत घोड़े वा घुड़ चढ़े हों।

अश्वमेध० ना० पु० यज्ञविशेष यह यज्ञ राजा धिराज करसक्ता है, जोजगत जीतहो।

अश्वयुज० ना० पु० कुंवारमास।

अश्वरक्षक० ना० पु० साईस।

अश्ववार० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।

अश्वशाला० ना० स्त्री० तबेला० घुड़साल।

अश्वहा० ना० स्त्री० कनेर वृक्ष।

अश्वा० ना० स्त्री० असगन्ध।

अश्वारूढ़० ना० पु० असवार, सवार, घुड़चढ़ा।

अश्विनी० ना० स्त्री० प्रथम नक्षत्र।

अषय० गु० जिसका क्षय नहो, अमिट।

अषयबट० ना० पु० वह बरगद जो प्रयाग में है।

अषाढ़० ना० पु० चतुर्थमास, आषाढ़, असाढ़।

अष्ट० ना० पु० आठ ८।

अष्टकुरीसर्प० ना० पु० आठकुरी सांपों की अर्थात् अनन्त १ वासुकि २ तक्षक ३ कर्कोटक ४ शङ्ख ५ कुलिक ६ पद्मक ७ महापद्मक ८।

अष्टकोण० ना० पु० आठकोने।

अष्टचत्वारिंशत्० गु० अठतालीस ४८।

अष्टदिशाग्रह० ना पु० आठों दिशा के ग्रह अर्थात् सूर्य, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनैश्चर, चन्द्रमा, बुध, गुरु।

अष्टधातु० ना० पु० आठधातु अर्थात् सोना, रूपा, तांबा, पीतल, रांगा, कांसा, सीसा, लोहा।

अष्टपञ्चाशत्० गु० अट्ठावन ५८।

अष्टप्रहर० गु० आठपहर, दिन राति।

अष्टभैरव० ना० पु० आठ भैरव अर्थात् असिताङ्ग, रुरु, चण्ड, उन्मत्त, क्रोध, कपाली, भीषण, काल।

अष्टम० गु० आठवां।

अष्टमांश० ना० पु० आठवां भाग $\frac{1}{8}$।

अष्टमी० ना० स्त्री० आठवीं तिथि, आठैं।

अष्टवसु० ना० पु० आठवसु अर्थात् आप, ध्रुव, सोम, धर, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभावन्त।

अष्टविंशकुलक्षण० ना० पु० अट्ठाईस कुलक्षण अर्थात् काम १ क्रोध २ क्रियाहत ३ दुर्वाद ४ लोभ ५ लम्पटता ६ अलज्जा ७ अविद्या ८ अशोभा ९ आलस्य १० अति निद्रा ११ दुष्टता १२ अदया १३ कृपणता १४ दरिद्रता १५ रोग १६ मलिनता १७ कुपात्रदान १८ अबूझता १९ भोग्यता २० अत्याहार २१ अहङ्कार २२ अदृढ़ता २३ कुदान २४ दुर्भावता २५ अप्रतीति २६ मोह २७ व्यङ्ग्यवाक्यता २८।

अष्टविंशति० गु० अट्ठाईस २८।

अष्टसिद्धि० ना० स्त्री आठसिद्धि अर्थात् अणिमा १ महिमा २ गरिमा ३ लघिमा ४ प्राप्ति ५ प्रकाम ६ वशीकरण ७ ईशता ८।

अष्टाङ्गप्रणाम, वा दण्डवत० ना० पु० स्त्री० आठ अङ्ग से प्रणाम अर्थात् उर, शिर, दृष्टि, मन वचन, पद, कर, जानु से नमस्कार करना।

अष्टाङ्गयोग० ना० पु० योग के आठ अङ्ग अर्थात् यम १ संयम २ आसन ३ प्राणायाम ४ प्रत्याहार ५ धारणा ६ ध्यान ७ समाधि ८ ।

अष्टादश० ना० पु० अठारह १८

अष्टादशपुराण० ना० पु० अठारहपुराण अर्थात् भागवत १ भविष्य २ मार्कण्डेय ३ मत्स्य ४ ब्रह्माण्ड ५ ब्रह्म ६ ब्रह्मवैवर्त्त ७ विष्णु ८ वायु ९ वामन १० वराह ११ अग्नि १२ नारद १३ पद्म १४ कूर्म १५ स्कन्द १६ लिङ्ग १७ गरुड़ १८ ।

अष्टादशस्मृति० ना० स्त्री० अठारह स्मृति अर्थात्, मनु १ अत्रि २ विष्णु ३ याज्ञवल्क्य ४ हारीत ५ उशना ६ अङ्गिरा ७ आपस्तम्ब संवर्त्त ९ यम १० कात्यायन ११ बृहस्पति १२ पाराशर १३ व्यास १४ शङ्खलिखित १५ गौतम १६ वशिष्ठ १७ दक्ष १८ ।

अष्टापद० ना० पु० कञ्चन सुवर्ण, पशु ।

अष्टाशीति० गु० अस्सी ८०

असङ्ख्य० / **असङ्ख्यात०** } गु० अगणित बे शुमार बहुत ।

असंशय० ना० पु० निश्चय, निस्सन्देह ।

असकति० ना० स्त्री० आलस्य

असकती० गु० आलसी ।

असगन्ध० ना० पु० औषधिविशेष

असङ्गत० गु० मिथ्या, अनुचित, अनर्थ ।

असज्जन० गु० कुपात्र, नीच, दुष्ट ।

असत्० गु० असाधु, अधर्मी ।

असन० ना० पु० भोजन, खाना, वृक्ष विशेष ।

असनि० ना० पु० वज्र ।

असन्तान० गु० पुत्रहीन, निर्वंश ।

असन्तुष्ट० गु० अप्रसन्न, धीरज रहित ।

असन्तोष० गु० अधीरजता ।

असभ्य० गु० जो सभाके योग्य नहीं, दुष्ट, गवांर ।

असभ्यता० ना० स्त्री० दुष्टता, असज्जनता, गवांरपन, बद्दशत ।

असम० गु० जो बराबर नहो, विषम ।

असमञ्जस० ना० पु० दुविधा, सन्देह, बिनुलगाव ।

असमय० गु० अकाल, बिपतिकाल ।

असमर्थ० गु० जोसमर्थ नहो, निर्बल ।

असमशर० ना० पु० कामदेव ।

असम्पूर्ण० गु० जो पूरा नहो ।

असम्बन्ध० गु० अनमेल, अनर्थ ।

असम्भव० गु० अनहोना, जो नहोसके ।

असम्मत० गु० विरुद्ध, बेसलाह ।

असह्य० } गु० जो सहा न जावे, कठिन ।
असह्य० }

असाधि० गु० जो दूर नहोसके रामायणे यथा, देखी व्याधि असाधि बड़ि ।

असाधु० गु० अधर्मी, दुष्टमति, कमीना ।

असाध्य० गु० जो कामसिद्ध न हो सके, रोगी जो जीवै नहीं ।

असामर्थ० } ना० पु० कुछ सामर्थ नहीं, लाचार ।
असामर्थ्य० } गु० कुछ सामर्थ नहीं रखता ।

असार० गु० छूंछा, पोला, सूखा, कच्चा काठ, बिनापौरुष, निर्बल ।

असि० ना० स्त्री० तलवार, अव्य० हे, ऐसे।
असिद्ध० गु० अनबना, अनपका, जो सिद्ध नहीं।
असिधेनुक० ना० स्त्री० छुरी।
असिनि० ना० स्त्री० तलवारें।
असिपत्री० ना० स्त्री० सेहुंड।
असिपुत्री० ना० स्त्री० छुरी, कटारी।
असिदंष्ट्रक० ना० पु० मगर, मच्छ।
असीम० गु० सीमा रहित अर्थात् अनन्त।
असीस० गु० शिररहित।
असीस० ना० पु० आशीर्वाद, दुआ।
असु० ना० पु० पञ्च प्राण, जीव, शोच।
असुग० ना० पु० किरण, वाण।
असुर० ना० पु० दैत्य, राक्षस।
असुरविनायक० ना० पु० वाणासुर।
असुरारि० ना० पु० देवता, श्रीराम कृष्णादि।
असुहर० गु० प्राणहर, मारने वाला।
असूभ० गु० अदृश्य, निरूप।
असूया० ना० स्त्री० कलङ्क, दोष।
असों० अव्य० यह वर्ष, इस वर्ष।
असोक० ना० पु० अशोक।
असोच० गु० अचेत, जो विद्या वा विचार से न हो सके, जो पछिताने के योग्य नहीं।
असोची० गु० निर्मोही, प्रमादी।
असोस० ना० स्त्री० सूखी नदी।
असौ० अव्य० यह।
असौंध० ना० स्त्री० कुवास, बदबूय।
अस्त० ना० पु० छिपाव, छुपना।
अस्तव्यस्त० गु० भिन्न भिन्न उलटा पुलटा, बेमेल।

अस्ताचल० ना० पु० वह पर्वत विशेष जहांसूर्य नारायण अस्त होतेहैं ।

अस्तित्व० ना० पु० मौजूदगी ।

अस्थि० ना० पु० हाड़, हड्डी ।

अस्थिमात्र० गु० हड्डीभर ।

अस्थिर० गु० चञ्चल, चलायमान ।

अस्थिरता० ना० स्त्री चञ्चलाहट, थिरताहीन ।

अस्थिशृङ्खला० } ना० स्त्री०
अस्थिसंहार० } हरसिंघाड़ ।

अस्थूल० ना० पु० सूक्ष्म, न्यून ।

अस्थूलभटा० ना० स्त्री० बड़ीकटाई ।

अस्मसार० ना० पु० लोहा ।

अस्वच्छन्द० } गु० आधीन, प-
अस्वतन्त्र० } राधीन, जो अपने वशमें नहींहै ।

अस्वत्थामा० ना० पु० द्रोणाचार्य्यका पुत्र ।

अस्वीकार० ना० पु० नामंज़ूर, अङ्गीकार नहीं ।

अस्सी० गु० असी ८० ।

अस्त्र० ना पु० जिसको फेंक के मारते हैं यथा बाण आदि ।

अह० ना० पु० दिन, अहङ्कार, कष्ट ।

अहं० सर्व, मैं, हम, निज का बोधक ।

अहङ्कार० ना० पु० गर्व, मद, घमण्ड ।

अहङ्कारी० } गु० अभिमानी,
अहङ्कृत० } दम्भी, मग़रूर ।

अहमित० गु० अहङ्कार युक्त, मग़रूर ।

अहरेणुका० ना० स्त्री रेणुका, बालू, ।

अहर्निश॰ ना॰ पु॰ राति दिन ।

अहलाद॰ ना॰ पु॰ प्रेम, अनुराग ।

अहल्या॰ ना॰ स्त्री॰ गौतमजी की स्त्री ।

अहह॰ अव्य॰ आर्त शब्द यथा हाय हाय ।

अहार॰ ना॰ पु॰ आहार, कलेज, लेई ।

अहारना॰ स॰ क्रि॰ मंडयाना, चिपकाना, लेई-लगाना, जमाना ।

अहारी॰ गु॰ खानेवाला, छांटीहुईलकड़ी, कोईवस्तु जो मंडियाई गई, ना॰ स्त्री॰ कोयल पक्षी ।

अहि॰ ना॰ पु॰ सांप, रुधिर, दैत्यविशेष ।

अहिंसक॰ गु॰ भोला, साधु, जो हिंसा न करे ।

अहित॰ ना॰ पु॰ शत्रु, वै[illegible] शत्रुता ।

अहिफेन॰ ना॰ स्त्री॰ अफ़यू[illegible] अफ़ीम ।

अहिमाली॰ ना॰ पु॰ [illegible] महादेवजी ।

अहिर॰ ना॰ पु॰ मोरपक्ष[illegible] जातिविशेष ।

अहिवल्लरी॰ ना॰ स्त्री॰ ना[illegible] बेलि, पान आदि ।

अहिवात॰ ना॰ पु॰ सुहा[illegible] स्त्रीका ।

अहिवेलि॰ ना॰ स्त्री॰ ना[illegible] बेलि, पान आदि ।

अहीर॰ ना॰ पु॰ ग्वाल[illegible] आभीर ।

अहीरणी॰ ना॰ स्त्री॰ ग्वा[illegible] लिन ।

अहीला॰ गु॰ साहसी, निडर[illegible] बहादुर ।

अहीश॰ ना॰ पु॰ शेषादि[illegible] सर्पादि ।

अहे० अव्य० सम्बोधन, ये ।

अहेर० ना० स्त्री० आखेट, शिकार ।

अहेरिया०, अहेरी० } गु० आखेटकी, शिकारी ।

अहो० अव्य० सम्बोधन वा आश्चर्य वा हर्ष में बोला जाता है, यथा अहो भाग्य ।

अहोरात्र० ना० पु० दिन राति ।

अहौ० अव्य० हो ।

अक्ष० ना० पु० नेत्र, बहेराटक्ष, पांसा ।

अक्षत० ना० पु० चावल, जव पूजा आदि के गु० घाव रहित, फोड़ा रहित ।

अक्षर० ना० पु० ककारादि वर्ण, गु० सूक्ष्म, अविनाशी ।

अक्षविद्या० ना० स्त्री० रमल ।

अक्षविद्वान्० गु० रम्माल, पांसावाला ।

अक्षांश० ना० पु० रेखा, भूमि के उत्तर वा दक्षिण केन्द्र तक नक्षत्र अंश ।

अक्षि० ना० पु० नेत्र, आंखि ।

अक्षिसङ्केत० ना० पु० आंखिसे इशारः करना, कटाक्ष, हावभाव ।

अक्षुब्ध० गु० स्थिर, शान्त ।

अक्षौहिणी० ना० स्त्री० सैन प्रमाण, इसका कथन कई प्रकार का है । यथा

नवनाग सहस्राणि नागे नागे शतं रथाः रथे रथे शतश्चा श्वाश्वे अश्वे शतन्नराः ।

अथवा दश वाहनी अथवा १०९३५० पैदल, ६५६१० सवार, २१८७० रथ, २१८७० हाथी ।

अत्र० अव्य० यहां, इसजगह ।

अत्रि० ना० पु० चन्द्रमा के पिता, मुनि विशेष ।

अत्रिज०ना० पु० चन्द्रमा, दुर्वासा, दत्तात्रेय।
अज्ञ०गु० मूर्ख, अजान, नादान।
अज्ञता०ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।
अज्ञात०गु० अनजान, ना मालूम।
अज्ञाता०गु० मूर्ख, भोला, नादान।
अज्ञान०गु० मूर्ख, मूर्खता।
अज्ञानता०ना० स्त्री० मूर्खता, नादानी।

[आ]

आ०अव्य० जिस शब्दके प्रथम में यह संयुक्त होता है उसका अर्थ न्यून वा उलटा होजाता है और कभी क्रिया के अवधिका ज्ञापक होता है।
आं०अव्य० खेदोक्तिका सूचक शब्द।
आंक०ना० पु० अङ्क, चिन्ह मदार।
आंकना०स० क्रि० लखना अङ्कना।
आंख०ना० स्त्री० चक्षु, नेत्र
आंग०ना० पु० अङ्ग।
आंगन० }
आंगना० } ना० पु० अंगना, सहन।
आंच०स्त्री० अग्निकीताप।
आंचर० }
आंचल० } ना० पु० अञ्चला
आंझू०ना० पु० आंसू।
आंट०ना० स्त्री० गांठि, विरु- द्धता, ताक
आंटना०अ० क्रि० समाना, पहुंचना।
आंटी०ना० स्त्री० फेंटी, अंटिया
आंड०ना० पु० वृषण, अण्ड
आंत०ना० स्त्री० आंतड़ी।
आंधी०ना० स्त्री० झकड़, झंझावायु।

आंब० ना० पु० आम्र ।

आम० } ना० पु० पेट में रोग
आंव० } विशेष, आम्र, आमाशय ।

आंवला० ना० पु० वृक्ष वा फल विशेष ।

आंसू० ना० पु० आंखों का पानी ।

आक० ना० पु० अर्क, मदार ।

आकर० ना० स्त्री० खानि अर्थात् धातु वा रत्नादि के उत्पन्न होने का स्थान ।

आकरीय० गु० जो खान से उत्पन्न हो ।

आकर्षण० ना० पु० बलसे खींचना ।

आकर्षित० गु० जो खींचा गया ।

आकांक्षा० ना० स्त्री० वाञ्छा, इच्छा, चाह ।

आकांक्षित० गु० वाञ्छित, चाहित ।

आकांक्षी० गु० इच्छा करने वाला, चाहक ।

आकार० ना० पु० स्वरूप, डौल, सैन, सूरति ।

आकारान्त० गु० जिसके अन्त में आकार होवे ।

आकाश० ना० पु० गगन, आस्मान, अम्बर ।

आकाशपवन० ना० पु० लता विशेष आकाश बेलि वा आकाश का पवन ।

आकाशवाणी० ना० स्त्री० वाणी जो आकाश से होती है ।

आकाशविलाशी० ना० पु० देवता, नक्षत्र, गु० जो आकाश में विलाश करे यथा पक्षी ।

आकाशबेलि० ना० स्त्री० अमरबेलि ।

आकाशी० गु० आकाश का, स्वर्गीय।

आकुल०गु० व्याकुल,कातर।

आकृति०ना० स्त्री० रूप,आकार, सूरति, डौल।

आकृष्ट० गु० खींचाहुआ।

आक्रम० ना० पु० बलको प्रकाश करके किसी काम में दूसरे से अधिक होना, चढ़ाव।

आखण्डल०ना० पु० इन्द्र।

आखण्डलपुर०ना०पु०इन्द्रलोक, स्वर्ग।

आखत०ना० पु० अक्षत।

आखा०ना०पु० बारा, गठिया, चलनी।

आखात०ना० पु० खलीन।

आखु०
आखुक० } ना०पु०मूश,चूहा।

आखेट०ना० पु० अहेर, शिकार, मृगया।

आखेटकी० गु० शिकारी अहेरी।

आख्या०ना० स्त्री० संज्ञा,नाम

आग०ना० पु० अग्नि।

आगत०गु० उपस्थित।

आगम०ना० पु० वेदवाशिवोक्त शास्त्र विशेष भविष्यत वा० ई अवाई।

आगमन०ना०पु०अवाई,आन

आगमवक्ता० ना० पु० शिव गु० जो आगमकी बात बदे वा आगम क पाठक होवे।

आगमविद्या० ना० स्त्री आगम कहने की विद्या

आगमज्ञानी०ना० पु० तान्त्रिक, जो आगम के जानता होवे।

आगर०ना०पु०अधिक वा घर

आगरा०ना०पु० नगर विशेष

आगरी०ना० स्त्री० कोठरी

आगलान्त॰ अव्य॰ गलेलग ।

आगा॰ ना॰ पु॰ सामना, अगवाड़ा ।

आगामी॰ गु॰ आनेहारा, अवैया ।

आगार॰ ना॰ पु॰ घर, मकान ।

आगिल॰ गु॰ पहिला ।

आगू॰ } अव्य॰ सामने, बढ़िके,
आगे॰ } अग्रे ।

आगोट॰ ना॰ स्त्री॰ चौकसी, क़ैद ।

आग्रह॰ ना॰ पु॰ उपकार, जहालत ग्रहण ।

आघात॰ ना॰ पु॰ चोट, मारपीट ।

आघार॰ ना॰ पु॰ घृत, घी, छिड़काव ।

आघु॰ ना॰ पु॰ मोल, मर्य्याद, यथा बिहारी लाल सप्तश-तिकायां। दोहा। जन्म जल-धि पानिपविमलभोजग आ-घु अपार, रहे गुणी है गर-परे भलोन मुक्ताहार ।

आङ्गिरस॰ ना॰ पु॰ बृहस्पति ।

आचमन॰ ना॰ पु॰ आचमन, अर्थात् भोजन वा पूजा करने के पहिले थोड़ा जल हथेली में रखकेपी नावा कुल्लीकर्ना ।

आचरण॰ ना॰ पु॰ करतूत, चालि, व्यवहार, आचार, शास्त्रोक्तक्रिया ।

आचार॰ ना॰ पु॰ विचार-करना, पाखण्ड, परहेज़, खटाई फ़ारसी ।

आचारी॰ गु॰ जोमनुष्यशास्त्रो-क्तक्रियायत्न समेतकरे ।

आचार्य्य॰ ना॰ पु॰ वेद का उपदेशक, गुरु ।

आच्छादन॰ ना॰ पु॰ वस्त्र, ढकना, धोंधी, पोशाक ।

आच्छादित॰ गु॰ वस्त्र युत, ढकाभया ।

आछे॰ गु॰ अच्छे का बहुवाक्य ।

आज॰ अव्य, अद्य, इसरोज़ ।

आजनेय॰ ना॰ पु॰ घोडा, यथा, आजनेयाः कुलीनाः स्युर्विनीताः साधु वाहिनः इत्यमरः ।

आजा॰ ना॰ पु॰ दादा, पिता का पिता ।

आजाना॰ अ॰ क्रि॰ अचानक आना, पड़ना ।

आजि॰ ना॰ पु॰ युद्ध, समर, लड़ाई ।

आजीव॰ ना॰ पु॰ } जीविका
आजीविका॰ स्त्री॰ } निर्वाह, मआश ।

आटना॰ स॰ क्रि॰ भरना ।

आटा॰ ना॰ पु॰ चोस, सूजी, पिसान ।

आठको॰ ना॰ पु॰ तिल जिनमें से तेल निकलता है ।

आड॰ ना॰ स्त्री॰ ओट, परदा ।

आडना॰ स॰ क्रि॰ ओटकर्ना, आड़ देना ।

आडम्बर॰ ना॰ पु॰ उद्योग, अभिमान, हर्ष ।

आडा॰ गु॰ तिरछा, टेढ़ा ।

आडी॰ ना॰ पु॰ रक्षक, ना॰ स्त्री॰ गाने में स्वरविशेष, टेढ़ी, तिरछी, बेंडी ।

आडेआना॰ अ॰ क्रि॰ रक्षाकर्ना, बचाव होना ।

आढ्य॰ गु॰ धनाढ्य, धनी, स्वामी ।

आतङ्क॰ ना॰ पु॰ भय, भीत, दुःख, ठाठ, डर, प्रताप, दूबरत ।

आततायी॰ गु॰ डकैत, हत्यारा, परस्त्री हारक ।

आतप॰ ना॰ पु॰ घाम, धूप ।

आतपत्र॰ ना॰ पु॰ छत्र ।

आतपी॰ गु॰ धूपसे विकल ।

आता॰ ना॰ पु॰ सीताफल ।

आतिथेय० } गु० अतिथिका सत्कारकरना, अतिथि पालन, मेजवानी।
आतिथ्य० }

आतुर०गु० दुखी, रोगी, व्याकुल, घाबरा।

आतू०ना० स्त्री० गुरुवायिन्।

आत्मघात०ना० पु० अपनी हत्या, निजघात।

आत्मघाती०गु० निज जीव हन्ता, अधर्मी, जीव को दुखदाता।

आत्मज०ना०पु०पुच, लड़का।

आत्मनामी०गु० जो आप से प्रसिद्ध है।

आत्मपालक०गु० आप स्वार्थी, आपकाजी।

आत्मभू०ना० पु० ब्रह्मा।

आत्ममाच० ना० पु० समस्त जीव,जीवभर।

आत्मरचा०ना० स्त्री० निज जीव की रचा, दुन्द्रवारुणी औषधि।

आत्मरचक०गु० निज जीव पालक।

आत्मस्लाघा०ना० स्त्री निज मुख से अपनी बड़ाई।

आत्महा०गु०निज जीवघाती, धर्मरहित।

आत्मा०ना० पु० स्त्री० जीव, मन, बुद्धि, देह, स्वभाव, धन, अन्तर, अहङ्कार, आप।

आत्मिक०गु० मनका, अपना।

आत्मिकता०ना०स्त्री०अपनाहत।

आत्मीय०गु० आत्मिक,अपना।

आदर०ना० पु० सत्कार, सन्मान, प्रेम से लेना।

आदरार्थ० गु जिसमें आदर पाया जाता है।

आदर्श० } ना० पु० दर्पण, टीका।
आदर्शन० }

आद्रक०ना० स्त्री० अदरक।

आदान०ना० पु० लेना।

आदि॰गु॰ पहिला, जड़ वगैरह, शुरूअ।

आदिअन्त॰गु॰ आरम्भ से समाप्तितक, वा आदि और अन्त, आद्यन्त।

आदिक॰अव्य॰ इत्यादि और सब।

आदित॰ } ना॰ पु॰ सूर्य।
आदित्य॰ }

आदित्यवार॰ना॰ पु॰ प्रथम दिन, इतवार।

आदित्यहृदय॰ना॰पु॰ ग्रन्थ विशेष।

आदितेय॰ना॰ पु॰ देवता, अदितिजात।

आदेश॰ना॰ पु॰ आज्ञा, अनुमति, योगी लोगों का प्रणाम, व्याकरण में एक अक्षर को दूसरे अक्षर से बदलने को कहते हैं।

आदौ॰अव्य॰ प्रथम, पहिले।

आद्य॰गु॰ पहिला, प्रथमका।

आद्योपान्त॰गु॰ पूरा, सब, समस्त।

आधुनिक॰ गु॰ इसकालका।

आधर्ष॰ ना॰ पु॰ भय, डर, कठिन।

आधा॰गु॰ अर्द्ध, $\frac{1}{2}$।

आधान॰ ना॰ पु॰ गभ, गर्भ का धारण।

आधार॰ना॰ पु॰ प्रतिपालक, अधिकरण, सहारा, योगमें एक चक्र का नाम।

आधारी॰गु॰ सहारा पाने वाला।

आधासीसी॰ना॰स्त्री॰अधकपाली।

आधि॰ना॰ स्त्री॰ मनकी पीड़ा, उदासी।

आधिक्य॰ना॰ पु॰ बढ़ती, अतिशयता।

आधिपत्य॰ना॰ पु॰ ऐश्वर्य्य, स्वामित्व।

आधीन० गु० वश, आज्ञाकारी, ताबेदार।

आधीनता० } ना० स्त्री० नम्रता, आज्ञाको पालन करना, लल्लोपत्तो, ताबेदारी।
आधीनताई० }

आन० गु० और, अन्य, ना० स्त्री० आज्ञा, सङ्कोच, सौगन्द।

आनक० ना० पु० दुन्दुभी, डङ्का।

आनदेव० ना० पु० और देवता।

आनन० ना० पु० मुख, अव्य० और, नहीं।

आनना० स० क्रि० लाना।

आनन्द० ना० पु० } हर्ष, सुख, खुशी।
आनन्दता० स्त्री० }

आनन्दित० गु० खुश, हर्षित, निहाल।

आनन्दी० गु० सुखी, खुश।

आनव० } क्रि० लाऊंगा।
आनिहौं० }

आनुकूल्य० ना० पु० सहायता।

आनुपूर्वी० ना० स्त्री० मर्यादावधि, क्रम।

आनुमानिक० गु० युक्ति सिद्ध।

आन्ध्र० ना० पु० तैलङ्गदेश।

आप० ना० पु० पानी, सर्व० स्वकीय, निज।

आपकाज० ना० पु० अपना काम।

आपकाजी० गु० जो अपने काममें लगा रहता है।

आपण० ना० स्त्री० प्रण, शर्त।

आपत्ति० ना० स्त्री० विपत्ति, आफत, दोष।

आपद० } ना० स्त्री० विपति, अभाग, कठिनता।
आपदा० }

आपन्न० गु० प्राप्त, शरण्य, ग्रस्त, अभागा

आपपति॰ ना॰ पु॰ वरुण देवता।

आपरूप॰ गु॰ आप, विशेष ईश्वर।

आपस॰ सर्व॰ अपने, भाई बन्द।

आपस्तम्ब॰ ना॰ स्त्री॰ स्मृति विशेष।

आपाधान॰ ना॰ पु॰ युद्ध, समर।

आप्त॰ गु॰ जो विश्वास के योग्य है, प्राप्त, सच्चा।

आप्लुत॰ गु॰ जो नहाय चुका।

आफ़्रियो॰ स॰ क्रि॰ दिया, बख़्शा, यह शब्द अरबी का है।

आफू॰ } ना॰ स्त्री॰ अफ़ायून,
आफूक॰ } अफ़ीम।

आबाल॰ ना॰ पु॰ लड़का पन, बालकता।

आभरण॰ ना॰ पु॰ भूषण, गहना, ज़ेवर।

आभा॰ ना॰ स्त्री॰ भड़क, शोभा, चमक।

आभार॰ ना॰ पु॰ बोझ।

आभास॰ ना॰ पु॰ अभिप्राय, थोड़ा अंश, छेल विशेष।

आभीर॰ ना॰ पु॰ भीलादि, गोप, अहीर।

आभूषण॰ ना॰ पु॰ अलङ्कार, गहना।

आम॰ गु॰ ना॰ पु॰ कच्चा, आम्रफल।

आमय॰ ना॰ पु॰ रोग।

आमर्ष॰ ना॰ पु॰ क्रोध, गुस्सह, डाह।

आमर्षण॰ ना॰ पु॰ क्रोध करना।

आमर्षि॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधयुक्त होकर।

आमलक॰ } ना॰ पु॰ आंवला
आमला॰ } फल विशेष।

आमान्न॰ ना॰ पु॰ कोरा अनाज, सीधा।

आमाशय० ना० स्त्री० पेटकी थैली जिसमें खाना रहता है वा इकट्ठा होकर पचता है।

आमिष० ना० पु० मांस, गोश्त।

आमिषाहार० ना० पु० मांसखाना।

आमिषाहारी० गु० मांसखाने वाला।

आमोद० ना० पु० आनन्द, हर्ष, सुगन्ध, सुबास।

आम्बर० ना० स्त्री० वस्तुविशेष अर्थात् कहरुवा।

आम्र० ना० पु० आंबका फल वा वृक्ष विशेष।

आय० ना० पु० लाभ, धनागम।

आयत० गु० लम्बा, दीर्घ, घर, चौड़ा, ना० पु० घाम, धूप।

आयतन० ना० पु० घर, मकान।

आयत्त० गु० नम्र, अधीन, ताबे।

आयसु० ना० पु० आज्ञा, हुक्म।

आया० ना० स्त्री, लड़कों को खिलाने वाली।

आयास० ना० पु० परिश्रम, मिहनत।

आयु० ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर।

आयुध० ना० पु० हथियार, अस्त्रशस्त्र।

आयुर्दा०, आयुर्दाय०, आयुर्बल०, आयुष०, आयुस्० } ना० स्त्री० जीवन, काल, उमर, हयात

आरक्त० गु० लाल, सुर्ख।

आरखध० ना० स्त्री० क्षि... वाली।

आरज० ना० पु० मर्य्यादक मानी, उत्तम, जन श्रेष्ठ, आर्य्य।

आरग्वड० ना० पु० रग्वड, आड़ी का वृक्ष।

आरति० ना० स्त्री० दुःख, अतिप्रेम, इश्क वा पूजा प्रसिद्ध।

आरती० ना० स्त्री० दीपक जलाय के देवता को दिखाना।

आरम्भ० ना० पु० प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना।

आरा० ना० पु० ताक़, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।

आराति० } ना० पु० शत्रु,
अराति० } वैरी।

आराधक० गु० सेवक, भजन करनेहारा।

आराधन० ना० पु० पूजा, भजन, सेवा।

आराधना० स० क्रि० पूजा करना, अर्चना।

आराम० ना० पु० उपवन, बागीचह, चैन।

आरि० ना० स्त्री० झगड़ा, ज़िद्द, हठ, ब्रजविलासे यथा, देखत रह्यौ खिलौ- ना चन्दा। आरिन कौ- जिय बालगोविन्दा।

आरण्य० } ना० पु० जङ्गल
अरण्य० } वन, पुस्तकविशेष

आरिष्ट० } गु० कठिन, दु-
अरिष्ट० } खद, बुरा।

आरुक० ना० पु० झाड़ू का फल वा वृक्ष।

आरुष्क० ना० पु० भिलावा वृक्ष।

आरूढ़० ना० पु० सवार, गु० जो चढ़ा होवे।

आरे० ना० पु० आरा का ब- वचन।

आरोग्य० ना० पु० क्षेम, कु- शल, नीरोग।

आरोपित० गु० कल्पना कि- गया, बनाया गया, स्था- पा गया।

आमाशय॰ना॰ स्त्री॰ पेटकी थैली जिसमें खाना रह-ता है वा इकट्ठा होकर पचता है।

आमिष॰ना॰पु॰ मांस,गोश्त।

आमिषाहार॰ना॰ पु॰ मां-सखाना।

आमिषाहारी॰ गु॰ मांस-खाने वाला।

आमोद॰ना॰पु॰आनन्द,हर्ष, सुगन्ध, सुबास।

आम्बर॰ना॰ स्त्री॰ वस्तुविशेष अर्थात् कहरुवा।

आम्र॰ ना॰ पु॰ आंबका फल वा वृक्ष विशेष।

आय॰ना॰पु॰लाभ,धनागम।

आयत॰गु॰ लम्बा, दीर्घ, चर, चौड़ा, ना॰ पु॰घाम, धूप।

आयतन॰ना॰पु॰घर,मकान।

आयत्त॰गु॰ नम्र, अधीन, बाऊ।

आयसु॰ना॰ पु॰ आज्ञा, हुक्म।

आया॰ना॰ स्त्री, लड़कों को खिलाने वाली।

आयास॰ना॰ पु॰ परिश्रम, मिहनत।

आयु॰ना॰ स्त्री॰ जीवन,काल, उमर।

आयुध॰ना॰ पु॰ हथियार, अस्त्रशस्त्र।

आयुर्दा॰
आयुर्दाय॰
आयुर्बल॰
आयुष॰
आयुस्॰
} ना॰ स्त्री॰ जी-वन, काल,उ-मर, हयात।

आरक्त॰गु॰ लाल, सुर्ख।

आरखभ॰ना॰ स्त्री॰ ...-वाली।

आरज॰ना॰ पु॰ मर्य्यादक-मानी, उत्तम, जन श्रेष्ठ, आर्य्य।

आरगढ़॰ना॰पु॰ रगड़, आड़ी का वृक्ष।

आरति॰ना॰ स्त्री॰ दुःख, अतिप्रेम, इश्क़ वा पूजा प्रसिद्ध।

आरती॰ना॰ स्त्री॰ दीपक जलाय के देवता को दिखाना।

आरम्भ॰ना॰ पु॰ प्रारम्भ, उपक्रम, उत्थान, शुरूअ, लगा लगाना।

आरा॰ना॰ पु॰ ताक़, आला, लकड़ी चीरने का अस्त्रविशेष।

आराति॰ } ना॰ पु॰ शत्रु,
अराति॰ } वैरी।

आराधक॰ गु॰ सेवक, भजन करनेहारा।

आराधन॰ना॰ पु॰ पूजा, भजन, सेवा।

आराधना॰स॰ क्रि॰ पूजा करना, अर्चना।

आराम॰ना॰ पु॰ उपवन, बग़ीचह, चैन।

आरि॰ना॰ स्त्री॰ झगड़ा, ज़िद्द, हठ, ब्रजविलासे यथा, देखत रह्यो खिलौ-ना चन्दा। आरिन कौ-जिय बालगोविन्दा।

आरण्य॰ } ना॰ पु॰ जङ्गल
अरण्य॰ } वन, पुस्तकविशेष

आरिष्ट॰ } गु॰ कठिन, दु-
अरिष्ट॰ } बद, बुरा।

आरुक॰ना॰ पु॰ आड़ू का फल वा वृक्ष।

आरुष्क॰ना॰ पु॰ भिलाव वृक्ष।

आरूढ़॰ना॰ पु॰ सवार, गु॰ जो चढ़ा होवे।

आरे॰ना॰ पु॰ आरा का ब[हु]वचन।

आरोग्य॰ना॰ पु॰ क्षेम, कु[-] शल, नीरोग।

आरोपित॰गु॰ कल्पना कि[या] गया, बनाया गया, [स्था]-पा गया।

आरोप० ना० पु० कल्पना, बनावट ।

आरोह० ना० स्त्री० } ऊपर चढ़ना
आरोहण० पु० } सीढ़ी, ज़ीना ।

आर्त्त० } गु० पीड़ित, दुखित,
आरत० } आकुल ।

आर्द्र० गु० गीला, ओला ।

आर्द्रा० ना० स्त्री० छठा नक्षत्र ।

आर्य्य० गु० उत्तमकुलोत्पन्न, कुलीन, उत्तम, श्रेष्ठ ।

आर्य्यावर्त्त० ना० पु० वह पवित्र देश जो पूर्व समुद्र तटसे पश्चिम सिन्धु तट तक और हिमालयसे विन्ध्याचल तकहै।

आर्सी० ना० स्त्री भूषण विशेष जो स्त्रियां अंगूठे में पहिनती हैं, दर्पण ।

आल० ना० पु० हलदी उसका फल विशेष, पीला हरताल ।

आलम्ब० ना० पु० सहारा, मदद ।

आलम्बन० ना० पु० आश्रय, अवलम्ब ।

आलय० ना० पु० घर, मकान ।

आलबाल० ना० पु० थाला, थांवला ।

आलस० ना० पु० ढील, सुस्ती, शिथिलता ।

आलसी० गु० ढीला, सुस्त, शिथिल ।

आलस्य० ना० पु० आलस ।

आला० ना० पु० आरा, ताक़, ताख जिसमें चिराग़ आदि रखते हैं ।

आलान० ना० पु० खूंटा जिसमें हाथी बांधाजाता है बेड़ी, जञ्जीर ।

आलाप० ना० पु० बातचीत करना, स्वरमिलाप ।

आलि० ना० स्त्री० सखी, पङ्क्ति ।

आलिङ्गन॰ ना॰ पु॰ परस्पर गले लगाना।

आलिङ्गित॰ गु॰ प्रसङ्गित, भोगीहुई।

आली॰ ना॰ स्त्री॰ सखी।

आलु॰ } ना॰ पु॰ विलायती
आलू॰ } कन्द विशेष।

आलोक॰ ना॰ पु॰ ज्योति, दृष्टि, चापलोसी।

आलोकन॰ ना॰ पु॰ दृष्टि देकर देखना।

आवझा॰ ना॰ पु॰ बाजा विशेष।

आवरण॰ ना॰ पु॰ ढाल, आच्छादन, विरूप भंवर, घेरा।

आवर्त्त॰ ना॰ पु॰ भंवर जो पानी में होता है।

आवर्दा॰ ना॰ स्त्री॰ आयुर्दाय, उमर।

आवनो॰ अ॰ क्रि॰ आना।

आवभक्ति॰ } ना॰ स्त्री॰ मा
आवभगत॰ } न, सन्मान
आवभगति॰ } आदर।

आवलि॰ ना॰ स्त्री॰ पांति पङ्क्ति।

आवश्यक॰ गु॰ निश्चय कर्त्तव्य ज़रूरी काम।

आवश्यकता॰ ना॰ स्त्री॰ ज़रूरत।

आवा॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा देश की राजधानी, कुम्हार जिस में वर्त्तन पकाता है, अ॰ क्रि॰ आया।

आवाई॰ ना॰ स्त्री॰ चर्चा समाचार।

आवागमन॰ } ना॰ पु॰ आ
आवागवन॰ } नाजाना।

आवाजाई॰ ना॰ स्त्री॰ भी पड़ना, आनाजाना।

आवाती॰ ना॰ स्त्री॰ अवाई।

आवाभा॰ ना॰ स्त्री॰ भूमि खण्ड।

आवास० ना० पु० घर।

आवाहन० ना० पु० आदर बुलाना, बुलाना।

आविर्भाव० ना० पु० प्रकट होना।

आविर्भूत० गु० प्रकट वस्तु।

आविष्ट० गु० जो भूतादिक करके ग्रस्त हैं।

आवृत० गु० घिराहुआ, वेष्टित।

आवृत्ति० ना० स्त्री० उच्चारिणी, पढ़ा हुआ, दुहराना, ढब।

आशक्त० गु० मोहित, गटपट, लीन और अतिरत।

आशक्ति० ना० पु० चाह, प्यार।

आशङ्का० ना० स्त्री० भय, डर, सन्देह, शक।

आशय० ना० पु० अभिप्राय, आश्रय, मतलब, मज़मून।

आशर० ना० पु० निशाचर, दैत्य।

आशा० ना० स्त्री० आसरा, भरोसा।

आशावन्त० गु० आसरिका, उम्मेदवार।

आशावसन० गु० नङ्गा, तृष्णारहित।

आशावान्० गु० आशावन्त।

आशिष० ना० पु०
आशिषा० स्त्री०
आशीर्वाद० पु०
} दुआ, भला मनाना, अच्छा चाहना।

आश्चर्य्य० गु० अद्भुत, ना० पु० अचम्भ, विस्मय।

आश्चर्य्यवन्त० गु० ताज्जुब में, अचम्भित।

आस्रक० ना० पु० रुधिर, लोहू, खून।

आश्रम० ना० पु० हिन्दूलोगों में चारिआश्रम अर्थात् ब्रह्मचारी १ गृहस्थ २ वानप्रस्थ ३ संन्यासी ४ और ऋषियों के रहने का स्थान, घर।

आश्रमी॰ गु॰ आश्रम धारने-
वाला।
आश्रय॰ ना॰ पु॰ आसरा,
समीपता, गु॰ अधीन,
शरण, कल।
आश्रित॰ गु॰ अधीन, क़ाबू,
परवश।
आश्वास॰ ना॰ पु॰ भरोसा,
समाप्ति, अध्याय।
आश्विन॰ ना॰ पु॰ कुंवार,
सातवांमास।
आषत॰ ना॰ पु॰ अक्षत, चाव-
लादि।
आषर॰ ना॰ पु॰ अक्षर, वर्ण।
आषाढ़॰ ना॰ पु॰ असाढ़,
चौथा महीना।
आस॰ ना॰ स्त्री॰ आशा,
भरोसा।
आसंसार्थ॰ गु॰ जिससे
इच्छा काबोधहोता है।
आसक्त॰ गु॰ आशक्त, फ़रे-
फ़तह।

आसक्ति॰ ना॰ स्त्री॰ आशक्ति,
प्रीति, प्रेम।
आसन॰ ना॰ पु॰ विस्तर,
सेज, योगासन, बैठने के
लिये कुशा वा काष्ठ ला
दन की वस्तु, बैठक,
जांघ के भीतरी
ओर।
आसनगत॰ गु॰ बैठा हुआ।
आसनी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊनवस्त्रा-
दिबिछौना।
आसन्न॰ गु॰ निकट, पास।
आसन्नकोण॰ ना॰ पु॰ पास
का कोना।
आसन्नभूत॰ ना॰ पु॰ निकट
हो व्यतीत भया।
आसपास॰ गु॰ लगभग।
आसमुद्र॰ ना॰ पु॰ समुद्र
पर्यन्त।
आसय॰ ना॰ पु॰ आशय।
आसर॰ ना॰ पु॰ आशर,
दैत्य।

आसव॰ना॰ स्त्री॰ मदिरा विशेष, शराब।

आसा॰ना॰ स्त्री॰ आशा ।

आसाम॰ना॰ पु॰ देशविशेष।

आसावरी॰ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष, कपोत विशेष, कपड़ा विशेष।

आसिख॰ना॰ स्त्री॰ आशिष।

आसीन॰गु॰ बैठा हुआ।

आसीविष॰ना॰ पु॰ सांप।

आसीस॰ना॰ स्त्री॰ आशीर्वाद।

आसु॰गु॰ शीघ्र, शिताबी।

आसुग॰गु॰ बाण, वायु, सूर्य।

आसुतोष॰गु॰ शीघ्र प्रसन्न होने वाला।

आसुर॰ना॰ पु॰ असुर वा कोई असुर।

आसुरी॰ना॰ स्त्री॰ राक्षसी माया, निशाचरी।

आस्कत॰ना॰ स्त्री॰ आलस्य।

आस्कती॰गु॰ आलसी।

आस्ति॰ना॰ पु॰ वेदधर्मों का फल, साधुता, धर्म शक्ति, हस्ती।

आस्तिक॰ना॰ पु॰ वेदके धर्मों के फलका विश्वासी, साधु।

आस्था॰ना॰ स्त्री॰ टेक, सभा, परिश्रम।

आस्पद॰ना॰ पु॰ स्थान, पद, ख़िताब।

आस्फोत॰ना॰ पु॰ कचनार वृक्ष।

आस्रप॰ना॰ पु॰ असुर, दैत्य।

आस्वाद॰ना॰ पु॰ रसका अनुभव।

आह॰ना॰ स्त्री॰ साहस, वीरता, धीरज।

आहट॰ना॰ पु॰ खटका, शब्द, आवाज़।

आहा॰अव्य॰ खेद का सूचक शब्द।

आहार॰ ना॰ पु॰ भोजन, खाना।

आहारी॰ गु॰ भोजन करने वाला, भोजन के योग्य।

आहि॰ अव्य॰ हे।

आहुत॰ } ना॰ स्त्री॰ देवता-
आहुति॰ } ओंके लिये होमने के लिये जो वस्तु, घृतादि।

आहवनीय॰ ना॰ पु॰ अग्नि, विशेष।

आहुक॰ ना॰ पु॰ उग्रसेन राजा का पिता।

आहुतदान॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणको बुलाकर घर पर दान देना इसको मध्यम दान कहते हैं।

आह्निक॰ ना॰ पु॰ प्रतिदिन धर्म का कार्य।

आह्निकगति॰ ना॰ स्त्री॰ एकदिन की चाल, प्रतिएक ग्रहका नित्यभचक्र।

आह्ला॰ ना॰ पु॰ जलार्णव।

आह्लाद॰ ना॰ पु॰ हर्ष, आनन्द।

आह्लादित॰ गु॰ हर्षित, आनन्दित।

आह्वान॰ ना॰ पु॰ आवाहन, पुकारना।

आक्षेप॰ ना॰ पु॰ दुर्वचन, निन्दा।

आखेटन॰ ना॰ पु॰ आखेट।

आत्रेय॰ ना॰ पु॰ अत्रि का पुत्र।

आत्रेयी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बङ्गालेमें है।

आज्ञा॰ ना॰ स्त्री॰ आदेश, हुक्म।

आज्ञाकार॰ } गु॰ जो आ-
आज्ञाकारी॰ } ज्ञा पर चले, सेवक, ताबेदार।

आज्ञाद॰ ना॰ पु॰ जो आज्ञा-देवै, हाकिम।

आज्ञानुयायी॰गु॰ आज्ञा-वत् वर्त्तनेहारा।

आज्ञानुसार॰ना॰पु॰ऊक्म के बमूजिब।

आज्ञानुवर्ती॰गु॰ताबेदार, सेवक।

आज्ञाभिलाषी॰गु॰ आज्ञा चाहनेवाला।

आज्ञार्थ॰गु॰ आज्ञा का बोध जिससे होता है।

आज्ञालङ्घन॰ना॰ पु॰ उ-दूल ऊक्मी, ऊक्म न मानना।

[इ]

इक॰गु॰ एक, १।

इकटक॰ना॰ पु॰ एक ताक से देखना।

इकट्ठा॰
इकट्ठी॰
इकठौरा॰
इकठौरी॰
} गु॰ जो एक जगह में जमा होवे॥

इकसार॰गु॰ सरीखा, स-दृश, समान।

इकारान्त॰ गु॰ जिस शब्दके अन्तमें इकार है।

इक्का॰गु॰ अकेला, अद्वितीय, एका।

इङ्गलण्ड॰ना॰ पु॰ देश वि-शेष जिसमें लण्डन न-गर प्रसिद्ध है।

इङ्गलण्डीय॰गु॰ जो इङ्ग लण्डका है।

इङ्गितज्ञ॰गु॰ इच्छा, समान, चलने वाला।

इङ्गित॰ना॰ पु॰ सेन, सङ्केत, आगमन, खोज।

इच्छा॰ना॰ स्त्री॰ मनोरथ, चाह।

इच्छाचारी॰ गु॰ मनोवत् गामी, बन्धरहित।

इच्छित॰गु॰ इच्छासमाना, चाहाऊआ।

इच्छितफल० ना० पु० चाहा हुआ फल वा अर्थ।

इच्छानुसार० ना० पु० इच्छावत्, चाहना,।

इक्षन० ना० पु० नेत्र, दृष्टि।

इडा० ना० स्त्री० धरती, देवी। बाई श्वास।

इत०
इतै० } अव्य० यहां, इधर।

इतना० गु० यह शब्द परिमाण वा अवधि का ज्ञापक है।

इतनी० ना० स्त्री० सैन्य, गु० इस प्रमाण।

इतर० गु० अन्य, रहित, नीच।

इतरलोग० ना० पु० छोटी जाति, लोकान्तर।

इति० अव्य० समाप्ति का बोधक है, अधिक, इस प्रकार।

इत्याल० ना० पु० मिलान, सामना, मुक़ाबिलह।

इत्यादि० ना० पु० आदिक वग़ैरह।

इतिहास० ना० स्त्री० वृत्तान्त प्राचीनकथा, पुराणादि की वार्त्ता, तारीख़।

इतो०
इतौ० } गु० इतना।

इदम्० सर्व० यह।

इदानीं० अव्य० इहां, इस जगह।

इधर० अव्य० यहां, इसठौर।

इन्दारा० ना० पु० बड़ा पक्का कूआं।

इन्दिरा० ना० स्त्री० लक्ष्मी।

इन्दीवर० ना० पु० नील कमल, पौदा विशेष।

इन्दु० ना० पु० चन्द्रमा।

इन्दुर० ना० पु० उन्दुर। चूहा।

इन्दौर० ना० पु० नगर विशेष।

इन्द्र॰ना० पु० देवताओं का राजा, प्रधान।

इन्द्रगोप॰ना॰पु० बीरबहूटी।

इन्द्रजित॰ना॰ पु० मेघनाद, गु० जो इन्द्रको जीते।

इन्द्रपुरी॰ना० स्त्री० इन्द्रका नगर।

इन्द्रप्रस्थ॰ना० पु० दिल्लीनगर।

इन्द्रवधू॰ } इन्द्रवधूटी॰ } ना० स्त्री०बीरबहूटी कीड़ा लालरङ्ग का वर्षा में होता है, इन्द्रकी पत्नी।

इन्द्रयव॰ना॰ पु० कुटज का फल, इन्द्र जौ, औषधि विशेष।

इन्द्रवारुण॰ना०पु० } इन्द्रवारुणी॰स्त्री० } इन्द्रविषादिनी॰ } औषधि विशेष।

इन्द्राणी॰ } इन्द्रायणी॰ } ना०स्त्री० शची, इन्द्रकी पत्नी।

इन्द्रायन॰ना० पु० वृक्ष विशेष वा उसका फल जो अति सुन्दर और कड़ुआ होता है।

इन्द्रासन॰ना० पु० इन्द्र का सिंहासन।

इन्द्रिय॰ } इन्द्री॰ } ना॰ स्त्री० जिनसे रूप रसादिका ज्ञान होता है वह दो प्रकारकी दश हैं पांच कर्मेन्द्रिय अर्थात् हाथ, पांव, गुदा, लिङ्ग, मुख, और पांच, ज्ञानेन्द्रिय अर्थात् आंख, नाक,कान, जीभ, त्वचा।

इन्धन॰ ना॰ पु॰ जलाने की लकड़ी आदि, ईंधन।

इभ॰ना० पु० हाथी।

इभपालक॰ गु॰ महावत, फीलवान।

इभ्य॰ना० पु० स्वामी।

इमं॰सर्व० यह, गु० ऐसा, इस प्रकार।

इमि० गु० इसप्रकार ।

इला० ना० स्त्री० धरती, नारी, भवानी, देवी, बुद्धि, सरस्वती ।

इलायची० ना० स्त्री० फल-विशेष, एला ।

इलावृत० ना० पु० पृथ्वी के नवखण्डों में से एक ।

इल्ली० ना० पु० मसा ।

इव० अव्य० तरह, प्रकार, जैसे ।

इष्ट० गु० पूजित, प्यारा, वाञ्छित, ना० पु० देवता, मनुष्य चहीता, वस्तु चहीती ।

इष्टदेव० ना० पु० पूजित देवता, जिस देवको सेवाकरे वा ध्यावे ।

इष्टा० ना० स्त्री० प्रिय, प्यारी ।

इष्टित० गु० विचारित, जो माना गया ।

इष्वासन० ना० पु० धनुष, कमठा, कमान ।

इषु० ना० पु० बाण, तीर, अग्नि-नमास, और गणितमें ५ ।

इषुधी० ना० स्त्री० पु० धनुष, कमान, कमठा ।

इषुधीपति० ना० पु० धनुर्द्धर, अर्जुनादि ।

इस्त्री० ना० पु० लोहे का यन्त्र जिससे धोबी कपड़े संभालता है ।

इस्पात० ना० पु० पकालोहा ।

इह० सर्व० यह ।

इहलोक० ना० पु० मनुष्य लोक, यहलोक ।

इक्षु० ना० ०ऊख, गांडा, गन्ना ।

इक्षुगन्धा० }
इक्षुवल्ली० } ना० स्त्री० विदारीकन्द ।

इक्षुसार० ना० पु० रस, मिठाई, गुड़ ।

इक्ष्वाकु० ना० पु० सूर्यवंशियों में प्रथम राजा ।

[ई]

ईंट० ना० स्त्री० माटी की वस्तु जिससे भीति उठाते हैं ।

ईंडुआ० नाम० पु० शिरपरबोझ रखने का टेकन जो कपड़ा वा सन मूंज आदि का होता है।
ईकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्त में ईकार है।
ईख० नाम० स्त्री० ऊख, उखारी, इक्षु।
ईठ० गु० इष्ट, प्रिय, मित्र, नाम० पु० मगन, देवता।
ईठि० नाम० स्त्री० दोस्ती, प्रीति, सखी।
ईढि० नाम० स्त्री० अपने को अधिक जानना, हठ।
ईति० नाम० स्त्री० बाधा, दुःख।
ईद० नाम० स्त्री० मुसल्मानों और यहूदियों में एक पर्व्व होता है रमज़ान के पीछे, अरबी शब्द है।
ईदृश० गु० ऐसा।
ईर्षा० नाम० स्त्री० हिसका, द्वेष, डाह, हसद।

ईश० नाम० पु० ईश्वर, प्रभु, स्वामी विशेष शिवजू, विष्णु, नारायण।
ईशता० नाम० स्त्री० प्रधानता, महत्व, माया, सिद्धि विशेष।
ईश्वर० नाम० पु० प्रभु, स्वामी विशेष, परमात्मा, शिवजी विष्णु, नारायण।
ईश्वरता० नाम० स्त्री० } माया-
ईश्वरत्व० नाम० पु० } योगमाया, कुदरत।
ईश्वराराधन० नाम० पु० परमेश्वर का भजन।
ईशान० नाम० पु० सदाशिव, ईशान कोण।
ईशानकोण० नाम० पु० पूर्व उत्तर का कोना।
ईषत्० } गु० थोड़ा२, अल्प।
ईषद्० }
ईस० नाम० पु० ईश मालिक।
ईह० } नाम० स्त्री० चेष्टा, इच्छा
ईहा० } उत्पन्न।

ईक्षण॰ना॰ पु॰ चक्षु, आंखि, दृष्टि।

[उ]

उचाई॰ना॰स्त्री॰ } उचाया, उन्नति, बलन्दी।
उचान॰ना॰ पु॰
उचाव॰ ना॰ पु॰
उचाहट॰ स्त्री॰

उचाना॰स॰क्रि॰ऊचाकरना, उठाना।

उडेलना॰स॰ क्रि॰ धक्कादे-कर गिराना, डालना।

उकठा॰ गु॰ सूखा काष्ट वा वृक्ष।

उकत॰ना॰स्त्री॰उक्ति,कहन।

उकताना॰अ॰क्रि॰ घबराना, थकना, कुढ़ना।

उकताहू॰ना॰ पु॰ उपजाऊ पक्षी।

उकतारना॰स॰ क्रि॰ संभा-लना, पक्षकरना।

उकसना॰ अ॰ क्रि॰ उठना, ऊपरकोचढ़ना वा बढ़ना।

उकसाना॰ } स॰क्रि॰उठाना चढ़ाना।
उकासना॰

उक्त॰गु॰ कथित, कहा हुआ।

उक्ति॰ना॰स्त्री॰ कथन,भाषा, चतुराई, कहना।

उखड़ना॰ अ॰क्रि॰ उजड़ना, निजस्थान से हटना।

उखड़हा॰गु॰ उखड़ाभया।

उखड़ाना॰ } स॰ क्रि॰ उजा-ड़ना,निजस्थान से हिलाना।
उखाड़ना॰

उगना॰अ॰क्रि॰ उत्पन्नहोना, जमना, बढ़ना।

उगलना॰ स॰ क्रि॰ मुख में कोई वस्तु डालकर फिर निकालना।

उगाल॰ना॰ पु॰ जो चबाय के मुखमें से फेंका।

उगाहना॰ स॰ क्रि॰ जमा करना,तहसीलना।

उगाही॰ ना॰ स्त्री॰ व्याज-लेना वा अब रुपया जो

महाजन आठ के नव वा नव के दश वा दशके ग्यारह प्रति मास एक२ रुपया करके लेताहै।

उग्र० गु० क्रोधी, कठोर, भयङ्कर, तेज़, ना० पु० श्रीशङ्करजी।

उग्रगन्धा० ना० स्त्री० अजवायन, वच, और लहसुन, गु० जिसकी गन्धि कठिन है।

उग्रसेन० ना० पु० राजा कंस का पिता।

उघटना० स० क्रि० किसी पर उपकार करके कहना वा बात मारना, ताना देना।

उघड़ना० अ० क्रि० नङ्गा होना, खुलना।

उघरे० गु० खुले, प्रकट।

उघाड़ना० } स० क्रि० नङ्गा करना, खोलना
उघारना० }

उघारी० गु० नङ्गी, खुली।

उचकना० अ० क्रि० कूदिके उठना, उछलना।

उचकाना० स० क्रि० ऊपरको उठाना वा चढ़ाना।

उचक्का० गु० चोर, उठाईगीर।

उचटना० अ० क्रि० अलग २ होना, बिछुड़ना, न लगना, उलटना, फिसलना।

उचरङ्ग० ना० पु० पतङ्गा।

उचरना० अ० क्रि० बात निकलना, उखड़ना।

उचाट० गु० उदासी, जी न लगना।

उचाटना० स० क्रि० उदास करना, उखाड़ना।

उचारना० स० क्रि० उच्चारण करना, निकालना।

उचित० गु० योग्य, ठीक, मुनासिब।

उचिलना० अ० क्रि० फटना, छुटिजाना।

उचेलना॰ स॰ क्रि॰ मिलीहुई वस्तु को अलग२ करना, उधेड़ना।

उच्च॰ गु॰ ऊंचा।

उच्चाटन॰ ना॰ पु॰ जी भड़कना, जीका न लगना।

उच्चार॰ ना॰ पु॰ पुरीष, मल, पाखाना।

उच्चारण॰ ना॰ पु॰ शब्द का कहना वा निकलना।

उच्चारना॰ स॰ क्रि॰ उचारना, बात कहना।

उच्चैःश्रवा॰ ना॰ पु॰ सूर्य का घोड़ा।

उच्छिन्न॰ गु॰ निर्मूल, उखड़ा, खराब।

उच्छलित॰ गु॰ उछलता भया।

उच्छिष्ट॰ ना॰ पु॰ जूठनि वा जूठा, भोजन अवशेष।

उच्छ्वास॰ ना॰ पु॰ श्वास, आशा।

उछङ्ग॰ ना॰ स्त्री॰ गोद, कनियां।

उछरना॰ } अ॰ क्रि॰ कूदना,
उछलना॰ } उठना।

उछालना॰ स॰ क्रि॰ कुदाना, ऊपर को फेंकना।

उछाह॰ ना॰ स्त्री॰ आनन्द, खुशी।

उजड़ना॰ अ॰ क्रि॰ नाश होना, मिटना, भगना, वैरान होना।

उजला॰ गु॰ उज्वल, सफ़ेद, निर्मल।

उजागर॰ गु॰ यशवन्त, चटकीला, सुन्दर।

उजाड़॰ गु॰ सूना, बनखण्ड, वैरान।

उजाड़ना॰ स॰ क्रि॰ सूना करना, नाश करना, वैरान करना।

उजालना॰ स॰ क्रि॰ उजला करना।

उजाला॰ ना॰ पु॰ ज्योति तेज, प्रकाश।

उजाखी० ना० स्त्री० चांदनी ।

उजास० ना० पु० उजेला ।

उज्जल० } गु० निर्मल, चोखा,
उज्ज्वल० } चमकीला, साफ, सुन्दर ।

उझकति० गु० झांकति, ताकत ।

उझकना० अ० क्रि० देखना, स० क्रि० निझाना ।

उटङ्गन० ना० स्त्री० पौदा विशेष, और नदीजो ग्वालियर के पास है ।

उठङ्गन० ना० पु० ठेकन ।

उठना० अ० क्रि० खड़ा होना ।

उठबैठ० ना० स्त्री० घबराहट, साधन विशेष ।

उठवैया० ना० पु० उठनेवाला ।

उठाना० ना० पु० उत्थान, दिखाई ।

उठाना० स० क्रि० खड़ा करना, ऊपर लेजाना ।

उड़ना० अ० क्रि० भागना ।

उड़ान० ना० स्त्री० उड़ने की चालि ।

उड़ाना० स० क्रि० उड़ा देना, भगा देना ।

उड़ाऊ० ना० पु० लुटेरा, बहुत ख़र्च करवैया ।

उडु० ना० पु० पक्षी, नक्षत्र, मेघ, ग्रह ।

उडुगण० ना० पु० तारागण ।

उडुप० ना० पु० घरनई, बेड़ा ।

उड़िया० ना० स्त्री० उड़ेसा देश की भाषा ।

उड़ी० ना० स्त्री० नाव ।

उड़ैसा० ना० पु० देश विशेष जहां श्रीजगन्नाथ पुरुषोत्तम विराजमान हैं ।

उड्डान० ना० स्त्री० उड़ान, संस्कृत में नपुंसक ।

उढ़ना० स० क्रि० ओढ़ना, ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र ।

उढ़ाना० स० क्रि० ओढ़ना, ढांपना ।

उत॰ अव्य० ऊपर, उधर, जिस शब्द के प्रथम में यह युक्त हो उसका अर्थ अधिक लिया जाता है।

उतङ्ग॰ उत्तुङ्ग॰ गु०ऊंचा, रामायणे यथा, अति उतङ्ग जल निधि चहुं पासा।

उतरना॰ अ० क्रि० नीचेआना।

उतला॰ गु० उतावला।

उताना॰ गु० उलटा, ऊपरको पांवकिये।

उतार॰ ना० पु० नीचेआना, नीचला।

उतारना॰ स० क्रि० नीचेलाना, दूरि करना।

उतारा॰ ना० पु० ढालु, अपमान, छुड़ौती, पारजाना।

उतावल॰ ना० स्त्री० शीघ्रता, जल्दी।

उतावला॰ गु० बेगी, शीघ्र, फुर्तीला।

उतावली॰ ना० स्त्री० शीघ्रता, फुर्ती, गु० फुर्तीली।

उताहिल॰ गु० शीघ्र, जल्द।

उत्कट॰ गु० बरजस: उसी समय तेज अधिक।

उत्कण्ठा॰ ना० स्त्री॰ अभिलाषा, चाहना।

उत्कर्ष॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ाई।

उत्कल॰ ना० पु० उड़ैसादेश, उड़ैसा के बासी

उत्क्रम॰ ना० पु॰ ऊपर चढ़ना।

उत्कृष्ट॰ गु० अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

उत्तमगन्धा॰ ना० स्त्री० मालती।

उत्तमाङ्ग॰ ना० पु० सिर, शीश।

उत्तमाशा॰ ना० स्त्री० आफ्रिका के दक्षिण की अन्तरीप, केप गुड होप।

उत्तर० ना० पु० प्रश्न का बोधक, जवाब, दक्षिण के सम्मुख की दिशा, राजा बिराट का पुत्र।

उत्तरकेन्द्र० ना० पु० जिसको भास्कराचार्य शास्त्री ने निज प्रभृति में सुमेरु लिखा है, यह स्थान अत्यन्त शीत के कारण अगम्य है।

उत्तर कोशल० } ना० पु०
उत्तर कोशला० } अवधदेश।

उत्तरखण्ड० ना० पु० उत्तर का देश।

उत्तरा० ना० स्त्री० राजा बिराट की कन्या जो अभिमन्यु को बिवाही थी।

उत्तराधिकारी० ना० पु० मरने के पीछे जो धनाधिकारी।

उत्तराफाल्गुनी० ना० स्त्री० बारहवां नक्षत्र।

उत्तराभाद्रपद० ना० पु० छब्बीसवां नक्षत्र।

उत्तरायण० ना० पु० माघादिक: मास।

उत्तरार्द्ध० गु० पिछिला, आधा।

उत्तराषाढ़० ना० स्त्री० इक्कीसवां नक्षत्र।

उत्तराहा० गु० जो उत्तर दिशा का है।

उत्तरी० गु० उत्तर का।

उत्तरीय० ना० स्त्री० ओढ़नी, रामचन्द्रिकायां यथा, पदपद्म की शुभ घूंघरी, मणि नील हाटक सों जरी, युत उत्तरीय बिचारि के भुवडारि दी पगटारि कै, गु० उत्तर देश का पदार्थ वा मनुष्यादि।

उत्तरोत्तर० अव्य० आगे आगे।

उत्तानपत्र० ना० पु० दोनों अरण्ड।

उत्तानपाद० ना० पु० राजा विशेष, ध्रुव का पिता।

उत्ताल० गु० शीघ्र, जल्दी, बेग।

उत्तीर्ण० गु० पार पहुंचा, निर्मुक्त।

उत्तू० ना० पु० चुन्नति, चुनाई वस्त्रादि की।

उत्थान० ना० पु० उठान, उद्योग।

उत्थापन० ना० पु० उठावना, न थपना।

उत्थित० गु० उठा हुवा।

उत्पत्ति० ना० स्त्री० जन्म, पैदायश।

उत्पन्न० गु० जन्मा, प्रकटा।

उत्पल० ना० पु० कमल, कोईं।

उत्पाटन० ना० पु० जड़ समेत उखाड़ना।

उत्पात० ना० पु० अशुभ का सूचक, उपद्रव।

उत्पादन० ना० पु० जन्मावना, पैदा करना।

उत्प्रेक्षा० ना० स्त्री० ढील, सदृशता।

उत्सर्ग० ना० पु० देवतादि के लिये द्रव्य का त्याग, वितरण, किसी प्रकार की आज्ञा।

उत्सव० ना० पु० आनन्द, यज्ञ, अधीरज।

उत्साह० ना० पु० उद्योग, आनन्द।

उथपन० ना० पु० उखाड़ना, उठाना।

उथपना० स० क्रि० उठादेना, उखाड़ डालना।

उथपित० गु० उठाया गया

उथलना० अ० क्रि० उलटना।

उथलपुथल० गु० उलटपुलट।

उथला० गु० छिछला, थोड़ा गहिरा।

उदक० ना० पु० जल, पानी।

उदघाटी० ना० स्त्री० उद-यता, उदयाचल की घाटी।

उदधि० ना० पु० समुद्र।

उदधिनन्द० ना० पु० चन्द्रमा।

उदनपाक्य० ना० पु० पियावा सापौधा।

उदन्वान० ना० पु० समुद्र, सागर।

उदमाते० गु० मत्त, मस्त, मखमूर।

उदय० ना० पु० प्रकटना, रोशन, ज्योति।

उदयगिरि० } ना० पु० पर्वत
उदयाचल० } विशेषजहांसूर्योदय होता है।

उदयास्त० ना० पु० सूर्योदय से सूर्यास्त तक, उदयाचलसेअस्ताचलतक।

उदर० ना० पु० पेट।

उदरनि० ना० पु० पेट का बहु-वचन भाषा में।

उदरवृद्धि० ना० पु० जलन्धर रोग विशेष

उदरे० गु० फटे।

उदात्त० ना० पु० ऊंचा स्वर

उदान० ना० पु० पञ्च प्राण में से एक।

उदार० गु०० दाता, सखी

उदारता० ना० स्त्री० दाता-पन, दातव्यता।

उदास० ना० पु० एकान्त, गु० निराला, निर्मोह, दुख सुख समान, ज्ञाता, मन मलीन।

उदासी० ना० पु० एकान्ती ना० स्त्री० मलीनता गु० मनमलीन, एक प्रकार के सन्तों का घ यथा नानक पन्थी

जो मनुष्य शत्रु मित्र रहित संसार में विचरै।

उदासीन० गु० जिसका कुल शील न हो जाना अर्थात् पाहुन, समानवर्ती ग्रहस्थाश्रम रहित।

उदाहरण० ना० पु० दृष्टान्त, मिसाल।

उदित० आविर्भूत, प्रकाशित, रोशन।

उदीची० ना० स्त्री० उत्तर दिशा।

उदीच्य० ना० पु० ऐरावती नदी के उत्तर और पश्चिम का देश।

उदुम्बर० ना० पु० गूलर वृक्ष, तांबा धातु।

उदूखल० ना० पु० गूगल।

उद्गार० ना० पु० डकार, वमन, छर्हि।

उद्गारवाची० गु० हर्षदुःखादि भाव बताने हारा।

उद्घाटन० ना० पु० कूप मे पानी निकालने के लिये डोल रस्सी, चरसा, खुलवैया।

उद्दाल० ना० पु० कचनार।

उद्दालक० ना० पु० एक मुनि का नाम है।

उद्दिष्टलोहित० ना० पु० लाल चन्दन।

उद्दीप्त० गु० प्रज्वलित, अतिप्रकाशित।

उद्देश० } ना० पु० अन्वेषण,
उद्देश्य० } प्रीति की कामना निमित्त, व्याकरण में जिसका समाचार कहा जावे।

उद्धत० गु० कुचाल, अभिमानी, ना० पु० राजा का मल्ल।

उद्धार० ना० पु० अक्षरण, त्राण, रक्षा, छुट्टी।

उद्धारण० ना० पु० छोड़ना, छुटना।

उद्धारना० स० क्रि० छुड़ाना, प्राण देना।

उद्भव० ना० पु० जन्म, पैदायश।

उद्भिज०, उद्भिद०) ना० पु० वृक्षलतादि जो पृथ्वी पर उगते हैं।

उद्यत० ना० पु० गु० परिश्रमी, तैयार।

उद्यम० ना० पु० उद्योग, उपाय, रोज़गार।

उद्यान० ना० पु० राजाका उपवन, चाल, निमित्त।

उद्योग० ना० पु० उद्यम, उत्थान।

उद्योत० ना० पु० प्रकाश, चमक।

उद्वाह० ना० पु० बिवाह।

उद्विग्न० गु० अधीरज, व्याकुल।

उद्वेग० ना० पु० व्याकुलता, घबराहट, गड़बड़, दुःख।

उद्बोध० ना० पु० स्मरण।

उधर० अव्य० वहां।

उधार० ना० पु० क़रज़।

उधारन० ना० पु० छुड़ाने द्वारा।

उधारना० स० क्रि० छुड़ाना, मुक्ति देना।

उधेड़ना० स० क्रि० सुलझाना, खोलना।

उनचास० गु० चालीस और नौ ४९।

उनतालीस० गु० तीस और नौ ३९।

उनतीस० गु० बीस और नौ २९।

उनये० गु० घटा, दबिआये।

उनसठ० गु० पचास और नौ ५९

उनासी० गु० सत्तर और नौ ७९

उनींदे० गु० नींद भरे।

उनीस० गु० दश और नौ १९।

उन्दुर० ना० पु० चूहा, मूश।

उन्नत० गु० ऊंचा, बलन्द।

उन्नति० ना० स्त्री० ऊंचाई, बढ़ती।

उन्मत्त० } गु० मतवाला, विक्षिप्त, सिड़ी, और
उन्मद० } अष्टभैरव में एक उन्मत्त नामी है।

उन्माद० ना० पु० चितभ्रम, सिड़पन।

उन्मादन० ना० पु० रोगविशेष जिस में चितभ्रम होकर सिड़पन हो जाता है।

उन्मुख० ना० पु० ऊर्द्धमुख, ऊपर देखना।

उन्मेष० ना० पु० पलक, झपक।

उन्हार० ना० स्त्री० ढाल, गु० रूप, समान, सदृश।

उप० अव्य० समीप, यह जिस शब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी अधिकाई कभी समीपता कभी न्यूनता आदिक होजाता है।

उपकण्ठ० ना० पु० किनारा, तट।

उपकरण० ना० पु० सामग्री, सामान।

उपकानन० ना० पु० कृत्रिमवन, बाग़।

उपकार० ना० पु० कृपा, सहायता, अहसान।

उपकारी० गु० कृपावन्त, सहायक, सुमिद्द, लाभ युत, फायद: मन्द।

उपकालिका० } ना० स्त्री०
उपकुञ्चिका० } कलौंजी।

उपक्रम० ना० पु० प्रारम्भ धोखा।

उपगति० गु० जिस वस्तु के लिये वाचा दिया।

उपग्रह० ना० पु० बंधुआ, कृपा, सहायता, ग्रहसम्बन्धी तारा।

उपचार० ना० पु० उपाय, सेवा, वैद्यकाई, व्यवहार, घूस।

उपज॰ ना॰ स्त्री॰ जो तत्काल में कहाजावे अथवा गायाजावे।

उपजना॰ अ॰ क्रि॰ उगना, बढ़ना, जन्मना।

उपजा॰ गु॰ जन्मा, उगा, पैदाहुआ।

उपजाऊ॰ गु॰ उपजनेहारा।

उपजाना॰ स॰ क्रि॰ उत्पन्न करना, सिरजना।

उपजित॰ गु॰ जो उत्पन्न भया, जन्मित।

उपजीविका॰ ना॰ स्त्री॰ जीविका, वृत्ति।

उपड़ना॰ अ॰ क्रि॰ उखड़ना।

उपताप॰ ना॰ पु॰ रोग, फुर्त्त, ऊष्मता, पीड़ा।

उपदंश॰ ना॰ पु॰ सवाद, सुज़ाक।

उपदा॰ ना॰ स्त्री॰ भेंट।

उपदेश॰ ना॰ पु॰ शिक्षा, मन्त्र, दान।

उपदेशक॰ } गु॰ जो उपदेश
उपदेशी॰ } देवे, गुरु।

उपद्रव॰ ना॰ पु॰ उत्पात, अन्याय, और विग्रह, बखेड़ा।

उपद्रवी॰ गु॰ बखेड़िया, उत्पाती।

उपद्वीप॰ ना॰ पु॰ द्वीप समीप, छोटा टापू।

उपधान॰ ना॰ स्त्री॰ तकिया, रज़ाई।

उपधि॰ गु॰ साथीराहका, धोखा।

उपनन्द॰ ना॰ पु॰ नन्दकी सन्तान वा उनके सम्बन्धी।

उपनयन॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मणादि तीन वर्णों का यज्ञोप-वीत अर्थात् जनेऊधार-ण के हेतु संस्कार।

उपनाम॰ ना॰ पु॰ पदवी, खिताब वा एकही मनुष्य का द्वितीय नाम अथवा कुटुम्बी नाम यथा, लाला, साह, तिवारी।

उपनिषद्॰ ना॰ स्त्री॰ वेदका रहस्य भाग।

उपनेत्र॰ ना॰ पु॰ चशमह, ऐनक।

उपपति॰ ना॰ पु॰ जार, द्वितीय कान्त स्त्री का।

उपपत्ति॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्यता, सबूत।

उपपातक॰ ना॰ पु॰ महापाप, यथा गोबधादि।

उपमा॰ ना॰ स्त्री॰ समानता, दृष्टान्त, नज़ीर।

उपमान॰ ना॰ पु॰ सादृश्य, जिससे उपमा दी जावे यथा कमल नयन यहां कमल उपमान औ नयन उपमेय है।

उपमेय॰ ना॰ पु॰ जिसकी उपमा दी जाती है।

उपयुक्त॰ गु॰ योग्य।

उपयोगी॰ गु॰ अनुकूल, लाभकारी, मुफ़ीद।

उपराग॰ ना॰ पु॰ चन्द्रमा सूर्य का ग्रहण वा विषय भोग।

उपराजा॰ ना॰ पु॰ युवराज, राजा का नायब।

उपरान्त॰ अव्य॰ पीछे, पश्चात्।

उपराम॰ ना॰ पु॰ संसारीसुख की निवृत्ति, वैराग्य, ऊपरी।

उपराला॰ ना॰ पु॰ सहायता, मदद, अधिक।

उपरि॰ अव्य॰ ऊपर।

उपरोध॰ ना॰ पु॰ सङ्कोच, सहायता, बड़ाई, गौरव।

उपर्ना॰ ना॰ पु॰ अंगोछा, एकपट्टा, ओढ़नी।

उपल॰ ना॰ पु॰ पत्थर।

उपलक्षण॰ ना० पु० थोड़ा जिससे समूचा समझा जावे, गु० जिससे गुणी जाना जावे ।

उपला॰ ना॰ पु० कण्डा ।

उपवन॰ ना० पु० कृत्रिमवन, आराम, बाग़ ।

उपवर्ह ॰ / उपवर्हण॰ ना० पु० तकिया, सिरहाना ।

उपवास॰ ना०पु०व्रत, लङ्घन, रोज़ह ।

उपवीत॰ ना० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ ।

उपवेद॰ ना० पु० जो विद्या वेदों से निकली है और चारि उपवेद हैं अर्थात् आयुष, गन्धर्व, धनुष, धर्म शास्त्र ।

उपशम॰ ना० पु० शान्ति, समाई ।

उपशास्त्र॰ ना० पु० विद्या जो शास्त्र से निकली है ।

उपस॰ ना० स्त्री॰ दुर्गन्धि, सड़ाहिंद ।

उपसना॰ अ० क्रि० उबसना, सड़ना ।

उपसर्ग॰ ना० पु० क्रिया के साथ संयुक्त जो प्र० पर, अप, सम, इत्यादि ।

उपस्थ॰ ना० पु० स्त्री० लिङ्ग, योनि ।

उपस्थित॰ गु० सन्मुख गत, प्राप्त, तैयार ।

उपसागर॰ ना॰ पु० छोटा समुद्र, समुद्र का भाग ।

उपहार॰ ना० पु०भेंट, नज़र, पूजा ।

उपहास॰ ना० पु० ठट्ठाहंसी ।

उपाख्यान॰ ना० पु० पुराण की कथा ।

उपाटना॰ स०क्रि०उखाड़ना ।

उपादान॰ ना० पु० विभेदरूप, निमित्त, कारण ।

उपाधि॰ ना॰ स्त्री॰ उपद्रव, अन्याय, समीप, प्राप्त, माया, बाधा, ना॰ पु॰ स्वामी, मालिक, धर्म की चिन्ता, गु॰ छल, कपट।

उपाधी॰ गु॰ अधर्मी, उपद्रवी, अन्यायी।

उपाध्या॰ ना॰ पु॰ ब्राह्मण, जाति विशेष।

उपाध्याय॰ ना॰ पु॰ अध्यापक, पढ़ानेहारा।

उपाना॰ स॰ क्रि॰ सिरजना, उत्पन्न करना, उपार्जन करना।

उपानत्॰ ना॰ पु॰ जूता।

उपान्त्य॰ ना॰ पु॰ अन्त अक्षर का पूर्व वर्णादि।

उपाय॰ ना॰ पु॰ उद्योग, यत्न, रीति, तदबीर।

उपायी॰ गु॰ उद्योगी, यत्नी।

उपार्जन॰ ना॰ पु॰ विद्या वा धनादि का सङ्ग्रह, कमाई, प्राप्त।

उपार्जित॰ गु॰ जो प्राप्त भया, कमाया।

उपालम्भ॰ ना॰ पु॰ उलाहना।

उपास॰ ना॰ पु॰ व्रत, उपवास।

उपासक॰ } गु॰ जो उपासना
उपासा॰ } करे, सेवक।

उपासना॰ ना॰ स्त्री॰ सेवा, टहल, अनुवृत्ति, देवादि विषय भावना विशेष।

उपास्य॰ गु॰ उपासना के योग्य, आराध्य।

उपेक्षा॰ ना॰ स्त्री॰ धोखा, त्याग।

उफन्ना॰ } अ॰ क्रि॰ उब-
उफनाना॰ } लना जोश खाना।

उफाल॰ ना॰ पु॰ कूर्दन, कूदनि, कूदना।

उबकना॰ अ॰ क्रि॰ वमन होना, जीमलकना।

उबकाई॰ ना॰ स्त्री॰ वमन, जी की मलक।

उबकाना० अ० क्रि० बमन करना, उछाल करना।

उबटन० ना० पु० बस्तु आटा वा बेसनवासरसों जिससे देहका मैल छुड़ाते हैं।

उबटना० स० क्रि० उबटन लगाना।

उबरना० अ० क्रि० बचना।

उबरा० गु० बचगया।

उबलना० अ० क्रि० खलबलाना, खौलना।

उबाल० ना० पु० खलबलाहट के पीछे उफनाना।

उबसना० अ० क्रि० सड़ना-कुगन्धि करना।

उबसाना० स० क्रि० सड़ाना।

उबारना० स० क्रि० बचाना, छुड़ाना।

उबारू० ना० पु० बचाव, छुटकारा।

उबालना० स० क्रि० पकाना, उसीजना।

उभक० ना० पु० रीछ, भालु

उभय० सर्व० गु० दो।

उभरना० अ० क्रि० उठन निकलना, उमड़ना।

उभार० ना० पु० उठान, फूल वट, गुमड़ा।

उभारना० स० क्रि० फूलन उठाना।

उभौ० ना० पु० दोनो।

उमगा० गु० फूला, उठा।

उमगाना० स० क्रि० स फुलाना, उठाना, म बढ़ाना।

उमंग० ना० स्त्री० मग्नत धुन, तृष्णा, चाहक।

उमंगना० अ० क्रि० उमंगसे आगेजाना।

उमंगी० गु० धुनी, अभिलाषी

उमगड़ना० } अ० क्रि० उभर
उमड़ना० } ना, घिरआना

उमरी० ना० स्त्री० गूलरवृत्त

उमहाना० अ० क्रि० उमड़ना।
उमा० ना० स्त्री० पार्वती, भवानी।
उमानाथ० ना० पु० श्री महादेव जी।
उर० ना० पु० छाती, गोदी, हृदय,।
उरग० ना० पु० सांप, सर्प।
उरगना० स० क्रि० सहना, जोग बना, रामचन्द्रिका यां यथा, आइ भरत्थ कहाधौं करैं जियभाय गुनौ जो दुख देय तौ लैउर गौयह बातसुनो।
उरग्र० ना० स्त्री० भेंड़ी।
उरगाद०) ना० पु० गरुड़, मयूर, और न्यौला।
उरगारि०)
उरझना० अ० क्रि० अटकना, लगना।
उरला० गु० दूधरका।
उरु० ना० स्त्री० जंघ का ऊपरी भाग, गु० बहुत।
उर्णा० ना० स्त्री० भेंडी।
उर्मि० ना० स्त्री० लहरी, बीची।
उर्द० ना० पु० माष, अन्न विशेष।
उर्वरा० ना० स्त्री० उपजाऊ धरती, खेतीकेयोग्य।
उर्विज० ना० पु० जो धरतीमें उपजा है, मंगल।
उर्विजा० ना० स्त्री० श्रीजान, कीजी।
उर्वशी० ना० स्त्री० मुख्यअप्सरा, मनबसी, धुकधुकी, आभरण।
उर्वी० ना० स्त्री० पृथ्वी, धरती।
उरसाडन० ना० पु० कुच, स्तन, चूची।
उरहन० ना० पु० गिल्ला, शिकायत।
उरोज० ना० पु० कुच, स्तन।
उलझनि० ना० स्त्री० फसाव, अटकाव।
उलझना० अ० क्रि० फसना, लपटना, स० क्रि० झगड़ना।

उलझाना॰ स॰ क्रि॰ फसाना, अटकाना, भिड़ाना, लपटाना।

उलझेड़ा॰ ना॰ पु॰ उलझन, फसाव।

उलटना॰ स॰ क्रि॰ पलटना, फेरना, अ॰ क्रि॰ औंधा होना, उलटिजाना।

उलटा॰ गु॰ औंधा, पलटा।

उलटाना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना पलटाना।

उलटापुलटा॰ गु॰ गटपट, नीचे ऊपर।

उलथना॰ अ॰ क्रि॰ लहराना।

उलथा॰ ना॰ पु॰ उलथा, तर्जुमा, रागिनी विशेष, नृत्यभेद।

उलहना॰ ना॰ पु॰ दोष, निन्दा गिल्ला, अ॰ क्रि॰ उगना, लहलहाना।

उलाहना॰ ना॰ पु॰ गिल्ला, शिकायत।

उलूक॰ ना॰ पु॰ उल्लू, दिवान्ध, घूघूपक्षी।

उलूखल॰ ना॰ पु॰ ओखली।

उलूपी॰ ना॰ स्त्री॰ मछली, बभ्रुवाहन की माता।

उल्का॰ ना॰ पु॰ लूका, अग्नि वा तारा जो आकाश से गिरता है वा दीपक का फूल।

उल्कापात॰ ना॰ पु॰ तारा छूटना, लूका गिरना उपद्रवीय कारण होना, आश्चर्य।

उलथा॰ ना॰ पु॰ उलथा, तर्जुमा, नृत्यविशेष।

उल्मुक॰ ना॰ पु॰ लूका, कोयला, जलीलकड़ी।

उल्लङ्घन॰ ना॰ पु॰ अन्यथा वा भङ्ग करना वा नमानना लांघिजाना।

उल्लाला॰ ना॰ पु॰ छन्दविशेष।

उल्लास॰ ना॰ पु॰ मेल, लेश

उल्लू॰ ना० पु० पक्षी विशेष, मूर्ख, अहमक।

उल्लूपन॰ ना० पु० मूर्खता, अहमकी।

उशीर॰ ना० पु० तृण विशेष की जड़ जिसमें गन्धि होती है खस।

उशना॰ ना० पु० शुक्राचार्य्य, स्मृति विशेष।

उष्ट्र॰ ना० पु० ऊंट।

उष्ण॰ ना० पु० गरम, तप्त, तपन, गरमी।

उष्णकटिबन्ध॰ ना० पु० पृथ्वी का मध्यस्थान अर्थात् मध्य रेखा के उत्तर २३ $\frac{1}{2}$ अंश और दक्षिण २३ $\frac{1}{2}$ अंशतक।

उष्णज॰ ना० पु० वनस्पति, जो पृथ्वीपर उगते हैं।

उष्णीष॰ ना० पु० पगड़ी, मुकुट

उसन्ना॰ अ० क्रि॰ उबलना, पकना।

उसरना॰ अ० क्रि० टलना, पीठ देना।

उसाना॰ स० क्रि० उबालना, बुरकाना।

उसारा॰ ना० पु॰ ओसारा, डेवढ़ी।

उसास॰ ना० पु० श्वास, दम।

उसासी॰ ना० स्त्री० फुरसत, कल।

उसाह॰ गु॰ कुसमय, बेमोसम।

उसीजना॰ स० क्रि० उबलना।

उसीसा॰ ना० पु० सिरहना, तकिया।

उस्तर॰ गु॰ संत, बिनमोल।

उहरना॰ अ० क्रि० बैठना, दबना।

[ऊ]

ऊंघ॰ ना॰ स्त्री० ऊंघाव, झपकी, नींद।

ऊघना० अ० क्रि० नींदआना, झपकी आना।

ऊघाई० ना० स्त्री० ऊंघ।

ऊचा० गु० उच्च, बलन्द।

ऊंट० ना० पु० पशु विशेष।

ऊटकटारा० ना० पु० भर भोंड।

ऊटकटीला० ना० पु० पौधा विशेष।

ऊकारान्त० गु० जिस शब्दके अन्त में ऊकार है।

ऊख० ना० स्त्री० गन्ना वा गन्नों का खेत।

ऊखल० ना० पु० बड़ी उखली।

ऊखाड़ी० ना० पु० गन्नों का खेत।

ऊत० ना० पु० मनुष्य जो सन्तान हीन मरे, बिरोध, अभि वाञ्छित अति दुष्ट वा मूर्ख।

ऊतर० ना० पु० उत्तर, जवाब।

ऊत्क्रम० गु० बिपरीत क्रम, बिना मिलान, बेसिलसिल:।

ऊदबिलाव० ना० पु० जल जन्तु विशेष।

ऊदा० गु० भूरा।

ऊदाई० } ना० स्त्री० कपिश,
ऊदाहट० } भूरा पन।

ऊधौ० ना० पु० श्रीकृष्ण का एक सखा।

ऊन० ना० स्त्री० भेंड़ी आदि के बाल, थोड़ा न्यून।

ऊनबिंश० } ना० पु०
ऊनविंशति० } उन्नीस १९।

ऊना० ना० पु० खड्गविशेष, धोप।

ऊनी० गु० जो ऊन से बना है।

ऊपर० ना० पु० उपरि, बाला।

ऊपरिस्थ० गु० ऊपर ठहरा भया।

ऊवट॰ गु॰ औघट, अगम्य, कुमार्ग।

ऊमरि॰ना॰ स्त्री॰ गूलरि का वृक्ष।

ऊर्ज्ज॰ना॰ पु॰ कार्त्तिक मास।

ऊर्णा॰ना॰ पु॰ मेषादि के लोम, ऊन।

ऊर्णनाभि॰ना॰ स्त्री॰ मकड़ी।

ऊर्णायु॰ना॰ स्त्री॰ भेड़ी।

ऊर्द्ध॰गु॰ ऊपर।

ऊर्द्धकाण्डा॰ना॰ स्त्री॰ बड़ी सतावर।

ऊर्द्धतिक्त॰ना॰ पु॰ चिरायता।

ऊर्द्धपुण्ड॰ ना॰ पु॰ वैष्णवीतिलक।

ऊर्द्धरेता॰ना॰ पु॰ संन्यासी, ऋषि, और जितेन्द्रिय, जिसका स्त्री प्रसङ्ग में काम पतन न हो।

ऊर्द्धश्वास॰ } ना॰ पु॰ ऊपर
ऊर्द्धसांस॰ } को स्वांसा।

ऊर्द्ध॰अव्य॰ ऊपर।

ऊर्मिला॰ना॰ स्त्री॰ संज्ञा विशेष।

ऊलुआ॰ना॰ पु॰ तृणविशेष।

ऊषण॰ना॰ पु॰ कालीमिरच, और पीपरा मूल।

ऊष्मा॰ना॰ स्त्री॰ गर्मी, क्रोध रोष।

ऊषर॰ना॰ पु॰ ऊसर।

ऊषरपा॰ना॰ पु॰ खारीलोन।

ऊषा॰ना॰ स्त्री॰ बाणा सुर की कन्या।

ऊषाकाल॰ना॰ पु॰ प्रातःकाल, तड़का।

ऊसर॰ना॰ पु॰ वह धरती जिसमें अन्नआदि उत्पन्न नहीं होता है।

ऊह॰ना॰ पु॰ तर्क।

[ऋ]

ऋक॰ }
ऋग्॰ } ना॰ पु॰ प्रथम वेद।

ऋकारान्त॰गु० जिस शब्द के अन्त में ऋकार हो।

ऋचा॰ना० स्त्री०बेदके मन्त्र ।

ऋजु॰गु० सरल, सीधा ।

ऋजुभुज॰ गु० सीधीरेखा वा भुजा वा मेंड़ ।

ऋजुभुजक्षेत्र॰ना॰ पु० वह क्षेत्र जो कई सूधीरेखाओं से घिरा हो ।

ऋण॰ना० पु० उधार, क़र्ज़ ।

ऋणक॰गु० क़र्ज़दार ।

ऋणिया॰गु० धरता, क़रज़ी ।

ऋणी॰गु० क़रज़ दार ।

ऋतु॰ना० स्त्री॰बसन्तादि छः, अर्थात् बसन्त,१ ग्रीष्म, २ बर्षा,३ शरद,४ हेमन्त,५ शिशिर, ६ और रज समय, मौसम ।

ऋतुमती॰ना॰ स्त्री० रजस्वला, कपड़ों से ।

ऋतुराज॰ना॰ पु० बसन्त, बहार ।

ऋद्धि॰ } ना॰स्त्री० पार्वतीजी, ऋधि॰ } औषधि पौधा बिशेष, धन, सम्पदा ।

ऋषि॰ना० पु० बेदज्ञ, मुनि, और तपस्वी।

ऋषिपति॰ना० पु० ऋषियों में जो प्रधान,बड़ विद्यानिधान, भागवत धर्मी ।

ऋषिमित्र॰ना॰ पु० शान्त प्रिय, फ़क़ीरोंका दोस्त, राम चन्द्रिका में लिखा मित्र बोधक ।

ऋषिराज॰ } ना० पु॰ ऋषि पति ।
ऋषीश॰ }
ऋषीश्वर॰ }

ऋषभ॰ ना० पु० राग, स्वर, बिशेष, श्रेष्ठ ।

ऋक्ष॰ ना० पु० भालू, रीछ, तारा ।

ऋक्षपति० } ना० पु० जाम्बु-
ऋक्षराज० } वन्त, और
ऋक्षेश० } चन्द्रमा ।

[ए]

ए० अव्य० ग्यारहवां अक्षर सम्बो-
धन का सूचक ।

एक० गु० गिनती का प्रथम अङ्क,
अद्वितीय १ ।

एककाल० गु० समान समय,
और एक समय ।

एककालीन० गु० समान काल
में उत्पन्न भया, हम
उमर ।

एकटक० ना० पु० एक ताक
से देखना, ।

एकट्ठा० गु० जो एक स्थान में
जमा कियावा भया है ।

एकतराज्वर० ना० पु० अन्त
रिया, तिजरावा त-
जारी ।

एकतहो० ना० पु० एक जगह,
ना० स्त्री० मिर्जाई ।

एकता० ना० स्त्री० एकाई,
मेल समानता ।

एकतान० गु० एकमति, दुवि-
धारहित ।

एकदा० अव्य, एक समय ।

एकरस० गु० षट्भाव बिका
रहित ।

एकरूप० ना० पु० समभाव ।

एकलोटा० } गु० जो लड़का
एकलौता० } अपने मातापित
का अकेला होवे ।

एकवचन० गु० बात, ए
मुख्यतर ।

एकवर्णात्मक० गु० जिस शब्द
में एक अक्षर है ।

एकसर० गु० एकमति, दुविध
रहित ।

एकसा० गु० समान, बराबर ।

एकसार० समान, एकरस ।

एकछत्र० ना० पु० बिना खट
के एकही राज्य ।

एकत्र॰ अव्य॰ एकठौर, एकस्थान।

एकत्रता॰ ना॰ स्त्री॰ एकठौर होना।

एकाई॰ ना॰ स्त्री॰ एकता।

एकाएकी॰ अव्य॰ अचानक, एकबार में।

एकाकार॰ गु॰ समानरूप, कलि धर्म्म, एक जाति, एकाचार, ब्राह्मणादिका विशेषवर्ण धर्मको त्यागि केपश्चादिसमानरहना।

एकाकी॰ गु॰ अकेला।

एकाग्र॰ गु॰ एकमन, एकमति, दुविधा रहित।

एकाङ्क॰ गु॰ निश्चयकरि सत्य।

एकादशी॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षकी ग्यारहवीं तिथि।

एकाधिपति॰ ना॰ पु॰ अनेक देशों का एक राजा।

एकान्त॰ गु॰ निराला, निपट, निर्जन स्थान।

एकान्तर॰ ना॰ पु॰ एक ओर।

एकान्तरकोण॰ ना॰ पु॰ एक ओर का कोना।

एकायन॰ गु॰ एकमति, एकमार्ग।

एकारान्त॰ गु॰ जिस शब्द के अन्त में एकारहो।

एकाक्ष॰ ना॰ पु॰ काक, काना।

एकांक॰ अव्य॰ निश्चय करि सत्य।

एकैक॰ गु॰ प्रत्येक, हरएक।

एड॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़े को दौड़ाने वा चलाने के निमित्त पांव के पिछले भाग की ठोकर मारना।

एडी॰ ना॰ स्त्री॰ पांव का पिछला भाग।

एण०ना० पु० पाप, हानि, मृग हरिण, घर कपट।

एणी०ना० स्त्री० हरिणी।

एणीन०ना० स्त्री० एणी का बहुवाक्य।

एणमद०ना०पु०कस्तूरी,मुश्क।

एतदर्थ० अव्य० इसलिये।

एतना०गु० इतना, इसक़दर।

एतान्० गु० इतने, इसक़दर, इसप्रकार।

एतादृश०गु० ऐसे,इसप्रकार।

एतावता० अव्य० इस करके, इस कारण।

एतावन्मात्र० गु० इतनाही, यही केवल।

एरण्ड०ना० पु० अरण्ड,रेंड़।

एलवा० } एलवालुक० } एलवालु० } ना०पु०औषधि विशेष अर्थात् मुसब्बर।

एला०ना० स्त्री० इलायची।

एलोईं० ना० पु० हेडमार्ं ईश्वर।

एव० } एवं० } एवम्० } अव्य० इस प्रकार, और।

एवमस्तु० अव्य० ऐसाहीहो।

[ऐ]

ऐंच०ना०पु०सङ्कोच, खेंच।

ऐंचना०स० क्रि० खेंचना।

ऐंठ०ना०स्त्री०बल,मड़ोड़।

ऐंठना० स० क्रि० मरोड़ना बलदेना, अ० क्रि०बल-खाना,मरोड़िजाना।

ऐकाधिपत्य०ना० पु० अद्वितीय देशाधिपत्य,पदवी।

ऐकाहिक०ना०पु०अन्तरिया

ऐक्य० ना० पु० एकता, समानता।

ऐगुन०गु० औगुण।

ऐनसैन०गु० ज्यों का त्यों

ऐन्द्रजालिक॰ ना॰ पु॰ नट-वर, दिठवन्ध।
ऐरावत॰ ना॰ पु॰ इन्द्र का हाथी।
ऐरावती॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष।
ऐलका॰ ना॰ स्त्री॰ ककरासिंगी।
ऐश्वर्य्य॰ ना॰ पु॰ विभव, माहात्म्य, सम्पत्ति, प्रताप, बढ़ती।
ऐश्वर्य्यवान॰ } गु॰ सम्पत्ति
ऐश्वर्य्यशाली॰ } करके सुशोभित।
ऐसा॰ गु॰ इस प्रकार, इसके समान।
ऐहिक॰ गु॰ इसलोक के भोग, जो इहां होवैं।

[ओ]

ओ॰ अव्य॰ सम्बोधन, करुणा, स्मृति।
ओंठ॰ ना॰ पु॰ ओष्ठ, होंठ।
ओंडा॰ गु॰ गम्भीर।
ओंधा॰ गु॰ औंधा, रस्सी जो छप्पर में बांधते हैं।
ओक॰ ना॰ पु॰ घर, आश्रय, ठिकाना ना॰ स्त्री॰ उबकाई।
ओकना॰ अ॰ क्रि॰ वमनकर्ना, उछाल, करना।
ओकारान्त॰ गु॰ जिसके अन्त में ओकार है।
ओखली॰ ना॰ स्त्री॰ गाली, उलूखल।
ओघ॰ ना॰ पु॰ समूह, बहुतायत।
ओछा॰ गु॰ छिछोरा, हलका, छोटा।
ओज॰ ना॰ पु॰ प्रताप, बल, तेज।
ओझ॰ ना॰ पु॰ पचौनी, झोंझ पेट।
ओझड़॰ ना॰ स्त्री॰ झोंक, धक्का।
ओझड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ पचौनी आंत।

ओझल० ना० स्त्री० ओट, कुपाव गु० जो कुपा है।
ओझा० ना० पु० भोंकस, टोनहा यंत्री वा शाक्तधर्मी।
ओट० ना० स्त्री० आड़, पक्ष।
ओटना० स० क्रि० आड़ करना, बचाना, रेतना रुई से बिनौला निकालना, रोकना।
ओटा० ना० पु० आड़, बेठन।
ओड़न० ना० स्त्री० ढाल, फरी।
ओड़ना० स० क्रि० सहना, रोकना।
ओडा० ना० पु० खांचा, बड़ा टोकरा।
ओढ़ना० स० क्रि० पहिरना, ना० पु० रज़ाई, पट्टू, लोई आदि।
ओढनी० ना० स्त्री० स्त्रियों का ओढ़ना।
ओत० ना० स्त्री० बढ़ोतरी, बचती, छीनता।
ओतप्रोत० ना० पु० ताना-बाना, चौड़ाई लम्बाई में ग्रथित, पलटे पर बिवाह।
ओदन० ना० पु० भात, चावल-पका।
ओदा० गु० गीला, भीगा।
ओधे० गु० अधिकारी, लागे।
ओप० ना० स्त्री० सुन्दरता, चमचमाहट, घोट।
ओपना० स० क्रि० घोटना, साफ़ करना।
ओपनी० ना० स्त्री० वह फ़िसान जिसपर जिला करते हैं।
ओपी० अव्य० उधर, कि, गु० साफ की।
ओर० ना० स्त्री० कगर, मार्ग अलङ्ग।
ओरी० गु० पत, पत्तो, मदद, ना० स्त्री० ओलती।
ओल० ना० पु० सूरण, जिमीकन्द, मनौती, बदले।

ओलती॰ ना॰ स्त्री॰ ओरौनी, ओरी।

ओला॰ ना॰ पु॰ जलमयपत्थर, और चीनी शक्करका जो बनता है।

ओषधि॰ ना॰ स्त्री॰ जो पोधा फलझरजाने के पीछे फिर से उत्पन्न हो।

ओष्ठ॰ ना॰ पु॰ दांतों का ढकना, होंठ।

ओस॰ ना॰ स्त्री॰ जो रात्रि समय छोटी २ फुहार पड़ती है, शीत।

ओसर॰ ना॰ स्त्री॰ कलोर भैंस।

ओसरा॰ ना॰ पु॰ } पारी॰
ओसरी॰ ना॰ स्त्री॰ } वारी, पल्ती।

ओसीसा॰ ना॰ पु॰ उसीसा, सिरहाना।

ओहो॰ अव्य॰ वाहवाह, आहा।

[औ]

औ॰ अव्य॰ और।

औंगी॰ ना॰ स्त्री॰ चुप्पी, मूंगापन, चुपड़ी हुई गाड़ी।

औंघाना॰ अ॰ क्रि॰ झपकी आना।

औंड॰ ना॰ पु॰ बेलदार।

औंडा॰ गु॰ गम्भीर।

औंधना॰ अ॰ क्रि॰ उलटना; उमलटना।

औंधा॰ गु॰ उलटा।

औंधाना॰ स॰ क्रि॰ उलटाना।

ओकारान्त॰ गु॰ जिसके अन्त में ओकार है।

औघट॰ गु॰ अगम्य, जहां जा- यन सकें।

औचक॰ } अव्य॰ अचानक,
औचट॰ } नागहान्।

औछू॰ ना॰ पु॰ जड़ विशेष।

औटन॰ ना॰ पु॰ जलाव।

औटना॰ स० क्रि० जलाना, सुखाना।

औत्तानपादि॰ना॰ पु० ध्रुव भक्त प्रसिद्ध।

औत्कर्ष्य॰ ना० पु॰ श्रेष्ठता, उत्तमता।

औत्सुक्य॰ना० पु० चिन्ता, व्याकुलता, पछितावा।

औथरो॰गु० उथला, कम गहरा।

औदात॰गु० अवदात, स्वेत।

औदार्य्य॰ना॰ पु० दातापन, उदारता।

औदासीन्य॰ना० पु॰ विषयों में वैराग्य।

और॰ अव्य० पुनः० फिर, गु० अधिक, दूसरा।

औरस॰ना० पु० व्याहिता का पुत्र।

और्द्ध्वदैहिक॰ ना० पु० मृतक की क्रिया।

औषध॰ } ना० स्त्री॰ रोग
औषधि॰ } नाशक द्रव्य, दवा, इलाज।

औषधिपति॰ } ना० पु०
औषधीश॰ } चन्द्रमा।

[क]

कं॰ अव्य० ना॰ पु० जल, सुख, अग्नि, शिर, काम, सुवर्ण।

ककड़ी॰ना० स्त्री० फलखातर-कारी विशेष।

ककहरा॰ } ना० पु० बारा-
ककहरा॰ } खड़ी, वर्ण।

ककार॰ना० पु० क।

ककुभा॰ ना० स्त्री० दिशा, ओर, छन्द विशेष।

ककुष्ट॰ना० पु० नीवृक्ष।

ककुस्त॰ना० पु० धनियां मसाला, कशनीज़।

ककोरना॰स० क्रि॰ खोदना, खरोचना।

कखरी॰ना॰ स्त्री० कांख, बग़ल।

कखवारी० } ना० स्त्री० कांख
कखौरी० } का फोड़ा ।

कगर० ना० स्त्री० छोर, अन्त, किनारा ।

कङ्क० ना० पु० कुद्दीपक्षी ।

कङ्कण० ना० पु० हाथका भूषण विशेष ।

कङ्कर० ना० पु० जिससे चूना बनता है, बजरी, कड़ी मिट्टी, नीच ।

कङ्काली० ना० स्त्री० डाकिनी ।

कङ्गनी० ना० । स्त्री० पौधा विशेष, मालकंगुनी ।

कङ्करोड़० ना० पु० रोढ, पक्षी विशेष ।

कङ्गाल० पु० अधनी, भिखारी दरिद्री ।

कङ्गालता० ना० स्त्री० दरिद्रता० निर्धनता ।

कङ्गालिन० ना० स्त्री० डाकिनी, डायन, दरिद्रिन ।

कङ्गनी० ना० स्त्री० कङ्गनी ।

कङ्गरा० ना० पु० गुम्बद मठादिक, का कगार: ।

कङ्घा० ना० पु० } बाल झाड़ने
कङ्घी० ना० स्त्री० } के लिये काष्ठादि की वस्तु ।

कच० ना० पु० बाल, केश ।

कचकना० अ० क्रि० मुरकना पिराना ।

कचकचाना० अ० क्रि० किच किराना, भिनभिनाना ।

कचकाना० स० क्रि० मुरकाना ।

कचनार० ना० पु० वृक्षविशेष

कचपचिया० ना० पु० गुच्छा तारोंका, कृतिका ।

कचरा० ना० पु० } फल
कचरी० ना० स्त्री० } विशेष

कचहरी० ना० स्त्री० सभा समाज, मजलिस ।

कचाई० ना० स्त्री० अजी[illegible] कच्चापन ।

कचालू० ना० पु० कन्दविशे[illegible]

कचियाहट॰ना॰ स्त्री॰ घिन घिनाना।

कचर॰ना॰ पु॰ औषधि विशेष।

कचौरी॰ना॰ स्त्री॰ पूरी पोठी वा घोई भरी।

कच्चा॰गु॰ आम, अनाड़ी, अनपका।

कच्छ॰ना॰ पु॰ कछुआ वा द्वितीय विष्णु जी का अवतार, देश जो गुजरात के पास है कछनी।

कच्छप॰ना॰ पु॰ कूर्म्म, कछुआ।

कच्छी॰गु॰ जो कच्छ देश का घोड़ा आदि हो।

काछ॰ना॰ स्त्री॰ काछ।

काछना॰स॰ क्रि॰ धोना, पोछना, ना॰ पु॰ काछ।

काछनी॰ना॰ स्त्री॰ काछ बांधना।

काछलम्पट॰गु॰ कुकर्मी, व्यभिचारी, अजितेन्द्रिय।

कछवाहा॰ना॰ पु॰ राजपुत्र का वर्ण जो श्री रामचन्द्र के पुत्र कुशनामी से उत्पन्न भया।

कछार॰ना॰ स्त्री॰ नदी की तराई वा किनारा।

कछारना॰स॰ क्रि॰ छांटना, धोना।

कछु॰सर्व॰ कुछ, किञ्चित्।

कछुरा॰ना॰ पु॰ जवासा।

कछू॰सर्व॰ कुछ, किञ्चित्।

कज॰ना॰ पु॰ कञ्ज, कमल।

कजरा॰ना॰ पु॰ काजल, गु॰ काजल लगाये।

कजरारे॰गु॰ काजल लगाये हुये।

कजला॰गु॰ काला, काजल लगाये।

कज्जल॰ना॰ पु॰ काजल, अञ्जन, सुरमा।

कज्जलगिरि॰ना॰ पु॰ काजल का पर्वत।

कञ्चन०ना० पु०सुवर्ण, कनक, जाति बिशेष ।

कञ्चनक०ना० पु० कचनार, मैनफल ।

कञ्चनी०ना० स्त्री० कञ्चन जाति की स्त्री० नोची, पतुरिया, सोनेकी पुतली ।

कञ्चु० } ना० स्त्री० चोली,
कञ्चुकी० } अंगिया ।

कञ्ज०ना० पु० कमल ।

कञ्जर०ना० पु० जाति बिशेष जो रस्सी वा सिर की वेचते हैं ।

कञ्जा०गु० जिसकी आंखि की पुतली नीली पीली हैं, ना० पु० वृक्ष वा उस का फल ।

कञ्जिया०ना० स्त्री० आंखकी फुड़िया, छोटी फुड़िया ।

कञ्जूस०गु० शूम, कृपण, लालची ।

कञ्जूसी०ना० स्त्री०कृपणता ।

कटक०ना० पु० सैन, फौज दल, नगर विशेष जो उड़ेसा देश में है ।

कटकट०ना० पु० झगड़ा दांतों से दांत लड़ाना ।

कटकटाना०स० क्रि० चबाना किसी वस्तु का ।

कटकटेरि०ना० स्त्री० दारु हल्दी ।

कटकना०ना० पु० बांधना उपाय, ठेका ।

कटकाद्या०ना० स्त्री० सेम वृक्ष ।

कटघरा०ना० पु० कटहरा ।

कटङ्कटी० ना० स्त्री० दारु हल्दी ।

कटना०अ० क्रि० कटिजाना लज्जित होना वाय होना, मोहित होना ।

कटनी०ना०स्त्री०कटाई, अम ज काटने का समय, वा का ने की वस्तु यथा कैंची ।

कटफल० ना० पु० कायफल।

कटम्भरी० ना० स्त्री० स्योना
पाठ।

कटरा० ना० पु० हाट, चौक।

कटहरा० ना० पु० कटहरा,
बड़ा पिंजड़ा।

कटहू० गु० काटने वाला।

कटा० ना० स्त्री० मारा जाना
बहुत लोगों का।

कटाका० ना० स्त्री० जो दस्त दर्द
होकर आवै।

कटाना० स० क्रि० किसी पदा-
र्थ के टुकड़े कराना।

कटार० ना० पु० ख़ञ्जर।

कटारा० ना० पु० ओषधि,
पौधा विशेष।

कटारी० ना० स्त्री० ख़ञ्जर,
छुरी।

कटाह० ना० पु० कड़ाह,
कड़ाही।

कटाक्ष० ना० पु० वानरविशेष,
ना० स्त्री० तिरछी
चितवन।

कटि० ना० स्त्री० लङ्क, कमर।

कटित० गु० खपत।

कटिबन्ध० ना० पु० पृथ्वीके
लघु भाग करने केलिये
उसके पांच कटिबन्ध
नियत किये अर्थात् शीत
कटिबन्धदो, और सम
कटिबन्धदो २ उष्ण १।

कटीला० ना० पु० पौधाविशेष,
गु० कांटोंवाला सजीला,
सावन्त।

कटु० } गु० कड़ुवा, कड़ा,
कटुक० } बुरा।

कटुकी० ना० स्त्री० कुटकी
ओषधि।

कटुग्रन्थ० ना० स्त्री० पिपरामूल

कटुत्कट० } ना० स्त्री० सोंठि।
कटुभद्र० }

कटुभी० ना० स्त्री० मालकङ्गुनी।

कटुरोहिणी० ना० स्त्री० कुटकी औषधि।

कटैया० ना० स्त्री० पौधा कांटोंवाला विशेष।

कटोरा० ना० पु० } भोजन करने का पात्र विशेष।
कटोरी० ना० स्त्री० }

कट्ठा० ना० पु० काठका जिसपर कपड़ा धोते हैं।

कण्टकी० गु० रोमाञ्चित, रोम खड़े हुये।

कठन्दर० ना० पु० काष्ठोदर, रोग विशेष।

कठड़ा० ना० पु० } काठकी थाली वा पात्र विशेष।
कठड़ी० ना० स्त्री० }
कठरा० ना० पु० }
कठरी० ना० स्त्री० }

कठवत० ना० स्त्री० काठका बर्त्तन विशेष।

कठारी० ना० स्त्री० काठका वर्त्तन, कमण्डल।

कठिन० गु० निष्ठुर, कठोर, कड़ा, मुश्किल।

कठिनता० ना० स्त्री० } कठोरता, निष्ठुरता, कड़ापन, सख्ती।
कठिनत्व० ना० पु० }

कठिया० ना० स्त्री० काठ की छोटी माला काठ का छोटा सा पात्र।

कठिल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।

कठेठी० ना० स्त्री० कड़ी, कठिन।

कठोर० गु० निठुर, कड़ा, असह्य, ना० पु० बेल वृक्ष वा उसका फल।

कठोरता० ना० स्त्री० निठुरता निठुराई।

कठोलिया० ना० स्त्री० काठ का छोटा सा पात्र।

कठौता॰ना॰पु॰ } काठ का
कठौती॰ना॰स्त्री॰ } बड़ापात्र

कड़क॰ ना॰ स्त्री॰ धड़ाका, चटक,गर्जनि, स्फुर्त्त।

कड़कना॰ अ॰ क्रि॰ चटकना धड़कना, गरजना।

कड़खा॰ना॰ पु॰युद्ध में बढ़ावा देनेकी बात कहना।

कड़खैत॰पु॰ भाट जो बढाव देता है।

कड़ुआ॰ गु॰ तीता, तीक्ष्ण, निठुर, योद्धा।

कड़ुवाहट॰ ना॰ स्त्री॰ तीक्ष् णता।

कड़ा॰गु॰ कठोर, दृढ, मगरा, ढीठ, निठुर, ना॰ पु॰ लोहे का वा चांदीआदि का भूषण जो हाथ में पहिनते हैं।

कड़ाड़ा॰ ना॰ पु॰ नदी का ऊंचा किनारा।

कड़ाह॰ ना॰ पु॰ दुग्धादि औटने के लिये लोहे का पात्र, गुरुनानक का भोग।

कड़ाही॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा कड़ाह।

कडी॰ना॰ स्त्री॰कांडी, धरनी, धन्नी।

कडु॰ना॰स्त्री॰खुजलीखारिश्त

कढ़ना॰अ॰ क्रि॰ निकलना, उठना, चितना।

कढ़िल्लक॰ना॰ पु॰ लालपुन-र्नवा।

कढ़ी॰ना॰ स्त्री॰ भोजनविशेष जो बेसन औ दही से बनता है।

कढुआ॰ना॰पु॰ उधार क़र्ज़।

कण॰ ना॰ पु॰ धान्य, अनाज, राज्यग्राह्य द्रव्य,ज़र्रा।

कणा॰ना॰ स्त्री॰ पीपरी।

कणामूल॰ ना॰ पु॰ पीपरा मूल।

कणामुफल० ना० पु० अङ्कोल औषधि।

कणिका० ना० स्त्री० सोनजुही, अणु, लेश, टुकड़ा, ज़र्रः।

कणी० ना० स्त्री० छिटक, टुकड़ा, ज़र्रः।

कण्टक० ना० पु० कांटा, गोखुरू, शत्रु, क्षपण, पित्तपापड़ा।

कण्टकलता० ना० स्त्री० खीरा फल विशेष।

कण्टकारि० } ना० स्त्री०
कण्टकिनी० } छोटी कटाई, सफेद घीकुवारि।

कण्टकिफल० ना० पु० कटहल।

कण्टकी० ना० पु० बिल्वबेलु।

कण्टफल० ना० पु० गोखुरू।

कण्टार० गु० कटीला।

कण्टारिका० ना० स्त्री० छोटी सफेद कटाई।

कण्टिया० ना० स्त्री० आंकडी।

कण्ठ० ना० पु० गला, घांटी, उपस्थित, मुखाग्र।

कण्ठगत० गु० गले में, जान बलब।

कण्ठमाल० } ना० स्त्री० गले
कण्ठमाला० } की माला, मुख्यरोग जिसमें गला सड़जाता है।

कण्ठला० ना० पु० माला जो लड़कों के लिये बज्रयंत्र युत बनाते है।

कण्ठस्थ० ना० पु० मुखाग्र।

कण्ठा० ना० पु० बड़ी गुरियों का माला।

कण्ठाग्र० गु० मुखाग्र, ज़बानी

कण्ठाभरण० ना० पु० गलेका भूषण।

कण्ठी० ना० स्त्री० छोटी माला तुलसी आदि की।

कण्ठीरव० ना० पु० सिंह, व्याघ्र, शेर।

कण्ठ्य॰ गु॰ जिन अक्षरों का उच्चारण कण्ठसे होवे।

कण्डा॰ ना॰ पु॰ उपला।

कण्डी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा उपला।

कण्डपुष्पी॰ ना॰स्त्री॰ शंखाहोली।

कण्डू॰ ना॰ पु॰ रोग विशेष, स्त्री॰ जमुहाई।

कण्डूम॰ ना॰ स्त्री॰ पवांर, औषधि।

कण्डेरा॰ ना॰ पु॰ धुनियां, जाति विशेष जो तीर बनाते हैं, कमानगर।

कण्व॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष।

कत॰ अव्य॰ कहां, क्योंकर, किसलिये।

कतना॰ अ॰क्रि॰ काताजाना।

कतरन॰
कतरा॰ } ना॰ पु॰ काटन।

कतरना॰ स॰ क्रि॰ काटना।

कतरनी॰ ना॰ स्त्री॰ कटनी, कैंची।

कतराना॰ स॰क्रि॰ कटवाना।

कतहु॰ अव्य॰ कभी।

कताई॰ ना॰ स्त्री॰ कातने का काम, कातने का पैसा।

कतीरा॰ ना॰ पु॰ गोंद विशेष।

कत्त॰ अव्य॰ कहां, क्योंकर।

कत्था॰ ना॰ पु॰ खदिर, खैर।

कत्थायल॰ ना॰ पु॰ काला हरिण।

कथक॰ गु॰ पौराणिक, पवांरिया, कथिक।

कथन॰ ना॰ पु॰ कहना, वाक्य का प्रयोग कहना।

कथना॰ अ॰ क्रि॰ कहना।

कथनीय॰ गु॰ कहने के योग्य।

कथा॰ ना॰ स्त्री॰ कहानी, वृत्तान्त, पवांरा।

कथित॰ गु॰ कहा हुआ।

कथोपकथन॰ ना॰ पु॰ आलाप परस्पर बात चीत।

कथ्य॰ ना॰ स्त्री॰ हर्र, गु॰ कहने योग्य।

कद॰ अव्य॰ कब।

कदध्वा॰ ना॰ स्त्री॰ अतिमार्ग, कठिन मार्ग।

कदन॰ ना॰ पु॰ नाशक, वधिक।

कदम्ब॰ ना॰ पु॰ समूह, वृक्ष विशेष, कदम।

कदम्बक॰ ना॰ पु॰ समूह, शिरोह।

कदर्य॰ गु॰ लोभी, कञ्जूस।

कदली॰ ना॰ पु॰ केला वृक्ष।

कदक्षर॰ ना॰ पु॰ कुत्सित वर्ण।

कदा॰ अव्य॰ कब।

कदाचार॰ गु॰ शास्त्र से विपरीत, व्यवहार।

कदाचित्॰ } अव्य॰ जो कभी
कदापि॰ } होता हो। शायद।

कर्दन॰ ना॰ पु॰ दुःख, क्लेश।

कद्रू॰ ना॰ स्त्री॰ काली नाग की माता, कश्यप जीकी स्त्री।

कधू॰ अव्य॰ कभी।

कन॰ ना॰ पु॰ कण अणु।

कनक॰ ना॰ पु॰ सोना, धतूरा।

कनकटा॰ गु॰ बूचा।

कनकाचल॰ ना॰ पु॰ सुमेर पर्वत जो मनुष्य को अगम्य है।

कनखजूरा॰ ना॰ पु॰ गोजर, कीट प्रसिद्ध।

कनल॰ ना॰ पु॰ भिलावां।

कनवाई॰ ना॰ स्त्री॰ कान छेदना।

कनागत॰ ना॰ पु॰ आश्विन कृष्ण पक्ष में पितरों का श्राद्ध।

कनिक॰ ना॰ पु॰ चून, पिसान, आटा।

कनियाना॰स॰ क्रि॰ सङ्कोच से कतरायजाना आंख छुपाना।

कनियाहट॰ना॰ स्त्री॰ खींच संकोच।

कनिष्ठ॰ गु॰ छोटा।

कनिष्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं, अङ्गुली, नीच स्त्री।

कनिष्ठिका॰ ना॰ स्त्री॰ पांचवीं अङ्गुली।

कनिहा॰ गु॰ चूना।

कने॰ अव्य, पास, साथ।

कनेर॰ } ना॰ पु॰ करवीर वृक्ष
कनेल॰ } जिसका फूल देवतों को चढ़ता है।

कनैया॰ ना॰ पु॰ कर्ण वेधन, ना॰ स्त्री॰ डाली।

कनौज॰ ना॰ पु॰ प्राचीन नगर, विशेष देश।

कनौजिया॰ गु॰ कनौज देश का वासी।

कन्त॰ ना॰ पु॰ स्वामी, भर्त्तार प्रियतम, मालिक।

कन्था॰ ना॰ स्त्री॰ कथड़ी, गूदड़ी, नोती यथा, शनैः कन्था शनैः पन्था शनैः पर्व्वत लंघनं। शनैर्विद्या शनैर्वित्त मेते पञ्च शनैः शनैः।

कन्द॰ ना॰ पु॰ जड़ विशेष वा जो जड़ मे फलता है यथा, सूरण, घुइयां, आलू, और मेघ, घूलि।

कन्दरा॰ ना॰ स्त्री॰ खोह, गुफा।

कन्दराल॰ ना॰ पु॰ अख-रोट।

कन्दर्प॰ ना॰ पु॰ कामदेव

कन्दलकन्द॰ ना॰ पु॰ ज़िमी-कन्द।

कन्दला॰ ना॰ पु॰ कोंचबीज।

कन्दासी॰ ना॰ स्त्री॰ पिया-वासा।

कन्दुक० ना० पु० कैथा वृक्ष वा उसका फल, गेंद।

कन्ध० ना० पु० कांधा।

कन्धर० ना० पु० गला, मेघ।

कन्धा० ना० पु० कांधा।

कन्धियाना० स० क्रि० कोई वस्तु कांधे पर रखना।

कन्धेली० ना० स्त्री० खोगीर, जो घोड़ों को चढ़ाते हे।

कंन्यका० ना० स्त्री० कुमारी, कन्या।

कंन्या० ना० स्त्री० बेटी, छठी-राशि, दश वर्ष तक की लड़की।

कंस० ना० पु० श्री कृष्ण का मामू।

कन्हाई० } ना० पु० श्रीकृष्ण चन्द्र जी का एक नाम।
कन्हैया० }

कपना० अ० क्रि० थर थराना।

कपकपी० ना० स्त्री० थरथ-राहट, फुरफुरी।

कपट० ना० पु० छल, फ़रेब, खोटाई, और मगल।

कपटभू० ना० स्त्री० माया भूमि, तिलसमाती ज़मीन।

कपटी० गु० छली, खोटा, बहु रूपिया।

कपड़ा० ना० पु० वस्त्र।

कपड़ोंसेहोना० अ० क्रि० रजो धर्म होना ऋतुमती होना।

कपर्दी० ना० पु० श्रीमहादेव जी, बरगद।

कपाट० ना० पु० किवाड़, पट।

कपार० } ना० पु० माथा, ल-लाट, भाग्य।
कपाल० }

कपालभृत० ना० पु० श्रीमहा-देवजी।

कपाली० ना० पु० श्रीमहादेव जी, और श्री भैरवजी।

कपास॰ ना० स्त्री० रूई का वृत्त, कर्पास।

कपि॰ ना० पु॰ बानर, बन्दर।

कपिकुञ्जर॰ ना० पु० श्रेष्ठ बानर।

कपितन॰ ना० पु० पारस पीपल।

कपित्थ॰ ना० पु० कैथा का वृत्त।

कपिध्वज॰ ना० पु० अर्जुन पाण्डु पुत्र।

कपिन्द्र॰ } ना० पु० मुख्य
कपीन्द्र॰ } बानर, और श्रेष्ठ बानर।

कपिपति॰ ना० पु० सुग्रीव, गु० जो बानरों का राजा होव।

कपिपिप्पली ना० स्त्री० लाल-ऊंगा।

कपिभूत॰ ना० पु० पारस पीपल।

कपिल॰ ना० पु० मुनि विशेष सांख्य शास्त्र के वक्ता, पीतल धातु।

कपिला॰ ना० स्त्री० पिङ्गल वर्ण की गाय, रेणुका।

कपिलदेव॰ ना० पु॰ आदि अवतार।

कपिल्ल॰ ना० स्त्री० कपाला औषधि।

कपीश॰ ना॰ पु० सुग्रीव बानरों का राजा।

कपूर॰ ना० पु॰ सुगन्धि विशेष कापूर।

कपोत॰ ना० पु० कबूतर, परेवा।

कपोतवर्णा॰ ना० स्त्री॰ छोटी इलायची।

कपोताक्ष॰ ना० पु० नद विशेष

कपोतिका॰ ना॰ स्त्री० मूली तरकारी।

कपोल॰ ना० पु० गाल।

कफ॰ ना॰ पु० खखार, श्लेष्मा बलग़म।

कफाब्धिज॰ ना० पु० समुद्र फेन।

कब॰ अव्य, कहां, कदा।

कबड्डी॰ ना॰ स्त्री॰ गबड्डी खेल विशेष।

कबन्ध॰ ना॰ पु॰ बिना मस्तक की देह, और पानी, मेघ, राहु, उभे पूर्वा परे सन्ध्ये नित्यम्पश्यामि भारत, उदयास्त मने सूर्य्यं कबन्धैः परिवारितं इति महा भारते।

कबरा॰ गु॰ कर्बुर, चितला, अबलक।

कबाब॰ ना॰ पु॰ काम, उद्यम, तरकारी।

कभी॰ } ना॰ पु॰ अव्य, कभी,
कभू॰ } कदापि, कधी।

कमठ॰ ना॰ पु॰ कछुवा।

कमठा॰ ना॰ पु॰ धनुष, कमान।

कमठी॰ ना॰ स्त्री॰ कछुई, धनुही।

कमण्डलु॰ ना॰ पु॰ दण्डियों का जल पात्र, करवा।

कमनीय॰ गु॰ सुन्दर, मनोवत्।

कमन्दर॰ ना॰ स्त्री॰ सीपी यथा, मुक्ता स्फोटाब्धि मण्डू की शुक्ति मौक्ति कमन्दरः इति निघण्टे।

कमरख॰ ना॰ पु॰ फलविशेष, और वस्त्र विशेष।

कमल॰ ना॰ पु॰ पद्म।

कमलज } ना॰ पु॰ ब्रह्मा।
कमलभव }

कमलवायु॰ ना॰ पु॰ कांवर, रोग विशेष जिसमें देह और आंखो पीली हो जाती हैं।

कमला॰ ना॰ स्त्री॰ लक्ष्मी, श्री।

कमलाकर॰ ना॰ पु॰ तालाव।

कमलासन॰ ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

कमलासिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती।

कमलाक्ष॰ ना॰ पु॰ कमल नयन।

कमलिनी॰ ना॰ स्त्री॰ पद्मिनी

कमाई॰ना॰ स्त्री॰ उपार्जन, प्राप्ति, पैदायश ।

कमाऊ॰ गु॰ उद्यमी, यत्नी, देश विशेष पु॰ ।

कमाना॰ स॰ क्रि॰ उपार्जन करना, पैदा करना ।

कमेरा॰ गु॰ परिश्रमी, मिह-नती ।

कमोदिनी॰ना॰ स्त्री॰ कमल विशेष जो राति को खिलता है अर्थात् कफूल ।

कमोरी॰ना॰ स्त्री॰ मटकी, हण्डी दुग्धादि ।

कम्प॰ना॰ पु॰ कपकपी, थर थराहट ।

कम्पना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, थर थराना ।

कम्पवाय॰ ना॰ पु॰ रोग बिशेष जिसमें सारा शरीर कम्पा करता है ।

कम्पाहा॰ गु॰ थर थराहा ।

कम्पित॰ गु॰ कांपता भया ।

कम्पनी॰ना॰ स्त्री॰ साहिब लोगों के बहुतों का मेल बासाभा, अंगरेज़ी शब्द ।

कम्बल॰ना॰ पु॰ ऊनकावस्त्र ।

कम्बु॰ ना॰ पु॰ शंख॰ हाथी, कम्बासुर ।

कम्बुज॰ना॰ स्त्री॰ हरसिंघाड़ ।

कम्बुमालिनी॰ ना॰ स्त्री॰ शंखा होली ।

कम्बोज॰ना॰ पु॰ घोड़ा, राजा बिशेष ।

कम्भारी॰ना॰ स्त्री॰ औषधि विशेष ।

कम्मल॰ ना॰ पु॰ रोम, वस्त्र, कम्बल ।

कर॰ ना॰ पु॰ हाथ, राजा सधन, महसूल, किरण, पुष्कर, बिषया ।

करक॰ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, दर्द ।

करकस॰ गु॰ कर्कश, लड़ाकू

करका॰ ना॰ पु॰ ओला, हिमोपल ।

कर्कसा॰ना॰स्त्री॰लड़ाको ।
करज॰ ना॰ स्त्री॰ अङ्गुली, नख ।
करट॰ना॰ पु॰ कौआ ।
करटो॰ना॰ पु॰ रांगा, ना॰ स्त्री॰ काक पत्नी ।
करण॰ना॰ पु॰ साधन,कारक विशेष, ।
करणी॰ना॰स्त्री॰ कर्म्म,क्रिया, थवई का एक हथियार करण सम्बन्धी ।
करणीय॰गु॰ अवश्य कर्त्तव्य ।
करतल॰ना॰ पु॰ हथेली ।
करतलगत॰गु॰ हाथमें ।
करताल॰ } करताली॰ } ना॰स्त्री॰बाजा विशेष काठ का हथेली की ताल ।
करतूति॰ना॰ स्त्री॰ कर्त्तव्य, चाल, करणी ।
करतोया॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो बंगाले मेंहै ।
करना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचना ।
करनी॰ ना॰ स्त्री॰ करणी, कर्त्तव्य ।
करपल्लव॰ना॰ पु॰ अंगुलीवा उसका छोर ।
करपृष्ठ ना॰ स्त्री॰ हाथ की पीठ ।
करबी॰ना॰ स्त्री॰ ज्वारिका पोधा ।
करभ॰ना॰ पु॰ हाथी ।
करभप्रिय॰ना॰पु॰पीलूवृक्ष ।
करभूषण॰ना॰ पु॰ कङ्कनादि आभरण ।
करम॰ना॰ पु॰ कर्म ।
करमर्दो॰ना॰पु॰बड़ाकरौंदा।
करमूल॰ना॰ पु॰ कन्धा ।
करवार॰गु॰अल्पघातादिविघ्न, ब्रजविलासे यथा, नन्द यशोमति भाग बड़ेरी, सुतकीकरवरटरीकरेरी।

करवाल० ना० पु० तलवार।
करवीर० ना० पु० कनैलवृक्ष, विशेष।
करवीरक० ना० पु० कनैल-वृक्ष।
कररुह० ना० पु० नख, नाखून।
करसम्पुट० ना० पु० हाथ-जोड़ना।
करहाट० ना० पु० सिफाकन्द, मैनफल।
करहाटक० ना० पु० सिफाकन्द
करांत० ना० पु० आरा।
करांती० गु० आरे से चीरने हारे।
कराना० स० क्रि० बनाना, रचाना।
करायल० ना० पु० भोजन बिशेष जूस।
करार० ना० पु० किनारा, गु० भयङ्कर, कराल।
करारा० ना० पु० कड़ारा, किनारा।
कराल० गु० भयङ्कर, टेढ़ा, ना० स्त्री० बिडङ्ग औषधि।
कराली० ना० स्त्री० भयङ्कर, कठिन।
करावलि० ना० स्त्री० किरणों का समूह।
कराहना० अ० क्रि० सांसभरना, दुखकरना।
करिया० ना० पु० केवट, मल्लाह।
करिल० ना० पु० मठोर जिसका शिर टूटा हो वा सकानया पौधा।
करी० ना० पु० हाथी।

करीर० करीरक० करील०	ना० पु० वृक्ष विशेष जो कांटों वाला होताहे।

करीष० ना० पु० गोवर की मांदि वा सूखे कण्डा और कोई २ कोयला बताते हे।

करसा० ना० स्त्री० लड़ाकी।

करज० ना० स्त्री० अङ्गुली, नख।

करट० ना० पु० कौआ।

करटो० ना० पु० रांगा, ना० स्त्री० काक पक्षी।

करण० ना० पु० साधन, कारक विशेष,।

करणी० ना० स्त्री० कर्म्म, क्रिया, थवई का एक हथियार करना सम्बन्धी।

करणीय० गु० अवश्य कर्त्तव्य।

करतल० ना० पु० हथेली।

करतलगत० गु० हाथमें।

करताल०
करताली० } ना० स्त्री० बाजा विशेष काठ का हथेली की ताल।

करतूति० ना० स्त्री० कर्त्तव्य, चाल, करणी।

करतोया० ना० स्त्री० नदी विशेष जो बंगाले मेंहै।

करना० स० क्रि० बनाना, रचना।

करनी० ना० स्त्री० करणी, कर्त्तव्य।

करपल्लव० ना० पु० अंगुलीवा उसका छोर।

करपृष्ठ ना० स्त्री० हाथ की पीठ।

करबी० ना० स्त्री० ज्वारिका पोधा।

करभ० ना० पु० हाथी।

करभप्रिय० ना० पु० पीलूवृक्ष।

करभूषण० ना० पु० कङ्कनादि आभरण।

करम० ना० पु० कर्म।

करमर्दी० ना० पु० बड़ाकरौंदा।

करमूल० ना० पु० कन्धा।

करवार० गु० अल्पघातादिविघ्न, ब्रजविलासे यथा, नन्द यशोमति भाग बडेरी, सुतकीकरवरटरीकरेरी।

करवाल॰ ना॰ पु॰ तलवार।

करवीर॰ ना॰ पु॰ कनैलवृक्ष, विशेष।

करवीरक॰ ना॰ पु॰ कनैल-वृक्ष।

कररुह॰ ना॰ पु॰ नख, नाखून।

करसम्पुट॰ ना॰ पु॰ हाथ-जोड़ना।

करहाट॰ ना॰ पु॰ सिफाकन्द, मैनफल।

करहाटक॰ ना॰ पु॰ सिफाकन्द

करांत॰ ना॰ पु॰ आरा।

करांती॰ गु॰ आरे से चीरने हारे।

कराना॰ स॰ क्रि॰ बनाना, रचाना।

करायल॰ ना॰ पु॰ भोजन बिशेष जूस।

करार॰ ना॰ पु॰ किनारा, गु॰ भयङ्कर, कराल।

करारा॰ ना॰ पु॰ कड़ारा, किनारा।

कराल॰ गु॰ भयङ्कर, टेढ़ा, ना॰ स्त्री॰ बिडङ्ग ओषधि।

कराली॰ ना॰ स्त्री॰ भयङ्कर, कठिन।

करावलि॰ ना॰ स्त्री॰ किरणों का समूह।

कराहना॰ अ॰ क्रि॰ सांसभ-रना, दुखकरना।

करिया॰ ना॰ पु॰ केवट, मल्लाह।

करिल॰ ना॰ पु॰ मठोर जि-सका शिर टूटा हो वां सकानया पौधा।

करी॰ ना॰ पु॰ हाथी।

करीर॰ }
करीरक॰ } ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष जो कांटों वाला होताहे।
करील॰ }

करीष॰ ना॰ पु॰ गोवर की मांहि वा सूखे कगडा और कोई २ कोयला बताते है।

करुणा० ना० स्त्री० दया, कोमलता ।

करुणाकर० गु० दयाकर, दयाकीराशि, कोमलता की खानि ।

करुणाकरना० स० क्रि० गुणकहि कररोना, दयाकरना ।

करेरा० गु० दृढ़, कड़ा, बलवान ।

करेरी० ना० स्त्री० दृढ़, कड़ी ।

करेला० ना० पु० तरकारी बिशेष ।

करेत० ना० पु० सांप बिशेष ।

करोड़० गु० सौलाख- १0000000 ।

करोड़ा० ना० पु० उगाहने वाला, प्रधान ।

करौंदा० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल बिशेष ।

कर्क०, कर्कट० ना० पु० चौथी राशि विशेष, केकड़ा, गेंगटा ।

कर्कटशृङ्गिका० ना० स्त्री० ककरासिंगी ।

कर्कटा० ना० पु० बेर फल विशेष ।

कर्कटाख्या० ना० स्त्री० ककरासिंगी ।

कर्कटी० ना० स्त्री० ककडी, पिण्डखजूर ।

कर्कन्धु० ना० पु० बेर का वृक्ष वा फल ।

कर्कल० ना० पु० अजमोद, सूक्ष्मबायु ।

कर्कश० गु० कड़ा, कठोर, लड़ाका, असह्य ।

कर्कशछदा० ना० स्त्री० केतकी ।

कर्कारु० ना० स्त्री० पु० कुम्हड़ा खभड़ा ।

कर्कीज० ना० पु० घोड़ा ।

कर्कोटक० ना० पु० मुख्य सर्प ।

कर्कोटिका० ना० स्त्री० ककोड़ी औषधि ।

कर्चूर॰ ना॰ पु॰ कचूर।

कर्चूरिका॰ ना॰ स्त्री॰ हाथ की चूडी, कचूरी।

कर्छी॰ ना॰ पु॰ कफगीर, बडा चमचा।

कर्छी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटाकर्छा।

कर्ण॰ ना॰ पु॰ कान, पतवार, सूर्यसुत, कमानकारोदः वतर।

कर्णधार॰ ना॰ पु॰ मांझी, चढ़नदार।

कर्णफूल॰ ना॰ पु॰ कान का भूषण विशेष।

कर्णवेधन॰ ना॰ पु॰ कान का छेदना, कनछेदन।

कर्णवेष्टन॰ ना॰ पु॰ कुण्डल जो कानमें पहिनतेहे।

कर्णाट॰ } ना॰ पु॰ दक्षिण
कर्णाटक॰ } भरत खण्ड का एक भाग विख्यात।

कर्णालम्बित॰ गु॰ कानतक खीचना।

कर्णिकार॰ ना॰ पु॰ किरवाली औषधि।

करणी॰ ना॰ स्त्री॰ क्रिया, कर्म, करण, जात।

कर्त्तव्य॰ ना॰ पु॰ करतूति, करने के योग्य।

कर्तव्यता॰ गु॰ स्त्री॰ चाल, करतूति।

कर्त्ता॰ } ना॰ पु॰ क्रिया में प्रधान होता है,
कर्त्तार॰ } करनेवाला, सिरजनहार, प्रभु, भर्त्ता विशेष ब्रह्मा।

कर्तृकर्मभाव॰ ना॰ पु॰ कर्त्ता, और कर्म का सम्बन्ध।

कर्तृत्व॰ ना॰ पु॰ कर्त्ता का धर्म्म।

कर्तृप्रधान॰ ना॰ पु॰ गु॰ जिसपद में कर्त्ता प्रधान हे।

कर्तृवाचक॰ गु॰ जिसपद में कर्त्ता पाया जावे।

कर्दम॰ ना॰ पु॰ कीचड़, कादो, लेप, और मुनि विशेष

कर्दमक॰ ना॰ पु॰ कीचड़।
कर्धनी॰ ना॰ पु॰ कटिबन्धन, सूत जो कमर में बांधते हैं।
कर्पर्दी॰ ना॰ स्त्री॰ कौडी, यथा कर्पर्दी चवराटिका: इति निघण्ट:।
कर्पास॰ ना॰ स्त्री॰ कपास, कपासका वृक्ष।
कर्पूर॰ ना॰ पु॰ कपूर, काफ़ूर।
कर्म॰ ना॰ पु॰ द्वितीय कारक, काम, भाग्य प्रारब्ध, शास्त्रविहित जपयज्ञादि।
कर्मकर॰ गु॰ सेवक, नौकर।
कर्मकाण्ड॰ ना॰ पु॰ जप यज्ञादि।
कर्मकारक॰ ना॰ पु॰ कारक विशेष।
कर्मच्युत॰ गु॰ काम से भ्रष्ट, क्रिया भ्रष्ट।
कर्मनाशा॰ ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष जो काशी और गया के मध्य में है।
कर्मप्रधान॰ गु॰ कर्म मुख्य विचित्र कर्त्ता।
कर्मभोग॰ ना॰ पु॰ प्रारब्ध का भोग, और तपस्या, पक्षी विशेष।
कर्मरङ्ग॰ ना॰ पु॰ कमरख।
कर्मवाच्य॰ गु॰ जिस क्रिया पद का कर्म उद्देश्य हो।
कर्मवाचक॰ गु॰ कर्मसूचक।
कर्मविपाक॰ ना॰ पु॰ कर्मों का फल, ग्रन्थ विशेष।
कर्मसाक्षी॰ ना॰ पु॰ सूरज।
कर्माधर्मी॰ गु॰ जपतपिया, भाग्यवान् दैवागत।
कर्मार॰ ना॰ पु॰ बांस।
कर्मिणी॰ ना॰ स्त्री॰ कागज जंघा।
कर्मी॰ गु॰ कर्मों का करनेवाला
कर्मेन्द्रिय॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रिय जिनसे कर्म करते हैं वह पांच हैं अर्थात् गुदा लिङ्ग, हाथ, पांव, मुख

कर्राना॰ अ॰ क्रि॰ कड़ापड़ना।

कर्बुक॰ } नाo पुo निशा-
कर्व्याद॰ } चर, क्रव्याद।

कर्बुर॰ नाo पुo सुवर्ण, राक्षस।

कर्ष॰ नाoपुoप्रमाण, को, वैर।

कर्षण॰ नाo पुo खेंच।

कर्षफल॰ नाo पुo बहेड़ा।

कर्षा॰ नाoस्त्रीoईर्षा, उत्साह।

कर्षित॰ गुo खींचागया।

कल॰ नाo स्त्रीo चैन, सुख, यन्त्र, गुo अव्यक्त, सुन्दर, मीठा, मधुर शब्द, आज का पहिलावा पिछला दिन।

कलकण्ठ॰ नाo स्त्रीo कोयल पक्षी।

कलकत्ता॰ नाo पुo नगर विशेष।

कलकल॰ ना॰ पुoकोलाहल, शोर, झगड़ा।

कलकाञ्ची॰ नाo स्त्रीo नगर विशेष।

कलङ्क॰ नाo पुo अपवाद, चिह्न, दोष।

कलङ्की॰ गु॰ दोषी, पापी।

कलङ्किनी॰ ना॰ स्त्रीo दूषिता, अपवादिनी, जिसको कलङ्कलगा।

कलधौत॰ नाo पु॰ सोना, चांदी।

कलप॰ नाo पुo रङ्ग, जिससे बाल रंगे जाते हैं, वसमा, माड़ी।

कलपना॰ अo क्रि॰ कुढ़ना, दुःखितहोना, कलपकरना, माड़ी लगाना।

कलपाना॰ सo क्रिo कुढ़ाना, दुखीकरना, कलपकराना॰ माड़ी लगवाना।

कलभ॰ नाo पुo हाथी, कलुष, उन्नाव व साधु।

क़लम० ना० स्त्री लेखनी, यह अरबी शब्द है ।

कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना ।

कलरव० ना० पु० कबूतर, कोकिला ।

कलबल० ना० पु० कलकेवल, तोतरी बात ।

कलविङ्क० ना० पु० गरगैया पत्ती ।

कलश० ना० पु० घट, जो विवाह आदि में स्थापित करतेहैं, घड़ा, गगरा ।

कलस० ना० पु० शूल, कलश ।

कलसी० ना० पु० छोटा कलश, गगरी ।

कलह० ना० पु० विरोध, लड़ाई, झगड़ा ।

कलहंस० ना० पु० राजहंस, मैलाहंस ।

कलहा० } गु० लड़ाका,
कलहारा० } झगड़ालू ।

कलही० ना० स्त्री० कर्कशा, लड़ाकी ।

कलत्र० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री बिवाहिता ।

कला० ना० स्त्री० सोलहवाँ अंश, बाट ।

कलाई० ना० स्त्री० पहुँचा, रंगा सूत ।

कलावत० ना० पु० गवैया, गायक ।

कलाद० ना० पु० सुनार जाति, यथा नाडीधमः स्वर्णकारः कलादो रुक्म कारकः इत्यमरः ।

कलाधर० ना० पु० चन्द्रमा नृत्यक, बहुरूपी ।

कलाना० स० क्रि० भुनाना ।

कलानिधि० ना० पु० चन्द्रमा ।

कलाप० ना० पु० समूह, व्या करण विशेष गुण० तर्क आभरण, चन्द्रमा, दुःख हरि हर भजन, भौंरे का समूह, ग्राम विशेष

कलापी० ना० पु० मयूर, मोर।

कलापशाक० ना० पु० मटर का साग।

कलार०
कलाल० ना० पु० कलवार, सूंडी।

कलि० ना० पु० चौथा युग जो ४६४००० वर्ष का होता है, वेदोक्त समय का नाशक, समय, कलियुग, युद्ध, पाप. क्लेश, सूर्मा, तर्क्कश।

कलिकवि० ना० पु० कालिदासादि।

कलिका० ना० स्त्री० शरफोंका, कली, बिना फूला फूल।

कलिकारी० ना० स्त्री० कलिहारी।

कलिङ्ग० ना० पु० इन्द्रयव, तरबूज़, कटक रच्छ का पौधा, देश विशेष, राजा विशेष।

कलित० गु० बढ़ता भया, सुन्दर।

कलिद्रुम० ना० पु० बहेरा।

कलिन्द० ना० पु० तरबूज़, पर्ब्बत विशेष।

कलिमल० ना० पु० पाप, दोष।

कलिमलसरि० ना० स्त्री० कर्म्मनाशा नदी।

कलियाना० अ० क्रि० कली निकलना, फूलना।

कलिल० ना० पु० क्लेश, सङ्कट, दुःख।

कली० ना० स्त्री० कलिका, बरी।

कलुष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह।

कलेऊ० ना० पु० बासी रसोई, प्रातःकाल में थोड़ा भोजन।

कलेजा० ना० पु० अङ्ग विशेष, सूर्म्मापन, साहस।

कलेवर० ना० पु० देह, तन।

कलेवा० ना० पु० कलेऊ, वह जो बिवाह में दूलह को खिलाते हैं।

कलेस० ना० पु० क्लेश ।

कलोर० ना० पु० खोसर, नई गाय ।

कलोल० ना० स्त्री० खेल, मगनता ।

कल्की० ना० पु० दशवां अवतार, म्लेच्छात्मक जो कलिके अन्त में सम्भल में होगा ।

कल्प० ना० पु० ब्रह्मा का दिन रात, प्रलय, कल्पवृक्ष, सामर्थ्य, विचार, रचना, बदलना, शास्त्र विशेष ।

कल्पतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष ।

कल्पना० अ० क्रि० खेदित होना, मान लेना, फ़र्ज़ करना, तर्क, लालसा, कष्ट ।

कल्पान्त० ना० पु० कल्प का अन्त, क़यामत ।

कल्पित० गु० रचित, विचारित, माना हुआ ।

कलमलाना० अ० क्रि० कुलबुलाना ।

कल्याण० ना० पु० कुशल, मङ्गल, बढ़ती ।

कल्लर० गु० ऊसर ।

कल्लाना० अ० क्रि० जलनि पड़ना, पिराना ।

कल्लोलिनी० ना० स्त्री० तरङ्ग युत ।

कवच० ना० पु० झिलम, बख़्तर, रक्षक, ग्रन्थ विशेष ।

कव्य० ना० पु० छन्द विशेष ।

कवर्ग० ना० पु० ककारादि पञ्च अक्षर ।

कवरी० ना० स्त्री० केश पाशी, बेणी, बावरी ।

कवल० ना० पु० ग्रास, लुक़मा ।

कवि० ना० पु० भाट, श्लोक वा छन्द कर्त्ता, शायर ।

कवित० ना० पु० छन्द, पद्य ।

कविता० } ना० स्त्री० पद्य
कविताई० } श्लोक, छन्द ।

कविमाता॰ ना॰ स्त्री॰ शुक्राचार्य्य की माता।

कविपुङ्गव॰ ना॰ पु॰ बड़ाकवि, श्रेष्ठकवि।

कविराज॰ } ना॰ पु॰ बड़ाकवि,
कवीश्वर॰ } उत्तम कवि।

कशार॰ ना॰ पु॰ कचनार।

कशेरू॰ } ना॰ पु॰ कसेरू।
कशेरुक॰ }

कश्मीर॰ ना॰ पु॰ काश्मीर।

कश्यप॰ ना॰ पु॰ मुनि, मरीचि, प्रजापति का पुत्र।

कश्यपी॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती, ज़मीन जो कश्यप से सम्बन्ध रक्खे।

कषाय॰ गु॰ कसैला रस।

कष्ट॰ ना॰ पु॰ दुःख, पीड़ा, दर्द।

कष्टनाश॰ ना॰ पु॰ नीलकण्ठ पक्षी, जिसको कष्टनाश कहते हैं।

कष्टित॰ } गु॰ दुःखित, पीड़ित,
कष्टी॰ } रञ्जीदः।

कस॰ अव्य॰ कैसा, किसप्रकार।

कसक॰ ना॰ पु॰ पीड़ा, दुःख।

कसकना॰ अ॰ क्रि॰ दुःखभोगना, दुःख होना।

कसकसा॰ गु॰ बालू मिला हुआ पदार्थ।

कसन॰ ना॰ पु॰ हड्डी, यन्त्रणा।

कसना॰ स॰ क्रि॰ खेंचना, जांचना, घी से भुनना, तलना, आज़मूदःकरना।

कसा॰ गु॰ खींचाहुआ।

कसाई॰ ना॰ स्त्री॰ खिंचावट

कसाना॰ स॰ क्रि॰ खिंचाना, जंचाना, घीमें भुनवाना, तलना।

कसान॰ ना॰ पु॰ वह पदार्थ जिससे कसा जावे।

कसुभित्र॰ ना॰ पु॰ नी… वृक्ष।

कसेरू० ना० पु० जलका कन्द विशेष ।

कसेरुक० ना० पु० कसेरू ।

कसेरुका० ना० स्त्री० पीठ की हड्डी ।

कसेरा० ना० पु० कांस कारक, कासगर, जाति विशेष, वर्त्तनबनाने वाला ।

कसैला० } गु० कषाय, कसैला ।
कसेला० }

कसैया० गु० कसने वाला ।

कसौटी० ना० स्त्री० स्वर्णादि परीक्षक पाषाण ।

कस्तूरी० ना० स्त्री० मृगमद, मिश्क ।

कश्मल० ना० पु० पाप, मूर्च्छा ।

कस्मयी० ना० स्त्री० कम्भार ।

कस्मिन्० सर्व्व० कौन ।

कस्य० सर्व्व० किसको ।

कस्यप० ना० पु० कश्यप मुनि विशेष ।

कहतूति० ना० स्त्री० कहावत, मसल ।

कंहना० स० क्रि० बोलना, जताना, आज्ञा करना, वर्णनकरना ।

काख० ना० स्त्री० कांख, बग़ल ।

कक्षा० ना० स्त्री० ग्रहों की चालका मण्डलाकार पन्थ ।

कहलाना० स० क्रि० बुलवाना, जतवाना, भुनाना ।

कहा० सर्व्व० क्या० ना० पु० आज्ञा ।

कहानी० ना० स्त्री० कथा, क़िस्सा, वृत्तान्त ।

कहार० ना० पु० जाति विशेष, धीमर ।

कहावत० ना० स्त्री० बात, दृष्टान्त, मसल ।

का० सर्व्व० किसी० क्या० सम्बन्धार्थी ।

कांकर० ना० पु० कङ्कर।

कांख० ना० स्त्री० कक्ष, बग़ल, कराह।

कांखना० अ० क्रि०कलाइना, घुरनाना, स० क्रि छटना, दबाना।

कांगनी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, बीज उसका।

कांच० गु० कच्चा, ना० पु० गुदा में रोग विशेष ना० स्त्री० शीशा।

कांजी० ना० पु० जल विशेष, भातको सड़ायके बनता है।

कांटा० ना० पु० कण्टक, स्व-र्णादिकतौलने का यन्त्र, तुला, जलमें गिरी हुई वस्तु निकालने कायन्त्र।

कांठा० गु० किनारा, अन्त, छोर, समीप।

कांड़० ना० पु० खण्ड, तीर विशेष।

कांड़ी० ना०स्त्री० कड़ी, धरन।

कांदू० ना० पु० चीनी पका... का कड़ाह, भूजा, जाति विशेष, भुज्जौ।

कांदौ० ना० स्त्री० कीच कीचड़, कादो।

कांधना० अ० क्रि० मानना स्वीकार करना।

कांधा० ना० पु० कन्धा।

कांपना० अ० क्रि० हलहलाना थरथराना।

कांस० ना० पु० तृणविशेष।

कांसा० } ना० पु० धातु विशेष।
कांस्य० }

कांक्षा० ना० स्त्री० इच्छा मनोरथ।

काई० ना० स्त्री० हरी वस्तु जो तालादि में लगती है।

काऊ० सर्व० किसको, किसीको।

काक० ना० पु० कौआ, पक्षि विशेष।

काकजङ्घा० ना० स्त्री० पौधा विशेष।

काकटम्बपुष्पी॰ ना॰ स्त्री॰ महासुघडी।

काकतिक्ता॰ } ना॰ स्त्री॰
काकपदी॰ } कागजङ्घा।

काकपक्ष॰ ना॰ पु॰ जुल्फ़, बावरी, काकुल, कौआकेपङ्ख।

काकभुसुण्ड॰ ना॰ पु॰ प्रसिद्ध पक्षी श्रीरामायणवक्ता।

काकर॰ सर्व्व॰ किसका।

काका॰ ना॰ पु॰ पिता का भाई, चचा।

काकिणी॰ ना॰ स्त्री॰ २० कौड़ी को कहते हैं, लीलावत्यां यथा, वराटिकानांदश-कद्वयं यत्साकाकिणीता श्चपणस्तस्वः तेषोड़श द्रम्मइहाभिगम्योद्रम्मैस्त-थाषोडशभिश्चनिष्कः।

काकी॰ ना॰ स्त्री॰ काका की पत्नी, चाची।

काकू॰ ना॰ पु॰ व्यङ्ग्य वचन, कटीबात।

काकोदर॰ ना॰ पु॰ सर्प्प, कौआ का पेट।

काकोल॰ ना॰ पु॰ विष, हलाहल।

काख॰ ना॰ स्त्री॰ कांख, कक्ष।

काखअलाई॰ ना॰ स्त्री॰ कखौरी।

काग॰ ना॰ पु॰ काक, कौआ।

कागासुर॰ ना॰ पु॰ कागरूपी दैत्य जिसकी जीभ श्री-कृष्णचन्द्र जीने तोड़ दीथी।

काच॰ ना॰ पु॰ कांच, गु॰ कच्चा।

काचक॰ ना॰ पु॰ बांस।

काचा॰ गु॰ कच्चा, अज्ञानी।

काछ॰ ना॰ स्त्री॰ धोती का दूसरा सिरा, जो पीछे को खोंचते हैं, कमर, जङ्घाऊपरिभाग।

काछना०स०क्रि०काछमारना, चढ़ाना, पोछना, बटोरना।

काछनी० ना० स्त्री० काछ विशेष।

काछी०ना० पु०मुराऊ, जाति विशेष।

काज० ना० पु० कार्य्य,काम।

काजल० ना० पु० कज्जल, अञ्जन, सुरमा।

काजी०गु० कार्य्य कर्त्ता, कामी।

काञ्चन०ना०पु० सुवर्ण, सोना धातु।

काञ्चनपुष्पिका०ना०स्त्री० मुसली।

काञ्चनार०ना०पु० कचनार वृक्ष।

काञ्चनी० ना० स्त्री० हल्दी, सोनेकी पुतलीपर्वती वेश्या।

काञ्ची०ना० स्त्री०पुरीविशेष, जिसके दो भाग हैं एक विष्णु काञ्ची दूसरी शिव काञ्ची।

काट० ना० स्त्री० चीरा मैल, तीक्ष्णता, तेज़ी।

काटना०स० क्रि० कतरना, टुकड़े करना,काटखाना, लवना अर्थात् लौनी, आराकरना, रहना, बिताना, रोकना,लज्जित होना,छीलना,लज्जितकरना।

काटमाण्डु० ना० पु० नैपाल देशकी राजधानी।

काठ० ना० पु० काष्ठ, सूखी-लकड़ी।

काठिन्य०ना० पु० कठिनता, कठोरपन।

काठियावाड़० ना०पु० देश विशेष।

काठी० ना० स्त्री० घोड़े के ऊपर काकाष्ठ काआसन, मियान,जिसमें तलवार रखते हैं, तन, देह, डौल, लकड़ी।

काढ़ना॰ स॰ क्रि॰ निकालना, चमड़ा उधेड़ना, कपड़े में फूल बूटा बनाना, चाल सिखाना ।

काढ़ा॰ ना॰ पु॰ क्वाथ ।

काण॰ } गु॰ एकाक्ष, एक
काणा॰ } नयन ।

काणी॰ ना॰ स्त्री॰ एक आंखि वाली ।

काण्ड॰ ना॰ पु॰ खण्ड, प्रकरण ।

काण्डरुहा॰ ना॰ स्त्री॰ कुटकी ।

कातना॰ स॰ क्रि॰ सूत रुई से बनाना रहटा के द्वारा ।

कातर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल, ना॰ पु॰ जङ्गल, दुर्भिक्ष, कोल्हू की पाटि ।

कातिक॰ ना॰ पु॰ आठवां महीना ।

कातिकी॰ ना॰ स्त्री॰ कातिक की वस्तु आदि कातिक की पूर्णमासी ।

काती॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीतल-वार, कत्ती ।

कात्यायन॰ ना॰ पु॰ मुनि विशेष, स्मृति विशेष ।

कात्यायनी॰ ना॰ स्त्री॰ देवी विशेष, स्मृति विशेष, कात्यायन वंशी ।

कादम्बिनी॰ ना॰ स्त्री॰ मेघ-माला ।

कादर॰ गु॰ डरपोकना, व्याकुल,

कादरता॰ } ना॰ स्त्री॰ भय,
कादराई॰ } डर, डरपोकना पन ।

काधना॰ स॰ क्रि॰ कांधना, कांधे धरना ।

कान॰ ना॰ पु॰ कर्ण, श्रवण, लाज, अदब ।

कानन॰ ना॰ पु॰ वन, जङ्गल, ब्रह्मा का मुख ।

कानि॰ ना॰ स्त्री॰ मर्य्याद, सङ्कोच, अदब, लाज ।

कानाः० ना० पु० अक्षर की खड़ी लकीर, काणा, कड़ाही आदि का गड्डाना।

कानीः० ना० स्त्री० जो एक आंख की होवे।

कानीनः० गु० नीच, क्षुद्र, स्त्री० लड़की, रामचन्द्रिकायां अद्यापि आनीन रे बन्दि कानीन।

कान्तः० ना० पु० पति, स्वामी सुन्दर।

कान्ताः० ना० स्त्री० पत्नी, प्यारी।

कान्ताह्वाः० ना० स्त्री० प्रियङ्गु औषधि।

कान्तिः० ना० स्त्री० शोभा, चमक, और नाम चन्द्रमा की एक कला का।

कान्तिपाषाणः० ना० पु० चुम्बक।

कान्दाः० ना० पु० जलका कन्द, कलकंदरा।

कान्यकुब्जः० ना० पु० देश विशेष, ब्राह्मण विशेष।

कान्हः० } ना० पु० श्रीकृष्ण
कान्हरः० } जीका एक नाम।

कापट्यः० गु० शठता, कपट।

कापथः० ना० पु० अतिमार्ग, कठिन मार्ग।

कापुरुषः० गु० कुत्सित मनुष्य, बुरा आदमी, कुजन, कुकर्म्मी नर।

कामः० ना० पु० भोग, कार्य्य, अभिलाष, कामदेव, लाज, विषय, बधावा, सुन्दर।

कामकः० ना० पु० मेघ।

कामकेलिः० ना० स्त्री० दुलार, प्यार, सङ्गम, प्रसङ्ग।

कामचञ्चुकाः० ना० स्त्री० घुंघची।

कामतरुः० ना० पु० कल्पवृक्ष।

कामदः० गु० कामनादाता।

कामदुगीः० ना० स्त्री० इन्द्र की गाय।

कामदूती० ना० स्त्री० बसन्त ऋतु, कुम्भी ।

कामदेव० ना० पु० मदन; मन्मथ ।

कामधेनु० ना० स्त्री० इन्द्र की गो, देवगो ।

कामना० ना० स्त्री० इच्छा, कामाभिलाष, मदन ।

कामपाल० ना० पु० बलदेवजी ।

कामबन० ना० पु० जिसबनमें श्रीसदा शिवने कामदेव को जलाया था ।

कामरी० ना० स्त्री० कम्मल ।

कामरूप० ना० पु० इच्छाचारी, सुन्दर, देश विशेष ।

कामरूपी ० गु० बहुरूपिया, सुन्दर, कामरूप वासी ।

कामसखा० ना० पु० इन्द्र, वसन्तऋतु ।

कामाङ्क० ना० पु० आम्रवृक्ष ।

कामातुर० } गु० मदनमत्त,
कामार्त्त० } कामी, चुलहारा ।

कामिनी० ना० स्त्री० उत्तम सुन्दरी, ना० पुष्प वृक्ष विशेष, कामातुरस्त्री ।

कामी० गु० कामातुर, बहुधन्धी, मतलबी, माधवी वृक्ष ।

कामुक० ना० पु० स्त्रीकेसुखमें आशक्त, कामातुर ।

कामोद० ना० स्त्री० रागिनी विशेष ।

काम्बोज० ना० पु० देश जो बङ्गाले केदक्षिण पूर्ब है ।

काम्य० गु० सुन्दर, अच्छा ।

काम्यकर्म० ना० पु० स्वर्गादि फलों के लिये जो कर्म करना ।

काय० ना० स्त्री० देह, तन ।

कायक० गु० देही ।

कायफल० ना० पु० औषधि विशेष ।

कायर०गु० भयमान,डरपोक, छेठा।
कायस्थ०ना० पु० जाति विशेष गु० जो निज काया में स्थित हो अर्थात् सन्तुष्ट।
कायस्था० ना० स्त्री० हर्र, काकोली।
काया०ना०स्त्री०देह,तन।
कायाकल्प०ना० पु० देह का बदलना।
कारक० ना० पु० क्रिया का साक्षात् निमित्त।
कारज०ना० पु० कार्य्य,काम।
कारण०ना०पु०निमित्त, लिये, सबब, प्रकृति।
कारणी०गु०कारण,कर्त्ता।
कारवल्ली० ना० पु० करेला तरकारी।
कारवी०ना० स्त्री० अजमोद, कलौंजी।
कारवेल्ल० ना० पु० करेला तरकारी।
कारागार० } ना० पु० बन्दी घर, जेहल-खाना।
कारागृह० }
कारु० } ना० पु० शिल्प-कार, थवई।
कारुकार० }
कारुणिक०गु०दयालु,कृपालु।
कार्त्तस्वर० ना० पु० सुवर्ण, काञ्चन।
कार्त्तिक०ना० पु० कातिक।
कार्त्तिकेय० ना० पु० स्वामि-कार्त्तिक।
कार्पण्य० ना० पु० दरिद्रता, दीनता।
कार्पास०ना०स्त्री० कपास।
कार्मुक० ना० पु० धनुष, महानीब वृक्ष।
कार्य्य० ना० पु० प्रयोजन, काम।
कार्षापण०ना०पु० कौड़ी के सोलह पण का माप अथवा तोल।

कालः॰ना॰ पु॰ मृत्यु, दुर्भिक्ष, समय, अल, काला, धर्मराज, सर्प, सुन्दर, यमराज ३ ।

कालक॰ ना॰ पु॰ कगाता, बीज गणित में प्रमाण का बोधक ।

कालकूट॰ना॰पु॰ विष, हलाहल ।

कालपीलुक॰ना॰पु॰ तेंदुआवृक्ष ।

कालपर्णी॰ ना॰स्त्री॰ काला निशोत ।

कालमेषिका॰ ना॰ स्त्री॰ मजीठ, बाकुची ।

कालमेषी॰ना॰ स्त्री॰ काला निसोत ।

कालयवन॰ना॰पु॰ नाम एक म्लेच्छकाजिसकोश्रीकृष्णचन्द्रने भस्म किया था ।

कालराति॰ / कालरात्रि॰ ना॰स्त्री॰ प्रलय काल की राति, अंधेरी राति, देवी विशेष ।

कालबाहन॰ना॰पु॰ भैंसा

कालवृन्तिका॰ ना॰ स्त्री कुम्भी जो पानीमें होत है ।

कालशाक॰ना॰ पु॰ सरफो का ।

कालसार॰ना॰ पु॰ तेंदु वृक्ष ।

कालसूत्र॰ना॰पु॰ नरकभेद

कालस्कन्ध॰ना॰ पु॰ तमा वृक्ष ।

कालक्षेप॰ना॰पु॰समय काट ना, दुःख भोग करना गुज़रान करना ।

कालज्ञ॰गु॰ ज्योतिषी, पण्डित योगीश्वर, ज्ञाता, मुर पक्षी, शृगाल ।

काला॰गु॰कृष्णवर्ण, श्यामरङ्ग

कालिका॰ना॰स्त्री॰ धनिय मसाला, काला ज़ीर देवी विशेष ।

कालिख्यात॰ ना॰ स्त्री॰ किंद-
वाली।
कालिन्दी॰ } ना॰ स्त्री॰ यमुना
कालिन्द्री॰ } नदी विशेष।
कालियङ्क॰ ना॰ पु॰ मलय
चन्दन।
कालिया॰ ना॰ पु॰ काली
नाग गु॰ काला।
काली॰ ना॰ स्त्री॰ मसी, देवी
विशेष, मिसर देश की नदी.
ना॰ पु॰ कालीनाग जो यमुना
में रहा करता था।
कालीदह॰ ना॰ पु॰ यमुना
जी में विशेष स्थान।
काल्पनिक॰ गु॰ आरोपित,
कल्पना किया गया,
ना॰ स्त्री॰ नदी विशेष
जो दक्षिण में है।
कावेरी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी
विशेष।
काव्य॰ ना॰ पु॰ पद, श्लोक,
छन्द, पुस्तक, जिसमें
कविताई हो, शुक्र।

काश॰ ना॰ पु॰ खांसी, खोखी।
काशमी॰ ना॰ स्त्री॰ भारङ्गी
औषधि।
काश्मद॰ ना॰ पु॰ कसौन्दी
का साग।
काश्मीर॰ ना॰ पु॰ देश विशेष
जो पञ्जाब के उत्तर है,
पुहकर मूल।
काश्मीरी॰ ना॰ स्त्री॰ केशरि,
कम्भारी, काश्मीर
देशवासी।
काश्यप॰ ना॰ पु॰ कश्यप की
सन्तान।
काश्यपी॰ गु॰ सूरज का
रथवान।
काशी॰ ना॰ पु॰ नगर विशेष।
काष्ठ॰ ना॰ पु॰ काठ, लकड़ी।
काष्ठकीता॰ ना॰ पु॰ बढ़ई।
काष्ठपाटला॰ ना॰ स्त्री॰
कुम्भी।
काष्ठान्तर॰ ना॰ पु॰ काठके
भीतर।

काछी० ना० स्त्री० फटकरी ।
कासार० ना० पु० तालाब, भैंसा ।
कासु० सर्व्व० किसको ।
काहन० ना० पु० कार्षापन ।
काहे० सर्व्व० क्यों ।
काच्चो० ना० स्त्री० फटकरी ।
किं० अव्य० प्रथम वाक्य का द्वितीय वाक्य से सम्बन्ध कारक ।
किंशुक० ना० पु० पलास, ढाख, टेसू ।
किङ्कर० ना० पु० टहलुआ ।
किङ्करी० ना० स्त्री० दासी, टहलुइन ।
किङ्किणी० ना० स्त्री० कटि-बन्ध घण्टी समेत, काकई इत्त ।
किङ्खान० ना० पु० घोड़ा ।
किचकिचाना० अ० क्रि० दांत पीसना ।
किचडाना० अ० क्रि० आंखों में कीचड़ आना ।
किचपिचाना० अ० क्रि० गड़बड़ाना ।
किञ्चित्० अव्य० थोड़ा, अल्प, कुछ ।
किञ्चिन्मात्र० गु० कुछ, अतिअल्प ।
किञ्जुक० ना० पु० संज्ञा विशेष ।
किञ्चुकी० ना० स्त्री० चोली, अंगिया ।
किञ्जल्क० ना० पु० सिंघाकन्द ।
किटि० ना० पु० सुअर, शूकर, यथा वराह: शूकरो घृष्टि: कालपोचो किरि: किटि, इत्यमर: ।
किडकिडाना० अ० क्रि० क्रोध से दांतपीसना ।
किडहा० ना० पु० ऊंगा, गु० घुना ।
कित० अव्य० कहां, किधर ।

कितना०
कितनी०
किती० } गु० प्रमाण का प्रश्न कारक।

कितेक० गु० बहुत।

कितै० अव्य० किधर।

कित्ति० ना० स्त्री० कीर्त्ति, यश, रामचन्द्रिका यां यथा, अखण्डकीत्ति लेय भूमिदेयमानलेखिये।

किधर० अव्य० कहां।

किनारा० ना० पु० तट, कूल।

किनारी० ना० स्त्री० गोटा, मग़ज़ी।

किन्० ना० पु० घाव, अव्य० क्यों नहीं।

किन्तव० ना० पु० धतूरा।

किन्तु० अव्य० परन्तु, तिसपर भी।

किन्नर० ना० पु० यक्षदेवता।

किन्नरी० ना० स्त्री० सारङ्गी, यक्षिणी।

किपलता० ना० पु० कैथा का वृक्ष।

किम० सर्व्व० क्यों, किसप्रकार।

किमपि० सर्व्व० क्योंभी, किसप्रकार।

किमर्थ० सर्व्व० किसलिये।

किमाञ्च० ना० पु० खजुहा, कौंच।

किमि० सर्व्व० क्यों, किसप्रकार।

किम्पुरुष० ना० पु० नवखण्ड धरातलमेंसेएक, नामर्द, कुछेक पौरुषी।

किंवा० अव्य० अथवा।

किरकिटी० ना० स्त्री० छोटी लकड़ी।

किरकिरा० गु० रेतीला, बालुआ।

किरकिराना० अ० क्रि० किच किचाना, बखडाना।

किरण० ना० स्त्री० रश्मि, शुआ।

किरात० ना० पु० भील, जाति विशेष, चिरायता।

किरातक० ना० पु० चिरायता ।

किराना० स० क्रि० साफ़ करना, ना० पु० मसाला, औषधि वग़ैरह ।

किरि० ना० पु० किटि, शूकर ।

किरिच० ना० स्त्री० तलवार, टुकड़ा ।

किरिया० ना० स्त्री० शपथ, सौगन्द, सौंह, क्रिया ।

किरीट० ना० पु० मुकुट, ताज ।

किरीटी० ना० पु० अर्ज्जुन, ना० स्त्री० शंखा होलो औषधि, गु० मुकुटधारी ।

किल० अव्य० निश्चित ।

किलनी० ना० स्त्री० कीट विशेष ।

किलाकिल० ना० पु० वानरों का शब्द ।

किलिम० ना० स्त्री० देवदारु ।

किल्कारी० ना० स्त्री० प्रसन्नता से हंसना ।

किल्कारीमारना० अ० क्रि० प्रसन्न हो के जय जयकार करना, ख़ूब हंसना ।

किलकिलाना० अ० क्रि० चिड़चिड़ा होना ।

किल्ली० ना० स्त्री० कुञ्जी, कीली ।

किल्बिष० ना० पु० पाप, दोष, गुनाह ।

किशलय० ना० पु० नवीन पत्ता ।

किशोर० ना० पु० तरुण अवस्था अर्थात् १६ वर्ष तक लड़का ।

किसनई० ना० स्त्री० खेती, का काम ।

किसान० ना० पु० जोतार, खेतकरने हारा, जाति विशेष ।

कीकड० ना० पु० बबूल ।

कीच० } नाo पुo कांदो,
कीचड़० } चहला।

कीट०नाo पुo कीड़ा।

कीटनारी० } नाoस्त्रीo हंस
कीटसारी० } पादी पौधा।

कीड़ा० नाo पुo कीट, कृमि, किरम।

कीतनक०नाo पुo मुलहठी।

कीना०सo क्रिo करना।

कीर०नाo पुoतोता पक्षी यथा कीर शुकौ समौ इत्यमरः।

कीरत० } नाo स्त्रीo कीर्त्ति,
कीरति० } बड़ाई,तारीफ।

कीर्तन० नाo पुo गाना, कीर्त्तन, कहना।

कीर्त्ति०नाo स्त्रीo यश,स्तुति, नेकनामी।

कील० नाo स्त्रीo लोहे का कांटा।

कीलना०सo क्रिo मन्त्र फूक कर रोकना।

कीला०नाoपुoलोहेकाकांटा।

कीलाल०नाoपुo जल,पानी।

कीस०नाo पुo वानर,बन्दर।

कु०अव्यo यह अक्षर जिसशब्द के प्रथम में संयुक्त होता है उसका अर्थ कभी बुरा, कभी निन्दित, कभी न्यून होता है, पृथ्वी, धरती।

कुंवर० }
कुंवारा० } नाo पुoकुमार।

कुंवारी०नाo स्त्रीo कुमारी।

कुआरा०नाo पुo बिनाब्याहा लड़का।

कुआरी०नाo स्त्रीo कन्या बिना बिवाही।

कुकन्या० ना० स्त्री० पृथ्वी की कन्या विशेष श्रीसीताजू, गु० दुष्ट कन्या।

कुकर्म० ना० पु० बुराकाम।

कुकर्मी० गु० कुकर्मकरनेहारा।

कुक्कुट० ना० पु० मुरग़ा।

कुक्कुटाण्ड० ना० पु० सफ़ेद भांटा, कुक्कुट का अण्डा।

कुक्कुटी० ना० स्त्री० मुरग़ियां, मुरग़ी।

कुक्कुरन्द० ना० पु० जङ्गली करौंदा।

कुक्रिया० ना० स्त्री० निन्दिताचरण, तुच्छकर्म।

कुग्रह० ना० पु० लटाघर, बुराघर।

कुघाट० ना० पु० बेडौल, बद सूरत, कुत्सित घाट, जहां घाटन हो।

कुघात० ना० स्त्री० कुसमय मारना, बुरीघात।

कुङ्कुम० ना० पु० केसर, ज़ाफ़रान।

कुङ्कुमा० ना० पु० गुलालभरने के लिये जो लाख का बनता है।

कुच० ना० पु० स्तन, चूंची, उरोज।

कुचन्दन० ना० पु० पतङ्ग जिससे कपड़ा रंगते हैं।

कुचलना० स० क्रि० चूरकरना, मसलना।

कुचला० ना० पु० औषधि विशेष।

कुचिया० ना० स्त्री० लोलकी, कान का अधोभाग।

कुचैला० गु० मैला।

कुचैन० गु० दुःख, अप्रसन्नता।

कुछ० सर्व्व० थोड़ा, रञ्चक।

कुज० ना० पु० मङ्गल, वृक्षादि, भौमासुर।

कुजाति० गु० नीचजाति वा नीच।

कुञ्चित० गु० छल्लेदारवाल, गभुआरे बाल।

कुञ्चिका। ० ना० स्त्री० कुञ्जी, ताली।

कुञ्ची० ना० स्त्री० कलौंजी।

कुञ्ज० ना० पु० वृक्षलतादि रचित रमणीय स्थान, तङ्गगली, पक्षीविशेष।

कुञ्जर० ना० पु० हाथी, मुख्य प्रधान, रामायणे यथा, कपिकुञ्जरहि बोलि-लैआये।

कुञ्जिका० } ना० स्त्री० ताली,
कुञ्जी० } चाबी।

कुटकी० ना० स्त्री० औषधि विशेष, कीट विशेष।

कुटज० ना० पु० इन्द्रयव।

कुटना० ना० पु० भडुआ, अ० क्रि० पिटना।

कुटना। ना० स० क्रि० फुसलाना

कुटनी० ना० स्त्री० दूती, नायिका।

कुटाना० स० क्रि० पिटवाना।

कुटिल० गु० टेढ़ा, क्रूर।

कुटिलता० } ना० स्त्री० टेढ़ा-
कुटिलाई० } पन, क्रूरता।

कुटी० } ना० स्त्री० मढ़ी
कुटीर० } झोंपड़ी, एकान्त
कुटीरा० } स्थान, कुनिया।

कुटुम० ना० पु० कुटुम्ब।

कुटुमी० ना० पु० कुटुम्बी।

कुटुम्ब० ना० पु० कुणवा, घराना

कुटुम्बी० ना० पु० गृहस्थ घर वाला।

कुटेव० ना० स्त्री० कुभाव कुचालि, बुरी खो।

कुट्टनी० ना० स्त्री० कुटनी।

कुठार० ना० पु० फरसा, कु-ल्हारा, तबर।

कुठारी० ना० स्त्री० कुल्हाड़ी टांकी।

कुठाहर० ना० पु० कुसमय बेमौक़ा।

कुड़कना० } अ० क्रि० क्रोध-
कुड़कुड़ाना० } युक्त होकर कहना, रिसाय के बोलना।

कुढ़ना० अ० क्रि० विलाप करना कलपना, डाह करना, हसद करना।

कुढ़ाना० स० क्रि० सताना, छेड़ना।

कुगटन० ना० पु० स्योनाहच।

कुगठत० गु० लज्जित, गुठला, अतीव।

कुगड० ना० पु० आगि रखने के लिये ऊंचम कुगड, जलका विशेष स्थान, पतिविद्यमान होते जारजपुत्र, गड़हा, तालाब।

कुगडल० ना० पु० कर्ण भूषण, घेरा, मगडला, मोती।

कुगडलिया० ना० स्त्री० गोलाई, छन्द विशेष।

कुगडलित० गु० गोलाकार कुगडलयुत।

कुगडली० ना० पु० कचनार गुरच।

कुगडी० ना० स्त्री० कोंढ़ी।

कुतुप० ना० पु० दिनका आठ वां मुहूर्त्त।

कुतर्क० ना० स्त्री० नीचविचार बुरी दलील।

कुतर्की० गु० कुतर्क करने हारा।

कुतनी० स० क्रि० दातों से काटना।

कुत्तल० ना० पु० धरातल रूयज़मीन।

कुतिया० ना० स्त्री० कुत्ता की स्त्री, गु० कूतनेहारा।

कुतुक० ना० पु० कौतुक।

कुतूहल० ना० पु० कौतुक चोप, उतावली, खेल हंसी।

कुत्ता० ना० पु० कुक्कुर।

कुत्सा० ना० स्त्री० निन्दा, अवज्ञा ।

कुत्सित० गु० निन्दित, नीच, बुरा, खराब, निषधित ।

कुदकना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदरा० ना० पु० अस्त्र विशेष, जिससे लकड़ी चीरते हैं ।

कुदराना० अ० क्रि० उछलना, कूदना ।

कुदाना० स० क्रि० उछलाना, फंदाना ।

कुदारि० } ना० स्त्री० मिट्टी,
कुदला० } खोदने का अस्त्र विशेष ।

कुदृष्टि० ना० स्त्री० पापदृष्टि, बद नज़र ।

कुद्दाल० ना० पु० कचनार ।

कुधात० ना० पु० लोहा, रामायणे यथा, प रस परसि कुधात सोहाई ।

कुधि० } गु० निर्बुद्धि, बुरीमति,
कुधी० } बे तमीज़ ।

कुनटी० ना० पु० मनसिल ।

कुनबा० ना० पु० कुणबा, घराना ख़ानदान ।

कुनीति० ना० स्त्री० कुचालि, कुरीति, अन्याय ।

कुन्त० ना० पु० पानी, पवन, कमल, भाला, कराल, राजा, विशेष ।

कुन्तल० ना० पु० बाल, केश, मूत धार, बर्छी, हल, खेत जोतने का, राजा विशेष, वानर, विशेष, कपटी ।

कुन्तली० ना० पु० चिरपोटा ।

कुन्तिज० ना० पु० युधिष्ठिरादि, पाण्डव ।

कुन्ती० ना० स्त्री० पाण्डवों की माता ।

कुन्द० ना० पु० स्वेत वर्ण, पुष्प विशेष. उज्वल।
कुन्दन० ना० पु० उत्तमस्वर्ण, अच्छा सोना।
कुपति० गु० दुष्टमति, दुष्टस्वामी, बुरा मालिक।
कुपथ० ना० पु० कुमार्ग, कुराह, बुरी राह।
कुपथ्य० गु० जो पदार्थ पाचकन होवा रोगी को उपकारी न होवे, बद हज़म।
कुपरामर्श० ना० पु० कुमन्त्रणा।
कुपात्र० गु० अयोग्य, नालायक।
कुपुरुष० गु० पुरुषार्थ रहित, बुरा।
कुपूत० ना० पु० कपूत, नालायक, लड़का।
कुप्य० ना० पु० चांदी, रूपा।
कुप्पा० ना० पु० चमका बड़ापात्र चमड़े का जिसमें घी आदि रखते हैं।
कुप्पी० ना० स्त्री० छोटाकुप्पा।
कुब० ना० कुबड़ा।
कुब्जा० ना० पु० कुब्ज।
कुबडु० ना० पु० टेढा।
कुबड़ा० गु० कुब्जा।
कुब्ज० गु० कुबड़ा, बक्रपृष्ठ।
कुब्जा० ना० स्त्री० कुबड़ी, टेढ़ी, कूबरी प्रसिद्ध।
कुवत० ना० स्त्री० निकृष्ट वार्त्ता, बुरीबात।
कुमण्डल० ना० पु० धरामण्डल, राज्य।
कुमति० ना० स्त्री० मूर्खता, अहमक़ी, गु० उन्मत्त, मूर्ख।
कुमद० ना० पु० कुमुद।
कुमदिन० ना० पु० फफूल।
कुमार० न० पु० बालक, राजपुत्र, स्वामि कार्त्तिक, कामरहित।

कुमारिका० } ना० स्त्री० कन्या
कुमारी० } जिसको रजो
धर्म नहीं भया,
साधारण सुता,
घीकुआरि पौधा ।

कुमार्ग० ना० पु० कुपथ, बुरी
राह ।

कुमुद० ना० पु० फफूल जो
राति को खिलता है
और दिनको सम्पुटित
होता है उसको श्वेत
कमल भी कहते हैं और
राम दलमें वानर वि-
शेष था, चांदनी, मुद
रहित ।

कुमुदबन्धु० ना० पु० चन्द्रमा ।

कुमुदिनी० ना० स्त्री० कम-
लिनी ।

कुम्भ० ना० पु० घड़ा, कलश,
कलसा ।

कुम्भक० ना० पु० कुम्हार, योग
क्रिया में पवन पेट वा
ब्रह्माण्ड में रोकने को
कहते हैं ॥

कुम्भकर्ण० ना० पु० रावणका
छोटा भाई ।

कुम्भकार० ना० पु० कुम्हार,
कुलाल ।

कुम्भज० } ना० पु० अगस्ति
कुम्भजात० } मुनि ।

कुम्भयोनिका० ना० स्त्री०
गोमापौधा ।

कुम्भवीर्य० ना० पु० रीठा ।

कुम्भा० ना० पु० छोटाकुम्भ ।

कुम्भिका० ना० स्त्री० कुम्भी ।

कुम्भिनी० ना० स्त्री० धरती,
पृथ्वी ।

कुम्भी० ना० स्त्री० पौधा जो
तालावों में पानीपर ज-
मता है, ना० पु० हाथी,
कायफल, अगस्तिमुनि ।

कुम्भीनस० ना० पु० सांप ।

कुम्भीपाक० ना० पु० नरक विशेष ।

कुम्भीर० ना० पु० मगरमच्छ ।

कुम्भीरुणा० ना० स्त्री० निसोत ।

कुम्हलाना० अ० क्रि० मुरझाना, सूखना ।

कुम्हार० ना० पु० जो मिट्टीके वर्त्तन बनाता है ।

कुम्हारी० ना० स्त्री० जन्तु विशेष जो अपना घर माटी से बनाता है ।

कुयोग० ना० पु० दुष्टयोग, दुख दायक ग्रह पड़जाना, बुरा संयोग, बुराउपाय ।

कुयोगी० गु० विषय भोगी, रामायणे यथा पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी, मोहविटप नहिं सकत उखारी ।

कुरङ्ग० ना० पु० हरिण, मृग ।

कुरण्टक० } ना० पु० पियाबासा ।
कुरवक० }

कुरमा० ना० पु० कुनवा, घराना ।

कुरारि० ना० स्त्री० सारस पक्षी ।

कुरी० ना० स्त्री० समूह, घराना

कुरीति० ना० स्त्री० कुचालि ।

कुरीर० ना० स्त्री० कुटी, मढ़ी

कुरु० ना० पु० राजा विशेष जिसकी सन्तान में कौरव और पाण्डव थे, नव खण्ड पृथ्वी में से एक ।

कुरुकेतु० ना० पु० दुर्योधन युधिष्ठिर, राजापरीक्षित ।

कुरुचि० ना० स्त्री० नीच वासना, बदहज़मी ।

कुरुपति० } ना० पु० दुर्योधन युधिष्ठिर, परीक्षित ।
कुरुराय० }

कुरुवक॰ ना० पु० फूलविशेष।
कुरुवंश॰ ना० पु० राजाकुरु की सन्तान।
कुरुक्षेत्र॰ ना० पु० पुण्यक्षेत्र जहां भारत भयाथा।
कुरूप॰ गु० भोंड़ा, बदसूरत।
कुर्कुटी॰ ना० पु० सेमर वृक्ष।
कुर्वी॰ ना० पु० कुब्ज।
कुर्याल॰ ना० स्त्री० पक्षी जब आनन्द में आकर पंख भाड़ता है।
कुल॰ ना० पु० वंश, वर्ण, घराना।
कुलटा॰ ना० स्त्री० व्यभिचारिणी, जो स्त्री परपति रमण करे अर्थात् पतिव्रता न हो।
कुलचा॰ ना० पु० वह सम्पदा जो कोई घर वालों से चुराय के इकट्ठा करे, पूंजी, धन।

कुलतारण॰ ना० पु० पुत्र जो कुल की लाज रक्खे वा सुकृत करके पुरुषों को तारे।
कुलतिय॰ ना० स्त्री० पतिव्रता सती, यथा बिहारीलाल सप्तशतिकायां, दोहा, कहत नटेवर की कुवत कुलतिय कुलहिडराय, पिञ्जर टिग मञ्जार गति शुक लौसूखतिजाय।
कुलद्रोही॰ गु० जो मनुष्य कुकर्म करके वंश को लज्जितकरे वा जोनिजकुलको वैरी होवे।
कुलधर्म॰ ना० पु० वंशव्यवहार, कुल का धर्म।
कुलपूज॰ } ना० पु० कुलका
कुलपूज्य॰ } देवता वा मान्य वा पुरोहित।
कुलवधू॰ ना० स्त्री० कुलवन्ती, कुलतिय।

कुलबुलाना० अ० क्रि० कलमलाना, चुलबुलाना, खुजलाना।

कुलवती० ना० स्त्री० कुलीन स्त्री० पतिव्रता।

कुलवन्त० } गु० जो अच्छे वंश
कुलवान० } में उत्पन्न भया।

कुलक्षण० ना० पु० बुरे चिन्ह, बुरास्वभाव।

कुलक्षणा० स्त्री० } जीसके लक्षण बुरे
कुलक्षणी० गु० } होवा हैं।

कुला० ना० स्त्री० मनसिल।

कुलांच० ना० स्त्री० कूद, फांदने, जस्त।

कुलाङ्गना० ना० स्त्री० कुलवान स्त्री अथवा कुलटा।

कुलाचार० ना० पु० वंश का धर्म्म, अपने घरानेकी रीति।

कुलाल० ना० पु० कुम्हार।

कुलाहल० ना० पु० कोलाहल।

कुलिश० ना० पु० वज्र, हीरा।

कुली० ना० स्त्री० बडीकटाई।

कुलीन० ना० पु० अच्छे घर वा वंश में जो उत्पन्नभया।

कुलीनता० } ना० स्त्री० भले
कुलीनाई० } वंश का आचार वा बड़प्पन वा उत्पत्ति, धर्म्म।

कुलीरशृङ्गी० ना० स्त्री० ककरासिङ्गी।

कुल्ला० ना० पु० } मुखमेंजल
कुल्ली० ना० स्त्री० } को फिराय के फेंकना।

कुल्हाड़ी० ना० स्त्री० कुठारी जिससे लकड़ी आदि काटते हैं।

कुल्हिया० ना० स्त्री० माटी का छोटा पात्र, भुरकी।

कुवलय॰ ना॰ पु॰ कमल।

कुवादी॰ गु॰ दुष्ट, कुवचन वक्ता।

कुविन्द॰ ना॰ पु॰ नीचवीर्य, बद्गुतफ़ा।

कुविहङ्ग॰ ना॰ पु॰ जुर्रा, श्येन, बाज़।

कुवेर॰ ना॰ पु॰ यक्ष राज, कुसमय।

कुश॰ ना॰ पु॰ तृण विशेष जो अति पवित्र गिना जाता है, सीता जी का पुत्र,दैत्य विशेष, पानी, पृथ्वी के सात द्वीपों में से एक।

कुशमुद्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ कुशकी मुंदरी, अर्थात् पैंती जो यज्ञादि में पहिनते हैं।

कुशल॰ ना॰ पु॰ भलाई, कल्याण, चतुर।

कुशलता॰ ना॰ स्त्री॰ भलाई।

कुशलत्व॰ पु॰ कल्याण।

कुशलक्षेम॰ स्त्री॰ } ख़ैरआ-
कुशलात॰ } फ़ियत।

कुशली॰ गु॰ सुखी, प्रसन्न, निपुण।

कुशासन॰ ना॰ पु॰ कुश का आसन।

कुशील॰ गु॰ शील रहित, बे मुरव्वत।

कुशेशय॰ ना॰ पु॰ कमल।

कुष्ट॰ ना॰ पु॰ कोढ़, लोड़ा।

कुष्टकान्तन॰ ना॰ पु॰ पंवार बूटी।

कुषेय॰ ना॰ पु॰ खड्ग, तलवार।

कुष्टसूदन॰ ना॰ पु॰ किर वाली।

कुष्टी॰ गु॰ कोढ़ी।

कुसङ्ग॰ ना॰ पु॰ बुरे लोगों का साथ।

कुसमय॰ ना० पु० कठिन समय, बुरे दिन, आफ़त।

कुसरात॰ ना० स्त्री॰ कुशलात।

कुसीद॰ ना० पु० लाभ के लिये ऋण देना।

कुसदा॰ ना० पु० कायफल।

कुसुम॰ ना० पु० कुशुम, फूल, कुसुम्भ।

कुसुमशर॰ ना० पु० कामदेव।

कुसुमाकर॰ ना० पु० वसन्त ऋतु।

कुसुमित॰ गु० फूले हुये, प्रफुल्लित।

कुसुम्भ॰ ना॰ पु० पुष्प विशेष, जिसका बहुत लालरङ्ग कपड़े पर आता है।

कुहर॰ } ना० पु० कुहासा,
कुहरा॰ } कुहर।

कुहराम॰ ना० पु० विलाप।

कुहुक॰ ना० स्त्री० कोकिला का शब्द वा स्वर।

कुहुकना॰ अ० क्रि॰ कोकिला की रीति से बोलना।

कुहू॰ ना० स्त्री० पक्ष की अमावस।

कुचा॰ } ना० स्त्री० कोख।
कुच्चि॰ }

कूआं॰ ना० पु॰ कूप, चाह।

कुआंर॰ ना० पु० आश्विन, सातवां महीना।

कूक॰ ना० स्त्री० आवाज़, शब्द, शोर।

कूकना॰ अ० क्रि० आह मारना, विलाप करना, स० क्रि० घड़ी को कुञ्जी से फेरना।

कूकर॰ ना० पु० कुत्ता।

कूकू॰ ना० पु० कपोत का शब्द,

कूचना॰ स० क्रि० छेदना, घुसेड़ना, खूंदना कुचिलना।

कूची० ना० स्त्री० त्वगा विशेष की वस्तु जिससे भीतमें चूना फेरते हैं वा बालों कीवाऔरकिसी वस्तु की।

कूजना० अ० क्रि० बोलना।

कूट० ना० पु० कपट, पर्व्वत, गोप, कागज़, जिसका गता बनता है, जो निजआस्ति सेपूरण होवे यथा, निहाई, ना० स्त्री० भांडैती, गु० मिथ्या, विरुद्ध।

कूटना० स० क्रि० कुचलना, पीसना, पीटना, दबाना।

कूटरवाहिनी० ना० स्त्री० निसोत।

कूटार्थ० ना० पु० विरुद्धार्थ।

कूटि० गु० व्यङ्ग्य वचन।

कूटो० गु० दूती कुटनी, पीटी ऊई।

कूड़ा० ना० पु० झाड़न, कर-कट।

कूढ़० गु० मूर्ख, उन्मत्त।

कूत० ना० पु० अटकल, अन्दाज़।

कूतना० स० क्रि० मोल ठहराना, अटकलना, अन्दाज़ना, ठीक करना।

कूदना० अ० क्रि० फांदना, उछलना।

कूपार० ना० पु० समुद्र।

कूबरी० ना० स्त्री० कन्स की दसी जिस को कृष्णचन्द्र ने शुद्ध तन किया था वा काठकी टेकनी जो साधुओं के पास होती है गु० टेढ़ी।

कूर० गु० कपटी, कठोर, टेढ़ा।

कूर्दन० ना० पु० कूदना, खेलना।

कूल० ना० पु० तीर, किनारा, तट।

कूलद्रुम० ना० पु० किनारे का वृक्ष विशेष्यार्थ-त्यु, सान्निध्य।

कूला० ना० पु० एक ओर का चूतड़।

कूली० ना० स्त्री० एक ओर का पुट्ठा।

कूष्माण्ड० ना० पु० कुम्हड़ा, लौका।

कूष्माण्डकी० ना० स्त्री० कुम्हड़ा, खभड़ा।

कूष्माण्डा० ना० स्त्री० देवी विशेष।

कृकवाक० ना० पु० मुर्ग़ा।

कृच्छ्रोपवास० ना० पु० चान्द्रायणादि व्रत।

कृत० गु० किया गया, बना, करतूति, ना० पु० यज्ञ, भाग्य, उपकार।

कृतघ्न० गु० जो मनुष्य उपकार को नहीं माने, गुण न मानै, यज्ञध्वंसी, पातकी।

कृतघ्नता० } ना० स्त्री० हित
कृतघ्नताई० } करने से उलटा करे।

कृतघ्नी० गु० कृतघ्न, किये को मेटे।

कृतनिन्दक० गु० कृतघ्न।

कृतयुग० ना० पु० प्रथम युग सत्ययुग जो १७२८००० वर्ष का होता है।

कृतवर्मा० ना० पु० याद[illegible] विशेष।

कृतज्ञ० गु० जो उपकार मान[illegible] ता है, गुणवादी ना० पु[illegible] कुत्ता।

कृतज्ञता० ना० स्त्री० गुणवाद[illegible] उपकार मानना, यह[illegible] सान मानना।

कृतान्त० ना० पु० यमरा[illegible] सिद्धान्त।

कृतार्थ० गु० कृतकार्य्य, निष्का[illegible] अंशधारी, मुक्त।

कृति० ना० स्त्री० काम करना[illegible]

कृतिका० ना० स्त्री० तै स[illegible] नक्षत्र।

कृतिमरक्त०ना० पु० कांच।

कृतिमतार्क्ष०ना०पु०रसोत।

कृतिवासा० } ना० पु० श्रीमहादेवजी।
कृत्तिवासा०

कृत्या०ना० स्त्री० देवी, विशेष राक्षसी।

कृत्स्न० गु० अशेष।

कृदन्त०ना० पु० जो शब्द धातु से बना है।

कृपण०गु०सूम,कञ्जूस,अदाता।

कृपणता० ना० स्त्री० सूमी, कञ्जूसी, अदातृत्व।

कृपा०ना० स्त्री० दया, मेहरबानी, रहम।

कृपाण०ना०पु०खड्ग,तलवार।

कृपालु०गु०दयाशील,दयावन्त, रहीम।

कृमि०ना० पु० कीड़ा।

कृमिघ्न०ना०पु०बिडङ्ग औषधि।

कृमिजग्धा०ना० पु० काला अगरु।

कृश०गु० दुर्बल, क्षीण, लटा।

कृशता०ना० स्त्री० दुर्बलता, क्षीणता।

कृशाङ्ग० गु० जिसके अङ्ग खिंचे हुये हैं।

कृशानु०ना०पु०अग्नि, आगि,

कृषाण० } ना० पु० किसान, खेतीवाला।
कृषिक०

कृषिकर्म०ना० पु० हलजोतना, खेतीकरना।

कृषी०ना० स्त्री० खेती, किसनई।

कृषीवल० ना० पु० किसान, कृषाण।

कृष्ण०ना०पु० श्रीकृष्ण, श्याम सुन्दरजी, कालाजीरा, कालातीतर, काला हरिण, गु० श्याम, कालारङ्ग।

कृष्णगन्धा०ना०पु० सहिजन वृक्ष।

कृष्णता० ना० स्त्री० घुंघुची, श्यामता ।

कृष्णपक्ष० ना० पु० बदी, अन्धेरापाख ।

कृष्णफला० ना० स्त्री० बाकुची, बड़ा करौंदा ।

कृष्णभद्रा० ना० स्त्री० कुटकी ।

कृष्णवीर्य्य० ना० पु० तरबूज़ ।

कृष्णवृत्तिका० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृष्णसार० ना० पु० काला-हरिण ।

कृष्णा० ना० स्त्री० नदीविशेष, जो दक्षिण भरतखण्डमें है, पीपरी, यमुनाजी ।

कृष्णाग्रज० ना० पु० श्रीबल-देवजी ।

कृष्णागरु० ना० पु० काला-अगर ।

कृष्णाफल० ना० पु० स्याह मिरच ।

कृष्णार्पण० गु० भगवान्हेत ।

कृष्णोपकुल्या० ना० स्त्री० पीपरी ।

कृष्मरी० ना० स्त्री० कम्भारी ।

कृत्रिम० गु० बनाया हुआ, रचित ।

के० अव्य० सम्बन्ध बोधक ।

केकयी० ना० स्त्री० भरतजी की माता ।

केकड़ा० ना० पु० कर्कट, गेंगटा ।

केकय० ना० पु० राजा वा देश विशेष ।

केकरा० ना० पु० केकड़ा ।

केका० ना० स्त्री० मोरध्वनि, मोरों का शब्द ।

केकी० ना० पु० मोर, मयूर ।

केतकी० ना० स्त्री० केवड़ा, वृक्ष वा पुष्प विशेष ।

केतिक० गु० थोड़े, दोचार, कितना ।

केतु० ना० पु० नवमग्रह, पुच्छ-लतारा, पताका, झण्डा वा झण्डी ।

केतुकि० ना० पु० आकाश, पुष्प विशेष, सूर्य्य, चन्द्रमा, कामदेव, छन्द।

केतुमाल० ना० पु० पृथ्वी के नव खण्डों में से एक का नाम।

केन्द्र० ना० पु० मरकज़, गोलाकार वा वृत्तचित्र का वह मध्यस्थान जहां से परिधितक जितनी रेखा खीचीजावें वह सब परस्पर तुल्य हों।

केयूर० ना० पु० आभूषण, ज़ेवर।

केरि० ना० पु० केलावृक्ष, ना० स्त्री० केलि।

केलि० } ना० स्त्री० क्रीड़ा,
केली० } विहार, ऐश, आराम।

केवट० ना० पु० मल्लाह, खेवक।

केवड़ा० ना० पु० पुष्प वा वृक्ष विशेष।

केवल० अव्य० मात्र, फ़क़त, गु० एकही।

केवली० ना० स्त्री० जन्मपत्री।

केवा० सर्व० कोई।

केश० ना० स्त्री० बाल।

केशफला० ना० स्त्री० बेरी वृक्ष वा उसका फल यथा स्निग्धछदा केशफला सौवीरिका। इतिनिघण्ट:।

केशर० ना० पु० केसर, नागकेसर।

केशरञ्जन० ना० पु० भंगरा पौधा।

केशरी० ना० पु० हनुमानजी के पिता, सिंह।

केशव० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र का एकनाम।

केशवेश० ना० स्त्री० बालों की लट।

केशाकेशि० ना० पु० परस्पर बालोंको पकड़के लड़ना वा लड़ाना।

केशी० ना० पु० दैत्य विशेष जिसको श्रीकृष्णचन्द्रने बधकिया था, गु० बालों वाला।

केशरिया० गु० केशर से रंगा भया, पीला।

केहरि० } ना० पु० सिंह, केहरी० } शेर, व्याघ्र।

कै० सर्व्व० कितना, अनेक।

कैंचली० ना० स्त्री० सांप का खोल।

कैटभ० ना० पु० दैत्यविशेष।

कैत० ना० पु० कैथाका वृक्ष।

कैतव० ना० पु० चिरायता, छल।

कैथ० } ना० पु० वृक्षविशेष। कैथा० }

कैथी० ना० स्त्री० नागरी का एक प्रकार का लेख जो कायस्थों ने कल्पना किया है।

कैरव० ना० पु० फकूल, श्वेत-कमल।

कैल० ना० स्त्री० अङ्कुर, गाभा।

कैलाश० } ना० पु० पर्व्वत कैलास० } विशेष जहां शिव-जी और कुवेर आदि यक्षगण रहते हैं।

कैव० ना० पु० कदम वृक्ष।

कैवर्त्त० ना० पु० मल्लाह, कहार, धीमर, केवट।

कैवल्य० ना० पु० मोक्ष, मुक्ति।

कैशिक० ना० स्त्री० बालों की लट।

कैसा० सर्व्व० किस प्रकार।

कैहों० भ० व० क्रि० कहूंगा वा कहूंगा।

को० अव्य० कर्मणि सूचक द्विती-या वा, सर्व्व० कौन।

कोई॰ सर्व्व॰ अनिश्चय, एक, नाम॰ पु॰ कमल विशेष।

कोऊ॰ सर्व्व॰ कोई, कोहा।

कोचना॰ स॰ क्रि॰ छेदना, चुभाना।

कोपल॰ नाम॰ पु॰ नयेपत्ते, गुच्छा।

कोक॰ नाम॰ पु॰ ग्रन्थ विशेष, जिसमें स्त्री प्रसङ्ग की प्रति पादकता का वर्णन है, फफूल।

कोकनद॰ नाम॰ पु॰ लाल कमल।

कोकर्ण॰ नाम॰ पु॰ असगन्ध।

कोका॰ नाम॰ पु॰ चकई चकवा, दूधभाई, फफूल, पिंड खजूर।

कोकिल॰ } नाम॰ स्त्री॰ पक्षी
कोकिला॰ } विशेष, कोयल।

कोकी॰ नाम॰ स्त्री॰ चकई।

कोख॰ } नाम॰ स्त्री॰ कुक्षि।
कोखा॰ }

कोखजन्ध॰ गु॰ बांझ वन्ध्या।

कोखि॰ नाम॰ स्त्री॰ कोख, कुक्षि।

कोछा॰ } नाम॰ स्त्री॰ गोदी,
कोछी॰ } ओढ़नी की झोली।

कोट॰ नाम॰ पु॰ गढ़, क़िलअ, नगर।

कोटर॰ नाम॰ पु॰ वृक्ष को खोह।

कोटवी॰ गु॰ नङ्गी स्त्री, नाम॰ स्त्री॰ बाणासुर की महतारी।

कोटा॰ नाम॰ पु॰ राज पूताने का नगर विशेष।

कोटि॰ नाम॰ स्त्री॰ एक ओर की भुज, पहिला पक्ष, क्रिरोड़, सौ लाख।

कोठरी॰ नाम॰ स्त्री॰ छोटा कोठा।

कोठा॰ ना॰ पु॰ पटा हुआ एक बड़ा घर।

कोठि॰ ना॰ स्त्री॰ कोख।

कोठी॰ ना॰ स्त्री॰ महाजनों वा राजाओं वा ठाकुरों की बैठक का स्थान।

कोड़ना॰ स॰ क्रि॰ खोदना।

कोड़ा॰ ना॰ पु॰ चाबुक।

कोढ़॰ ना॰ पु॰ कुष्ट रोग विशेष।

कोढ़ना॰ अ॰ क्रि॰ दुखी होना।

कोढ़ी॰ ना॰ पु॰ कुष्टी।

कोण॰ ना॰ पु॰ कोना, दिन, पृथ्वी।

कोद॰ ना॰ स्त्री॰ ओर, पक्ष, तरफ़।

कोदण्ड॰ ना॰ पु॰ शिवजी का धनुष, धनुष।

कोद्रव॰ ना॰ पु॰ कोदो अन्न विशेष।

कोना॰ ना॰ पु॰ जो दो सूधी रेखाओं के मिलान से बनता है परन्तु वे रेखा एक सूध में न हों।

कोप॰ ना॰ पु॰ क्रोध गुस्सह।

कोपना॰ अ॰ क्रि॰ क्रोधित होना, गुस्सा करना, ना॰ स्त्री॰ स्त्री॰।

कोपर॰ } ना॰ पु॰ पत्रविशेष।
कोपल॰ }

कोपान्वित॰ गु॰ क्रोध युत, गुस्से से भरा।

कोपी॰ गु॰ कोपान्वित, कोई।

कोपीन॰ ना॰ स्त्री॰ लंगोट, लंगोटी।

कोमल॰ गु॰ नम्र, नया, भोला, नरम।

कोमलता॰ ना॰ स्त्री॰ नरमी भोलापन।

कोयल॰ ना॰ स्त्री॰ पक्षी विशेष, पुष्प विशेष।

कोयला॰ ना॰ पु॰ अङ्गार, बुझा भया।
कोर॰ ना॰ स्त्री॰ कगर, छोर धार।
कोरक॰ ना॰ पु॰ कली।
कोरयाडी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी इलायची।
कोरा॰ गु॰ बिना धोयाकपड़ा, बिना लिखा काग़ज़, मिट्टी का नया पात्र जो काममें न आया हो।
कोरि॰ ना॰ स्त्री॰ कोटि, किरोड़।
कोरी॰ ना॰ स्त्री॰ नई, ना॰ पु॰ जाति विशेष।
कोर्थ॰ सर्व्व॰ किस हेत, किस लिये।
कोल॰ ना॰ पु॰ शूकर, नीच जाति विशेष, खाल, गली जो लम्बी सङ्केत हो।
कोलवल्लिका॰ ना॰ स्त्री॰ कैया का वृक्ष।
कोला॰ ना॰ स्त्री॰ पीपरि।
कोलाफल॰ ना॰ पु॰ मऊआ वृक्ष।
कोलाहल॰ ना॰ पु॰ कलकल, रौला, शोर।
कोलिका॰ ना॰ स्त्री॰ काली-मिरच।
कोलियाना॰ स॰ क्रि॰ गोदी में लेना।
कोल्हू॰ ना॰ पु॰ जिससे तेल निकालते हैं व, ऊख पेरते हैं।
कोविद॰ गु॰ पण्डित, गुणी।
कोश॰ ना॰ पु॰ कमल, मध्य भाग।
कोशल॰ ना॰ पु॰ कुशल, देश विशेष।
कोशलपति॰ ना॰ पु॰ दशरथ, श्री रामचन्द्र, अवध भूप।
कोशलपुर॰ ना॰ पु॰, कोशलपुरी॰ ना॰ स्त्री॰ — श्रीअयोध्या जी।

कोशलाधीश० } नाo पुo
कोशलेश० } कोशलपति, श्रीरामचन्द्रजी।

कोष० नाo पुo अभिधान, भण्डार, अण्ड, खड्गादि की गांठी लुगत का खज़ाना, ख़ज़ाना।

कोष्ठ० नाo पुo खात, कोटा, ओझ।

कोष्ठक० नाo पुo तख़ता।

कोस० नाo पुo २ मील का वा २००० दण्ड का।

कोसना० स० क्रि०शापदेना, बुरामानना।

कोह० नाo पुo क्रोध, दुख, डाह, पेट में आग लगना, दिलजलना।

कोहनी० ना० स्त्री० बाहु के बीच की गांठि।

कोहाव० ना०पु० डाहखाना।

कोही० गु० क्रोधी, रामायणे यथा, कर कुठार मैं अकरण कोही। आगे अपराधी गुरु द्रोही।

कौ० अव्य० का।

कौं० अव्य० के।

कौआ० ना० पु० काग।

कौंध० ना० पु०प्रकाश, प्रताप।

कौंधना० अ० क्रि० प्रकाश होना, चमकना।

कौंधा० ना० पु० बिजली।

कौंडियाला० ना० पु० सर्प्प, विशेष धनी, नदी विशेष जिसको सरयू कहते हैं।

कौडी ना० स्त्री० छोटा शङ्ख धन, कमाई।

कौणप० ना० पु० दैत्यराक्षस

कौतुक० ना० पु० कौतूहल, परिहास, तमाशा।

कौतुकिया० } गु०परिहासी
कौतुकी० } तमाश बीन।

कौतूहल० ना० पु० कुतूहल।

कौन० सर्व० प्रश्न बोधक।

कौन्ता० ना० स्त्री० कुन्ती।

कौन्ती० ना० स्त्री० रेणुका औषधि।

कौन्तेय० ना० स्त्री० पाण्डव विशेष।

कौपीन० ना० पु० कौपीन लंगोटी

कौमारी० ना० स्त्री० देवी विशेष।

कौमुदी० ना० स्त्री० चन्द्रिका ज्योति, पुस्तक विशेष।

कौर० ना० पु० कवल, लुक़मा,

कौरवपाण्डु० ना० पु० कौरव और पाण्डव।

कौरव० ना० पु० कुरु राजा की सन्तान।

कौरव्य० ना० पु० मुनिविशेष।

कौल० ना० पु० लुक़मा, ग्रास, नवाला, धर्म विशेष, गु० कुलीन।

कौला० ना० पु० कोठरी आदि के पांजर का कोना, अंकवारा।

कौली० ना० स्त्री० गोदी।

कौलेय० ना० पु० कुत्ता, यथा कौलेय स्सार मेयश्च कुक्कुरो मगदंशकः इत्य-मरः।

कौलेली० ना० पु० गन्धक।

कौवर० ना० पु० कूटरवा।

कौवेर्य० गु० जो कुवेर सम्ब-न्धी हो।

कौशल्या० ना० स्त्री० क्षेम कुशल, श्री रामचन्द्रजी की माता।

कौशिक० ना० पु० विश्वामित्र मुनि, इन्द्रगुग्गुल, उलूक पक्षी, दण्ड।

कौशिकी० ना० स्त्री० नदी विशेष।

कौषेय० गु० पाटी वस्त्र।

कौसीस० ना० पु० कमल।

कौस्तुभमणि० ना० स्त्री० मणि विशेष जिसको विष्णुजी ने उरपरधारण किया है।

क्या० सर्व० प्रश्न बोधक।

क्यारी० ना० स्त्री० बागों वा खेतों में बनती है।

क्यों०
क्योंकर०
क्योंकि०
} अव्य० किसलिये, किस प्रकार।

क्रकच० ना० पु० करील वृक्ष।

क्रतुध्वंसी० ना० पु० महादेवजी।

क्रतुभुग०
क्रतुभुज०
} ना० पु० देवता जो यज्ञमेंखाते हैं।

क्रतिमालक० ना० पु० कि दवाली।

क्रम० ना० पु० परिपाटी, रीति, सिलसिला, मिलान, धीरे।

क्रमक्रम० ना० पु० धीरे धीरे, दर्जे दर्जे।

क्रमुक० ना० स्त्री० सुपारी।

क्रमिकुम्भ० ना० स्त्री० इन्द्रवारुणी।

क्रमेलक० ना० पु० ऊंट यथा उष्ट्रे क्रमेल कमय महाङ्गाः करभः शिशुः इत्यमरः।

क्रव्याद०
क्रव्यात्०
} ना० पु० राक्षस, कच्चामांसभक्षी।

क्रान्ति० ना० स्त्री० चमक, शोभा, दीप्ति, प्रकाश।

क्रिया० ना० स्त्री० व्यवहार, काम, धातु, नित्यकर्म्म, यत्न, उपाय, मरने के पीछे शास्त्रोक्त कर्म्म।

क्रियाद्योत० गु० कर्त्ताकीदशा की सूचक।

क्रियान्वयित्व० ना० पु० क्रिया पदकी ओर सम्बन्ध रखना।

क्रीड़ा॰ना॰ स्त्री॰ खेल, केलि, लीला।

क्रीत॰ गु॰ मोललिया।

क्रीयमाण॰ गु॰ कियेहुये वा अबकेक्रिये।

क्रुद्ध॰ गु॰ रिसवश, क्रोधित, खफा।

क्रूर॰गु॰ कठोर, निठुर, कपटी टेढ़ा।

क्रूरकर्मा॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंधा होली।

क्रूरवार॰ ना॰ पु॰ शनिश्चर, मङ्गल, आदित्यवार।

क्रोध॰ना॰ पु॰ कोप, गुस्सह, भैरव विशेष।

क्रोधातुर॰ } गु॰ कोपी, क्रोध
क्रोधान्ध॰ } में अन्ध, क्रोधमें मस्त।

क्रोधी॰गु॰ कोपी, गुस्सा भरा भया।

क्रोश॰ना॰ पु॰ कोस, दोमील, दो हजारदण्ड कीमाप।

क्रोष्टा॰ना॰पु॰गीदड़,शृगाल।

क्लिशित॰ } गु॰ दुःखित, पीडित, रञ्जीदः।
क्लिष्ट॰ }

क्लीव॰ना॰पु॰नपुंसक,हींजड़ा।

क्लेद॰ना॰ पु॰ गीलापन।

क्लेदित॰गु॰ भीगाभया,तर।

क्लेश॰ना॰पु॰दुःख,पीड़ा,रञ्ज।

क्लेशित॰गु॰दुखित, पीड़ित।

क्वचित्॰ अव्य॰ कहीं।

क्वटि॰ना॰ स्त्री॰ पिण्डखजूर।

क्वाण॰ना॰ पु॰ कौआ।

क्वाथ॰ना॰ पु॰ काढ़ाजोरोगीको पिलाया जाता है।

[ख]

खं॰ } ना॰ पु॰ आकाश, स्वर्ग,
ख॰ } घर, शून्य, रन्ध्र, इन्द्रिय।

खंखारना॰ अ॰क्रि॰ खांसना।

खंगना॰ अ॰ क्रि॰ कमहोना, घटना ।

खंगालना॰ } स॰ क्रि॰ धोना,
खंघारना॰ } अनवासना ।

खग॰ना॰ पु॰ पक्षी, गरुड़, सूर्य्यादि, मेघ, पवन, देवता और तारागण ।

खगकेतु॰ }
खगनाथ॰ }
खगनायक॰ } ना॰ पु॰ सूर्य, चन्द्रमा, गरुड़ ।
खगनाह॰ }
खगपति॰ }

खगमाला॰ ना॰ पु॰ पक्षियों का समूह, तारागण ।

खगहा॰ ना॰ पु॰ गैंड़ा, बाज़ जुर्रा ।

खगेन्द्र॰ } ना॰ पु॰ गरुड़,
खगेश॰ } चन्द्रमा ।

खगोल॰ ना॰ पु॰ आकाश मण्डल ।

खग्ग॰ ना॰ पु॰ वीर, बहादुर ।

खचना॰ स॰ क्रि॰ रेखा, करना जड़ना ।

खचर॰ ना॰ पु॰ खच्चरपशु, विशेष, मेघ, ग्रहादि ।

खचा॰ } गु॰ जड़ाऊ, खिचा
खचित॰ } हुआ ।

खजुरिया॰ }
खजूर॰ } ना॰ स्त्री॰ वृक्ष, विशेष ।
खजूरि॰ }

खञ्ज॰ गु॰ लंगड़ा, ना॰ पु॰ खञ्जन ।

खञ्जन॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष जिसे खड़ैचा वा खिरिन्दा भी कहतेहैं ।

खञ्जनक॰ ना॰ पु॰ ममोला खञ्जन ।

खञ्जरिट॰ } ना॰ पु॰ खञ्जन ।
खञ्जरीट॰ }

खट॰ ना॰ स्त्री॰ खाट ।

खटक॰ ना॰ पु॰ खटका ।

खटकना० अ० क्रि० शब्द होना, झगड़ना, लगना, शङ्का करना।

खटका० ना० पु० सन्देह, शङ्का, पांवकी आहट।

खटकाना० स० क्रि० आहट देना, शब्दकरना।

खटखटाना० अ० क्रि० ठकठकाना।

खटछप्पर० ना० पु० छप्पर खट।

खटपट० ना० पु० झगड़ा, लड़ाई।

खटमल० ना० पु० खाटमें का कीड़ा।

खटाई० ना० स्त्री० अम्ल, खट्टापन, अचार।

खटाका० ना० पु० शब्द, चटाका

खटास० ना० पु० खट्टापन, जन्तु विशेष।

खटिका० ना० स्त्री० सेलखड़ी।

खटिया० ना० स्त्री० छोटीखाट।

खटीक० ना० पु० जाति विशेष।

खट्टा० गु० अम्ल, अम्बत्।

खट्टिक० ना० पु० खटीक, आखेटकी।

खट्टु० ना० पु० बनिहार।

खट्वा० ना० स्त्री० खाट।

खड़क० ना० स्त्री० गोशाला।

खड़कना० अ० क्रि० झन झनाना।

खड़खड़ाना० स० क्रि० ठक, ठकाना, खर्राटामारना झनझनाना।

खड़खराहट० ना० पु० शब्द होना, आहट।

खड़सान० ना० स्त्री० फ़िसान जिसपर बाढ़बनातेहैं।

खड़ा० गु० उठा, सीधा, अड़ा, ऊंचा, ठाढ़ा।

खड़ाऊं० ना० पु० पादुका, काठनई।

खड़िया० ना० स्त्री० छूही मट्टी, दूधिया मट्टी।

खड्ग० ना० पु० तलवार, गैंडा, अमरे यथा गण्डकेखड्ग खड्गिनौ।

खण्ड० ना० पु० टुकड़ा, खांड़, अध्याय, दिशा।

खण्डन० ना० पु० दूषण, मिटाना, काटना।

खण्डना० स० क्रि० दूषणदेना, तोड़ना, काटना।

खण्डनार्थ० गु० काटनेकेलिये।

खण्डिनी० ना० स्त्री० काटने वाली।

खण्डपरसु० ना० पु० श्रीमहादेव।

खण्डर० ना० पु० ऊजड़, वैराना।

खण्डरना० स० क्रि० काटना, टुकड़ेकरना।

खण्डहल० ना० पु० ऊजड़ मकान, वैरानह।

खण्डित० गु० काटागया, कमी, अपूर्ण।

खण्डितकरना० स० क्रि० बात काटना, खण्डना।

खतिल० ना० पु० पोस्त वा उस का बिरवा।

खत्ता० ना० पु०
खत्ती० स्त्री० } गड़हा, जि समें अन भरते हैं।

खदिर० ना० पु० खैर, कत्था

खदेड़० ना० स्त्री० रगेद, अहेर

खदेड़ना० स० क्रि० रगेदना भगाना।

खद्योत० ना० पु० सूर्य, ता गण और जुगनू, की विशेष।

खन० ना० पु० खण्ड।

खनक० ना० पु० मूश, चूहा

खनकना० अ० क्रि० बजन शब्द होना।

खनन० ना० पु० खोदना।

खनना० स० क्रि० खोदना।

खपत० गु० जो बिक गया, स्त बिकाव।

खपना॰ अ॰ क्रि॰ बिकना, सूखना, ठहरना, पैठना, समाना।
खपरा॰ ना॰ पु॰ घर छावने के लिये जो मिट्टी के बनते हैं।
खपरी॰ ना॰ स्त्री॰ शिर का ऊपरी भाग।
खपरैल॰ ना॰ स्त्री॰ घर जो खपरों से छाया हो।
खपाच॰ ना॰ स्त्री॰ काठ का टुकड़ा।
खपाना॰ स॰ क्रि॰ बिकवाना, पैठाना, भराना।
खपित॰ गु॰ जो बिक गया, स्त्री॰ बिकाव।
खपुर॰ ना॰ पुं॰ स्वर्ग, आकाश।
खप्पर॰ ना॰ पु॰ खोपड़ी, माटी का पात्र जिसमें जोगी जलादि पीते हैं, अंगेठी।
खब्बा॰ ना॰ पु॰ बायां हाथ।
खभारू॰ ना॰ पु॰ पेट में आगि पड़ना, घबराहट।
खम्बा॰ }
खम्भ॰ } ना॰ पु॰ स्तम्भ, थूनी।
खम्भा॰ ना॰ पु॰ स्तम्भ, थूनी।
खर॰ ना॰ पु॰ खरासुर, गदहा, घास, कुत्ता, अच्छा, तीक्ष्ण।
खरक॰ ना॰ पु॰ खड़क, गौशाला।
खरखरा॰ ना॰ पु॰ खरहरा।
खरपच॰ ना॰ पु॰ मरुवा, सुगन्धित, पौधा।
खरबर॰ }
खरभर॰ } ना॰ स्त्री॰ घोड़े के दौड़ने का शब्द, खलबली, शोरगुल, ऊल्लड, क्षोभ।
खरमञ्जरी॰ ना॰ स्त्री॰ ऊंग।
खरयष्टिका॰ ना॰ स्त्री॰ खिरहटी।
खरल॰ ना॰ पु॰ औषधि घिसने का पात्र।

खरहरा० नाo पुo घोड़ाआदि मलने की वस्तु विशेष।

खरहारना० सoक्रिoझारना, बुहारना।

खरा० गुo चोखा, श्रेष्ठ, अच्छा।

खराई० नाo स्त्रीo सचाई, उत्तमता, सूख।

खरारि० नाo पुo श्रीरामचन्द्रजी।

खरिक० नाo स्त्रीo खड़क, गोशाला।

खरी० नाo स्त्रीo सरसों का पीना, गदही, अच्छी खड़ी।

खरे० गुo खड़े, ठाढे, अच्छे।

खरोंट० नाo स्त्रीo बकोट, खसोट।

खरोचना० } सoक्रिoनोचना
खरोटना० } खसोटना।

खर्ज० नाo पुo रागोच्चारण, का विशेष स्थान।

खर्जूर० नाo स्त्रीo चांदी, खजूर वृक्ष।

खर्जूरिका० नाoस्त्रीo पिण्ड, खजूर।

खर्जूरी० नाo स्त्री मूसली।

खर्पर० नाo पुo पीठ, शिर।

खर्व० नाo पुo तुच्छ, छोटा, वामन, भाषामें सौ अर्ब को कहतेहैं१०००००००००००

खर्रा० नाo पुo मसौदः, टट्टर, खरखरा, चिट्ठा, खसरा।

खर्राटा० नाo पुo सोते में घुर्राना।

खल० गुo दुष्ट नीच, तुच्छ।

खलता० नाo स्त्रीo दुष्टता।

खलचल० नाo स्त्री हलबल।

खलबलाना० अoक्रिo उबलना।

खलबली० नाo स्त्रीo खरभर, झल्लड़।

खला० ना० स्त्री० पतुरिया, दुष्टिनि।
खलान् गु० खलका बहु-वचन।
खलारि० ना० पु० श्री नारा-यण।
खलारू० ना० पु० निचान, पस्ती।
खलियान० ना० पु० खलिहान, खत्ता।
खलियाना० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना।
खलिहान० ना० पु० अनाज माड़ने वा खूंदने का स्थान विशेष, पैरू।
खली० ना० स्त्री० तिलादि की खूंद।
ख़लीता० ना० पु० जेब, फ़ार-सी शब्द है।
खवा० ना० पु० कन्धा।
खस० ना० पु० जाति विशेष।
खसकना० अ० क्रि० गिर-पड़ना, सरकना, हटना।
खसकाना० स० क्रि० सरकाना, हटाना।
खसखस० ना० स्त्री० सुगन्धित तृण विशेष।
खसना० अ० क्रि० धसना, गिरपड़ना, निकलपड़ना।
खसरा० ना० पु० बही, खर्रा, खुजली।
खसाना० स० क्रि० गिराना, बिगाड़ना।
खसीमाल० ना० पु० पत्थर विशेष, गिरीमाला।
खांचा० ना० पु० टोकड़ा, पिंजरा, विशेष।
खांड़० ना० स्त्री० शर्करा, शक्कर।
खाड़ना० स० क्रि० छांटना, कूटना।

खांडा० ना० पु० खड्ग विशेष।

खांसना० अ० क्रि० खोंखना, ठोंठों करना।

खांसी० ना० स्त्री० खोंखी।

खाग० ना० पु० गैंडे का सींग।

खाज० ना० स्त्री० खुजली।

खाजा० ना० पु० मिठाई विशेष।

खाट० ना० स्त्री० चारपाई।

खात० ना० पु० गर्त्त, गड़हा, घूरा, गोबर।

खाता० ना० पु० रोज़ नामा, लेखे बही, ग़ल्ला रखने का खत्ता।

खाती० ना० पु० बढ़ई, खरादी।

खाद० ना० पु० गोबरादि, घूरा।

खाद्य० गु० खाने के योग्य जो वस्तु।

खाना० स० क्रि० भोजन करना, अ० क्रि० समाना, उपार्जन वा भोग करना, ना० पु० भोजन।

खानि० ना० स्त्री० आकर अधीश, उत्पत्तिस्थान।

खानिक० गु० खाने को जो वस्तु।

खारका० ना० पु० छुहारा।

खारा० गु० लोना।

खारी० गु० कडुआ नमक, लोनीला।

खाल० ना० स्त्री० चमड़ा, धौंकनी।

खिचड़ी० ना० स्त्री० दाल-चावल मिलित।

खिचना० अ० क्रि० तनना, खिंचा रहना।

खिचाव० ना० पु० तनाव, बिगाड़।

खिजलाना० स० क्रि०
खिजाना० अ० क्रि० } सता-
ना, चिड़ाना, क्रोधित-
होना।

खिझ० ना० स्त्री० खिसियाहट।

खिझना०
खिझलाना० } अ० क्रि० खि-
जलाना।

खिड़की० ना० स्त्री० झरोखा।

खिलखिलाना० अ० क्रि०
हसना।

खिलजाना०
खिलना० } अ० क्रि० फूल-
ना, हर्षित,
होना।

खिलाड़० गु० चञ्चल, खेलने-
वाला चालाक।

खिलाना० स० क्रि० भोजन
कराना, भोगकरवाना,
खेलकराना।

खिलौना० ना० पु० खेलने
वस्तु।

खिल्ली० ना० स्त्री० हस
मज़ाक़।

खिसलना० अ० क्रि० फिसलन
हटना।

खिसलाहट० ना० स्त्री० फि
सलाहट।

खिसियाना० अ० क्रि० खीस
निकालना, शरमान
लजाना, गु० चिड़
चिड़ा।

खिसियाहट० ना० स्त्री
खिसियानपन।

खीच० ना० पु० अप्रसन्नत
चितहट।

खीज० ना० स्त्री० क्रोध, खिसि-
याहट।

खीजना० अ० क्रि० क्रोधित
होना, दुखपाना।

खीरा० ना० पु० फलविशेष।

खीरि० ना० स्त्री० चावल जो दूध और खांड में पकाये जाते हैं ।

खीरी० ना० पु० पिस्ता मेवा, नगर विशेष ।

खील० } ना० पु० धानों
खीला० } के लावा ।

खीस० ना० पु० टोटा, खराब, दांतका दिखलाहट, पीयूष ।

खीसना० अ० क्रि० दांतकाढ़ना ।

खीसा० ना० पु० ख़लीता, जेब, थैली ।

खुजलना० } अ० क्रि० खुज-
खुजलाना० } ली करना ।

खुजलाहट० ना० स्त्री० खुजलापन, चुल ।

खुजली० ना० स्त्री० खाज ।

खुजाना० स० क्रि० खुजलाना ।

खुटकना० स० क्रि० चबना, कुतरना, सन्देह करना ।

खुटका० ना० पु० सन्देह, शङ्का, खटका ।

खुगड्ला० ना० पु० दन्तकाछिद्र, खोखि ।

खुदवाना० स० क्रि० गड़हाना, माटी निकलाना, चिन्हित कराना, अङ्कित कराना ।

खुनस० ना० स्त्री० रिस, डाह ।

खुनसाना० अ० क्रि० रिसाना, डाहखाना ।

खुनसी० गु० क्रोधी ।

खुन्दलना० स० क्रि० पांवसे दवाना ।

खुभी० ना० स्त्री० कान का भूषण, बीरैं ।

खुर० ना० पु० पशुओं के पद का नख ।

खुरचन० ना० स्त्री० छीलन

खुरचना० स० क्रि० छीलना

खुरखुड० ना० पु० खूटीदेवली

खुर्पी० ना० पु०⎫ घास छीलने
खुर्पी० ना. स्त्री.⎭ का अस्त्र।

खुलना० अ० क्रि० प्रकट होना, बिथरना।

खूंच० ना० पु० नाड़ीविशेष।

खूट० ना० पु० कोना, कानका मैल।

खूंटला० ना० स्त्री० औषधि विशेष।

खूंटा० ना० पु० काठका ठेकना, मेख।

खूंटी० ना० स्त्री० छोटाखूंटा।

खूंदना० स० क्रि० पांवसेखोदना, टाप मारना।

खूटी० ना० स्त्री० देवली, खुराड।

खूद० ना० पु० खली, तरछुट, गु० घोड़ेकानाचना।

खेकसा० ना० पु० चिन्हविशेष।

खेचर०⎫ ना० पु० पक्षी, ग्रह,
खेचारी०⎭ तारागण देवता, विद्याधरादि।

खेटक० ना० पु० अहेर, शिक
और अस्त्र विशेष।

खेटकी० ना० पु० वधि
शिकारी।

खेत० ना० पु० क्षेत्र समरभू
पुण्यक्षेत्र, वह भूमिज
अन्नादि उपजता है।

खेतल० ना० पु० आक
मण्डल।

खेती० ना० स्त्री० किसनई,
जोताउ।

खेद० ना० पु० शोक, दु
पश्चात्ताप

खेदना० स० क्रि० खदेड़
सताना, और पी
करना

खेदित० गु० दुखित, पीडि
सतायागया

खेरा० ना० पु० उजड़पुर, उ

खेरी० ना० स्त्री० लोहावि
हल

खेल० ना० पु० क्रीडा,
हलाव

खेलना० स० क्रि० क्रीडाकरना, जीबहलाना ।

खेवक०, खेयट० } ना० पु० नाविक, डांडी औरमल्लाह ।

खेवना० स० क्रि० डांडमारना, नावचलाना ।

खेवा० ना० पु० उतराई, भाड़ा, पारदेना, उतारा ।

खेह० ना० स्त्री० राख, धूलि, खाक ।

खैंच० ना० स्त्री० उखाड़, ऐंच ।

खैंचना० स० क्रि० ऐंचना, कसना, तानना ।

खैंचाखैंच०, खैंचाखैंची० } ना० स्त्री० ऐंचा ऐंची, ऐंचाखैंची

खैर० ना० पु० कत्था ।

खैला० ना० पु० दोहान, नया बैल वा बछड़ा ।

खोआ० ना० पु० लेट, सुरखी, दूध जो उबालके गाढ़ा कियाजाता है ।

खोंखना० अ० क्रि० खांसना ।

खोंखी० ना० स्त्री० खांसी ।

खोंच० ना० स्त्री० चीर ।

खोंचना० स० क्रि० घुसेड़ना ।

खोंचा० ना० पु० भराव, भोंक ।

खोंड़कल० ना० पु० गड़हा ।

खोंता० ना० पु० घोसला ।

खोंसना० स० क्रि० ठांसना, घुसेड़ना ।

खोखला० गु० चोंगला, खाली ।

खोखली० ना० स्त्री० ऊपरका मढ़ाव, जोठोसनहीं है ।

खोज० ना० पु० ढूंढ़, यत्न, चिन्ह, पहिचान ।

खोजना० स० क्रि० ढूंढना ।

खोट० ना० स्त्री० दोष, अवगुन ।

खोटा० गु० भगली, दोषी, झूठा, अधर्मी ।

खोटाई० ना० स्त्री० भगलपन, दोष ।

खोदना०स० क्रि० गोड़ना, करकोलना।

खोना०स० क्रि० गवांना, उड़ना।

खोपड़ा०ना० पु० ललाट के ऊपर का अङ्ग, नारियल की गूदी।

खोपड़ी०ना० स्त्री० मस्तक के ऊपरका भाग, छिलका।

खोपर०ना० पु० सिर।

खोपरा०ना० पु० खोपड़ा।

खोपरी०ना० स्त्री० खोपड़ी।

खोपा०ना० पु० नारियलका गोला, जुड़ा।

खोरि०ना०स्त्री० दोष, ग्लानि।

खोरी०ना०स्त्री० गली, मार्ग, दोष, ग्लानि।

खोल०ना० स्त्री० कांठी, ढकना, दोहर, गढ़ा।

खोलना०स० क्रि० प्रकटकरना, बिछाना, उधेड़ना, लङ्गर उठाना।

खोह०ना० पु० गुफा, गड्ह[a] कान्दरा।

खौड़०
खौरि० } ना० स्त्री० तिल[a]

खौलना०अ० क्रि० उबलना[a]

ख्यात०गु० प्रसिद्ध, प्रतिष्ठि[a] मशहूर।

ख्याति०ना० स्त्री० यश, धा[a] शुहरत।

ख्यात्यापन्न०गु० कीर्त्तिमान[a] नामी।

ख्याल०ना० पु० क्रीडा, खेल[a]

[ग]

गंवाना० स० क्रि० खोन[a] उड़ाना, बहाना।

गंवार०ना० पु० गांवकाबासी[a] कुपढ़ा।

गगन०ना० पु० आकाश, आस[a] मान।

गगनचर० ना० पु० पक्षी[a] देवता, ग्रहादि।

गगरी॰ ना०स्त्री० कलसी,घड़ा।

गङ्गा॰ ना॰ स्त्री॰ भागीरथी, नदी प्रसिद्ध।

गङ्गायमुनी॰ ना० स्त्री० कर्ण भूषण विशेष।

गङ्गाद्वार॰ना० पु० गङ्गोत्तरी, हरद्वार।

गङ्गाधर॰ ना॰ पु० श्रीमहादेव जी।

गङ्गासागर॰ ना० पु० गङ्गा और समुद्र का सङ्गम जहां कपिलदेव का स्थान है।

गङ्गेरुकी॰ना०स्त्री०गंगेरुआ।

गङ्गोत्तरी॰ ना० स्त्री० गङ्गाजी के प्रकाश का स्थान जो बद्री नाथ के आसन्न है।

गङ्गोदक॰ ना० पु० गङ्गाजल।

गच॰ ना० स्त्री० चूना, लेट।

गचपच॰ ना० स्त्री० उलट पलट।

गच्छ॰ ना० पु० मुकाम, चाल।

गज॰ ना० पु० हाथी, दोहाथ-की माप।

गजकेसर॰ ना॰ स्त्री० नाग केसर।

गजकृष्णा॰ ना० स्त्री० गज-पीपरि।

गजगामिनी॰ गु० स्त्री० जिस-की हाथी कीसी चालहो।

गजगाह॰ ना० पु० झब्बेसहित हाथी का भूषण।

गजगौनी॰ गु० गजगमनी।

गजचिर्भटी॰ ना०स्त्री० इन्द्र-बारुणी।

गज्जही॰ अ० क्रि० गरजता है।

गजदन्त॰ ना० पु॰ हाथी का दांत।

गजपति॰ ना० पु० हाथियों का स्वामी अर्थात् राजा वा जिसके हाथी हों।

गजपाटल॰ ना० पु० कज्जल।

गजपाल॰ ना० पु० महावत, फ़ीलवान।

गजपिप्पली॰ ना० स्त्री० गज-पीपरि।

गजभिषक्॰ ना० पु० सोंठि।

गजमुख॰ ना० पु० गणेशजी, हाथी का मुंह।

गजमोती॰ ना० पु० मोती जो हाथी के मस्तक में होता है।

गजरा॰ ना० पु० गाजर का पत्ता, फूलों की माला।

गजबदन॰ ना० पु० गणेशजी।

गजबुसा॰ ना० पु० केलावृक्ष।

गजानन॰ ना॰ पु॰ गणेशजी, हाथी का मुख।

गजासन॰ ना० पु० पीपल, पीपरि।

गञ्ज॰ ना० पु० रोग विशेषजो सिरमें होता है।

गञ्जा॰ गु॰ जिसके सिरमें गञ्ज रोग होवे, ना० पु० गांजा, भांग, रोग विशेष।

गञ्जित॰ गु॰ नशाया गया।

गटपट॰ ना० स्त्री० उलट पुलट मिलित।

गटी॰ ना० स्त्री० समूह, राम-चन्द्रिका यां यथा सब जात फटी दुख कोदुपटी कपटी न रहे जहं एक घड़ी, निघटो रुचि मीच घटीहूघटी जगजीवजती-न की छूटी चटी, अघ ओघ किवेरी कटी वि कटी निकटी प्रकटी गुण ज्ञान गटी, चहुंओरन नाचत मुक्ति नटी गुण धूर जटी जटि पञ्चबटी।

गट्टा॰ ना० पु० कलाई, मिठाई, प्रसिद्ध।

गट्ठा० ना० पु० बड़ी गठरी।

गठना० अ० क्रि० जुड़ना, मिलना।

गठरी० ना० स्त्री० मोट, मोटरी, झाड़।

गठाना० स० क्रि० सिलवाना, पैवन्द लगवाना।

गठिया० ना० पु० गोन, गु० गाठों वाला।

गठीला० } गु० गांठो वाला,
गठिहा० } गठाऊआ।

गडक० } ना० स्त्री० मछली
गडका० } वा मछली विशेष।

गडगडाना० स० क्रि० गरजना।

गड़रिया० ना० पु० जाति विशेष जो भेड़ं पालते हैं।

गडन० ना० स्त्री० धसन, दलदल।

गडना० अ० क्रि० धसना, बैठना, छिदना।

गड़बड़० ना० पु० गटपट, उलट, पलट, हलचल।

गड़बड़ा० ना० पु० खलबली, मरोड़ा, गु० खड़बड़ा, घबराया भया।

गड़बड़ाना० अ० क्रि० घबराना, खलबलाना।

गड़बड़ाहट० ना० स्त्री० हड़बड़ाहट, भय।

गड़हा० ना० पु० गर्त्त, गड्ढा, ताल।

गड़िया० ना० स्त्री० खलार-खाली खेत, गांडू।

गडुआ० ना० पु० टोंटी वाला लोटा।

गड़ोना० स० क्रि० छेदना, खोंसना।

गढ़० ना० पु० कोट, क़िलआ

गढ़ना० स० क्रि० ठोंकना, बनाना।

गढ़नि० ना० स्त्री० बनावट।

गढवार० गु० मोटा गाढ़ा, गढ़वाल।

गढ़वाल० गु० क़िलेदार, गढ़ का रक्षक।

गढ़ा० ना० पु० गड्हा, ग़ार।

गढ़ाई० ना० स्त्री० गढ़नेआदि की बनवाई, वा बनवने का काम।

गढ़ी० ना० स्त्री० छोटागढ़।

गढ़ेला० ना० पु० पृथ्वी में खोदा भया गड्हा।

गढ़ैया० ना० स्त्री० छोटा, पोखरा, गु० गढ़ने हारा।

गण० ना० पु० समूह, महादेव के गणों का झुण्ड।

गणक० ना० पु० दैवज्ञ, ज्योतिषी, हिसाबी।

गणना० ना० स्त्री० पक्षपात, गिनती, शुमार।

गणनाथ० ना० पु० गणनायक।

गणनायक०
गणपति०
गणराउ०
गणराज०
गणाधिप० } ना० पु० गणेश जी, यूथनाथ।

गणिका० ना० स्त्री० वेश्या, पतुरिया, जुही।

गणित० ना० पु० अङ्क विद्या, हिसाब।

गणितकार० ना० पु० गणक।

गणेश० ना० पु० पार्वती के पुत्र, आदि देवता।

गण्ड० ना० पु० नेत्रों के नीचे का भाग, गाल।

गण्डक० ना० पु० गैंड़ा, पशु, नद विशेष।

गण्डदूर्व्वा० ना० स्त्री० गण्ड, दूब।

गण्डमाला० ना० पु० कान के नीचे फोड़ों का रोग विशेष।

गण्डा॰ ना० पु० घेरा, चारि कौड़ी, वा पैसा, वा रुपया, बालकादि के गलेमें बांधने के लिये अभिमन्त्रितसूत ।

गण्डासा॰ ना० पु० अस्त्र, विशेष ।

गण्डासी॰ ना० स्त्री० छोटा, गण्डासा ।

गण्डिका॰ ना० स्त्री० नदी विशेष ।

गण्डी॰ ना० स्त्री० घेरा जिसमें श्री रामचन्द्र जी सीता जी को बैठाल गये थे ।

गण्डीर॰ ना० पु० सेंहुड़वृत्त ।

गण्डीरि॰ ना० स्त्री० ऊख, गन्ना, यथा, तृण राज मधु तृणो गाण्डी मधुप पञ्चक इति निघण्टः ।

गण्डुल॰ गु० प्रफुला ।

गण्डूष॰ ना० स्त्री० पानी का कुल्ला ।

गण्य॰ गु० जो गिना जाय ।

गत॰ गु० प्राप्त, अतीत, व्यतीत, निकृष्ट ।

गतागत॰ ना० पु० उलटफेर ।

गतार्थ॰ गु० एक के जान ने से अन्य को जानना ।

गति॰ ना० स्त्री॰ चाल मुक्ति दशा, ज्ञान, गमन दिशा, क्रियाकर्म ।

गते॰ अव्य॰ होले, धीमें ।

गत्ते॰ अव्य० गते ।

गत्यर्थ॰ गु० जिसका अर्थ गति है वा जिससे गति का अर्थ पाया जावे ।

गथ॰ ना० पु॰ माल, दाम ।

गद॰ ना० पु० रोग, आरज़ः

गदका॰ ना० पु० पटा, दण्ड विशेष ।

गदकारी॰ ना॰ स्त्री० गुदगुदी रोगकारक वस्तु ।

गदला० गु० ढबरा, मैला।

गदलाई० ना० स्त्री० मैलापन।

गदग्रचु० ना० पु० वैद्य, हकीम।

गदा० ना० स्त्री० सोंटा, लाठी, गुर्ज़।

गद, धर० गु० लाठीवाला, गदा बांधनेहारा, ना० पु० विशेष श्रीकृष्णचन्द्रजी का नाम।

गदायुद्ध० ना० पु० लाठी की लड़ाई, गद की लड़ाई।

गदारि० ना० पु० वैद्य, तबीब।

गदेला० ना० पु० मोटा बिछौना, वा जिसमें बहुत रुई भरकर पहिनते हैं।

गद्गद० गु० हर्षमान, शोक वा आनन्द में मग्न।

गद्दर० गु० अधपका।

गद्दी० ना० स्त्री० तकिया वा बिछौना वा आसन वा राजाका सिंहासन, जाति विशेष।

गद्य० ना० पु० छन्दबिनाकाव्य, वार्त्तिक।

गधा० ना० पु० गदहा।

गन० ना० पु० गण।

गनना० स० क्रि० गिनना, अनुमार करना।

गन्ध० ना० पु० कदमवृक्ष, स्त्री० बास, बूय।

गन्धक० ना० पु० औषधि विशेष।

गन्धगर्भ० ना० बेलवृक्ष।

गन्धमादन० ना० पु० पर्व्वत विशेष।

गन्धमूलक० ना० पु० कचूर।

गन्धमूलिनी० ना० स्त्री० कचूरभेद।

गन्धमूली ना० स्त्री० रासना।

गन्धराज० ना० पु० चन्दन, सुगन्धितविशिष्टपुष्प।

गन्धर्व्व० ना० पु० देवता, स्वर्ग के गायक।

गन्धर्वनगर०ना० पु० सामान्य गन्धर्व लोक, विशेष मुख्य आकाश में जो चित्र विचित्र की मूर्त्तें दृष्टि आती हैं जब देरतक देखने से आंखतिरमिराजाती है।

गन्धर्वहस्तक०ना० पु० वेलवृत्त।

गन्धवह०ना० पु० वायु, पवन, हवा।

गन्धसार०ना० पु० चन्दन।

गन्धा०ना० पु० नागदौन, कदम वृत्त।

गन्धान०ना० पु० सुवर्ण, सोना।

गन्धायुष्मा०ना० पु० गन्धक।

गन्धार०ना० पु० रागकास्वर विशेष।

गन्धारी०ना० स्त्री० दुर्योधन की माता, खास जो वा मादमें प्रकाशित होती है, ज्ञान तरङ्गे यथा, गन्धारी वा म त्व न वा स हस्त जिह्वा, द स दृगवासी।

गन्धि०ना० स्त्री० बास, बू गन्धक।

गन्धिका०ना० स्त्री० आहूवेर

गन्धिकारिणी०ना० स्त्री लजालू।

गन्धिलुब्ध०गु० जो सुगन्धि लालच में हो।

गन्धी०ना० पु० अत्तार, सुगन्धित तेलबेचनेहारा।

गन्ना०ना० पु० ऊख, गांडा खूंड।

गप० }ना० स्त्री० बक
गपशप० } बकबक।

गप्पी०गु० बकवादी।

गभस्ति०ना० स्त्री० किरण, ज्योति।

गभीर०गु० गम्भीर।

गभुआरे०गु० छल्लेदारबाल, पेदायशी बाल

गमन० ना० पु० चलन।

गमनागमन० ना० पु० जाना आना।

गमनी० ना० स्त्री० चलनेवाली।

गमनीय० गु० चलने के योग्य, चलनेवाला।

गम्भीर० गु० गहिरा, औगाह।

गम्भीरता० ना० स्त्री० गहराई।

गम्य० गु० जाने के योग्य मिलनहार।

गय०
गयन्द० } ना० पु० हाथी।

गया० ना० स्त्री० नगर वा तीर्थ विशेष जहां हिन्दू लोग पुरुषों को पिण्ड देते हैं।

गयाली० ना० पु० गयावाल, गया के ब्राह्मण।

ग्यारस० ना० स्त्री० एकादशी।

ग्यारह० गु० दश और एक ११।

गर० ना० पु० रोग, विष, गला।

गरगर। ना० अ० क्रि० कुल्ली करना, गरजना।

गरजना। अ० क्रि० घड़घड़ाना, शब्द करना।

गरल० ना० पु० विष, हलाहल।

गरह० ना० पु० गठियावायु।

गरागरी० ना० स्त्री० देवदाली।

गरारी० ना० स्त्री० रस्सी वा सूतबटने का यन्त्र, कूप से जल निकालने की गोलकाठकी वस्तु।

गरिमा० ना० स्त्री० गुरुता गरुवई, अहङ्कार आठसिद्धि मेंसे एक का नाम।

गरी० ना० स्त्री० नारियल का गूदा, गुठली।

गरु० ना० पु० गला।

गरुड़० ना० पु० पक्षी जो श्री विष्णु का वाहन है।

गरुड़ाग्रज०नाο पुο सूरज का रथ वान।

गरुता०नाο स्त्रीο गुरुता, बड़प्पन।

गरुत्मान्० नाο पुο गरुड़, सफेदहंस।

गरुव० गुο भारी, बोझिल।

गर्ग०नाο पुο मुनि विशेष जो यदुवंशियों के पुरोहितथे।

गर्गज०नाο पुο दौंगा, घढ़।

गर्ज० } नाο पुο उत्कटशब्द,
गर्जन० } गड़गड़ाहट।

गर्त्त०नाο पुο गढा।

गर्द्दभ०नाο पुο गदहा।

गर्भ०नाο पुο पेट, आधान, अन्तरापत्य, भ्ध्या।

गर्भकण्टक०नाοपुοकटहल।

गर्भकर०नाο पुο पतिजिया यथापुत्नजीव: गर्भकर: इतिनिघण्ट: गुο गर्भ कारक।

गर्भदास०नाο पुο मोलकी दासी का बेटा।

गर्भपात०गुο पेटका गिरना हमल गिरना।

गर्भपाता०नाο पुο रीठा।

गर्भवती०नाο स्त्रीο पेटवे गर्भिणी, गाभिन।

गर्भस्राव०नाο पुο गर्भपात

गर्भित०गुο गर्भ अर्थात् पेट रहनेवाला।

गर्व०नाο पुο अहङ्कार दम्भ ग़रूर।

गर्ववती०गुοस्त्रीο अहङ्कारिन

गर्वित०गुο अहङ्कारी, मग़रूर

गर्हित०गुο निन्दित।

गल०नाο पुο गला, फांसी।

गलकना०अο क्रिο गलना।

गलका०नाο स्त्रीο फोड़ा वि शेष, खटाई विशेष।

गलगण्ड० नाοपुοगण्डमाला

गलगल॰ना॰ पु॰ चकोतरा, पक्षी विशेष।

गलना॰ अ॰ क्रि॰ पिघलना, घुलना।

गलफटाकी॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ई घमगड।

गलफड॰ } ना॰ पु॰ गाल वा
गलफड़ा॰ } गालों का मास।

गलवाह॰ ना॰ स्त्री॰ गोदी।

गलसुई॰ ना॰ स्त्री॰ तकिया, सिराहना।

गलस्तनी॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।

गला॰ ना॰ पु॰ कण्ठ, शब्द।

गलाघोटना॰ स॰ क्रि॰ नटी-दाबना, कण्ठतोड़ना।

गलाना॰ स॰ क्रि॰ पिघलाना।

गलाव॰ ना॰ पु॰ पिघलाव।

गलित॰ गु॰ पतित, द्रवीभूत, मग्न।

गलियाना॰ स॰ क्रि॰ बुराकहना, गालीदेना, बरवश भोजन कराना, वा औषधि धूंसना।

गली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटामार्ग।

गंव॰ ना॰ स्त्री॰ दाव, घात, मौक़ा, लाभ।

गवन॰ ना॰ पु॰ गमन।

गवरि॰ } ना॰ स्त्री॰ पार्वती।
गवरी॰ }

गवलद॰ ना॰ पु॰ भैंसा।

गवादिनी॰ ना॰ स्त्री॰ इन्द्रवारुणी।

गवास॰ ना॰ पु॰ कसाई, म्लेच्छ।

गवाक्ष॰ ना॰ पु॰ झरोखा, मुख्यवानर।

गवेधुका॰ ना॰ स्त्री॰ गंगेरुआ।

गवैया॰ ना॰ पु॰ गायक, गानेवाला।

गव्य॰ गु॰ जो गायसे सम्बन्ध रखता हो यथा, दुग्ध आदि।

गसना॰ अ॰ क्रि॰ बन्धना, घिरना, रुकना।

गहगह॰ गु॰ घना, ज़ोर से।

गहन॰ ना॰ पु॰ भारी, ग्रहण, पकड़ना, दुःख, निष्फल, बन।

गहना॰ स॰ क्रि॰ पकड़ना, ग्रहण करना, ना॰ पु॰ ज़ेवर, गिरवीं, भूषण।

गहनी॰ ना॰स्त्री॰ सनपरास, कालापत्ती।

गहरा॰ ना॰पु॰ गम्भीर।

गहरु॰ ना॰ पु॰ ढील, देर।

गहवर॰ } गु॰घबरा, रोवासा,
गह्वर॰ } घना, कठिन।

गा॰ अव्य॰ गया।

गांजा॰ } ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष
गांझा॰ } कोपत्तीवा रसआदि।

गांठना॰ स॰ क्रि॰ बांधना, वशमें लाना, सीवना।

गांठि॰ ना॰ स्त्री॰ग्रन्थि,गिरह

गांड़॰ ना॰ स्त्री॰ गदा, कून पुट्ठी मिट्टी की जो कूप में लगाते हैं।

गांडर॰ ना॰ स्त्री॰ तृणविशेष

गांडा॰ ना॰ पु॰ इक्षु, गन्ना ऊख।

गांडू॰ ना॰ पु॰ मवेशिया लतिया, चुल्ली।

गांव॰ ना॰ पु॰ ग्राम, पुर।

गांवना॰ स॰ क्रि॰ गाना।

गांसना॰ स॰ क्रि॰ बिरमाना घेरना, बरमाना, पिरोना

गांसी॰ ना॰ पु॰ तीरकाफल लोहा जो तीर लगाते हैं।

गागर॰ ना॰ स्त्री॰ गगरी कलसी, घड़ा।

गाङ्गेय॰ ना० पु० भीष्म, सुवर्ण।

गाछ॰ ना० पु० वृक्ष।

गाज॰ ना० स्त्री० झाग, फेना, बिजुली, वज्र।

गाजना॰ अ० क्रि० हर्षित होना, गरजना।

गाजर॰ ना० स्त्री० मूलविशेष।

गाजाबाजा॰ ना० पु० नाना प्रकार से बाजा का शब्द।

गाड़॰ ना० पु० गड्हा, गढ्ढा, गर्त्त।

गाड़ना॰ स० क्रि० तोपना, समाधि देना, मिट्टी देना, लगाना।

गाड़ा॰ ना० पु० घात, गड़्हा, गाड़ी।

गाड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ छकड़ा, लढ़ी, रथ।

गाढ़॰ ना० स्त्री० जञ्जाल, विपत्ति।

गाढ़ा॰ गु॰ मोटा, चतुर, कठिन, ना० पु० कपड़ा विशेष।

गाण्डीव॰ ना० पु० नाम उस धनुष का है जो अग्निदेवने अर्जुनको दिया है।

गाण्डीवधर॰ ना० पु० अर्जुन, पाण्डु पुत्र।

गात॰ ना० पु० शरीर, तन, देह।

गाता॰ ना० पु० काग़ज़ जिससे पुस्तक की जिल्द बनाते हैं।

गाती॰ ना० स्त्री० एक प्रकार को चादर का बांधना, पट्टू, ऊर्णवस्त्र।

गात्र॰ ना० पु० शरीर, देह।

गायक॰ ना० पु० गायक।

गाथना॰ स० क्रि० गूंथना, गाना।

गाथा॰ ना० स्त्री० कथा, समाचार।

गाद॰ ना॰ स्त्री० तरछट, गोंद।

गादी॰ ना॰ स्त्री० गद्दी।

गाधि० ना० पु० विश्वामित्र के पिता ।

गाधिनन्द० ना० पु० विश्वामित्र मुनि ।

गाधिसुत०
गाधेय० } ना० पु० विश्वामित्रमुनि ।

गान० ना० पु० गीत, राग, भजन ।

गाना० स० क्रि० अलापना, तानभरना ।

गान्धार० ना० पु० राजा विशेष, रागका स्वर विशेष ।

गाभ० ना० पु० गर्भ ।

गाभा० ना० पु० केले के वृक्ष का नयापत्ता, नयापत्ता ।

गाभिन० ना० स्त्री० गर्भिणी ।

गाम० ना० पु० गांव ।

गामी० पु० चलनेवाला, रमनेवाला ।

गाम्भीर्य्य० ना० पु० गम्भीरता ।

गाय० ना० स्त्री० गौ ।

गायक० ना० पु० गवैया, गानेवाला ।

गायत्री० ना० स्त्री० मन्त्र विशेष, छन्द, कत्था, महासिद्धि ।

गायन० ना० पु० गवैया, गानेवाला ।

गार० ना० स्त्री० गाली ।

गारना० स० क्रि० निचोड़ना, धोना ।

गार्हपत्य० ना० पु० अग्निभेद ।

गारा० ना० पु० भीति बनाने के लिये बनाई हुई मिट्टी ।

गारी० ना० स्त्री० गाली ।

गारुड़ि० सांपु, सांप का बिष झारनेवाला, प्रयुक्त काव्येयथा, हावभाव गारुड़ीपुकारतआवत ... छरिन जात कहीरी ...

गारुत्मत॰ ना॰ पु॰ पन्ना।

गाल॰ ना॰ पु॰ कपोल, रुख बात।

गालव॰ ना॰ पु॰ मुनिविशेष।

गाला॰ ना॰ पु॰ रुई की फली, धुनीहुई रुईकागोला।

गाली॰ ना॰ स्त्री॰ अपमानका बोधक वाक्य, उखली।

गाह॰ ना॰ पु॰ ग्राह।

गाहक॰ ना॰ पु॰ ख़रीददार,

गाहना॰ स॰ क्रि॰ ढूंढना, दाबना, थाह लगाना, मांडना।

गाहा॰ गु॰ गाथा, अवगाह, कथा, ना॰ पु॰ छन्द विशेष।

गाहिगाहि॰ गु॰ ढूंढिढूंढिके।

गाही॰ ना॰ स्त्री॰ पांच, मांडी, थाही हुई।

गिंजाई॰ ना॰ स्त्री॰ कीट विशेष।

गिचपिचिया॰ ना॰ पु॰ कचपिचिया।

गिडगिडाना॰ स॰ क्रि॰ घिघिआना, खुशामदकरना।

गिद्ध॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष किरगिस।

गिनती॰ } ना॰ स्त्री॰ गणित, गिन्ती॰ } गिन्ती, शुमार।

गिन्दुक॰ ना॰ पु॰ गेंद।

गिन्ना॰ स॰ क्रि॰ गणन, गिन्ती करना।

गिरगिट॰ ना॰ पु॰ सरट, कृकलास।

गिरना॰ अ॰ क्रि॰ पड़ना।

गिरपड़ना॰ अ॰ क्रि॰ कूदपड़ना, भुकपड़ना।

गिरा॰ ना॰ स्त्री॰ सरस्वती, वा देवता वाणी।

गिराना॰ स॰ क्रि॰ औंधाना, पटकना, छलकाना।

गिरि॰ ना॰ पु॰ अद्रि, पर्वत, पहाड़।

गिरिकद्रक० नाο पुο मढ़ा, नींव।

गिरिज० नाο पुο शिलाजित।

गिरिजा० नाο स्त्रीο पार्वती।

गिरिजानन्द० नाο पुο गणेशजी।

गिरिधर०
गिरिधारी० } गुο पर्व्वत उठाने वाला, नाοपुο श्रीकृष्ण चन्द्रजी, श्री हनुमान।

गिरिनाथ० नाο पुο श्रीशिवजी, सुमेरु, हिमाचल, हिमालय।

गिरिर० नाο पुο लड़का।

गिरिराज० नाο पुο श्रीशिवजी, हिमालय, गोवर्द्धन, सुमेरु, श्रीकृष्णजी।

गिरिवर० नाο पुο पर्वत, पहाड़।

गरिहृष्ट० नाο स्त्रीο गेरू।

गिरिसाह्वय० नाο पुο शिलाजीत।

गिरीश० नाο पुο श्रीसदाशिव, सुमेरु, हिमालय।

गिलट० नाο स्त्रीο नसों की गांठि।

गिलहरी० नाο स्त्रीο जीव विशेष जो वृक्षोंपर रहता है।

गिलोय० नाο स्त्रीο गुरच।

गीजना० सο क्रिο मलना।

गीत० नाο पुο राग, गान।

गीता० नाο पुοकथा, अध्यात्मज्ञान, वा जिसपुस्तक में अध्यात्मज्ञान होवे, यथा भगवद्गीता, रामगीता।

गीदड़० नाο पुο शृगाल, सियार।

गीर्वाण० नाοपुο अमर, देवता।

गीला० गुο ओदा।

गीष्पति० नाο पुο वृहस्पति।

गुग्गुल०ना० पु० गूगुल।

गुङ्ग०
गुङ्गा० } गु० गूंगा, बावला।

गुच्छा०ना० पु० घौर, घोचा, बाल, पोट।

गुजरात०ना० पु० देशविशेष।

गुह्य०गु० छुपा, पोशीदः।

गुह्यक०ना० पु० यक्ष, कुवेर के दूत।

गुह्यकपति०ना० पु० कुवेर।

गुह्यस्थल०ना० पु० एकान्त स्थान, वा छुपा अङ्ग, यथा, भग।

गुञ्ज०ना० स्त्री० गुञ्जा, घुंघची।

गुञ्जरना०अ०क्रि० दहाड़ना, गूंजना।

गुञ्जान०गु० गाढ़ा, मोटा, घना, फारसी का शब्द है।

गुञ्जार०ना० पु० शब्द, दहाड़, गूंज।

गुञ्जारना०अ० क्रि० झंकना, गूजना, शब्दकरना।

गुटकना०अ० क्रि० कुकूकरना, कपोत का बोलना, निगलना।

गुटका०ना० पु० पुस्तकविशेष, वस्तुविशेष जिसको योगी मुखमें रखकर लोप होजाते हैं मिठाई विशेष, चांदी की वस्तु विशेष जो मृतक की क्रिया में लगता है, छोटी पोथी।

गुटकाना०स० क्रि० कपोत को बुलाना।

गुटको०ना० स्त्री० हाथ पांव समेटना।

गुटिका।०ना० स्त्री० गोला।

गुठली०ना० स्त्री० फल का बीज।

गुड० ना० पु० ईख का जमा हुआ रस, मिष्टान्न।

गुडगुडाना० अ० क्रि० गड़गड़ाना।

गुड़गुड़ी० ना० स्त्री० छोटा हुक्का।

गुड़पुचका० ना० पु० ऊख, गन्ना।

गुडपुष्प० } ना० पु० महुआ।
गुडफूल० }

गुडा० ना० पु० अङ्गूर, दाख।

गुडाकेश० ना० पु० अर्जुन, सदा शिवजी।

गुडाना० स० क्रि० खुदाना, खुदवाना।

गुड़िया० ना० स्त्री० खिलौना, कपड़ों की पुतली।

गुडूची० ना० स्त्री० गुरुच।

गुड्डी० ना० स्त्री० कनकौआ।

गुढौ० ना० पु० छुपने का स्थान।

गुण० ना० स्त्री० विशेषण, स्वभाव, प्रवीणता, विद्या, डोल, कृपा, रस्सी, धनुष की पच्च, चरित्र, यहसान।

गुणाङ्क० ना० पु० जिस अङ्क से गुणन करें।

गुणद० गु० गुणदाता, लाभकारी।

गुणन० ना० पु० गुणाकरना, ज़रब।

गुणना० स० क्रि० विचारना, गुणन करना।

गुणवती० गु० माला, गुणवान।

गुणवाचक० गु० गुणबतानेवाला।

गुणवान० गु० प्रवीण, पुण्यवान्।

गुणज्ञ० गु० गुणी, ज्ञाता, चतुर।

गुणी० गु० प्रवीण, पुण्यवान विद्वान्, विचारी, ना० पु० सपेरा।

गुण्य० ना० पु० जिसअङ्क को गुणाकरे।

गुथना। ० अ० क्रि० पिरोना।

गुथवां० गुथाहुआ।

गुद० ना० स्त्री० मूलस्थान, गांड़, गुदा।

गुदगुदाना। ० स० क्रि० सहला-ना, चुलचुलाना।

गुदगुदाई० } ना० स्त्री०
गुदगुदाहट० } सहलाहट,
गुदगुदी० } सुरसरी।

गुदड़ी० ना० स्त्री० तागाहुआ वस्त्र, गुज़री, चौक बाज़ार।

गुदा० ना० स्त्री० मूलस्थान, गांड़।

गुदाभञ्जन० } ना० पु० गांड़-
गुदमर्दन० } मारना, इग़-लाम।

गुन० ना० पु० गुण।

गुनगाहक० ना० पु० गुण का चाहने वा जाननेवाला, विद्या का प्रतिपालक।

गुनगुनाना। ० अ० क्रि० थोड़ा गरम होना, औरनाकसे बोलना।

गुनवन्त० }
गुनवान्० } गु० गुणवान।

गुनह० ना० पु० दोष, पाप, कसूर, रामायणेयथा, गुनह लषन करहम पररोषू, कतहु सुधाईं ते बड़दोषू।

गुनानि० ना० स्त्री० मनमें कल्पना करना।

गुनी० गु० गुणी।

गुन्थनि० ना० स्त्री० गूंधनी, पोहावट।

गुप्त० गु० लुका, छुपा।

गुप्तार० ना० पु० छुपना, लुक-ना, लुकाव।

गुप्तारघाट०ना० पु० अयोध्या जीमें स्थान विशेष ।

गुप्ती०ना० स्त्री० खड्गविशेषजो सोटे में रखते हैं ।

गुफा०ना०स्त्री०खोह,कन्दरा ।

गुभाना०स० क्रि० चुभाना, गाड़ना ।

गुमटी०ना०स्त्री०कपड़ाविशेष, कलसी ।

गुराई०ना० स्त्री० बड़प्पन, गोरापन ।

गुरु०ना० पु० आचार्य,शिक्षक, वृहस्पति, पुरोहित,द्वि-मात्रिक अक्षर, गु०भारी बड़ा, गरुआ ।

गुरुतर०गु० अत्यन्त भारी, अत्यन्त मान्य ।

गुरुता०ना० स्त्री० बड़प्पन, आचार्य्यता ।

गुरुपाक०ना० पु० जो वस्तु बऊतदेरमें पचे ।

गुरुमुख०ना० पु० जिसने गुरु किया हो, शिक्षा वा इष्टदेव का मन्त्र गुरु से लिया, चेला ।

गुरुमुखहोना० अ० क्रि० चेलाहोना, गुरु से इष्ट-देवता का मन्त्र पाना ।

गुरुवाइन०ना० स्त्री० गुरु की पत्नी ।

गुरुवार०ना० पु० वृहस्पति-वार,जुमअरात ।

गुर्जर०ना० पु० गुजराती वा गुजरात देशविशेष ।

गुर्वादित्य ० ना० पु० जब सूर्य और वृहस्पति एक राशि के होजाते हैं वह समय ।

गुर्विणी०गु० स्त्री० गर्भवती, हामिल: ।

गुल०गु० बुझना, दीपक का ठण्ढा होजाना ।

गुलगुला०ना० पु० पकवान विशेष ।

गुलाई॰ ना० स्त्री० गोलता, गोलाई।

गुलाब॰ ना० पु० वृक्ष वा उसके फूलों का रस तत्व।

गुलाल॰ ना० पु० अबीर, बूका जो प्रियतम के ऊपर डालते हैं।

गुलिक॰ ना० पु० मोती।

गुलिया॰ ना० स्त्री० सिरके पीछे का गड्ढा।

गुलेल॰ ना० स्त्री० धनुष जिसमें गुल्ला चलाते हैं।

गुल्पाल॰ ना० पु० गुलेल।

गुल्फ॰ ना० स्त्री॰ फीली, एड़ी के ऊपर का भाग।

गुल्म॰ ना० पु० रोग विशेष, गुलाब, झाड़।

गुल्ला॰ ना० पु० गुलेला, माटी का छोटा गोला।

गुल्लाला॰ ना० पु० फूल विशेष यहशब्द फ़ारसीका है।

गुवाक॰ ना॰ पु० सुपारी का वृक्ष।

गुवालियर॰ ना० पु० देश वा नगर विशेष।

गुष्टि॰ ना० स्त्री॰ सम्मति, सलाह, मित्रता।

गुह॰ ना० पु० स्वामि कार्त्तिक, निषाद, मल।

गुहना॰ स० क्रि० गूथना।

गुहा॰ ना० स्त्री० गुफा, कन्दरा।

गुहाना॰ स० क्रि० गुथवाना।

गुहारि॰ ना० पु० ताडकासुर, ना० स्त्री० सहायता, सहाय, मदद।

गू॰ ना० पु० गूह, विष्टा।

गूंगा॰ गु० मूक, जो बात न कर सके, ना० पु० ढ्गगादिया डाट, मिठाई विशेष।

गूंज॰ ना॰ स्त्री० शब्द, भिन भिनाहट।

गूंजना॰ अ० क्रि० गुंजरहना, भिन भिनाना।

गूंथना० } सo क्रिo पिरोना,
गूंदना० } लड़ियाना ।

गूंदनी० नाo स्त्रीo वृक्ष विशेष काफल जो पश्चिम में ग्रीष्म कालमें होता है ।

गूंधना० सo क्रि० सानना, गूंथना, बिनना ।

गूजर० नाo पुo नीचजाति विशेष ।

गूजरी० नाo स्त्रीo गूजर की स्त्री, गहना विशेष जो पांवमेंपहिनाजाताहै ।

गूढ़० गुo सूक्ष्म, कठिन, गुप्त, भीतर ।

गूढ़गिरा० नाoस्त्रीoगुप्तवाणी, गोलबात, कठिनवचन ।

गूढ़ता० नाo स्त्रीo सूक्ष्मता, कठिनता, छिपाव ।

गूढ़पत्र० नाo पुoकरील, नागफली ।

गूढ़पा० } नाoपुo सांप,यथा
गूढ़पात्० } कुण्डलीगूढपाच्चक्षुः श्रवाः काकोदरः फणी इत्यमरः।

गूढ़ार्थ० गुoगुप्तअर्थ,कठिनअर्थ।

गूदड़० नाoपु० पुरानाकपड़ा ।

गूदा० नाo पुo भेजा, फल का सारांश ।

गूप्त० गुo गुप्त, छिपा ।

गूमड़ी० नाo स्त्रीo } गांठि ।
गूमड़ा० नाo पुo }

गृञ्जन० नाo पुo प्याज़, लहसुन, गांजा, गाजर वा गाजर का साग यथा, लशुनंगृञ्जनारिष्टमहा कन्दरसोनकः इत्यमर पलाण्डु विड्वराहश्छत्राकग्राम कुक्कुटंलशुनं गृञ्जनं चैवभुक्त्वा चान्द्रायणंचरेत्, इतिसरोज सुन्दरे ।

गृध्र० ना० पु० गिद्ध।

गृष्टि० ना० स्त्री० बाराही कन्द।

गृह० ना० पु० घर।

गृहकन्या० ना० स्त्री० घी-कुवारि।

गृहगोधिका० ना० स्त्री० बिस्तुइया, छपकली।

गृहस्थ० ना० पु० दूसराआश्रम, घरवाला।

गृहस्थाश्रम० ना० पु० गृहस्थ का व्यवहार।

गृहस्थी० ना० स्त्री० गृहस्थ-का धर्म्म।

गृहिणी० ना० स्त्री० घरनी, भार्य्या, जोरू, चौखट।

गृही० ना० पु० गृहस्थ।

गृह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।

गेंडक० ना० पु० गेंदा।

गेंद० ना० स्त्री० खेलने के लिये कपड़े वा सूतआदि का गोला।

गेंगटा० ना० पु० केकड़ा, सर-तान।

गेगली० ना० स्त्री० बोदली।

गेडुआ० ना० पु० तकिया, सिरहाना, और टोंटी-दार लोटा।

गेरू० ना० स्त्री० गैरिक, लाल-मिट्टी।

गेरुआ० गु० गेरूकारंगा भया।

गेरुई० ना० स्त्री० जोगेंडुओं में सरदी के कारण गेरुरङ्गका रोगहोजाता है गु० गेरूका रङ्ग।

गेह० ना० पु० घर, तलाश, चाह।

गेहूं० ना० पु० अन्नविशेष।

गेहुंआ० गु० गेहूं के रङ्ग, ना० पु० घासविशेष।

गैंडा० ना० पु० जन्तु विशेष जिसकी हड्डी अतिपवित्र होती हैं उसके अंगूठी छल्ले और तर्पण करने के पवित्र अर्घ्येका पात्र बनता है।

गैया० ना० स्त्री० गाय।

गैरिक० ना० स्त्री० गेरू, पर्वत कीलाल मिट्टी।

गैरेय० ना० पु० शिलाजीत।

गैल० ना० स्त्री० बाट, मार्ग।

गो० ना० पु० पद, कूप, जल, वज्र, स्वर्ग, खग, छन्द, ना० स्त्री० गाय, किरण, इन्द्रियां, दशा।

गोंडली० ना० स्त्री० वृक्षविशेष।

गोंद० ना० पु० लासा, चेप।

गोंदनी० ना० स्त्री० नरकट विशेष।

गोंदा० ना० पु० मिट्टी का गिलावा, चिड़ियाके बुलाने केलिये खाईवापेड़ा।

गोई० स० क्रि० भू, छुपाई, छुपी, ना० स्त्री० दो बैलादि के जोड़ेको कहते हैं।

गोकण्टो० ना० स्त्री० बेरीवृक्ष वा फल।

गोकर्ण० ना० पु० वितस्ति, मृगविशेष, खच्चर, गौका कान, सांप, और शिव जी का स्थानप्रसिद्ध।

गोकर्णनाथ० ना० पु० श्री शिवजी वा तीर्थवि०।

गोकुल० ना० पु० नगरीविशेष, गौका कुल।

गोकुलेश० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्र।

गोखुरु० ना० पु० गोखुर, भूषण विशेष।

गोचना० स० क्रि० पकड़लेना, गेहूं चना।

गोचर० ना० पु० समझ, इन्द्रिय ज्ञान, गु० समझा।

गोचरी० ना० स्त्री० दर्शी, प्रकट।

गोजर० ना० पु० कनखजूरा।

गोजिका०
गोजिह्वा० } ना० स्त्री० गोभी ।

गोट०ना० स्त्री० चौपड़आदि खेलने की गुटिका, अमलपत्ती, किनारी ।

गोटा०ना० पु० किनारी ।

गोटी०ना० स्त्री० शीतला, माता, चेचक ।

गोड़०ना० पु० पांव, पिण्डली, गु० खुदाव ।

गोड़ना०स० क्रि० खोदना, खुरचना ।

गोड़िया०ना० पु० कहार, जाति विशेष ।

गोड़ी०ना० स्त्री० चोरी ।

गोण०ना० पु० लोथा, आखा, बोरा ।

गोत०
गोता० } ना० पु० गोत ।

गोती०ना० पु० गोबर, गोमल, गु० गोतवाला ।

गोद०ना० स्त्री० कनियां, गोदी, राशि ।

गोदना०स० क्रि० चोंकना, चिह्न देना ।

गोदा०ना० पु० निशान, चिह्न, दबका ।

गोदावरी०ना० स्त्री० नदी विशेष जो दक्षिण में है ।

गोदी०ना० स्त्री० अंकवार, कोला, कनियां ।

गोदोहनी० ना० स्त्री० दोहनी ।

गोधन०ना० पु० गोबर, गायका धन, गोमलकी प्रतिमा जो दीवाली के बनाते हैं ।

गोधूम०ना० पु० गेहूं, गोहूं ।

गोधूलि०
गोधोरा० } ना० स्त्री० सायङ्काल, सन्ध्या ।

गोन०
गोनी० } ना० स्त्री० गोण ।

गोप० ना० पु० ग्वाला, कण्ठ का भूषण, छुपा।

गोपग्वाल० ना० पु० अहीर।

गोपद० ना० पु० गायकाखुर।

गोपन० ना० पु० छुपाव, लुकाव।

गोपनीय० } गु० छुपाने के
गोप्य० } योग्य।

गोपाचल० ना० पु० ग्वालियर।

गोपाल० } ना० पु० ग्वाल,
गोपाल० } अहीर, श्रीकृष्णचन्द्र।

गोपालपुर० ना० पु० मथुराजी वा जहांगङ्गाजीऔर गोमती का सङ्गम भया है।

गोपिका० } ना० स्त्री० ग्वालों
गोपी० } की स्त्रियां।

गोपीनाथ० ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी।

गोबर० ना० पु० गायकीविष्टा, गोमल।

गोबरगनेश० गु० मोटा, भद्द, भोंडा।

गोबरी० ना० स्त्री० मिट्टीऔर गोबर मिलाहुआलीपने के लिये बनाते हैं।

गोभा० ना० पु० कल्ली, नईशाखा।

गोभी० ना० स्त्री० पौधा विशेष, तरकारी विशेष।

गोमका० ना० पु० कुम्हडा, यथा पुष्पफलामहाफला गोमका राजा कर्कटी, इति निघण्टे।

गोमती० ना० स्त्री० नदीविशेष

गोमय० } ना० पु० गोबर।
गोमल० }

गोरटी० ना० स्त्री० गोरीस्त्री सुन्दरी।

गोरमदायन० ना० पु० इन्द्र-धनुष जो वर्षा में निकला करता है और सूर्य के सम्मुख होता है, रामचन्द्रिकायां, धनु है यह गोरमदायन नाहीं। शर-धारव है जल धार इथा हीं।

गोरस० ना० पु० इन्द्रियों का स्वाद, दूध, दही, मट्ठा, छाछ आदि।

गोरसदायन० ना० पु० गोर-मदायन।

गोरसी० ना० स्त्री० दोहनी।

गोरङ्ग० ना० पु० नारङ्गी।

गोरा० गु० गौर, उज्ज्वल।

गोरी० ना० स्त्री० उत्तम स्त्री, सुन्दरी।

गोरू० ना० पु० गाय बैल।

गोरोचन० ना० पु० गाय के मूत्र से उत्पन्न पीतवस्तु, वा गाय के शिर में से उत्पन्न औषधि विशेष।

गोल० गु० गोल, चक्करीला, ना० पु० मटका।

गोलक० ना० पु० पति के मरने के उपरान्त जार जात पुत्र, आंख का घर।

गोलकुण्डा० ना० पु० नगर विशेष दक्षिण में है।

गोलता० ना० स्त्री० गोलाई।

गोलरूप० गु० गोलाकार।

गोला० ना० पु० गोल वस्तु, खाता, धरन, लोहे का पिण्डा, जङ्गली कबूतर और नारियल का गूदा।

गोलाई० ना० स्त्री० परिधि, घेरा, गोलपन।

गोलाकार० गु० गोलरूप।

गोलाध्याय० ना० पु० सिद्धान्त शिरोमणि का एक प्रकरण।

गोलिका० ना० स्त्री० पति के मरने के उपरान्त जार-जात कन्यका, गोली।

गोली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा गोला।
गोलोक॰ ना॰ पु॰ श्री कृष्णचन्द्र का विशेष स्थान।
गोलोमा॰ ना॰ स्त्री॰ बच औषधि।
गोवना॰ स॰ क्रि॰ छुपाना, भूत क्रिया, गोई।
गोवर्द्धन॰ ना॰ पु॰ पर्वत विशेष जो ब्रज में है।
गोविन्द॰ ना॰ पु॰ कृष्णचन्द्र, वेद लभ्य।
गोविन्दचन्द्रिका॰ ना॰ स्त्री॰ पुस्तक विशेष।
गोशाला॰ ना॰ स्त्री॰ गाय बैल रहने का घर।
गोष्ठ॰ } ना॰ स्त्री॰ बांधनू,
गोष्ठी॰ } मेल, सम्मत, सलाह।
गोष्पद॰ ना॰ पु॰ गायकाखुर।
गोसांई॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, तपी, सन्तों का मार्ग।
गोसैंया॰ ना॰ पु॰ ईश्वर, परमात्मा।

गोस्तनी॰ ना॰ स्त्री॰ दा[…] अङ्गूर।
गोह॰ ना॰ स्त्री॰ बिसखपर[…] के डौल का जीव।
गोहरा॰ ना॰ पु॰ उपला।
गोहार॰ ना॰ स्त्री॰ कु[…] रौला, सहायता, मदद[…]
गोहूं॰ ना॰ पु॰ गेहूं, गोधू[…] अन्न विशेष।
गोक्षुअन॰ ना॰ पु॰ सर्प विशेष[…]
गोक्षुर॰ ना॰ पु॰ गोखुर[…] पौधा विशेष।
गोत्र॰ ना॰ पु॰ वंश, घरान[…] संज्ञा, पर्व्वत।
गोत्रघात॰ } ना॰ पु॰ निज कु[…]
गोत्रवध॰ } का मनुष्य मारन[…]
गोत्रज॰ ना॰ पु॰ गोती, सम्बन्[…] अपने घराने का।
गोत्रा॰ ना॰ स्त्री॰ धरती।
गोत्री॰ ना॰ स्त्री॰ गोतज।
गौ॰ ना॰ स्त्री॰ गाय।

गैं० ना० स्त्री० दाव, घात, औसर, लाभ।

गैंगीर० गु० घाती, दाव खेलने हारा।

गैागोड़० ना० पु० जब गाय ब्यानी दूध नहीं देती है तब ग्वाल उसकी योनि में हाथ डालकर खड़ी करते हैं।

गैाड़० ना० पु० देशविशेष, ब्राह्मण विशेष, कायस्थ जाति विशेष।

गैाड़िया० ना० पु० गौड़ देश वासी, चैतन्य का शिष्य।

गैाडी० ना० स्त्री० गुड़ की मदिरा, जहां गाइयां खड़ी होती हैं।

गैाण० गु० जो मुख्य नहीं, अर्थात्, अप्रधान।

गैातम० ना० पु० मुनि विशेष, पर्ब्बत विशेष।

गैाथन० ना० पु० गाय का, स्तन।

गैादन्ती० ना० पु० हरताल वा, औषधि विशेष।

गैादान० ना० पु० गाय का दान।

गैाना० ना० पु० विवाह करके थोड़े दिनों में स्त्री को अपने घर लाना।

गैानहा० } ना० पु० गौने में
गैानहार० } दूलह के साथी।

गैामली० ना० पु० गोरोचन।

गैार० ना० पु० धवरत्त, जाति विशेष, चिट्टा शुक्ल वर्ण।

गैारक० ना० पु० तीतर पक्षी, गेरू।

गैारगड० ना० पु० गोरा।

गैार्यी० ना० स्त्री० भवानी, पार्ब्बती।

गैारव० ना० पु० बड़प्पन गुरुताई।

गैारा० ना० पु० चटक, चिड़ा, स्त्री० पार्ब्बती।

गौरिया॰ ना॰ स्त्री॰ चिड़िया।

गौरिला ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती।

गौरी॰ ना॰ स्त्री॰ रागिनी विशेष, हल्दी, रात, पार्व्वती, तुलसी, गोरोचन।

गौशाला॰ ना॰ स्त्री॰ गाइयों का स्थान।

ग्रथित॰ गु॰ बंधा ऊआ, पिरोया ऊआ।

ग्रन्थ॰ ना॰ पु॰ पुस्तक, पोथी, शास्त्र।

ग्रन्थकार॰ ना॰ पु॰ ग्रन्थकर्त्ता, कवि।

ग्रन्थिनि॰ ना॰ पु॰ महामुण्डी, केला वृक्ष।

ग्रन्थि॰ ना॰ स्त्री॰ गांठि।

ग्रन्थिक॰ ना॰ पु॰ पीपरामल।

ग्रन्थिमान्॰ ना॰ पु॰ हरसिंघाड़।

ग्रन्थिल॰ ना॰ पु॰ कांकई वृ…
करील।

ग्रस्त॰ गु॰ शब्द जो चबाय…
कहा गया, खाया गय…
घिरा ऊआ।

ग्रह॰ ना॰ पु॰ सूर्य्यादि नव ग्र…
घर।

ग्रहण॰ ना॰ पु॰ हाथ मेंलेन…
अङ्गीकार, चन्द्रमा सू…
का गहन।

ग्रहस्थापन॰ ना॰ पु॰ नव…
हों को बैठाय के उ…
को आवाहन करन…

ग्रहीता॰ गु॰ ग्रहण करनेहा…

ग्राम॰ ना॰ पु॰ गांव, पु…
सूखी बात, समूह, रा…
चन्द्रिका यों गिरि ग्र…
लै लै हरि ग्राम मा…
मनो पद्मिनी पच द…
बिहारैं।

ग्रामनर॰ ना॰ पु॰ गवा…
गांववासी।

ग्राम्य० गु० गांव में जो उत्पन्न भया।

ग्रामीण० ना० पु० गाव में बसने हारा, गवांर।

ग्राव० ना० पु० पत्थर, पर्व्वत।

ग्रास० ना० पु० कौर, लुक़मा।

ग्रासक० गु० घेरने वाला, रोकने हारा।

ग्रासना० स० क्रि० घेरना, रोकना।

ग्रासित० गु० घेरागया।

ग्राह० ना० पु० मगर, नाका।

ग्राहक० गु० ग्रहण करने हार, अङ्गीकार कर्त्ता।

ग्राही० गु० गाहक, लेने वाला, स्त्री० नाकिन।

ग्राह्य० गु० जो ग्रहण करने के योग्य है।

ग्रीवा० ना० स्त्री० गला, गर्द्दन, गले का पृष्ठ भाग।

ग्रीष्म० ना० स्त्री० तपन, गरमी।

ग्रैवेय० ना० पु० गले का गहना, हसली, माला आदि।

ग्लानि० ना० स्त्री० घृणा, लाज थकाई।

ग्वाल० } ना० पु० पशुपालक
ग्वाला० } अहीर।

ग्वालिन्० ना० स्त्री० अहीरन्।

ग्वैंड० अव्य० समीप, पास।

ग्वैंडा० ना० पु० नगर, वा गांव का आस पास।

[घ]

घंघोरना० } स० क्रि० मथना
घंघोलना० } मिलाना, धोना।

घंघरी० ना० स्त्री० लहंगा।

घट० ना० पु० देह, मन।

घटक० ना० पु० मध्यस्थ, बिचवैया, सन्देसी।

घटज० ना० पु० अगस्त्यमुनि।

घटना० अ० क्रि० मन्दाहोना, कमहोना, योग्यहोना।

घटनीय० गु० जो घटने के योग्य है।

घटयोनि० ना० पु० अगस्त्यमुनि।

घटा० ना० स्त्री० मेघों का उमड़ना, मेघ, भीड़, टोटा, मधुक कड़ी।

घटाटोप० ना० पु० पालकी, वा रथका आच्छादन, गिलाफ़, चारों ओर से घिरना।

घटाना० स० क्रि० कम करना।

घटाव० ना० पु० कमती।

घटावना० स० क्रि० घटाना।

घटिका० ना० स्त्री० घड़ी, मुहूर्त्त, एड़ी के ऊपर का भाग।

घटित० गु० योग्य, गम्य।

घटिया० गु० थोड़े मोल का, सस्ता, घाटि देने हारा, धोखा देने हारा, कपटी।

घटी० ना० स्त्री० क्षति, हानि, कमी, घड़ी।

घव्यादि० ना० स्त्री० घड़... आदि।

घड़घड़ाना० अ० क्रि० गर... जना।

घड़ा० ना० पु० कुम्भ, घ... कलस मिट्टी का।

घड़िया० ना० स्त्री० कुलिइय... मधुमक्खी का छत्त... कोख, पियाली।

घड़ियाल० ना० पु० मगर... ग्राह, घण्टा।

घड़ियाली० गु० घण्टा बजा... हारा।

घड़ी० ना० स्त्री० साठि प... समय मापने का य... विशेष।

घड़ौंच० ना० पु०
घड़ौंची० स्त्री० } तिकठ... तिपा... पानी का घड़ा रख... केलिये काष्ठ रचित वस्तु...

घणा० गु० घना।

घण्टा० ना० स्त्री० बाजा विशे... अढ़ाई दण्ड।

घण्टालिका॰ ना॰ स्त्री॰ मधुककड़ी, घण्टी।
घण्टाली॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा घण्टा।
घन॰ ना॰ पु॰ घटा, मेघ, गु॰ घना, दृढ़, विस्तार, मूर्त्ति, ना॰ पु॰ लोहारका बड़ाहथौड़ा।
घनक॰ ना॰ पु॰ सभालू पौधा।
घनगरज॰ ना॰ पु॰ गर्जन, गु॰ ऊंचाशब्द।
घनघनाना॰ अ॰ क्रि॰ झन झनाना, भहराना।
घनघोर॰ ना॰ पु॰ घटा घेरा, घन गरज।
घनतनवर्ण॰ गु॰ जिस का वर्ण मेघ के समान हो, ना॰ पु॰ श्रीकृष्णचन्द्रजी।
घनरस॰ ना॰ पु॰ जल, पानी।
घनश्याम॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्ण-चन्द्र जी, गु॰ कालीघटा।
घनस॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।
घनसार॰ ना॰ पु॰ कपूर, जल, चन्दन।
घना॰ गु॰ पिचपिच बहुत।
घनासन॰ ना॰ पु॰ भैंसा।
घनाह्व॰ ना॰ पु॰ नागरमोथा।
घनेरा॰ गु॰ बहुत, अधिक।
घबराना॰ अ॰ क्रि॰ व्याकुल होना, हड़बड़ाना।
घबराहट॰ ना॰ स्त्री॰ व्याकु-लता, हड़बड़ी।
घमण्ड॰ ना॰ पु॰ गर्व्व, अहङ्कार, ग़रूर।
घमण्डी॰ गु॰ अहङ्कारी, मग़रूर।
घमरौल॰ ना॰ स्त्री॰ रौला भीड़।
घमसान॰ ना॰ पु॰ युद्ध, लड़ाई।
घमाघम॰ गु॰ कचाकच।
घमाना॰ स॰ क्रि॰ धूपदिखाना धूपमें खड़ा होना।
घमासान॰ ना॰ पु॰ घम-सान।

घमोई॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशेष ।

घर॰ ना॰ पु॰ गृह, मकान ।

घरनई॰ ना॰ स्त्री॰ चौघड़ा, बेड़ा ।

घरना॰ स॰ क्रि॰ गढ़ना ।

घरनी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री ।

घरबार॰ ना॰ पु॰ घराना ।

घरबारी॰ ना॰ स्त्री॰ गृहस्थ ।

घराना॰ ना॰ पु॰ कुटुम्ब, घर-के लोग ।

घरामी॰ ना॰ पु॰ छवैया ।

घरी॰ ना॰ स्त्री॰ लपेटे हुये कपड़ों की गठरी, तह लगे हुये कपड़े, घड़ी ।

घरैला॰ गु॰ घरका पालतू ।

घरौंदा॰ घरौर॰ घरौआरा } ना॰ पु॰ छोटाघर जो लड़के खेलने के लिये बनाते हैं वा जिसमें खिलौना रखते हैं ।

घर्घर॰ ना॰ पु॰ चक्की आदि का शब्द ।

घर्घरा॰ ना॰ स्त्री॰ घाघरा ।

घर्म॰ ना॰ पु॰ प्रस्वेद, जलन, धूप, घाम, काल ।

घर्षण॰ ना॰ पु॰ घिसना, रगड़ना ।

घलुआ॰ ना॰ पु॰ हूंक वा घाता जो तोल से अधिक लिया जाता है ।

घवरि॰ ना॰ स्त्री॰ गुच्छ, गुच्छा ।

घसन॰ ना॰ पु॰ घर्षण ।

घसना॰ स॰ क्रि॰ घिसना, रगड़ना ।

घसियारा॰ ना॰ पु॰ घास काटने हारा ।

घसियारिन॰ ना॰ स्त्री॰ घसियारे की बीबी ।

घसीटना॰ स॰ क्रि॰ खींचना, कढ़ेलना ।

घसीटा॰ स॰ क्रि॰ जो कढ़ेला गया ।

घसीला०गु० तृणस्थान, जहां घासहो।

घहराना०अ० क्रि०गरजना।

घाई०ना० स्त्री० घात, अंगुली का मध्यस्थान. लठ वा खड्ग का चीरा।

घाईं०ना० स्त्री० ओर, पद्म।

घाघ०ना० पु० प्राचीन, चतुर, गु० बाज़ीगर, इन्द्रजालिक।

घाघरा०ना०पु० लहंगा, पौधा विशेष, नद विशेष।

घाट०ना० पु० नदी वा तालाव में उतरने वा स्नानकरने का स्थान. कर्णाटक देशका पर्व्वत, डौल, घटी, गु० न्यून।

घाटा०ना० पु० चढ़ाव, घटी।

घाटिया०ना० पु० घाटपर का ब्राह्मण, जो स्नानकरनेवालेके कपड़े बचाते हैं।

घाटी०ना० स्त्री० पर्व्वतों में सङ्केत मार्ग।

घात०ना० स्त्री० दवा, मार, दाव, हत्या, ओट।

घातक०गु० हत्यारा, शत्रु, मारनेवाला।

घाता०ना० पु० रूंक, मोल वा तौलसे अधिकलेना।

घातिनी०ना० स्त्री० हत्यारिन्, मारनेवाली।

घाती०गु० दावलेनेवाला, मारनेवाला।

घातुक०गु० अपकारी, निठुर, हत्यारा।

घान०ना०पु० उखली वा चक्की आदि में जितना एक वार डालते हैं विवाह में कर्म विशेष।

घानी०ना० स्त्री० तिलआदि, कोल्हू, चक्की।

घाबड़ा० } गु० व्याकुल, हैरान।
घाबरा० }

घाम० ना० पु० धूप।

घामड़० गु० भोला, उल्लू, अह-मक़।

घायल० गु० हथियार लगने से जिसके घाव भया।

घाल० ना० स्त्री० बुराई, बिगाड़।

घालक० गु० वधिक, हन्तक, मारनेवाला।

घालन० ना० पु० हनन, वधन, मारन।

घालना० स० क्रि० बिगाड़ना, उजाड़ना, घुसेड़ना, मारना, पटकना।

घालित० गु० माराहुआ, उजा-ड़ाहुआ।

घाव० ना० पु० चीरा, ज़ख़्म।

घास० ना० स्त्री० तृण, खर।

घासी०
घासू० } गु० घासवाला।

घिघिआना० अ० क्रि० आ-धीनी करना, लड़खड़ाना, जिगजिगी करना।

घिचपिच० गु० घना, आस पास।

घिन० ना० स्त्री० घृणा, असह्य, तअफ़्फ़ुन।

घिनाना० अ० क्रि० कुढ़ना, असह्य देखके ऊबना।

घिनौना० गु० जिसको देख कर घिन आवे।

घिया० ना० स्त्री० तुरई, तर-कारी विशेष।

घिरना० अ० क्रि० घेरे में पड़-ना, उमगडना।

घिरनी०
घिरणी० } ना० स्त्री० गरारी, गिर्री, कपोत वशेष, चरखी।

घिराना० स० क्रि० घेरा कर-वाना।

घिसना० अ० क्रि० रगड़ना, खियाना, स० क्रि० मलना।

घिसाना० स० क्रि० रगड़ाना, मलाना।

घिसाव० ना० पु०, घिसावट० स्त्री० } रगड़, रगड़ावट।

घिसियाना० स० क्रि० घसीटना।

घीकुवार० ना० स्त्री० औषधि-पौधा विशेष।

घुंघुची० ना० स्त्री० बेलि विशेष का फल वा बीज।

घुंघुरू० ना० पु० चौरासी, पौटा।

घुटुआ० ना० पु० जानु, गांठि पावकी।

घुराडी० ना० स्त्री० वस्त्र आदि की गोल वस्तु यथा अंगरखे में होती है।

घुटना० ना० पु० ठेवना, जानु, अ० क्रि० घिसना, सांस रुक जाना।

घुटाना० स० क्रि० मुंड़ाना, चिकना कराना।

घुड़० ना० पु० घोड़ा।

घुड़काना० स० क्रि० दबकाना, धमकाना, झिड़कना।

घुड़की० ना० स्त्री० धमकी, झिड़की।

घुड़चढ़ा० ना० पु० अश्ववार, सवार।

घुड़बहल० ना० स्त्री० चौपहिया गाड़ी जिसमें घोड़े मचते हैं।

घुन० ना० पु० कीट विशेष, ढोला।

घुना० गु० जिस में घुन लग गया।

घुनाक्षर० ना० पु० घुमक्षत अक्षर।

घुनिया॰ गु० घना, कपटी।

घुमरी॰ ना॰ स्त्री॰ तिमिरी।

घुमाना॰ स॰ क्रि॰ फिराना, फेरना, बहकाना।

घुरकना॰ स॰क्रि॰ घुड़कना।

घुरूका॰ ना॰ पु॰ भीमसेन का पुत्र जो हिडम्बी से उत्पन्न था जिसको घटोत्कचभी कहते हैं।

घुलना॰ अ॰ क्रि॰ गलना, पिघलना, नम्रहोजाना, दुर्बल होना।

घुलाना॰ स॰ क्रि॰ पिघलाना, गलाना।

घुलावट॰ ना॰ स्त्री॰ पिघलावट।

घुसना॰ अ॰ क्रि॰ पैठना।

घुसपैठ॰ ना॰ स्त्री॰ पहुंच।

घुसाना॰ स॰ क्रि॰ पिलाना, पैठाना।

घुसेड़ना॰ स॰ क्रि॰ ठांसना, खोंसना।

घूंगनी॰ ना॰ स्त्री॰ उसना, चना, गेहूं।

घूंगर॰ ना॰ पु॰ लहराये हुये बाल।

घूंगी॰ ना॰स्त्री॰ घोंघी, छोटा घोंघा।

घूंघट॰ ना॰ पु॰ ओढ़ना, नक़ाब।

घूंघर॰ ना॰ पु॰ घूंगर।

घूंघरू॰ ना॰ पु॰ नूपुर।

घूंटना॰ स॰ क्रि॰ निगलना, लीलना।

घूंस॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ा चूहा।

घूंसा॰ ना॰ पु॰ घूसा, थप्पड़, मूका।

घूघू॰ ना॰ पु॰ पक्षी विशेष, पण्डुक।

घुट॰ ना॰ पु॰ पानी की लिलावट।

घुटना॰ स॰ क्रि॰ घूंटना।

घून॰ ना॰ पु॰ द्वेष, कपट, द्रोह, लाग।

घुना॰ गु॰ कपटी, द्रोही।

घुमना॰ अ॰ क्रि॰ फिरना, चक्कर देना, लौटना।

घुर॰ ना॰ पु॰ खार, कूड़ा, ताक।

घुरची॰ ना॰ स्त्री॰ उलझेड़ा।

घुरना॰ स॰ क्रि॰ ताकना, क्रोध से देखना।

घुस॰ ना॰ स्त्री॰ घूंस, अंकोर, रिशवत।

घुसत॰ ना॰ पु॰ उल्लू का बच्चा।

घुसा॰ ना॰ पु॰ थप्पड़, मुक्का, मुक्की।

घृणा॰ ना॰ स्त्री॰ घिन, ग्लानि।

घृणि॰ ना॰ स्त्री॰ किरण।

घृत॰ ना॰ पु॰ घी।

घृताची॰ ना॰ स्त्री॰ मुख्य अप्सरा।

घृताक्त॰ गु॰ चिकना।

घृष्टि॰ ना॰ पु॰ शूकर, वाराह।

घेंटा॰ ना॰ पु॰ } शूकर का
घेंटी॰ स्त्री॰ } बच्चा।

घेगा॰ } ना॰ पु॰ गले में रोग
घेघा॰ } विशेष।

घेतला॰ ना॰ पु॰ जूती विशेष।

घेर॰ गु॰ रूंधा, घूम घुमाव, गोलाकार ना॰ पु॰ फेर।

घेरना॰ स॰ क्रि॰ रूंधना, गांसना।

घेरा॰ गु॰ जो रोका गया, ना॰ पु॰ कुण्डल, मण्डल, ढाबा।

घेवर॰ ना॰ पु॰ मिठाई, विशेष

घोगा० ना० पु० शङ्ख या घोंघा जन्तु वि० जन्तु का घर विशेष।

घोंसला० ना० पु० पक्षी का घर, खोंता।

घोकना० / **घोखना०** } स० क्रि० रटना, याद करना।

घोघी० ना० स्त्री० वस्त्र विशेष जो कम्बल आदि से बनाते हैं।

घोणा० ना० स्त्री० नाक, नासिका, यथा क्लीवे घ्राणंगन्धवहा घोणा नासाच नासिका इत्यमरः।

घोट० ना० स्त्री० चिकनाहट, ओप।

घोटक० ना० पु० घोड़ा यथा घोटके वीति तुरग तुरङ्गाश्वतुरङ्गमाः इत्यमरः।

घोटना० स० क्रि० मलके चिकना करना, मुण्डना, ना० पु० पाषाण आदि की वस्तु जिस से चिकनाते हैं।

घोटा० ना० पु० काष्ठादि की वस्तु जिससे घोटते हैं ना० स्त्री० सुपारी।

घोड़ा० ना० पु० अश्व, तुरङ्ग।

घोर० ना० पु० शब्द, भय, धड़का, गु० भयानक, कठिन, कड़ा।

घोरनिद्रा० ना० स्त्री० सुखनींद, बड़ीनींद।

घोरफटा० ना० स्त्री० गोह।

घोल० ना० पु० मट्ठा, छाछ।

घोलना० स० क्रि० मिलाना।

घोष० ना० पु० अहीरोंकागांव, गोप, ग्वाल।

घोषणा० स० क्रि० अभ्यासकरना, यादकरना, प्रसिद्धरूपसेजनाना।

घोषा० ना० स्त्री० सौंफ, विडङ्ग।

घोस० ना० पु० घोष।

घोसी० ना० पु० ग्वाल, अहीर।

घौंडि० } ना० स्त्री० गुच्छा,
घौरि० } घवरि।

घ्राण० ना० पु० नाक, गन्धिका ग्रहण।

घ्राणेन्द्रिय० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

[च]

चंवर० ना० पु० चमर।

चक० ना० पु० चकवा पक्षी, जिसभूमि पर अपना अधिकार हो।

चकचका० गु० स्वच्छ, निर्मल, तेजोमय।

चकडवा० ना० पु० चकल्लस, आनन्द।

चकता० ना० पु० चिह्न, निशान।

चकती० ना० स्त्री० फांक, थेगली, पैवन्द।

चकनाचूर० ना० पु० कतरन, छीलन, चूर, चूरण।

चकल्लस० ना० स्त्री० चकडवा, मगनता, तमाशा।

चकल्लसी० गु० चकडवा वाला, मग्न।

चकला० ना० पु० वेश्याकाघर, वस्त्रविशेष जो पाटऔर सूतसे बनता है, देशका खण्ड जिसमें कई परगना होतेहैं, गु० चौड़ा।

चकलाई० ना० स्त्री० चौड़ाई।

चकवा० ना० पु० राजहंस जाति के पक्षी विशेष।

चकवी० ना० स्त्री० चकवा की स्त्री।

चका० ना० पु० पहिया, चक्र कुलाल जिसपर वर्त्तन बनाता है।

चकाचौंध० ना० स्त्री० दृष्टिका तिर मिराना।

चकाबू०
चकाब्यूह } ना० पु० चक्रव्यूह ।

चकित०
चक्रत० } गु० अचम्भित, भूलाभया, तअज्जुबमें ।

चकोतरा० ना० पु० गलगल, फल विशेष ।

चकोर० ना० पु० पक्षी विशेष ।

चक्कवै० ना० पु० राजाचक्रवर्त्ती ।

चक्का० ना० पु० टक्की, गाड़ीका पहिया ।

चक्कान० गु० गाढ़ा, जमाहुआ ।

चक्कास० ना० पु० मुरग़ियोंका घर ।

चक्की० ना० स्त्री० दलैती, जिस से आटा पीसते हैं ।

चक्कू० ना० पु० छुरी, चाक़ ।

चक्र० ना० पु० अस्त्र विशेष, पहिया, गोल, भ्रमण, सुदर्शन, कुम्हारकाचाक ।

चक्राह्व० ना० पु० तगरऔषधि ।

चक्रधर०
चक्रपाणि० } ना० पु० श्रीकृष्णचन्द्रजी, गु० जो चक्रबांधताहो ।

चक्रवर्त्ती० ना० पु० चारोंमण्डल का राजा, सार्वभौम राजा ।

चक्रवाक० ना० पु० चकवा ।

चक्रमर्द्दन० ना० पु० पवांर, कौंचबीज ।

चक्रव्यूह० ना० पु० चक्राकार सैन्यका गढ़ बनाकर समर करना ।

चक्रलक्षणा० ना० स्त्री० गुरच ।

चक्रा० ना० स्त्री० समूह, गिरोह, टोली ।

चक्राकार० गु० पहिया के डौल ।

चक्रित० गु० चकित, भ्रमित ।

चक्री० ना० स्त्री० चकई, गायकों की मण्डली, ना० पु० सांप, कुम्हार ।

चख०ना० पु० चख, मच।

चखना०स० क्रि० जांचना, स्वादलेना, खाना।

चखाचखी०ना० स्त्री० बिगाड़, लड़ाई, फूट।

चङ्ग०ना० स्त्री० गुड्डी, बाजा, पतङ्ग।

चङ्गा०गु० भला, अच्छा, सुखी।

चङ्गेर०ना० स्त्री० फूलरखने का पात्र, कठरी।

चङ्गेरा०ना०पु० } खांचा, खांची.
चङ्गेरी० स्त्री० } कठरा, कठरी।

चचा०ना० पु० पिताकाभाई। चाचा

चची०ना० स्त्री० चचा की स्त्री।

चचुलाई०ना० पु० चचेंड़ा तरकारी।

चचोरना०स० क्रि० सूखीवस्तु का चूसना।

चञ्चनाना०स० क्रि० टीसना, क्रोधित होना, झुंझलाना।

चञ्चनाहट०ना० स्त्री०टीस, झुंझलाहट।

चञ्चरीक०ना० पु० भौंरा।

चञ्चल०गु० अथिर, चपल, कम्पाहा, खिलाड़, नाशी।

चञ्चलता०ना० स्त्री० अस्थिरता, चपलता।

चञ्चला०ना० स्त्री० बिजली, कौंधा, लक्ष्मी।

चञ्चलाई०ना०स्त्री०ढिठाई।

चञ्चलाहट०ना०स्त्री०अस्थिरता, ढिठाई।

चञ्चु०ना० पु० चोंच, शुकपक्षी।

चट०अव्य० तुरन्त, उसीसमय।

चटक०ना० स्त्री० चमक, धड़ाका, चिड़ा, गु०बुद्धिमान्, चालाक, वेगी।

चटकना०ना० पु० धप्पा अ० क्रि० फटना, धड़कना तड़कना।

चटका॰नां॰ पु॰ भौंरा, गरगीश्चा पची, पच्ची टोटा, चट्टी, हरका।

चटकाना॰स॰ क्रि॰ चुटकी बजाना, फटकारना, फोड़ना, चीरना।

चटकारना॰स॰ क्रि॰ पशु-आदिके चलाने में मुख से टिक टिक करना।

चटकाहट॰नां॰ स्त्री॰चमक, भड़क, नां॰ पु॰ चिड़ियों का शब्द।

चटकीला॰नां॰ पु॰ } चम-
चटकीली॰ स्त्री॰ }

कीला, भड़कीला, नमकीन।

चटगांव॰नां॰ पु॰ नगर जो बङ्गाले के पूर्व है।

चटनी॰नां॰ स्त्री॰ खाने के लिये खट्टी बनाई हुई वस्तु, चाटने कीवस्तु।

चटपट॰अव्य॰ तुरन्त, उसी-समय।

चटपटाना॰अ॰क्रि॰ व्याकुल होना, फड़फड़ाना किसी वस्तु के लिये जी चलाना।

चटपटाहट॰नां॰ स्त्री॰ व्याकुलता।

चटपटिया॰ गु॰ फुर्तीला चालाक।

चटपटी॰नां॰ स्त्री॰ उतावली हड़बड़ी।

चटवाना॰स॰ क्रि॰ चटाके खिलाना।

चटसार॰ } नां॰ स्त्री॰ पाठ-
चटसाल॰ } शाला, मदर्सह

चटाई॰नां॰ स्त्री॰ विछौना विशेष।

चटाक॰नां॰ पु॰धड़ाक,भड़ाका, एका एक।

चटाका॰नां॰ पु॰ धड़ाका चूमालेने का शब्द।

चटाचट॰गु॰ दुहराय तिहराय के जो शब्द।

चटाना० स० क्रि० चटवाना।

चटिया० ना० पु० शिष्य, चेला, गु० चाटनेवाला।

चटो० ना० स्त्री० ध्यान, थिरता, ताड़ी, रामचन्द्रिका यां यथा, सब जात फटी दुखकी दुपटी कपटी नर हे जहं एकघटी। निघटी रुचिमीचु घटीऊ घटी जगजीवजतीन कि छूटी चटी।

चटोरा० गु० रसिया, पेटू, अधीरज।

चट्टा० ना० पु० चटसालीबालक।

चट्टान् ० ना० पु० पत्थरका छोटा भाग वा टुकड़ा।

चट्टाबट्टा० ना० पु० खिलौना विशेष।

चड० ना० पु० वृक्षकी डाली तोड़ने का शब्द।

चड़चड़० गु० चटाचट, विक्री।

चड़चड़ाना० अ० क्रि० फटना तड़कना।

चड़बड़िया० ना० पु० बकी।

चड़ई० ना० स्त्री० पश्चिम में तैयारी को कहते हैं और अवध में कूप गहिराने को।

चढ़ता० ना० पु० लाभ, बढ़ती

चढ़ताहोना० अ० क्रि० निकलता होना, सरस होना।

चढ़ना० स० क्रि० आरोहण करना, बिलंगना, उठना, धावा करना, सवार होना।

चढ़वैया० गु० चढ़नेवाला, यथा घुड़चढ़ा।

चढ़ाई० ना० स्त्री० चढ़ाव, धावा।

चढ़ाना० स० क्रि० आरोहण कराना, बलिदानकरना, उठाना, ढोल वा, धनुष का तानना वा कसना।

चढ़ाव० ना० पु० चढ़ाई, भाटा।

चढ़ैत०} नाο पुο चढ़वैया।
चढ़ैता०}

चढ़ौवा०नाο पुο जूता जो एड़ी से चढ़ा रहता है।

चणक०} नाο पुο चना, अन्न विशेष।
चणा०}

चण्ड०गुο प्रबल, प्रचण्ड, भैरव विशेष।

चण्डांशु०नाο पुο सूर्य्य।

चण्डागुप्ता०नाοस्त्रीο कौंच-बीज।

चण्डाल०नाο पुο चाण्डाल, अतिनीच, कुकर्मी।

चण्डालिन०} नाο स्त्रीο चाण्डालकी स्त्री।
चण्डाली०}

चण्डिका०} नाο स्त्रीο दुर्गा-देवी।
चण्डी०}

चण्डोल०नाο पुο पालकी विशेष, पक्षी विशेष, खिलाना विशेष।

चतु०गुο चारि।

चतुर०गुο निपुण, सुनारी, प्रवीण, स्याना, धूर्त्त, नाο पुο कौआ।

चतुरई०} नाο स्त्रीο बुद्धि-
चतुरता०} मानी, स्यानपन, धूर्त्तता।

चतुरङ्ग०नाο पुο चारिअङ्गकी

चतुरङ्गसैन्य०नाοस्त्रीο चारि-प्रकारकी फ़ौज अर्थात् हाथी१ घोड़ा २ रथ ३ पदाति ४।

चतुरङ्गुल० गुο चारिअङ्गुल स्त्रीο किरवाली।

चतुरस्र०गुο चौखूंटा।

चतुरा०गुο चतुर।

चतुराई०नाο स्त्रीο चतुरता

चतुरानन०नाο पुο ब्रह्मा

चतुरावस्था० ना० स्त्री० चारि अवस्था, अर्थात्, जाग्रत् स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, अथवा बाल्य, प्रौढ़, युवा, वृद्ध।

चतुराश्रम० ना० पु० चारि-आश्रम, अर्थात्, ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वान प्रस्थ, संन्यासी।

चतुरास० ना० स्त्री० चारों ओर।

चतुरासी० गु० अस्सी और चार ८४।

चतुरासीयोनि० गु० चौरासीयोनि अर्थात् दोहा नव ९ जलचर दश १० व्योमचरकृमिग्यारह ११ बन बीस २० ये चौरासी ८४ जानिले मनुज चारि ४ पशु तीस ३०।

चतुरुपवेद० ना० पु० चारि उपवेद, अर्थात् धनुर्वेद, गन्धर्ववेद, आयुर्वेद, और धर्म शास्त्र।

चतुर्थ० गु० चौथा।

चतुर्थावस्था० ना० स्त्री० बुढ़ापा मृत्युकाल।

चतुर्थी० ना० स्त्री० चौथ, चौथी तिथि।

चतुर्दश० गु० चौदह १४

चतुर्दशविद्या० ना० स्त्री० चौदह विद्या अर्थात्, ब्रह्मज्ञान १ रसायन २ वैद्यक ज्योतिष ३ व्याकरण ४ धनुर्विद्या, कोक, जलतरङ्ग, नाडीज्ञान, बाहनफेरन्, नटनृत्य, जप, तस्करी, स्वरज्ञान।

चतुर्दशरत्न० ना० पु० चौदह रत्न, अर्थात् अमृत १ चन्द्रमा २ लक्ष्मी ३ धनुष ४ धन्वन्तरि ५ ऐरावत ६ कौस्तुभमणि ७ उच्चैःश्रवा ८ शंख ९ अप्सरा १० कामधेनु ११ कल्पद्रुम १२ मदिरा १३ विष १४।

चतुर्दशमनु॰ना॰पु॰ चौदह-मनु, अर्थात् स्वायम्भुव १ स्वारोचिष २ उत्तम ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्म्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इन्द्रसावर्णि १४।

चतुर्दशलोक॰ना॰ पु॰ चौदहलोक, अर्थात् सप्तस्वर्ग, और सप्तपाताल, भू १ भुवः २ स्वः ३ महः ४ जन ५ तप ६ सत्य ७ अतल ८ वितल ९ सुतल १० रसातल ११ तलातल १२ महातल १३ पाताल १४।

चतुर्दशी॰ना॰ स्त्री॰ चौदहवीं तिथि, चौदस।

चतुर्भुज॰ना॰ पु॰ विष्णुनारायण, गु॰ चारिभुजावाला, वा चारिमेंडों का खेत।

चतुर्भुजक्षेत्र॰ना॰ पु॰ चौमेंड़ा खेत।

चतुर्भुजी॰ना॰ स्त्री॰ देवीविशेष।

चतुर्भोजन॰ना॰ पु॰ चारिप्रकार का भोजन अर्थात् भोज्य १ भक्ष्य २ लेह्य ३ चोष्य ४।

चतुर्मुख॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

चतुर्मुक्ति॰ना॰ स्त्री॰ चारिमुक्ति अर्थात् सालोक्य १ सामीप्य २ सारूप्य ३ सायुज्य ४।

चतुर्योनि॰ना॰ स्त्री॰ चारियोनि अर्थात् स्वेदज १ अण्डज २ उद्भिज ३ जरायुज ४।

चतुर्वेद॰ना॰ पु॰ चारिवेद, अर्थात् ऋक् १ यजुः २ साम, ३ अथर्वण।

चतुर्वेदी॰ना॰ पु॰ चौबे, चारिवेदवक्ता ४।

चतुर्वर्ग० ना० पु० चारिवर्ग, अर्थात् चारिफल।

चतुर्वर्ण० ना० पु० चारिवर्ण अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।

चतुर्वाद्य० ना० पु० चारिप्रकार का बाजा अर्थात् तत १ बितत २ घन ३ शिखर ४ ।

चतुर्वाङ्ग० ना० पु० चतुर्भुज ।

चतुर्विंश० गु० चौबीसवां ।

चतुर्विंशति० गु० चौबीस २४ ।

चतुर्विवाह० ना० पु० चारि प्रकार के विवाह अर्थात् प्राजापत्य १ आर्ष २ गान्धर्व ३ राक्षसी ४ ।

चतुष्कोण० गु० चौकोन, चौकोना ।

चतुष्पदधर्म्म० ना० पु० चारि- पद धर्म्म के अर्थात् विद्या १ सत्य २ तपस्या ३ दान ४ ।

चतुष्फल० ना० पु० चारिफल, अर्थात् अर्थ १ धर्म २ काम ३ मोक्ष ४ ।

चतुष्पाद० ना० पु० पशु, चारि पदवाला ।

चतुस्सहस्र० गु० चारिहज़ार, ४००० ।

चतुस्संहिता० ना० स्त्री० चारिसंहिता अर्थात् ब्राह्मी १ भागवती २ वैष्ण- वी ३ सौरि ४ ।

चना० ना० पु० अन्नविशेष ।

चन्द० ना० पु० चन्द्रमा ।

चन्दन० ना० पु० गन्धसार, गन्धराज, सन्दल ।

चन्दवा० ना० पु० मेघडम्बर ।

चन्दा० ना० पु० चन्द्रमा, ब्रज- विलासे यथा । देखति रहो खिलोना चन्दा । आरिन कीजिय बाल गोविन्दा ।

चन्दिया० ना० स्त्री० टटरी, चांदि, खोटीरखी ।

चन्द्र० ना० पु० चन्द्रमा, चांद ।

चन्द्रक० ना० पु० कपूर, मयूर, नथमें लगे वस्तु ।

चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा का सोलहवां भाग. स्त्रियों की धोती विशेष ।

चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणि विशेष ।

चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का गहन ।

चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवी विशेष ।

चन्द्रचूड़० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिमाबनदी जो पञ्जाब में है ।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रमल्लिका० ना० स्त्री० इलायची ।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष ।

चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी ।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रवधू० } ना० स्त्री० वीर
चन्द्रवधूटी० } बहूटी कीडा-
जो लालमकरीसा होता है, रोहिणी ।

चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रिय की जाति विशेष अर्थात् सोमवंशी ।

चन्द्रबाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई, बड़ीइलायची ।

चन्द्रशिता० ना० स्त्री० कपूर ।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत ।

चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष ।

चन्द्रहास॰ना॰ पु॰ खड्ग,तल-
वार, राजा विशेष।

चन्द्रहासा॰ना॰ स्त्री॰ गुरच।

चन्द्रहासी॰ना॰ स्त्री॰ छोटी-
कटाई।

चन्द्रा॰गु॰ मुरझला, गुच्छा,
बुद्धिमान्।

चन्द्रातप॰ना॰ पु॰ चांदनी,
चन्द्रिका।

चन्द्राना॰अ॰ क्रि॰ सूखना,
मुरझाना।

चन्द्रायण॰ना॰पु॰ व्रतचन्द्रा-
यण, जो एक महीने ?
एक ग्रास भोजन में
शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में
बढ़ाने घटाने की रीति
से होता है।

चन्द्रिका॰ना॰ स्त्री॰ चांदनी,
बाकुची औषधि, पुस्तक
विशेष, चकोर।

चन्द्रोदय॰ना॰पु॰चन्द्रमा का
उदय, औषधि विशेष।

चपकन॰ना॰ स्त्री॰ अंगरखा,
विशेष, फ़ारसी शब्द।

चपकना॰अ॰ क्रि॰मिलजाना,
बैठजाना, सटना, चि-
पटजाना, लगिजाना।

चपकाना॰स॰ क्रि॰ मिलाना,
बैठाना, चिपटाना।

चपटना॰अ॰क्रि॰चपटाहोना,
लपटना।

चपटा॰गु॰ बैठवां, लपटा।

चपटाना॰स॰ क्रि॰ बैठाना,
मिलाना।

चपटी॰ना॰ स्त्री॰ दो स्त्रियां
परस्पर प्रसङ्गित, मिली
हुई वस्तु।

चप चपड़॰ना॰ पु॰ खाते
समय मुखमें जो शब्द।

चपड़ा॰ना॰ पु॰ लाखविशेष।

चपड़ाऊ॰गु॰ निर्लज्ज, ढीठ,
ना॰पु॰जूतेपीछेदबे।

चपड़ाना॰ स॰ क्रि॰ खोटा
करना, ढीठकरना।

चन्द्रक० ना० पु० कपूर, मयूर नथमें लगे वस्तु ।

चन्द्रकला० ना० स्त्री० चन्द्रमा कासोलहवां भाग. स्त्रियों की धोती विशेष ।

चन्द्रकान्त० ना० स्त्री० मणि विशेष ।

चन्द्रग्रहण० ना० पु० चन्द्रमा का गहन ।

चन्द्रघण्टा० ना० स्त्री० देवी विशेष ।

चन्द्रचूड़० ना० पु० श्रीमहादेवजी ।

चन्द्रभागा० ना० स्त्री० चिमाबनदी जो पञ्जाब में है ।

चन्द्रभाल० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रभस्त्रिका० ना० स्त्री० इलायची ।

चन्द्रमा० ना० पु० चांद, मुनिविशेष ।

चन्द्रमुखी० गु० जिसका मुख चन्द्रमा सरीखा है अर्थात् अतिसुन्दरी ।

चन्द्रमौलि० ना० पु० श्रीमहादेवजी, गणेशजी ।

चन्द्रवधू० }
चन्द्रवधूटी० } ना० स्त्री० वीरबहूटी कीडा-जो लालमकरीसा होता है, रोहिणी ।

चन्द्रवंशी० गु० जो चन्द्रमा से उत्पन्न भये क्षत्रिय की जाति विशेष अर्थात् सोमवंशी ।

चन्द्रबाला० ना० स्त्री० छोटी कटाई, बड़ी इलायची ।

चन्द्रशिता० ना० स्त्री० कपूर ।

चन्द्रशेखर० ना० पु० श्रीमहादेवजी, पर्वत ।

चन्द्रहार० ना० पु० गलेका गहना विशेष ।

चन्द्रहास० ना० पु० खड्ग, तलवार, राजा विशेष।

चन्द्रहासा० ना० स्त्री० गुरच।

चन्द्रहासी० ना० स्त्री० छोटी-कटाई।

चन्द्रा० गु० मुण्डला, गुञ्जा, बुद्धिमान्।

चन्द्रातप० ना० पु० चांदनी, चन्द्रिका।

चन्द्राना० अ० क्रि० सूखना, मुरझाना।

चन्द्रायण० ना० पु० व्रतचान्द्रायण, जो एक महीने में एक ग्रास भोजन में शुक्लपक्ष कृष्णपक्ष में बढ़ाने घटाने की रीति से होता है।

चन्द्रिका० ना० स्त्री० चांदनी, बाकुची औषधि, पुस्तक विशेष, चकोर।

चन्द्रोदय० ना० पु० चन्द्रमा का उदय, औषधि विशेष।

चपकन० ना० स्त्री० अंगरखा, विशेष, फ़ारसी शब्द।

चपकना० अ० क्रि० मिलजाना, बैठिजाना, सटना, चिपटजाना, लगिजाना।

चपकाना० स० क्रि० मिलाना, बैठाना, चिपटाना।

चपटना० अ० क्रि० चपटा होना, लपटना।

चपटा० गु० बैठवां, लपटा।

चपटाना० स० क्रि० बैठाना, मिलाना।

चपटी० ना० स्त्री० दो स्त्रियां परस्पर प्रसङ्गित, मिली हुई वस्तु।

चप चपड़० ना० पु० खाते समय मुखमें जो शब्द।

चपड़ा० ना० पु० लाखविशेष।

चपड़ाऊ० गु० निर्लज्ज, ढीठ, ना० पु० जूतेपीछेदबे।

चपड़ाना० स० क्रि० खोटा करना, ढीठकरना।

चपना० अ० क्रि० लज्जित होना, आधीन होना, मसल-जाना, दबजाना।

चपनी० ना० स्त्री० ढकना, ढपना, छोटा।

चपरास० ना० स्त्री० पैदल के लिये स्वामी का चिह्न।

चपरासी० ना० पु० चपरास बांधने हारा, दूत।

चपल० गु० चञ्चल, उज्ज्वल, सुन्दर, ना० पु० पारा।

चपला० ना० स्त्री० कौंधा, बिजली।

चपाती० ना० स्त्री० फुलका, यहशब्द फ़ारसी है।

चपाना० अ० क्रि० थोपना, लज्जित करना।

चपेट० ना० स्त्री० } धप्पा,
चपेटा० पु० } थप्पड़, धोखेसेजोविपत्तिआजावे।

चप्पा० गु० चारिअङ्गुली का प्रमाण।

चप्पी० ना० स्त्री० देहका दाबना वा मलना।

चबाई० ना० स्त्री० कुचलाई, चर्वण, गु० निन्दक, दूषक, द्वेषिक, नक़ली।

चबाउ० ना० पु० बतकहाउ, कहासुनी।

चबाना० स० क्रि० कुचिलना, चाबना।

चबायिन्० ना० स्त्री० निन्दा-युत, निन्दक।

चबिका० ना० स्त्री० चाव-औषधि।

चबेना० ना० स्त्री० } भूनाअ-
चबेनी० स्त्री० } ाअन्न

चब्य० } ना० स्त्री० चाब,
चब्यन० } औषधि।

चभका० ना० पु० डङ्क।

चमक० ना० स्त्री० चटक, झलक, भड़क।

चमकता० गु० उजागर, उजला।

चमकना० अ० क्रि० झलकना, लौकना, भाग्य उदय होना, क्रोधित होना।

चमकाना० स० क्रि० झलकाना, लुकाना, घुमाना नचाना, फैलाना।

चमकाव० ना० पु० } चमक,
चमकाहट० स्त्री० } भड़क।

चमकीला० गु० चमकनेहारा, चमकदार।

चमकौना० ना० पु० चमकानेवाला।

चमगादड़० ना० पु० }
चमगीदर० ना० पु० }
चमगुदड़ी० स्त्री० }
चमगुदरी० स्त्री० } रातिकाउड़नेवाला
चमगोदड़० पु० }
चमगोदरी० स्त्री० }
पक्षी, दिवान्ध जो वृक्षों में उलटा टंगता है।

चमचमात० ना० पु० चमकित।

चमचमाना० अ० क्रि० चमकना, झुनझुनाना।

चमचमाहट० ना० स्त्री० चमकाहट।

चमड़ा० ना० पु० चर्म, खाल।

चमत्कार० ना० पु० अचम्भा, भड़क, बढ़ती, ऐश्वर्य्य।

चमत्कारी० गु० भड़कीला, भाग्यशाली।

चमर० ना० पु० चवर, सुरभि गाय की पूंछ।

चमरई० ना० स्त्री० चमारपन, चमार का काम।

चमरी० ना० स्त्री० सुरभि।

चमार० ना० पु० चर्मकार, नीचजाति विशेष।

चमारिन० } ना० स्त्री० चमा-
चमारी० } र की स्त्री।

चमू० ना० स्त्री० सैन्य, फौज।

चमूप० } नाo पु० सेनापति,
चमूपति० } सिपहदार ।
चमूपाल० }

चमेटा० ना० पु० चपटा ।

चमोटा०ना०पु० } चमड़ा जि-
चमोटी० स्त्री० } सपर नाई छुरा फिराते हैं ।

चम्पई० गु० नारङ्गी रङ्ग ।

चम्पक० ना० पु० वृक्ष विशेष जिसका फूल पीला सुगन्धित होता है ।

चम्पत० ना० पु० भागना ।

चम्पतहोना० अ० क्रि० भागजाना १ छुपना ।

चम्पा० ना० पु० चम्पक ।

चम्पाकली०ना०स्त्री० चम्पाकी कली के समान गहना विशेषगलेमेंपहिनते हैं ।

चम्बु० ना०पु० जलपात्र विशेष जिससे देवता को जल चढ़ाते हैं ।

चम्बेली० ना० स्त्री० वृक्ष वा उसका फूल ।

चय०ना०पु०समूह,ढेर,अंश ।

चयन०ना०पु०आनन्द, कुशल क्षेम ।

चर० ना० पु० चारा, घास, दूत, गु० जिसकोचलने की शक्ति हो, वा जो चलनेवा उठनेके योग्य हो यथा नरनारि पशु पक्षी आदि, चारा ।

चरक० ना०पु० वैद्य विद्या का ग्रन्थ विशेष, कोढ़ ।

चरकटा० ना० पु० चारा काटने वाला ।

चरका० ना० पु० श्वेत कुष्ठ विशेष, सफ़ेद कोढ़ ।

चरकी० गु० कोढ़ी ।

चरचना० स०क्रि० देह मेंचन्दन लगाना, चर्चना ।

चरचर ना० पु० गप, बक ।

चरचराना० अ०क्रि० चटकना, मरमराना।

चरचेला० गु० बक्की, बकवादी।

चरण० ना० पु० पांव, श्लोकादि का एक पद।

चरणपीठ० ना० पु० खड़ाऊं।

चरणामृत०, चरणोदक० } ना० पु० जल जिससे देवता वा गुरू वा ब्राह्मणादि के पांव धोये गये हों।

चरती० गु० जो ब्रत नहीं करता, ब्रती नहीं।

चरन० ना० पु० चरण।

चरना० अ० क्रि० चुगना, फिरना।

चरनी० ना० स्त्री० थान वा कटरा जिसमें बैल भूसा खाते हैं।

चरन्नी० ना० स्त्री० चौअन्नी।

चरपरा० गु० तीता, कड़ुवा, तीक्ष्ण, फुर्तीला।

चरपराना० अ० क्रि० परपराना।

चरपराहट० ना० स्त्री० परपराहट।

चरपरिया० गु० मन चला, सुघड़।

चरम० गु० पिछला।

चरवाई० ना० स्त्री० चराई।

चरवाहा० ना० स्त्री० रखवारा, चराने हारा।

चरस० ना० पु० मादक वस्तु मोठ, पुरवट।

चरसा० ना० पु० अधौड़ी। खाल।

चराई० ना० स्त्री० चराने के दाम, चरने का काम

चराक० गु० चरने हारा, पशु।

चराचर० ना० पु० चल अचल सजीव निर्जीव जन्तु

चरान० ना० पु० तराई।

चराना० स० क्रि० चुगाना।

चराव० ना० पु० खेत वा धरती जो चरने के योग्य।

चरावना० स० क्रि० चराना।

चरित० ना० पु० चरित्र।

चरितार्थ० ना० पु० कृतार्थ।

चरित्र० ना० पु० स्वभाव, शील, वृत्तान्त।

चरुआ० ना० पु० भांड़ा।

चर्चक० गु० चर्चाकरने हारा, बादी।

चर्चना० स० क्रि० विचारना, समझना, पूजना, पहिचानना।

चर्चरी० ना० स्त्री० छन्द विशेष कटी, विक्री।

चर्चा० ना० स्त्री० प्रस्ताव, बतकहाव।

चर्चित० गु० लगाया हुआ, कहा हुआ।

चर्म० ना० पु० चमड़ा।

चर्मकार० ना० पु० चमार।

चर्मपात्र० ना० पु० चमड़ा का ढोल, मशक।

चर्मवस्त्र० ना० पु० चमड़ा का वस्त्र अर्थात् ओढ़न।

चर्य्या० ना० स्त्री० तपस्या करने में धुनि अथवा रहनि।

चर्वण० ना० पु० दांतों से पीसना, चबेना।

चर्स० ना० पु० चरसा।

चल० गु० जो थिर न हो।

चलत० गु० चलति।

चलदल० ना० पु० पीपल।

चलन० ना० पु० चालि, व्यवहार।

चलनता० ना० स्त्री० बिकनहार, खपती।

चलना० अ० क्रि० जाना, बिदा होना, बहना।

चलनी० ना० स्त्री० झांगी, गु० चलता।

चलविचल० ना० पु० चूक, भूल, भ्रम ।

चलबिचरा० गु० अड़ियल, मचला ।

चलयौवन० ना० पु० चलायमान योवन ।

चलसुगन्धा० ना० स्त्री० शोचरलोनु ।

चलाचल० ना० पु० } दौड़ धूप।
चलाचली० ना० स्त्री० }

चलान० ना० स्त्री० भेजाव ।

चलाना० स० क्रि० दौड़ाना, भगाना, छोड़ना, बढ़ाना, अभ्यास डालना, सिखलाना ।

चलायमान० गु० जोथिरनहो, लोल ।

चलाव० ना० पु० चलन।

चलित० गु० जोचलता है।

चलिनी० गु० खिलाड़ी, चपल।

चलू० ना० पु० आचमन ।

चष० ना० पु० नेत्र, आंखि ।

चषक० ना० पु० पियाला जिसमें जलादि पीतेहैं ।

चसक० ना० स्त्री० पीड़ा, टीस।

चसकना० अ० क्रि० टीसना गड़ना ।

चसका० ना० पु० लालसा, प्रेम, चाट।

चसना० अ० क्रि० मसकना, फसकना, गड़ना।

चहकना० अ० क्रि० चहचहाना ।

चहकार० ना० स्त्री० चहचहाहट ।

चहकारना० अ० क्रि० चहचहाना ।

चहचहाना० अ० क्रि० पक्षियों का बोलना ।

चहचहाहट ना० स्त्री० पक्षियों का शब्द ।

चहटी० ना० स्त्री० दोनखों से दबाना अर्थात् चुटकी काटना।

चहला० ना० पु० कीचड़।

चहिये० अव्य० चाहिये।

चहु० गु० चारि, ४ अव्य० चाहो।

चहुधा० ना० पु० चारोंओर।

चहुचक०, चहुदिस० } गु० चारोंओर, लगभग।

चहुयुग० ना० पु० चारोंयुग।

चक्षु० ना० पु० नेत्र आंखि।

चक्षुःश्रवा० ना० पु० सांप, नाग।

चक्षुष० ना० पु० भैरव विशेष।

चा० ना० स्त्री० पौधाविशेष।

चाउ० ना० पु० आनन्द, मङ्गल, खुशी।

चाऊ० गु० आनन्दमें, लाभयुत।

चांड० ना० स्त्री० टेक, थम्भ।

चांद० ना० पु० चन्द्रमा।

चांदना० ना० पु० उजाला, ज्योति।

चांदनी० ना० स्त्री० चांदकी ज्योति, सफेद बिछोना।

चांदनीचौक० ना० पु० चौड़ा मार्ग।

चांदा० ना० पु० बिहरी, पन्ती, चन्दा।

चांदी० ना० स्त्री० रूपा, रजत।

चांप० ना० स्त्री० बन्दूककी कल, काठ।

चांपना० स० क्रि० ठांसना ओड़ना।

चाक०, चाका० } ना० पु० चक्र जिस पर कुम्हार बासन बनाता है, पहिया।

चाकी० ना० स्त्री० चक्की।

चाखना० स० क्रि० स्वादलेना, मज़ालेना।

चाचा॰ ना॰ पु॰ पिताकाभाई, चाचा।

चाची॰ ना॰ स्त्री॰ चाचाकीस्त्री।

चाञ्चल्य॰ ना॰ पु॰ अस्थिरता।

चाट॰ ना॰ स्त्री॰ चसका, लालच, पदार्थ।

चाटक॰ ना॰ पु॰ भगरविद्या, तिलस्म, इन्द्रजाली।

चाटकी॰ गु॰ चाटक जानने वारा।

चाटना॰ स॰ क्रि॰ जीभसे रस खींचना, चभड़ चभड़ करना।

चाटी॰ ना॰ स्त्री॰ मथनियां।

चाणक॰ ना॰ पु॰ करखा, भड़काव, क्रोधकारकवार्त्ता।

चाणक्य॰ ना॰ पु॰ राजाविशेष का मन्त्री न्यायग्रन्थ।

चाणूड़॰ } ना॰ पु॰ राजा-
चाणूर॰ } कंसका मल्ल।

चाण्डाल॰ गु॰ निर्दयी, अति नीचजाति।

चाण्डूल॰ } ना॰ पु॰ पक्षी
चाण्डोल॰ } विशेष।

चातक॰ ना॰ पु॰ पपीहापक्षी।

चातर॰ ना॰ पु॰ महाजाल।

चातुर॰ गु॰ चतुर, चारि, बुद्धिमान्।

चातुरी॰ ना॰ स्त्री॰ धूर्त्तता, चालाकी, बुद्धिमानी।

चातुर्य्य॰ ना॰ पु॰ चतुराई।

चातुर्व्वर्ण्यदेश॰ ना॰ पु॰ देश, जहांचारोंवर्ण ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, रह-ते हैं।

चात्टक॰ ना॰ पु॰ पपीहा।

चान्द्रमास॰ ना॰ पु॰ कृष्ण-पक्ष प्रतिपदा से पूर्णि मापर्य्यन्त।

चान्द्रायण॰ ना॰ पु॰ व्रतजिस में भोजन प्रतिदिनएक ग्रास घटाते हैं यथा चन्द्रमा प्रतिदिन घटता है।

चाप०ना० पु० धनुष, कमान्, आबीसेव।

चापकर्ण०ना० पुं० रोद:पञ्च-कमान् की।

चापन०ना० पु०रावन, रामायणे यथा, मुनिवर सैन कीन्हलबजाई, लगेचरण चापन दोउ भाई।

चापच्छेच०ना०पु० धनुषा कार षेच।

चाप्य०ना० पु० कूट।

चाबना०स०क्रि० दांतसे कुचलना, कुचलना।

चाबी०ना० स्त्री० कुञ्जी।

चाम०ना० पु० चर्म।

चामर०ना० पु० चमर, छन्द विशेष।

चामीकर०ना० पु० सुवर्ण, सोना।

चामुण्डा०ना० स्त्री० योगिनी भेद, देवी विशेष।

चाम्पेय०ना० पु० चम्पा दृच।

चाय०ना०पु०चोष, हर्ष, स्वाद

चार०गु० गिन्ती ४ ना० पु० दूत, पदाति।

चारिखानि०ना० स्त्री० स्वेदजादि।

चारण०
चारन० ना० पु० नचवैया, भांड़, भाट, प्रेष्य।

चारा०ना० पु० वनस्पति, पशु भोजन, फ़ारसी शब्द है।

चारी०गु० चलनेवाला, ना० स्त्री० चुग़ली, चराइ चारि।

चारु०गु० सुन्दर, अच्छा, ना० पु० पद्माक।

चारुपर्णी०ना० स्त्री० गन्ध-पसारन।

चारुफल०ना० पु० अङ्गूर, दाख।

चार्वाक०गु० वेदवाह्य,नास्तिक विशेष।

चाल० ना० स्त्री० गति, चलन, रीति।

चालना० स० क्रि० झाड़ना, आखाकरना।

चालनी० ना० स्त्री० आटा-छानने का पात्र।

चाला० ना० पु० गौना, सफर, सायत।

चाली० ना० पु० मिसकारी, हीलाबाज़।

चाव० ना० पु० चाय, चारि-अङ्गुल की माप, बांस विशेष।

चावल० ना० पु० तण्डुल, विरञ्ज।

चाष० ना० पु० नीलकण्ठपक्षी, लहटोरवा, यथा लोहपृ-ष्ठस्तुकङ्कः स्यादथचाषःकि कीदिविःइत्यमरः रामा यणेयथा, चारा चाष वामदिशिलेई, मनौसक-ल मङ्गल कहिदेई।

चास० ना० स्त्री० हलचलाना।

चासना० स० क्रि० हलचलाना।

चासा० ना० स्त्री० हलवाहा।

चाह० ना० स्त्री० इच्छा, प्रेम, रीझ, छोह।

चाहक० ना० पु० छोही, हितकारी।

चाहत० ना० स्त्री० चाह।

चाहना० स० क्रि० प्रेमकरना, इच्छा करना, प्रार्थना करना, मांगना।

चाहिये० अव्य० अवश्य।

चाहिता० गु० प्यारा, मन-भावित।

चाहिती० ना० स्त्री० प्यारी।

चाहो० अव्य० अथवा।

चिक० ना० स्त्री० पीड़ा विशेष, परदह।

चिकटा० ना० पु० टसर का कपड़ा विशेष।

चिकठा० गु० चिक्कट।

चिकना॰ ना॰ पु॰ तेल वा घृत, गु॰ उजला, सुन्दर, तिलहा, अजितेन्द्रिय, चञ्चला, और चिकनियां।

चिकनाई॰ ना॰ स्त्री॰ चर्बी, भा॰ वा॰ चञ्चलाहट, ओप, झलक।

चिकनाना॰ स॰ क्रि॰ उज्ज्वल करना, ओपना।

चिकनाहट॰ ना॰ स्त्री॰ उज्ज्वलता, ओप, सुन्दरता।

चिकवा॰ ना॰ पु॰ जाति विशेष जो मांस बेचता है।

चिकार॰ ना॰ पु॰ शोर, चिल्लाहट, चेंचें।

चिकारना॰ अ॰ क्रि॰ चेंचे-करना, नाकोदेना, शोरकरना, चिल्लाना।

चिकारा॰ ना॰ पु॰ मृगविशेष, छोटी सारङ्गी।

चिकित्सक॰ ना॰ पु॰ वैद्य, तबीब।

चिकित्सा॰ ना॰ स्त्री॰ वैद्य... तिबाबत।

चिकुर॰ ना॰ पु॰ बाल, केश...

चिकोरना॰ स॰ क्रि॰ चिरचे... रना, चोंचियाना।

चिकोरा॰ गु॰ तरल, चञ्च...

चिक्क॰ ना॰ स्त्री॰ वकरी, अ... काव्ये यथा, घाङ्गी खे... चिक्कधन अरुविटिय... बढवारि एतेपर ... नहिंनशै जादुकरै अ... वारि।

चिक्कट॰ गु॰ चिकटा, मली...

चिक्कण॰ गु॰ चिकना।

चिक्कहा॰ ना॰ पु॰ चिकव... बुज़क़स्साव।

चिक्कार॰ ना॰ पु॰ शो... चिल्लाहट।

चिड़्ड़ा॰ ना॰ पु॰ }
चिड़्ड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ } भोंगा।

चिङ्गनी॰ना॰ स्त्री॰ } मुरग़ीका
चिङ्गा॰ना॰ पु॰ } बच्चा।

चिङ्घाड़॰ना॰ स्त्री॰किलकार, कूक।

चिङ्घाड़ना॰अ॰ क्रि॰ किलकारना।

चिङ्घाड़ा॰ना॰ पु॰ चिङ्घाड़।

चिचड़ी॰ना॰स्त्री॰ किलनी।

चिचिआना॰अ॰क्रि॰ चिल्लाना, मिमियाना।

चिञ्चा॰ना॰ स्त्री॰ अमिली वृत्त।

चिट॰ना॰ स्त्री॰ लीर, धज्जी।

चिटकारा॰ना॰ पु॰ छींटा, चिह्न।

चिट्टा॰गु॰ गोरा, सफ़ेद, ना॰ पु॰ एक रुपया।

चिट्ठा॰ना॰ पु॰ दिन दिन का लेखा वा कमाई वा रोज़नामा।

चिट्ठी॰ना॰ स्त्री॰ पत्र, पाती।

चिड़॰ ना॰ स्त्री॰ ग्लानि खिजावट।

चिड़चिड़ा॰गु॰खुन्साहा,झनझना, ना॰ पु॰ पौधा विशेष।

चिड़ना॰अ॰ क्रि॰ झुंझलान खिजना, खिसियाना।

चिड़पड़ा॰ गु॰चरपरा,तीता तीक्ष्ण, कडुआ।

चिड़ा॰ना॰ पु॰ कटुक।

चिड़ाना॰स॰ क्रि॰ खिजाना सताना, छेड़ना।

चिड़िया॰ना॰ स्त्री॰ गौरिया, पत्ती।

चिड़ीमार॰ना॰ पु॰ नलिया, वधिक।

चिरिड़॰ना॰ स्त्री॰ नृत्यविशेष

चित॰ना॰ पु॰ चित्त, चैतन्य, गु॰ सूधा लेटना।

चितकबरा॰ गु॰ चितला कबरा, अबलक़।

चितना० अ० क्रि० रंगाजाना।

चितला० गु० कबरा, चितकबरा।

चितवन० ना० स्त्री० दृष्टि, दीठि।

चितवना० अ० क्रि० देखना।

चितहट० ना० स्त्री० खींच, चितहटजाना।

चिता० } ना० स्त्री० सरा,
चिताखा० } मृतकके दाहदेने का स्थान।

चिताना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।

चिताभस्म० ना० स्त्री० चिता की राख।

चितावना० स० क्रि० जताना, सुचेत करना।

चितावनी० ना० स्त्री० जतावनी, चिह्न।

चितेरा० ना० पु० चित्रकार, मुसव्विर।

चितौना० स० क्रि० देखना बिलोकना।

चित्त० ना० पु० मन, हृदय, सुधि।

चित्ता० ना० पु० औषधि, पौधा विशेष।

चित्ती० ना० स्त्री० चिह्न, लहु, सन, सर्प विशेष कौड़ी जो रगड़ के चिकनी होगई।

चित्र० ना० पु० मूर्त्ति, रूप, अग्नि, मित्र, दोनों अरगड, गुरु, बटेरपक्षी।

चित्रक० ना० पु० चीतापशु, चित्रसारी।

चित्रकन्दक० ना० पु० ज़िमीकन्द।

चित्रकार० ना० पु० मुसव्विर, चितेरा।

चित्रकारी० ना० स्त्री० चित्रकार का काम, मुसव्विरी।

चित्रकाय० ना० पु० बाघ, शेर, गुलबघा ।

चित्रकूट० ना० पु० पर्व्वत, विशेष ।

चित्रकेतु० ना० पु० राजा विशेष ।

चित्रगुप्त० ना० पु० यमराज भेद, यमके यहां बुरे भले का लेखक ।

चित्रदेवी० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी ।

चित्रपक्ष० ना० पु० तीतरपक्षी ।

चित्रभानु० ना० पु० सूर्य्य, अग्नि ।

चित्रभेषज० ना० पु० कठूमरि ।

चित्रविचित्र० गु० अनेकरङ्ग काहे ।

चित्रशाला०
चित्रसारी० } ना० स्त्री० जिस स्थान में बहुत चित्र होवें, नगाड़ख़ाना, नक्कारख़ाना ।

चित्रा० ना० स्त्री० चौदह नक्षत्र, इन्द्रवारुणी ।

चित्राङ्गद० ना० पु० रा विशेष ।

चित्राफल० ना० पु० इ वारुणी ।

चित्रित० गु० चित्रयुक्त, चि कियागया ।

चित्रिणी० ना० स्त्री० चि विचित्र, भगवती नाम है ।

चित्री० ना० स्त्री० चित्रका ना० पु० चीतापशु ।

चिथड़ा० ना० पु० गुदड़ा, लत्त

चिथड़िया० गु० गुदड़िया ।

चिथाड़० ना० पु० फाड़ ची लथाड़ ।

चिथाड़ना० स० क्रि० फाड़ चीरना, लथाड़ना ।

चिदाकाश॰ ना॰ पु॰ परमात्मा चैतन्य आकाश में।

चिनग॰ ना॰ स्त्री॰ मूतने में जलन पड़ना।

चिनगाना॰ अ॰ क्रि॰ टीसना, चिल्लाना।

चिनगारी॰ } ना॰ स्त्री॰ लूका,
चिनगी॰ } आगिका फोटा-साफूल।

चिनचिनाना॰ अ॰ क्रि॰ चिल्लाना, शोरकरना।

चिन्त॰ ना॰ स्त्री॰ चिन्ता।

चिन्तन॰ ना॰ पु॰ अभ्यास, चिन्तमन।

चिन्तना॰ अ॰ क्रि॰ अभ्यास करना।

चिन्ता॰ ना॰ स्त्री॰ शोच, डर, जोखिम, सन्देह, भावना।

चिन्ताना॰ स॰ क्रि॰ अभ्यास कराना।

चिन्तामणि॰ ना॰ स्त्री॰ मणि विशेष।

चिन्तित॰ गु॰ शोची, भावित, विचारित।

चिन्ह॰ ना॰ पु॰ लक्षण, पहिचाना।

चिन्हार॰ ना॰ पु॰ } चीन्हा,
चिन्हारी॰ स्त्री॰ } पहिचान।

चिन्हित॰ गु॰ जोपहिचानगया, चिन्ह युक्त।

चिपकना॰ अ॰ क्रि॰ लगना, सटना।

चिपकाना॰ स॰ क्रि॰ लगाना, सटाना, चिपटाना।

चिपचिपा॰ गु॰ लसलसा, लिजलिजा।

चिपचिपाना॰ अ॰ क्रि॰ लसलसाना।

चिपटना॰ अ॰ क्रि॰ चिपटना, लिपटना।

चिपटा॰गु॰ लगाहुआ, चिपचिपा।

चिपटाना॰स॰क्रि॰ चपटाना, चिप्पीलगाना, लपटाना।

चिपड़ी॰ना॰स्त्री॰ गोहरी।

चिप्पक॰गु॰ छिछलाना, ना॰पु॰ पक्षी विशेष।

चिप्पा॰ना॰पु॰ चीप।

चिप्पी॰ना॰स्त्री॰ जहां कागज़ आदि फटा होता है वहां लगाई जाती है, छोटी चीप।

चिबुक॰ना॰स्त्री॰ ठोढ़ी।

चिमटना॰अ॰क्रि॰ चिपकना, लपटना।

चिमटा॰ना॰पु॰ स्रूठा, लोहे की वस्तु जो सुनार और लोहार आदि रखते हैं।

चिमटाना॰स॰क्रि॰लिपटाना

चिमठा॰ }
चिमड़ा॰ } गु॰लचीला, कड़ा।

चिमड़ाई॰ना॰स्त्री॰कड़ापन, ऐंठ।

चिमड़ाना॰ स॰ क्रि॰ कड़ा करना, अ॰ क्रि॰ कड़ा होना, ऐंठिजाना।

चिमड़ाहट॰ना॰स्त्री॰ चिमड़ाई, ऐंठाई।

चिमड़ी॰ना॰ स्त्री॰ चिमड़ा।

चिमसा॰ना॰पु॰ सरेश पानी का।

चिर॰अव्य, बहुत बहुत काल

चिरञ्जी॰ }
चिरञ्जीव॰ } ना॰पु॰आशीर्वाद विशेष अर्थात् बहुत जीवन होवे।

चिरञ्जीवी॰गु॰ बहुत दिनों, ना॰ पु॰ कौआ।

चिरकाल॰अव्य, नित्य, सदा।

चिरकुट॰ना॰ पु॰ चिट।

चिरकुटिया॰गु॰ गुदड़िया।

चिरचिरा॰ना॰ पु॰ औषधि वा पौधा विशेष।

चिरचिराना॰ अ॰ क्रि॰ चर चराना।

चिरचिराहट॰ ना॰ स्त्री॰ झनझनाहट।

चिरना॰ अ॰ क्रि॰ फटना।

चिरन्तन॰ गु॰ पुराना, प्राचीन।

चिरवाना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना, चिराना।

चिरांद॰ ना॰ स्त्री॰ जलते हुये चमड़े की कुवासना।

चिराना॰ स॰ क्रि॰ फड़वाना।

चिरायु॰ गु॰ बहुत जीवन।

चिरु॰ गु॰ बहुत।

चिरुकाल॰ गु॰ बहुत दिन, चिरकाल।

चिरुकालीन॰ गु॰ बहुत दिनी।

चिरौंजी॰ ना॰ स्त्री॰ शुष्कफल विशेष।

चिरौरी॰ ना॰ स्त्री॰ विन[...] खुशामद।

चिलक॰ ना॰ स्त्री॰ चम[...] भड़क, दर्द।

चिलकना॰ अ॰ क्रि॰ चमकन[...] झलकना, और फो[...] आदि का पिराना।

चिलचिम॰ ना॰ पु॰ मछली[...]

चिलचिलाना॰ अ॰ क्रि[...] चीखना, चिंघाड़ना।

चिलम॰ ना॰ स्त्री॰ तमा[...] आगि भरनेका पात्र।

चिलमची॰ ना॰ स्त्री॰ प[...] विशेष जिसमें मुह[...] धोनेका पानी रहता [...] चिलम के नीचे र[...] की वस्तु।

चिलवन॰ ना॰ स्त्री॰ चि[...] झंझरी।

चिलवल॰ ना॰ पु॰ वृक्षविशे[...]

चिल्लड़॰ ना॰ पु॰ ची[...] चिलुआ।

चिल्लाना० अ० क्रि० पुकारना, चिङ्घाड़ना।

चिल्लाहट० ना० स्त्री० पुकार, चिङ्घार।

चिल्ली० ना० स्त्री० भोजनविशेष जो अण्डे से बनाते हैं, उल्लू।

चिहटना० अ० क्रि० चिपटना, लगना।

चिहुर० ना० पु० बाल, केश।

चींटी० ना० स्त्री० चींवटी, कीट विशेष।

चीक० ना० स्त्री० कीच।

चीखुर० ना० पु० गिलहरी।

चीतना० स० क्रि० चाहना।

चीतल० ना० पु० जङ्गलीजन्तु विशेष गु० चित्तना।

चीता० ना० पु० तेंदुआ, व्याघ्र, चाह, बुद्धि।

चीथना० स० क्रि० चिथाड़ना, फाड़ना।

चीन० ना० पु० देश विशेष जो उत्तर पूर्व्व में है।

चीनी० ना० स्त्री० खांड़ विशेष गु० चीन देशी।

चीनीय० गु० चीनकेमनुष्यादि।

चीन्ह० ना० स्त्री० पहिचान, चिह्न।

चीन्हना० स० क्रि० पहिचानना।

चीन्हा० ना० पु० पहिचान चिन्हार।

चीर० ना० स्त्री० वस्त्रकाटुकड़ा सारी, खींच, ओढ़नी।

चीरना० स० क्रि० फाड़ना।

चीरम० ना० स्त्री० चिरौंजी।

चीरा० ना० पु० फाड़, घाव, मुग्धापन पगड़ी।

चीरी० ना० स्त्री० झींगुर।

चील० ना० स्त्री० चीलह, पक्षी जिसका मकान पर बैठ केचिल्लाना, अशुभ है।

चोलड०
चोलर०
चोल्हड़० } ना० पु० ढोल, बड़ाजुआं, चोल्ह।

चुआन० ना० स्त्री० जलके निकलने की भूमि।

चुआना० स० क्रि० टपकाना, कूप में जलनिकालना।

चुकती० ना० स्त्री० निपटारा।

चुकना० अ० क्रि० समाप्तहोना, निपटना, ठहरना।

चुकाई० ना० स्त्री० चुकौता।

चुकाना० स० क्रि० निपटाना, ठहराना।

चुकौता० ना० पु० निपटारा, ठहराव।

चुक्रिका० ना० स्त्री अमिली-वृक्ष।

चुगना० अ० क्रि० टूंगना, चुगना।

चुङ्गी० ना० स्त्री० अन्नका कर, महसूल।

चुचकारना० स० क्रि० चोंचलाकारना, और चुमकारना।

चुचकारी० ना० स्त्री० चुमकारी।

चुञ्च० ना० पु० मुनिविशेष।

चुञ्चक० ना० स्त्री० भेंड़ी, चुञ्चक, ऊर्णायू, इति निघण्टः।

चुञ्चड़० ना० पु० चूंचा, बड़ी-चूंची।

चुटकी० ना० स्त्री० नोच, चुमटी, मुट्ठीभर अन्न, पांव की अङ्गुली का गहना।

चुटकुला० ना० पु० ठठोली, मज़ाक़।

चुटला० ना० स्त्री० चोटी।

चुटाना०
चुटालना०
चुटावना० } स० क्रि० बावकरना, दूधपिलाना गाय इत्यादि का।

चुड़० ना० स्त्री० चूत।

चुड़ुआ॰ना॰ पु॰ चूड़ा जो धान कूटिके बनाते हैं।

चुड़ैल॰ } ना॰ स्त्री॰प्रेतिनी, फूहड़।
चुड़ैलिया॰ }

चुदक्कड़॰ना॰पु॰ चोदनेवाला, चुदवैया, कामी।

चुदना॰अ॰क्रि॰ जुड़ना, प्रसङ्ग होना, भगमें लिङ्ग जाना।

चुदवाई॰ना॰स्त्री॰ चुदानेका पैसा, दाम वा काम।

चुदवाना॰स॰ क्रि॰ प्रसङ्गकरवाना।

चुदवैया॰ना॰ पु॰ लम्पट, स्त्री प्रसङ्गी।

चुदाई॰ना॰ स्त्री॰ केलि स्त्री प्रसङ्ग, मैथुन।

चुदाना॰स॰ क्रि॰ चुदवाना।

चुदास॰ना॰ स्त्री॰कामव्यथा, स्त्री प्रसङ्गकी इच्छा।

चुदासा॰ना॰पु॰ } कामातुर
चुदासी॰ स्त्री॰ } मैथुनेच्छा, स्त्री पुरुष को प्रसङ्ग की इच्छा।

चुंनचुना॰ना॰ पु॰ } गुदा के
चुनचुनी॰ना॰स्त्री॰ } भीतर का कीड़ा, गुदा-खुजलाना।

चुनत॰ } ना॰ स्त्री॰ परत,तह,
चुनन॰ } तोड़।

चुनना॰स॰ क्रि॰ कपड़ों का तोड़ना वा इकट्ठा करना, छांटना, टूंगना, बीनना।

चुनरी॰ना॰ स्त्री॰ लालरंगी रूई ओढ़नी।

चुनवाना॰ } स॰क्रि॰टुंगाना,
चुनाना॰ } बिनवाना, छट-वाना, कपड़े की तह लगवाना।

चुनावट॰ना॰ स्त्री॰ चुनत।

चुनी॰ना॰ स्त्री॰ चूनी।

चुनौटा॰ना॰ पु॰ } पान जि-
चुनौटी॰ना॰स्त्री॰ } समें पान तम्बाकू खाने के लिये चूना रखते हैं॥ युद्धमें सैन्य को धारस देना, फ़ौज मेंसे बलवानों को धावा के लिये छांटना, जेठ सुदी एकादशी को पैरके पारजाना जो काशीजी में प्रचलित रीति है।

चुनौटिया॰ गु॰ पश्चिम में बैगनीरङ्ग को कहतेहैं।

चुनौती॰ना॰ स्त्री॰ तलाक़, शर्त्त बदने की बात, निशानी, चिन्हारी, स्मारक वस्तु।

चुन्धला॰गु॰ त्योंधा, नयन-रोगी।

चुन्धलाना॰ अ॰ क्रि॰ त्योंधा-होना।

चुन्धा॰ गु॰ त्योंधा, चिमधा।

चुन्ना॰ स॰ क्रि॰ चुनना।

चुन्नी॰ ना॰स्त्री॰छोटामाणिक

चुप॰ }
चुपका॰ } गु॰मौनी, अबोल
चुपचाप॰ }

चुपचुपाना॰ अ॰क्रि॰ चुप चाप रहना।

चुपड़ना॰ स॰ क्रि॰ चिकनाना, मलना।

चुपड़ी॰ गु॰ चिकनी, चिकना।

चुप्प॰ना॰ पु॰ } मौनता, खा-
चुप्पी॰ स्त्री॰ } मोशी।

चुप्पा॰ गु॰ मौन, चुपका, अबोल।

चुभकी॰ ना॰ स्त्री॰ डुबकी, ग़ोतामारना।

चुभना॰ अ॰क्रि॰ गड़ना, घुसना बिधना, छिदना, पैठना।

चुभाना॰स॰ क्रि॰ घुसेड़ना, छेदना, पैठाना।

चुमाना॰स॰ क्रि॰ चूमादेना, वा दिलवाना।

चुमकार॰ना॰ पु॰ ⎫ चुचका-
चुमकारी॰ स्त्री॰ ⎭ री।

चुमकारना॰स॰ क्रि॰चुचकारना।

चुम्बक॰ना॰ पु॰ लोहे का आकर्षक पत्थर।

चुम्बन॰ना॰ पु॰ चूमा, स्नेह, बश होकर अङ्गमें ओष्ठ स्पर्शकरना।

चुरकुट॰ना॰पु॰ बुकनी,चूर्ण।

चुरगना॰अ॰क्रि॰ चेंचेंकरना।

चुराना॰स॰क्रि॰ चोरीकरना।

चुरुगना॰अ॰ क्रि॰ बकना, बड़बड़ाना।

चुल॰ना॰ स्त्री॰ खुजलाने की इच्छा।

चुलचुल॰ना॰पु॰ चञ्चलाहट।

चुलचुलाना॰स॰ क्रि॰ खुजलाना, गुदगुदाना।

चुलचुली॰ना॰ स्त्री॰ चञ्चलाहट।

चुलबुला॰गु॰चञ्चल,रङ्गीला।

चुलबुलाना॰अ॰ क्रि॰ चञ्चलहोना।

चुलबुलाहट॰ना॰ स्त्री॰चुलबुलापन।

चुलबुलिया॰गु॰चुलबुला।

चुलहाई॰ना॰स्त्री॰कामातुरी, चुदासी।

चुलहारा॰ गु॰ कामातुर, चुदासा।

चुल्लू॰ना॰ पु॰ एकहाथ का सम्पुट, मुट्ठीभर।

चुसकर॰ना॰ पु॰ पिवक्कर।

चुसनी॰ना॰ स्त्री॰ चूसनी

चुहचुहा० गु० जोगहिरा रङ्गागया।

चुहचुहाना० अ० क्रि० गहिरा रङ्गाजाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।

चुहल० ना० स्त्री० चर्चा चहलबहल।

चुहला० गु० ठठोल, हंसोडा।

चूंगी० ना० स्त्री० चुङ्गी।

चूंची० ना० स्त्री० कुच, भिठनी, थन।

चूंटा० ना० पु० पृथ्वी में रहनेहारा जन्तु विशेष।

चूंटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।

चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधा विशेष गु० खट्टा, विशेष ना० पु० ओषधि विशेष।

चूकना० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।

चूका० ना० पु० खट्टासाग।

चूची० ना० स्त्री० चूंची।

चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाटकी पट्टी का सिरा वानोक।

चूडा० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूंडी, ललाट के ऊपर बंधे हुये केश, चवंगा विशेष।

चूड़ाकरण० } ना० पु० मुण्डन
चूड़ाकर्म० }

चूड़ामणि० ना० स्त्री० कङ्कण की मणि।

चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंकेहाथ में पहिरने के लिये जो चांदी वा लाख वा कांच की बनती है।

चूत॰ना॰ स्त्री॰ योनि, आम्र।

चूतड़॰ना॰ पु॰ नितम्ब, जङ्घा का उपरि भाग, पुट्ठा।

चूतिया॰ना॰ पु॰ उल्लू, अहमक़।

चून॰ना॰ पु॰ आटा, पिसान।

चूना॰ना॰पु॰चूर्ण, वा जो पानमें लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कङ्कर वा सीपजली हुई अ॰ क्रि॰ टपकना, रसियाना, छनना।

चूनी॰ना॰ स्त्री॰ दलाहुआ उड़द आदि, खुद्दी।

चूमकपत्थर॰ना॰ पु॰ चुम्बक।

चूमना॰स॰ क्रि॰ चूमालेना, मच्छीलेना।

चूमा॰ना॰पु॰ सीठी, मच्छी।

चूर॰ना॰ स्त्री॰ बुकनी, चूर्ण।

चूरन॰ना॰ पु॰ चूर्ण।

चूरना॰स॰ क्रि॰ चूर्णकरना।

चूरा॰ना॰पु॰ रेतन, बूरा, चूड़ा।

चूरी॰ना॰ स्त्री॰ बहुत घी पेड़ी हुई रोटी, चूड़ी।

चूर्ण॰ना॰ पु॰ रेणु, बुकनी।

चूल॰ना॰ स्त्री॰ एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ी में डालते हैं, किवाड़के खूंटे नीचे ऊपर के।

चूल्हा॰ना॰ पु॰ } आग रखने

चूल्ही॰ना॰ स्त्री॰ } वा रोटी पकाने की वस्तु।

चूसना॰स॰ क्रि॰ पीलेना, सुड़ुकना।

चूहड़ा॰ना॰ पु॰ मेहतर, भङ्गी

चूहड़ी॰ना॰ स्त्री॰ भङ्ग

चूहा॰ना॰ पु॰ मूश, मूष,

चूही॰ना॰ स्त्री॰ ...री।

...स्तु जिसमें

चेंचो॰ना॰... रखते हैं।

चुहचुहा० गु० जोगहिरा रङ्गागया।

चुहचुहाना।० अ० क्रि० गहिरा रङ्गाजाना, पक्षियों का शब्द जो प्रातःकाल होता है।

चुहल० ना० स्त्री० चर्चा चहलबहल।

चुहला।० गु० ठठोल, हंसोड़ा।

चूंगी० ना० स्त्री० चुङ्गी।

चूंची० ना० स्त्री० कुच, मिठनी, थन।

चूंटा० ना० पु० पृथ्वी में रहनेहारा जन्तु विशेष।

चूंटी० ना० स्त्री० छोटा चूटा वा उसकी स्त्री।

चूक० ना० स्त्री० भूल, भ्रम, पौधा विशेष गु० खट्टा, विशेष ना० पु० औषधि विशेष।

चूकना।० अ० क्रि० भूलना, धोखा देना।

चूका।० ना० पु० खट्टासाग।

चूची० ना० स्त्री० चूंची।

चूड़० ना० स्त्री० सोने वा चांदी की वस्तु जो विधवा पहिनती हैं, ना० पु० कड़ा विशेष जो हाथी के दांतों में पहिनाते हैं, खाटकी पट्टी का सिरा वानोक।

चूड़ा।० ना० पु० संस्कार की रीति से प्रथम मुण्डन, लाख की चूंडी, ललाट के ऊपर बंधे हुये केश, चर्बण विशेष।

चूड़ाकरण०, चूड़ाकर्म० } ना० पु० मुण्डन

चूड़ामणि० ना० स्त्री० कङ्कण की मणि।

चूड़ी० ना० स्त्री० स्त्रियोंकेहाथ में पहिरने के लिये जो चांदी वा लाख वा कांच की बनती है।

चूत० ना० स्त्री० योनि, भग।

चूतड़० ना० पु० नितम्ब, जङ्घा का ऊपरि भाग, पुट्ठा।

चूतिया० ना० पु० उल्लू, अह-मक़।

चून० ना० पु० आटा, पिसान।

चूना० ना० पु० चूर्ण, जो पान में लगाते हैं, मिट्टी वा पत्थर वा कङ्कर वा सीप जली हुई अ० क्रि० टपकना, रसियाना, चूवना।

चूनी० ना० स्त्री० दला हुआ उड़द आदि, खुद्दी।

चूमकपत्थर० ना० पु० चुम्बक।

चूमना० स० क्रि० चूमालेना, मच्छीलेना।

चूमा० ना० पु० सीठी, मच्छी।

चूर० ना० स्त्री० बुकनी, चूर्ण।

चूरन० ना० पु० चूर्ण।

चूरना० स० क्रि० चूर्णकरना।

चूरा० ना० पु० रेतन, बूरा, चूड़ा।

चूरी० ना० स्त्री० बहुत घी पड़ी हुई रोटी, चूड़ी।

चूर्ण० ना० पु० रेणु, बुकनी।

चूल० ना० स्त्री० एक लकड़ी का सिरा जो दूसरी लकड़ी में डालते हैं, किवाड़ के खूंटे नीचे ऊपर के।

चूल्हा० ना० पु० } आग रखने
चूल्ही० ना० स्त्री० } वा रोटी पकाने की वस्तु।

चूसना० स० क्रि० पीलेना, सुड़ुकना।

चूहड़ा० ना० पु० मेहतर, भङ्गी।

चूहड़ी० ना० स्त्री० भङ्गन।

चूहा० ना० पु० मूश, मूषक।

चूही० ना० स्त्री० छोटा मूश, उसकी स्त्री।

चेंचो० ना० स्त्री० वस्तु जिसमें सूई रखते हैं।

चेंचेंकरना० अ० क्रि० चुड़कना।

चेंड़ा० ना० पु० यौवन, छोटा।

चेंप० ना० पु० वृक्ष का फल वा लासा।

चेटक० ना० पु० सेवक, नौकर, भगर विद्या।

चेटकी० ना० गु० इन्द्रजाल, ख्यालदिखानेहारा, ना० स्त्री० दासी, सेवकिन्।

चेटी० ना० स्त्री० दासी, लौंडी।

चेत० ना० पु० स्मरण, होश, याद, शुद्धि।

चेतक० गु० चेतकरनेहारा, चेतमें हो।

चेतका० ना० स्त्री० मरा, चिता, रामचन्द्रिका यां, मनो चेतका में सती सत्त धारी।

चेतकी० ना० स्त्री० हर्र।

चेतना० स० क्रि० स्मरणकरन ध्यानलगाना, विचारन सुधिमें आना, ना० स्त्री बुद्धि।

चेता० गु० चेतकरनेहारा।

चेरा० ना० पु० चेला, चाक सेवक।

चेराई० ना० स्त्री० दास सेवकाई।

चेरी० ना० स्त्री० चेली, दासी

चेरे० ना० पु० चेरा का बहुव क्य।

चेला० ना० पु० लौंडा, दा शिष्य।

चेली० ना० स्त्री० लौंडी, दा शिष्य।

चेवली० ना० स्त्री० रेशमीव विशेष।

चेष्टा० ना० स्त्री० शरीरकाव्य पार, उद्योग, अभ्यास

चैत० ना० पु० चैतमास।

चैतन्य॰गु॰ चौकस, सुचेत, प्राणी, जीवत, ना॰ पु॰ आत्मा, परमात्मा।

चैतन्यता॰ना॰ स्त्री॰ चौकसी, सुचेतता, ईश्वरता।

चैन॰ना॰ पु॰ सुख, कल, जोतनाबोना।

चैनो॰गु॰ जोतीबोई धरती, सुखकरनेहारा।

चैला॰ना॰ पु॰ ईंधन के लिये चीरीलकड़ी का टुकड़ा।

चैत्र॰ना॰ पु॰ प्रथम मास, चैत।

चोंकना॰स॰ क्रि॰ चुभाना, गड़ाना।

चोंगा॰ना॰ पु॰ नली, नलूआ, चल्लू, निधन।

चोंच॰ना॰ स्त्री॰ टोंट, चञ्चु।

चोंचला॰ना॰ पु॰ चोचला।

चोंटला॰ना॰ पु॰ जिसमें चोटीगुंधते हैं, चोटी।

चोंथना॰स॰ क्रि॰ बकोटना, नोचना।

चोंप॰ना॰ स्त्री॰ चाह, इच्छा, उल्लास।

चोआ॰ना॰ पु॰ सुगन्धि द्रव्य विशेष, फली, टपका।

चोआड़॰ना॰ पु॰ पहाड़िया, जाति विशेष।

चोकर॰ना॰ पु॰ आटेकीभसी, रई, रवा।

चोखा॰गु॰ खरा, शुद्ध, सच्चा, तीक्ष्ण, सूक्ष्म।

चोखाई॰ना॰ स्त्री॰ खराई, शुद्धता, सचाई।

चोखी॰ना॰ स्त्री॰ खरी, गाने बजाने में शुद्धस्वर।

चोगा॰ना॰ पु॰ खाना जो छोटी चिड़िया को खिलाते हैं।

चोचला॰ना॰ पु॰ चुचकारी, गांवली, फुसलाहट।

चोट० ना० स्त्री० घाव, चपेट, पछाड़, पटकन, डाह, धोखा।

चोटा० ना० पु० बट्टा, जूसी।

चोटियाना० स० क्रि० चुटालना, लंगड़ाकरना।

चोटी० ना० स्त्री० शिखा, शिखर, झोंटी।

चोट्टा० ना० पु० चोर।

चोट्टी० ना० स्त्री० चोर स्त्री, चोरकी स्त्री।

चोथ० ना० पु० छोथ, गोबर।

चोथना० स० क्रि० फाड़ना, नोचना।

चोदना० स० क्रि० मैथुनकरना, स्त्री प्रसङ्ग।

चोदू० ना० पु० चुदवैया।

चोन्धला० गु० चुन्धला।

चोन्धलाना० अ० क्रि० चुन्धलाना।

चोन्धी० ना० स्त्री० धुन्ध, धुन्धलाई।

चोप० ना० स्त्री० चोंप, मग्नता, चाह।

चोपना० अ० क्रि० चाहना, इच्छा करना।

चोभा० ना० पु० कील, कीला

चोभी० ना० स्त्री० छोटा, चोभा

चोया० ना० पु० छिलका, देवलो, सुगन्धि वस्तु विशेष।

चोर० ना० पु० चोट्टा, ठग, तस्कर, डाकू।

चोरटी० ना० स्त्री० चोरनारि

चोरमहीचिनि० ना० स्त्री० आंखिमुदौनाखेल, लुक लुकौरी।

चोराना० स० क्रि० चोरी करना।

चोरी० ना० स्त्री० ठगई, डकैती, तस्करता।

चोल० ना० पु० मजीठ।

चोलना।०ना० पु० बड़ाकुर्त्ता, अंगरखा।
चोला।०ना०पु० शरीर, जामा, अंगरखा, वस्त्रविशेष।
चोली०ना० स्त्री० अंगिया।
चोवा।०ना० पु० चोआ।
चोष्य०गु० चूसने के योग्यवस्तु, आम्रादि।
चौ।०ना०पु० पिछलेदांत, लोहा जो नांगल के मुनि पर लगारहता है, गु० चार।
चौअन्नी०ना० स्त्री० रुपये का चौथाभाग।
चौक०ना० स्त्री० झिझक, भटक, औरएका एक जागना।
चौंकना०अ० क्रि० झिझकना, जागना।
चौंकेल०ना० पु० झिझकारा, बनैला।
चौंगा।०ना० पु० फुसलाहट, छल।
चौंगी०ना० स्त्री०फुसलाहट।
चौंतरा।०ना० पु० चौतरा, चबूतरा।
चौंतीस० गु० तीस और चार ३४।
चौंध०ना० स्त्री० आंखतिरमिराना।
चौंधियाना।०अ०क्रि०घबराना, व्याकुल होना।
चौंरी०ना० स्त्री० चमर, लाख घोड़ेकूड़े।
चौक०ना० पु० गुदड़ी का बाज़ार, हाट, कटरा, आंगन, चारिका समूह, बेदी पूरना।
चौकड़ा।०ना० पु० दो मोती का बाला, चारि का समूह।
चौकड़ी०ना० स्त्री० कूद, उछाल मोतीका बाला जोपुरुष पहिनते हैं।

चौकन्ना॰ गु॰ चौकस, चैतन्य।
चौकभरना॰ स॰ क्रि॰ चौक पूरना।
चौकल॰ ना॰ पु॰ चारिकला, चारि टुकड़ा।
चौकला॰ ना॰ पु॰ मियाना, पालकी।
चौकस॰ गु॰ सावधान, सुचेत, सुर्त्ता, निपुण, पूरा ताल।
चौकसाई॰ ना॰ स्त्री॰ सुचेती, सुर्त्त।
चौकसी॰ ना॰ स्त्री॰ धुन, रक्षा।
चौका॰ ना॰ पु॰ लीपा हुआ स्थान, चारि कोने का स्थान, आगे के चारि दांत, चारि पूरी आदि का एक चौका।
चौकी॰ ना॰ स्त्री॰ काष्ठ का चौकोना आसन कुर्सी, पहरा, पहरा का स्थान, फ़ारसी शब्द है।

चौकोना॰ }
चौकोर॰ } गु॰ चौखूंटा।
चौखट॰ ना॰ पु॰ द्वार के चारो ओर का काठ।
चौखूंटा॰ गु॰ जिसके चारो ओर समान हैं।
चौगड़ा॰ ना॰ पु॰ लम्बा, खरगोश, ससा।
चौगान॰ ना॰ पु॰ जनहीन निर्जन स्थान, खेल विशेष फ़ारसी शब्द में।
चौगानी॰ ना॰ स्त्री॰ हुक्के की सीधी न ली।
चौगुण॰ }
चौगुना॰ } गु॰ चारि बेर का
चौघड़ा॰ ना॰ पु॰ चारि घ[illegible] का पाच।
चौघा॰ ना॰ पु॰ चारों ओर चारों तरफ़।
चौंच॰ ना॰ पु॰ चोंच, टोंट
चौड़ा॰ गु॰ चकला।

चौड़ाई० ना० स्त्री० } पाट, चकलाई, बड़ाई।
चौड़ान० ना० पु०

चौड़ाना० स० क्रि० चकलाना, फैलाना।

चौडोला० ना० पु० पालकी विशेष।

चौतरा० ना० पु० चबूतरा, फ़ारसी शब्द है।

चौतारा० ना० पु० चारि तारकाबाजाविशेष।

चौताल० ना० पु० रागिनी विशेष, बाजा विशेष, ताल विशेष।

चौतुक० ना० पु० चौबोला छन्द।

चौथ० ना० स्त्री० चतुर्थांश, चौथियाई।

चौथा० गु० चतुर्थ।

चौथाई० ना० स्त्री० चौथा भाग, चतुर्थांश।

चौथि० ना० स्त्री० ४ तिथि।

चौथिया० ना० पु० चौथलेन हारा।

चौथियाई० ना० स्त्री० चौथाई।

चौथी० ना० स्त्री० चतुर्थी।

चौदन्त० गु० बलवन्त, चारि दांत का।

चौदन्ती० ना० स्त्री० बहादुरी, सूरमापन।

चौदस० ना० स्त्री० चौदहवीं तिथि, चतुर्दशी।

चौदह० गु० चतुर्दश १४।

चौदानियां० ना० पु० } चारि मोती का बाला।
चौदानी० ना० स्त्री०

चौधर० गु० बलवन्त।

चौधराई० ना० स्त्री० चौधरी का काम।

चौधरी० ना० पु० जातिका प्रधान, मुखिया, प्रधान, बाज़ार का मुखिया।

चौपट० गु० उजाड, सरपट।

चौपड़ ० ना० स्त्री० खेल जो पांसे से खेला जाता है।

चौपतिया ० } ना० स्त्री० छो-
चौपत्ती ० } टी पत्थी, पौधा विशेष।

चौपहला ० ना० पु० चारिपटका।

चौपाई ० ना० स्त्री० चारिपद का छन्द।

चौपाड़ ० } ना० पु० बैठक,
चौपार ० } घरविशेष।

चौपाला ० ना० स्त्री० पालकी विशेष।

चौपाय ० ना० पु० चौवा।

चौवार ० ना० पु० चौपाड़।

चौबारा ० ना० पु० ऊसारा, अङ्गन।

चौबीस ० गु० बीसऔरचार २४।

चौबे ० ना० पु० चतुर्व्वेदी, जाति विशेष, मथुरा तीर्थ के पुरोहित।

चौमासा ० ना० पु० बरसात परहिल।

चौमुख ० ना० पु० ब्रह्मा, चौमु खी दीवट, चारोंओर।

चौमुखा ० ना० पु० पट विशेष चारमुख की दीवट।

चौमुखी ० ना० स्त्री० रुद्राक्ष फल।

चौर ० ना० पु० चोर।

चौरकर्म ० ना० पु० चोरी।

चौरङ्ग ० ना० पु० दांव विशेष बैलआदि के चारोंपां एकचपट में काटना।

चौरभय ० ना० पु० चोरों का डर।

चौरस ० गु० समान, एकसा।

चौरसाना ० स० क्रि० समान करना।

चौरसाई ० ना० स्त्री० साधाई समानता।

चौरा ० ना० पु० चबूतरा चौतरा।

चौरानवे॰ गु० नब्बे और चार ९४।

चौरासी॰ गु० अस्सी औरचार ८४।

चौराहा॰ ना० पु० मार्गचारों ओर जाने का।

चौरी॰ ना० पु० चौवार, धोई रूई लाख।

चौलड़ा॰ ना० पु० } चारिलड़कीमाला वा कोई वस्तु।
चौलड़ी॰ ना० स्त्री० }

चौला॰ ना० पु० अन्नविशेष।

चौलाई॰ ना० स्त्री० साग विशेष।

चौवा॰ ना० पु० पशु, चतुष्पाद।

चौवाई॰ ना० स्त्री० आंधी, झक्कड़।

चौसठ॰ गु० साठिऔरचार ६४।

चौसर॰ ना० पु० चार लड़का हार, चोपड़।

चौहट॰ } ना० पु० चौराहा, चौसरका बाज़ार।
चौहट्टा॰ }

चौहत्तर॰ गु० सत्तर औरचार ७४।

चौहान॰ ना० पु० राजपूत जाति विशेष।

च्युत॰ गु० पतित, झटित, बदला।

च्युतता॰ ना० स्त्री० पवन, बदल।

च्युति॰ ना० स्त्री० योनि, गुदा।

[छ]

छः॰ गु० षट्, ६।

छकड़ा॰ ना० पु० गाड़ी, शकट।

छकड़ाना॰ स० क्रि० चौंधियाना, चकराना।

छकना॰ अ० क्रि० सन्तुष्टहोना, भरना, तृप्तहोना, दुखित, व्याकुल।

छकाई॰ ना० स्त्री० तृप्ति, सन्तुष्टता।

छकाना॰ स० क्रि० सन्तुष्टकरना, तृप्तकरना, पेटभर भोजन कराना।

छक्काड़॰ना॰ स्त्री॰ थप्पड़, गु॰ छः दांतका पशु आदि।

छक्का॰ ना॰ पु॰ छःका समूह, खेल विशेष, जालसहित पिंजरा।

छगरी॰ ना॰ स्त्री॰ बकरी।

छगल॰ ना॰ पु॰ बकरी।

छगुली॰ ना॰ स्त्री॰ कनिष्ठिका, पांचवीं अंगुली।

छछुन्दर॰ } ना॰ स्त्री॰ मूश
छछूंदर॰ } जो राति को निकलता है और कुवासित होता है।

छज॰ गु॰ झाडखाड।

छज्जा॰ ना॰ पु॰ बरामदह।

छज्जी॰ ना॰ स्त्री॰ सज्जी।

छज्जन॰ ना॰ पु॰ दादुविशेष।

छछनाना॰ अ॰ क्रि॰ सनसनाना, सर्राटा देना, चरपराना।

छटना॰ ना॰ पु॰ चलना, विशेष, अ॰ क्रि॰ घटना, बिछुड़ना, भिनभिन होना।

छटा॰ ना॰ स्त्री॰ उजाला, चमचमाहट, विजली, कौंधा, गु॰ चुनाहुआ, छांटा हुआ।

छटांक॰ ना॰ स्त्री॰ सेर का सोलहवां भाग।

छटाना॰ स॰ क्रि॰ चुनवाना।

छटे॰ ना॰ पु॰ उजेले का बहु वाक्य, गु॰ बनेहुये, चुनेहुये, अलगभये।

छट्ठ॰ ना॰ स्त्री॰ षष्ठी, छठ।

छट्ठी॰ ना॰ स्त्री॰ छठवीं, षष्ठी जन्मने से पीछे छठेदिन का व्यवहार।

छठ॰ ना॰ स्त्री॰ षष्ठी, छट्ठी।

छठी॰ ना॰ स्त्री॰ छट्ठी।

छड़॰ ना॰ पु॰ भालेकी लकड़ी, डंडा, डांठी और छ[illegible] आंखमें सफ़ेद दाग़।

छड़ना॰ स॰ क्रि॰ चावलों का छांटना।
छड़ा॰ गु॰ अकेला, ना॰ पु॰ कान वा पांव में पहिरने का भूषण।
छड़ाना॰ स॰ क्रि॰ चावल साफ़ कराना।
छड़िया॰ ना॰ पु॰ ड्योढ़ीवान, आसाबरदार, ना॰ स्त्री॰ छोटीगली, कोलिया।
छड़ियाना॰ स॰ क्रि॰ छड़ी से मारना।
छड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ बेत, बांसकी सूखीलकड़ी, छिकुनी।
छड़ीला॰ ना॰ स्त्री॰ जटामासी।
छण॰ ना॰ पु॰ क्षण।
छणटना॰ अ॰ क्रि॰ दुर्बल होना, घटना, निकलना।
छणटवाना॰ स॰ क्रि॰ छिलका उतरवाना।
छणटाई॰ ना॰ स्त्री॰ छांटने का काम।
छणटाव॰ ना॰ पु॰ काड़ों, धानो का कूटना।
छणडना॰ स॰ क्रि॰ छोड़ना तजना, चलाना।
छणडाना॰ स॰ क्रि॰ छुड़ाना
छणिडत॰ गु॰ छोड़ागया।
छणडुआ॰ ना॰ पु॰ छूट, छोड़
छणडौती॰ ना॰ स्त्री॰ छुट्टी छोड़ना।
छत॰ ना॰ स्त्री॰ घरके ऊपरकी गच वा पाटन।
छतकुम्भक॰ ना॰ स्त्री॰ कनेर, कन्देल, यथा करवी राश्वेत पुष्पा, अश्वहा छत कुम्भक: इतिनि-घण्ट:।
छतना॰ ना॰ पु॰ छत्ता।
छति॰ ना॰ स्त्री॰ हानि, घटा, छत।
छत्तर॰ ना॰ पु॰ छत।

छत्ता० ना० पु० मधु माखी का घर, बर्रों का घर।

छत्तीस० गु० तीस और छः ३६।

छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल-घूंघटी, चालाकी।

छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्न वा औषधि।

छदन० ना० पु० पत्ता।

छदाम० ना० स्त्री० टुकड़ा, पैसे की चौथाई।

छद्म० ना० पु० कपट, छल, फ़रेब।

छद्मिका० ना० स्त्री० मजीठ, गु० छलिनी।

छनना० अ० क्रि० टपकना, निचुरना, साफ़ होना।

छनाक० ना० पु० छन, माटी का भांड़ा टूटने का शब्द।

छनाका० ना० पु० तुरन्त जल जाना पानी का आग में।

छनिक० ना० पु० क्षणिक।

छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि।

छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल।

छन्दना० अ० क्रि० गठना, बन्धना।

छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल।

छन्दी० गु० छली० कपटी।

छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छानने का।

छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषण विशेष।

छन्नू० गु० छान ने हारा।

छप० ना० पु० जल में कुछ वस्तु गिरने का शब्द।

छपई० ना० स्त्री० छः पद का छन्द।

छपकली० ना० स्त्री० जन्तु विशेष।

छपकाना० स० क्रि० पानी डालना।

छपकी० ना० स्त्री० जन्तु विशेष।

छुपना० अ०क्रि० छापा होना, लुकना।

छुपरा० ना० पु० छप्पर।

छुपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।

छुपरी० ना० स्त्री० डबरा।

छुपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पैसा।

छुपाका० ना० पु० जलमें मारनेसे जो शब्द।

छुपाना० स० क्रि० छपवाना, छिपाना।

छुप्पन० गु० पचास और छः ५६।

छुप्पर० ना० पु० तृण का छत।

छुप्परखट० ना० पु० बड़ा पलङ्ग जिसके ऊपर कपड़ाकीपोशिश होतीहै।

छुपड़ा० ना० पु० टोकरा विशेष।

छुबीला० गु० रूपवान्, सुन्दर।

छुबीस०
छुब्बीस० } गु० बीस और छः २६।

छुम० गु० समर्थ।

छुमकट० गु० कपटी, छिनला, और व्यभिचारी।

छुमछुमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, बजना।

छुय० ना० पु० क्षय।

छुयरोग० ना० पु० क्षयरोग।

छुर० ना० स्त्री० जटामासी, फड, दगड़ा, जल्दी, शिताबी।

छुरछोबी० ना० स्त्री० झा फिरने का स्थान।

छुरस० ना० पु० षट्‌रस।

छुरी० ना० स्त्री० छड़ी।

छुर्दायन० ना० पु० खीरा

छुर्दि० ना० स्त्री० वमन, ओकना।

छत्ता० ना० पु० मधु माखी का घर, बर्रे का घर ।

छत्तीस० गु० तीसऔरछ: ३६ ।

छत्तीसी० ना० स्त्री० छिनाल-घूंघटी, चालाकी ।

छद० ना० पु० पत्ता, पुनर्न वा औषधि ।

छदन० ना० पु० पत्ता ।

छदाम० ना० स्त्री० टुकड़ा, पैसे की चौथाई ।

छद्म० ना० पु० कपट, छल, फ़रेब ।

छद्मिका० ना० स्त्री० मजीठ, गु० छलिनी ।

छनना० अ० क्रि० टपकना, निचुरना, साफ़होना ।

छनाक० ना० पु० छन, माटी का भांड़ाटूटनेका शब्द ।

छनाका० ना० पु० तुरन्तजल जानापानीका आग में ।

छनिक० ना० पु० क्षणिक ।

छन्द० ना० पु० पद्य, रचना, गायत्र्यादि ।

छन्दगति० ना० स्त्री० छन्दों की चाल ।

छन्दना० अ० क्रि० गठना, बन्धना ।

छन्दबन्द० ना० पु० छलबल, छल ।

छन्दी० गु० छली० कपटी ।

छन्ना० ना० पु० कपड़ा दूध आदि छानने का ।

छन्नी० ना० स्त्री० छोटा छन्ना, भूषण विशेष ।

छन्नु० गु० छान ने हारा ।

छप० ना० पु० जलमें कुछवस्तु गिरने का शब्द ।

छपई० ना० स्त्री० छ: पदका छन्द ।

छपकली० ना० स्त्री० जन्तु विशेष ।

छपकाना० स० क्रि० पानी डालना ।

छपकी० ना० स्त्री० जन्तु विशेष ।

छपना० अ०क्रि० छापा होना, लुकना।

छपरा० ना० पु० छप्पर।

छपरिया० ना० स्त्री० छोटा छप्पर।

छपरी० ना० स्त्री० डबरा।

छपाई० ना० स्त्री० छापने का काम वा पेसा।

छपाका० ना० पु० जलमें मारनेसे जो शब्द।

छपाना० स० क्रि० छपवाना, छिपाना।

छप्पन० गु० पचास और छ: ५६।

छप्पर० ना० पु० तृण का छत।

छप्परखट० ना० पु० बड़ा पलङ्ग जिसके ऊपर कपड़ाकीपोशिशहोतीहै।

छपड़ा० ना० पु० टोकरा विशेष।

छबीला० गु० रूपवान्, सुन्दर।

छबीस०
छब्बीस० } गु० बीस और छ: २६।

छम० गु० समर्थ।

छमकाट० गु० कपटी, छिनला, और व्यभिचारी।

छमछमाना० अ० क्रि० चमकना, झलकना, बजना।

छय० ना० पु० क्षय।

छयरोग० ना० पु० क्षयरोग।

छर० ना० स्त्री० जटामासी, फड, दगड़ा, जल्दी, शिताबी।

छरछोबी० ना० स्त्री० भा फिरने का स्थान।

छरस० ना० पु० षट्रस।

छरी० ना० स्त्री० छड़ी।

छर्दीयन० ना० पु० खीरा

छर्दि० ना० स्त्री० बमन, ओकना।

छानबीन० नाο स्त्रीο विचार, जांच।

छानबे०गुο नब्बेऔर छ:९६।

छानस० नाο पुο चोकर, भूसी, बूरा।

छाना० सο क्रिο छाजना, छाया करना, पाटना, छप्परबनाना,ठहरना।

छानी० नाο स्त्री० छप्पर।

छाप० नाο स्त्री० मुद्रा, मुहर, अपना चिह्न।

छापना० सο क्रि० छापाकरना, चिह्न देना।

छापा० नाο पुο वैष्णवियों का तिलक, मुद्रा।

छापाविद्या० नाο स्त्रीο जिसके द्वारा अनेक पुस्तक छापी जाती हैं, सब वस्तुजानी जातीहैं।

छाम० गुο दुबला, हलका।

छाया० नाο स्त्रीο परछाईं, छांह, पिशाच, भूत।

छायानट०नाο पुο रागिनी विशेष।

छायाधर०नाο पु० इत्तादि।

छायापाद०नाο पुο छायाके परिमाण से समय का स्थिरकरना।

छार०नाο स्त्रीο खार, ढेला जोबड़ाहै।

छारछबीला०नाο पुο सुगन्धि वस्तु विशेष।

छारी०नाο पुο खारी, श्रीमहादेवजी।

छारू०नाο पुο निनावां।

छाल०नाο स्त्रीο बकला, छिलका।

छाला०नाο पुο फफोला, चमड़ा, खाल, फुल्का।

छालियां०नाο स्त्रीο सुपारी विशेष।

छावना०सο क्रिο छाना।

छावनी॰ना॰ स्त्री॰ पलटन के रहने का स्थान, लैन, छाने का काम।

छाह॰ना॰ स्त्री॰ छांह।

छिउनी॰ना॰ स्त्री॰ छड़ी, कमची।

छिक्का॰ना॰ स्त्री॰ छींक।

छिकिका॰ना॰ स्त्री॰ नकछिकनी पौधा।

छिगुनी॰ } ना॰ स्त्री॰ कनि-
छिङ्गुली॰ } ष्ठिका, कनगुरिया।

छिचड़ा॰ना॰ पु॰ घावका नया चमड़ा।

छिचड़ेला॰ना॰ पु॰ दुबला, चमचिचड़।

छिछड़ा॰ना॰ पु॰ खलड़ी, छेवर।

छिछला॰गु॰ उथला।

छिछलाई॰ना॰ स्त्री॰ उथलाई।

छिछली॰ना॰ स्त्री॰ खेलविशेष, थोड़ीगहरी।

छिछोड़ा॰गु॰ ओछा, हलका, नीच।

छिटकना॰अ॰ क्रि॰ फैलना, बिथरना।

छिटकनी॰ना॰ स्त्री॰ बिल्ली, जो किवाड़ों में लगती है।

छिटकाना॰स॰ क्रि॰ फैलाना, बिथराना।

छिटकी॰ना॰ स्त्री॰ छर्रा, छींट।

छिड़कना॰स॰ क्रि॰ छींटना, बिथराना।

छिड़काना॰ स॰ क्रि॰ छिंटवाना, सिंचाना।

छिड़काव॰ ना॰ पु॰ सींच, सिंचाव।

छिड़ना॰ अ॰ क्रि॰ चिढ़ना, दुखी होना।

छिड़ाना॰ स॰ क्रि॰ चिढ़ाना, चढ़वाना, दुखाना।

छितनिया० } ना० स्त्री०
छितनी० } डलिया ।

छितरना० अ० क्रि० बिथरना, फैलना ।

छितराना० स० क्रि० बिथराना, फैलाना ।

छिति० } ना० स्त्री० क्षिति
छिती० } धरती, जमीन ।

छिदना० अ० क्रि० बिंधना, गड़ना; स० क्रि० रोकना, रोकनेका कामकरना ।

छिदनी० ना० स्त्री० छेदने की वस्तु ।

छिदाना० स० क्रि० छेद कराना, रोकाना ।

छिद्र० ना० पु० छेद ।

छिन० ना० पु० क्षण लमहा ।

छिनकना० स० क्रि० नाक स्वच्छ करना ।

छिनला० ना० पु० व्यभिचारी, पर स्त्री गामी ।

छिनवाना० स० क्रि० औ
किसी से खिंचवाना

छिनाल० ना० स्त्री० व्यभि
चारिणी, कुलटा ।

छिनाला० ना० पु० व्यभि
चार, कुलटापन ।

छिनेक० ना० पु० क्षणेक ।

छिन्न० गु० खण्डित, क्षीण, दुर्ब

छिन्नभिन्न० गु० अलग
तित्तर बित्तर ।

छिन्ना० ना० स्त्री० गुर
मद्दा मुराडी ।

छिपकली० ना० स्त्री० ग
गोधिका, टिकटिकी ।

छिपका० ना० पु० छिड़का

छिपना० अ० क्रि० लुकन
गुप्त होना ।

छिपा० गु० लुका, गुप्त, अप्रका

छिपाना० स० क्रि० गुप्तकरन
लुकाना ।

छिपाव० ना० पु० लुकाव
लुकाव, गोपन ।

छिप्र॰ ना॰स्त्री॰शीघ्र,शिताबी।
छिभोद्भवा॰ना॰स्त्री॰गुरच।
छिमा॰ ना॰ स्त्री॰ क्षमा।
छिमाजोग॰ गु॰ क्षमायोग्य।
छियालीस॰ गु॰ चालीस और छः ४६।
छियासठ॰ गु॰ साठ और छः ६६।
छियासी॰ गु॰ अस्सी और छः ८६।
छिलका॰ ना॰ पु॰ बकला, फलादि के ऊपर की त्वचा विशेष।
छिलना॰अ॰क्रि॰रगड़जाना, उधड़ जाना।
छिलाना॰ स॰ क्रि॰कटवाना, रगड़ाना।
छिलैया॰ ना॰ पु॰ छीलने हारा।
छिलौरी॰ ना॰ स्त्री॰ अङ्गुली की कोर पर फुड़िया, घिनही।

छी॰ अव्य॰तुच्छ करने का वाक्य।
छींक॰ ना॰ स्त्री॰ सिनक, प्रसिद्ध, अतसः।
छींकना॰ अ॰ क्रि॰ ब्रह्माण्डसे पवन उतरना।
छींका॰ ना॰पु॰रस्सी काजाल जिसमें वस्तु रखके लटका देते हैं।
छीछड़ा॰ ना॰ पु॰ चमड़े के समान अभक्ष्यमांस।
छीजना॰ अ॰ क्रि॰ घटना, गिरना।
छींट॰ना॰स्त्री॰छिटकी, छींट।
छींटना॰ स॰ क्रि॰ बिथराना, पानी छिड़कना।
छीनना॰ स॰क्रि॰ झटकलेना, खींचना।
छीप॰ ना॰स्त्री॰छांई, लहसुन, जिस लकड़ी में बडिस का सूत बांधते हैं, सींग से ढकेलना॥

छीपना॰ स॰ क्रि॰ पानी छिड़क देना, छीप निकालना, वस्त्र छापना।

छीपी॰ ना॰ पु॰ वस्त्र छापने हारा।

छीमी॰ ना॰ स्त्री॰ फली, छिलका।

छीलन॰ ना॰ पु॰ काटना, कतरन।

छीलना॰ स॰ क्रि॰ काटना, कतरना, छिलका उतारना, छीलना।

छुङ्गलिया॰ ना॰ स्त्री॰ छगुनी।

छुछकारना॰ स॰ क्रि॰ तुच्छ करके निकालना, छुलकारना।

छुछवाना॰ स॰ क्रि॰ गाड़ना, फूकना।

छुटकारा॰ ना॰ पु॰ छुड़ाव, उद्धार।

छुटखेलना॰ अ॰ क्रि॰ लुच्चापन करना।

छुटखेला॰ गु॰ लुच्चा, बदमाश।

छुटना॰ अ॰ क्रि॰ उद्धार होना, निकलना,

छुटान॰
छुटानी॰ } ना॰ स्त्री॰ सुबीता, छुट्टी।

छुटापा॰ ना॰ पु॰ छुटाई, छोटापन।

छुट्टी॰ ना॰ स्त्री॰ छुटकारा, उद्धार, रुखसत।

छुड़वाना॰ स॰ क्रि॰ छुटकारा कराना।

छुतहरा॰ गु॰ जो अपवित्र हो गया, नापाक।

छुद्र॰ गु॰ क्षुद्र, नीच, हलका, नकछिकनी।

छुद्रघण्टिका॰
छुद्रमेखला॰ } ना॰ स्त्री॰ क्षुद्रघण्टिका, तागड़ी, करधनी।

छुद्रा॰ ना॰ स्त्री॰ पतुरिया, छोहारा, अङ्कूर, कटा पौधा, नीच, स्त्री॰ नदी

छुधा। ना॰ स्त्री॰ भूख।

छुपना। अ॰ क्रि॰ लुकना, गुप्त होना।

छुपाना। स॰ क्रि॰ लुकाना, छिपाना।

छुपा। गु॰ लुका, गुप्त, छिपा, अप्रकट।

छुरा। ना॰ पु॰ बड़ी छुरी, बाल मूंड़ने का अस्त्र।

छुरिका। ना॰ स्त्री॰ पालक का साग, छुरी।

छुरी। ना॰ स्त्री॰ चाकू, लम्बा चाकू।

छुलकना। } अ॰ क्रि॰ थोड़ा
छुलछुलाना। } थोड़ा मूतना।

छुलाना। स॰ क्रि॰ छुवाना, छिलाना।

छुहाना। स॰ क्रि॰ उजलाना।

छुहारा। ना॰ पु॰ वृक्ष वा उसका फल विशेष।

छुहावट। ना॰ स्त्री॰ लगावट।

छूआना। स॰ क्रि॰ स्पर्श कराना, छुलाना।

छूई। ना॰ स्त्री॰ दूधिया मट्टी, खड़ियामट्टी।

छूकी। ना॰ स्त्री॰ मच्छड़।

छूछला। गु॰ बोदला, बावला।

छूछा। गु॰ शून्य, खोखला, ख़ाली।

छूछी। ना॰ स्त्री॰ कुत्सित, अपमानी, नीच, ख़ाली।

छूट। ना॰ स्त्री॰ बट्टा, छुड़ाव, भूषण की चमक।

छूटना। अ॰ क्रि॰ छुटना, निकलना।

छूत। ना॰ स्त्री॰ अपवित्रता, नापाकी।

छूना। स॰ क्रि॰ स्पर्श करना।

छेंक। ना॰ स्त्री॰ रोक।

छेंकना। स॰ क्रि॰ रोकना।

छेंकवैया। ना॰ पु॰ रोकवैया।

छेकाव॰ना॰ पु॰ रुकाव।

छेड़॰ना॰ स्त्री॰ खिजावट, दुखाव।

छेड़ना॰स॰ क्रि॰ खिजाना, दुखाना।

छेद॰ना॰ पु॰ छिद्र, मुख, सूराख़।

छेदक॰ना॰ पु॰ छेदकर्त्ता, बेधक।

छेदन॰ना॰ पु॰ छेद, बेधन।

छेदना॰स॰ क्रि॰ बेधना, बरमाना।

छेना॰ना॰पु॰खिरसा, छेवना।

छेनी॰ना॰स्त्री॰छेवनी, छेदनी।

छेम॰ना॰ स्त्री॰ क्षेम, कुशल।

छेमङ्करी॰ना॰ स्त्री क्षेमङ्करी, भला चाहनेवाली।

छेरी॰ना॰ स्त्री॰ बकरी।

छेल॰ }
छेलक॰ } ना॰ पु॰ बकरी।

छेव॰ना॰ पु॰ पाछ, फटा
चिराव।

छेवना॰स॰ क्रि॰ छेटना, क
टना, फाड़ना।

छेवनी॰ना॰ स्त्री॰ कट
टांकी।

छेवा॰ना॰ पु॰ पुस्तकोंमें ठ
रावकेस्थानकाचिह्न।

छेत्र॰ना॰ पु॰ क्षेत्र, खेत।

छेत्रफल॰ना॰ पु॰ क्षेत्रफल

छैया॰ना॰ पु॰ छोकरा।

छैल॰ }
छैलचिकनिया॰ } गु॰ बां
छैला॰ } चिकनि
अकड़ैत।

छोआ॰ना॰ पु॰ जूसी।

छोकड़ा॰ }
छोकरा॰ } ना॰ पु॰ लड़क

छोछो॰ना॰स्त्री॰ अन्नी, गोद

छोटा॰गु॰ कनिष्ठ, लघु, अल

छोटाई॰ना॰ स्त्री॰ थोड़ाई, छोटापा।

छोड़ना॰स॰ क्रि॰ त्यागना, क्षमाकरना।

छोड़ा॰ / छोड़ाव॰ / छोड़ावा॰ } ना॰पु॰छुटकारा, छुट्टी, उद्धार।

छोड़ावना॰स॰ क्रि॰ छुटकारा कराना, उद्धार कराना।

छोड़ौती॰ना॰ स्त्री॰ छुट्टी, छूट।

छोनी॰ना॰ स्त्री॰पृथ्वी,धरती, क्षोणि।

छोप॰ना॰ पु॰ एकबार रङ्ग भरना, भरन।

छोपन॰स॰ क्रि॰ भरदेना, रंगदेना।

छोर॰ना॰ पु॰ किनारा, कगर, सिरा।

छोरना॰स॰ क्रि॰छोड़ना।

छोरा॰ना॰ पु॰ लड़का।

छोराछोरी॰ना॰ पु॰ लड़का लड़की।

छोरी॰ना॰ स्त्री॰लड़की,पुत्री।

छोलना॰स॰ क्रि॰ छीलना।

छोलनी॰ना॰स्त्री॰ छोलनेका अस्त्र, खुर्पी।

छोह॰ना॰ पु॰ स्नेह,प्रेम,दया।

छोहरा॰ना॰ पु॰ लड़का।

छोही॰गु॰स्नेही,प्रेमी,चाहक।

छौंकन॰ना॰ पु॰ बघार।

छौंकना॰स॰ क्रि॰ बघारना।

छौकन॰ना॰ पु॰ झपटा झपटी करनेहारा।

छौकना॰स॰ क्रि॰ झपटाझपटी करना।

छौना॰ना॰ पु॰ जन्तुकाबच्चा, बच्चा।

छौनी॰ना॰ स्त्री॰ छावनी, छपरबन्दी करना।

क्षौर०ना० पु० मुण्डन।

क्षौरक०ना० पु० नाई, नाऊ।

क्षौरकर्म्म०ना० पु०. मुण्डना, बालमुण्डाना, हजामत बनवाना।

[ज]

ज०अव्य० शब्द के अन्त में संयुक्त होकर उत्पत्ति का बोधक होता है।

जकड़ना०स० क्रि० कसना, बांधना।

जकड़बन्द०ना०पु०अकड़वाई।

जग०ना० पु० जगत, संसार, यज्ञ,और जहांजासके।

जगच्चक्षु० ना० पु० सूर्य्य।

जगजगा०ना० पु० पीतल की पन्नी।

जगजगाहट०ना० स्त्री० चमचमाहट।

जगजीवन०ना० पु० पानी, ईश्वर।

जगण०ना० पु० गणविशेष।

जगत०ना० पु०संसार,दुनि[...] टेक।

जगता०गु० जो सोता न[...] अनींदा।

जगती०ना० स्त्री० धर[...] पृथ्वी, लोग।

जगत्प्राण०ना० पु० पव[...] ईश्वर।

जगदम्बा०ना० स्त्री० आ[...] शक्ति, देवी, भवा[...] जगतकी माता।

जगदादि०ना० पु० पृथ्वी[...] आरम्भ।

जगदाधार०ना० पु० श[...] दिग्गज,गौआदि, ईश्वर।

जगदीश०ना० पु० परमा[...] विष्णु, शिव, राजा [...] राज।

जगधर०ना० पु० शेषजी।

जगना०अ० क्रि० नींदसेउठ[...] चेतना।

जगन्नाथ॰ना॰ पु॰ पुरुषोत्तम, उड़ेसा देश में श्रीकृष्णचन्द्रजी।

जगन्मित्र॰गु॰ सब का दोस्त, सबका मित्र।

जगन्मित्रता॰ना॰ स्त्री॰ सब की मित्रता रखना।

जगमगा॰गु॰ चमकीला।

जगमगाना॰अ॰ क्रि॰ चमकना, झमकना।

जगयोनि॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

जगवल्लभा॰ना॰ स्त्री॰ वेश्या, पतुरिया।

जगह॰ना॰ स्त्री॰ठौर, धरती, समाइ, गुञ्जायश।

जगाजोति॰ना॰ स्त्री॰ चटक, भड़क।

जगाना॰स॰ क्रि॰ सोते से उठाना।

जगेसर॰ना॰ पु॰ यज्ञेश्वर।

जघन॰ना॰ पु॰ उरस्थल।

जघन्य॰गु॰ नीच।

जङ्गम॰ना॰ पु॰ चलनेवाल भेषधारी, गु॰ जोचल ने की सामर्थ्य रखत है, वैरागी।

जङ्गल॰ना॰ पु॰ बन, अरण्य

जङ्गला॰ना॰पु॰रागिनीविशेष

जङ्गली॰ना॰ पु॰ बनैला, बन वासी।

जङ्घ॰ना॰ पु॰ जांघ,रान।

जङ्घा॰ना॰ स्त्री॰ जांघ,जानु

जचना॰अ॰ क्रि॰ अटकलाजा ना, परीक्षा होजाना

जचाना॰स॰ क्रि॰ अटकलक राना,कसवाना, परीक्ष कराना।

जचावट॰ना॰ स्त्री॰ परीक्षा जांच।

जञ्जाल॰ना॰ पु॰ उलझेड़ा दुख, क्लेश।

जञ्जाली॰गु॰ क्लेशी, दुःख दाता।

जट० ना० स्त्री० जटा।

जटना० स० क्रि० चिपटजाना, मूंड़ना।

जटा० ना० स्त्री० बिगड़े हुये बाल, भूत्रौरा।

जटाधारी० गु० जटारखनेवाला।

जटामासी० ना० स्त्री० छड़ औषधि।

जटायु० ना० पु० गिद्धविशेष।

जटित० गु० जड़ाहुआ, जड़ाऊ।

जटिल० गु० पुराना, जटाधारी।

जटी० ना० पु० बरगद वृक्ष, शिवजी।

जठर० ना० पु० पेट, उदर।

जठरानल० ना० पु० पेटकी अग्नि।

जठेरा० गु० बड़ा, जेठा।

जठेरी० ना० स्त्री० बड़ी, बूढ़ी।

जड़० ना० स्त्री० मूल, गु० मूर्ख, स्थावर, निर्जीव, दुष्ट, निशाचर।

जड़न० ना० स्त्री० जड़ने का काम।

जड़ना० स० क्रि० लगाना, जोड़ना।

जड़पेड़० ना० स्त्री० समूचा पेड़, अर्थात् सब।

जड़वट० ना० स्त्री० स्तम्भ।

जड़हन० ना० पु० धान जो कातिक अगहन में काटा जाता है।

जड़ाई० ना० स्त्री० जड़ने का काम, वा जड़ने का पैसा।

जड़ाऊ० गु० मणि मुक्तादि से जड़ा भया, जड़ा हुआ।

जड़ाना० स० क्रि० जड़वाना, जाड़ा खाना।

जड़ाव० ना० पु० जड़ने का काम।

जड़ावर॰ ना० स्त्री॰ जड़े के कपड़े।

जड़ित॰ गु० जटित, जड़ा-हुआ।

जड़िनी॰ गु० स्त्री० जड़ स्त्री, दुष्टिनी।

जड़िया॰ ना० पु० जड़ने वाला, जौहरी, सुनार।

जड़ी॰ ना० स्त्री० औषधि, पौधे की जड़।

जत॰ ना० स्त्री० रीति, डौल।

जतन॰ ना० स्त्री० यत्न, तदबीर।

जतनी॰ ना० स्त्री० यत्नी, तद-बीर करने वाला।

जताना॰ स॰ क्रि० बुझाना, चिताना, बताना।

जतारा॰ ना॰ पु० वंश, घराना, पीढ़ी।

जती॰ ना० गु० यती, संन्यासी, शान्त।

जतु॰ ना० स्त्री० लाख।

जतुआ॰ ना० पु० लढ़ी का खूंटा।

जथा॰ अव्य॰ यथा, ना० पु० समूह।

जथार्थ॰ अव्य॰ यथार्थ, सच, ठीक।

जद॰ अव्य० यदा, जब।

जदु॰ ना० पु० यदु।

जदुनाथ॰, जदुनायक॰, जदुपति॰ } ना० पु० श्री कृष्ण चन्द्रजी।

जदुवंशी॰ गु० यदुवंशी।

जद्यपि॰ अव्य० यद्यपि।

जन॰ ना॰ पु० मनुष्य लोग, नौकर।

जनक॰ ना० पु० पिता, श्री सीताजी के पिता।

जनकपुर॰ ना० पु० पिता का गांव, वा नगर, तिर-हुत नगर।

जनता॰ ना॰ स्त्री॰ लोग, वा लोगों का समूह, मनुष्यता, आदमियत।

जनन॰ ना॰ पु॰ जन्म, उत्पत्ति।

जनना॰ अ॰ क्रि॰ जन्म होना।

जननी॰ ना॰ स्त्री॰ माता, महतारी।

जनरव॰ ना॰ पु॰ लोगों का शब्द।

जनलोक॰ ना॰ पु॰ लोक विशेष, जिसमें साधु लोग मरने के पीछे वास करते हैं।

जनयित्री॰ ना॰ स्त्री॰ माता, जननी।

जनवासा॰ ना॰ पु॰ जहां बरात ठहरती है।

जनश्रुति॰ ना॰ स्त्री॰ सन्देशा, समाचार।

जनहाई॰ } अव्य॰ मनुष्य,
जनहार॰ } मनुष्य सहित, प्रत्येक, हरएक।

जना॰ ना॰ पु॰ लोग, मनुष्य, गु॰ पुत्र उत्पन्न हुआ, भया।

जनाई॰ ना॰ स्त्री॰ जो स्त्री लड़का जन्माती है, दिखाई।

जनाजात॰ अव्य॰ जनहाई।

जनाती॰ गु॰ कन्या के ओर के बराती, बरातीलोग।

जनाना॰ स॰ क्रि॰ उत्पन्न कराना, जनाना, चिताना, दिखाना।

जनार्द्दन॰ ना॰ पु॰ श्रीकृष्णजी।

जनाव॰ ना॰ पु॰ जताव, लखाव।

जनिका॰ ना॰ पु॰ द्व्यर्थ जिसका दो प्रकार अर्थ होवे।

जनित॰ गु॰ उत्पन्न भया, उपजा।

जनी॰ ना॰ स्त्री॰ दासी, बहू, ब्यानी।

जनु॰ ना॰ पु॰ जन्म उत्पत्ति, अव्य॰ मानो।

जनुक॰ अव्य॰ जानो।

जनेऊ॰ ना॰ पु॰ यज्ञोपवीत।

जनेत॰ ना॰ पु॰ बरात।

जनेवा॰ ना॰ स्त्री॰ तृणविशेष, कांधा सोटी।

जनेश॰ ना॰ पु॰ राजा।

जनो॰ ना॰ पु॰ जनेऊ।

जन्ता॰ ना॰ पु॰ तार खींचने का यन्त्र।

जन्ताना॰ स॰ क्रि॰ दबाना, निचोड़ना।

जन्तार॰ ना॰ पु॰ यन्त्र।

जन्तु॰ ना॰ पु॰ जीव धारी, क्षुद्र जीव।

जन्तुक॰ ना॰ पु॰ हींग।

जन्तुहनन॰ ना॰ पु॰ विडङ्ग औषधि।

जन्म॰ ना॰ पु॰ उत्पत्ति, पैदा-यश।

जन्मदाता॰ ना॰ पु॰ पिता।

जन्मदिन॰ ना॰ पु॰ वर्षबन्धन, वर्ष गांठ।

जन्मना॰ अ॰ क्रि॰ उपजना, पैदा होना।

जन्मपत्री॰ ना॰ स्त्री॰ जन्म-कुण्डली, लग्न कुण्डली, ज़ायचह।

जन्मभूमि॰ ना॰ स्त्री॰ } उत्प-
जन्मस्थान॰ ना॰ पु॰ } त्ति का घर वा स्थान।

जन्माना॰ स॰ क्रि॰ उपजाना, पैदाकराना।

जन्मान्तर॰ ना॰ पु॰ और जन्म।

जन्मान्तरीय॰ गु॰ अगले जन्म का उपार्जित।

जन्मान्ध॰ गु॰ जन्म का अन्धा।

जन्मोत्सव० ना० पु० जन्म होने का आनन्द, तथा जन्मोत्सव ।

जन्यजनकभाव० ना० पु० उत्पन्न किया हुआ और उत्पन्न की हुई वस्तु इन का सम्बन्ध ।

जप० ना० पु० पाठ, मन्त्रादिकाउच्चारण ।

जपन० ना० पु० मन्त्रउच्चारण, पाठ ।

जपना० स० क्रि० मन्त्रादि का उच्चारण ।

जपन्ता० गु० जापक ।

जपमाला० ना० स्त्री० जपने की माला ।

जपा० ना० पु० जड़हुड़ का फूल ।

जपी० गु० जापक ।

जपीतपी० ना० पु० अर्चक, भजनीक ।

जब० अव्य० यदा ।

जबड़ा० ना० पु० जभा ।

जबड्डा० गु० अकड़ा, अनाड़ी ।

जबड्डिया० गु० कुरूप ।

जभा० ना० पु० जबड़ा ।

जम० ना० पु० यम, मृत्युगण ।

जमअनुजा० ना० स्त्री० यमुनाजी ।

जमक० ना० पु० यमक, पहिला शब्द छन्द का ।

जमकना० अ० क्रि० बनना, निभना, ठहरना ।

जमकाना० स० क्रि० बनाना, ठहराना, बैठाना ।

जमघट० ना० पु० मण्डली, भीड़ ।

जमजम० अव्य० निरन्तर, सदा

जमदग्नि० ना० पु० परशुराम के पिता ।

जमदूत० ना० पु० यमदूत ।

जमधर० ना० पु० कटार ।

जमना० अ० क्रि० उगना, ठह-रना, जमजाना।

जमराज० ना० पु० यमराज।

जमल० गु० दो, २।

जमहाई० ना० स्त्री० आलस्य वश होकर मुख का पसारना।

जमहाना० अ० क्रि० जमहाई लेना।

जमाई० ना० स्त्री० जामात, दामाद।

जमाना० स० क्रि० उगाना, बांधना, एकट्ठा करना, बटोरना, बैठाना।

जमालगोटा० ना० पु० औषधि विशेष।

जमाव० ना० पु० भीड़, बऊ-तात।

जमावट० ना० स्त्री० बंधावट।

जमी० ना० स्त्री० रात, यमी, यमुनाजी।

जमोगना० स० क्रि० सहजाना।

जमोघ०
जमोघा० } ना० पु० जमविशेष जो लड़कों को लगता है।

जमना० अ० क्रि० बढ़ना, पन-पना।

जम्बाल० ना० पु० सिवाल, बालू।

जम्बीर०
जम्बीरक० } ना० पु० नीबू।

जम्बु० ना० पु० गीदड़, शृगाल, जमुनाटच।

जम्बुक० ना० पु० गीदड़, शृगाल।

जम्बुमाली० ना० पु० प्रहस्त का पुत्र, राक्षस विशेष।

जम्बूद्वीप० ना० पु० पृथ्वी के सातद्वीपों मेंसे एक का नाम।

जम्भभेदी० ना० पु० इन्द्र।

जम्भल०
जम्भीर० } ना० पु० जम्भीरी नीबू।

जय० ना० स्त्री० पराभवकरना, उन्नति, गु० जित्ता, जयति आशिष।

जयजयकार० ना० पु० पराभवहोना, शत्रुका बड़ाई कावा जीतिकाबोधक।

जयजयवन्ती० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

जयढाक० ना०पु०ढोलविशेष।

जयत० ना० पु० वृत्तविशेष।

जयति० क्रि० जीति हो।

जयनगर० ना०पु० राजपूताने की राजधानी।

जयन्त० ना० पु० इन्द्रकापुत्र।

जयन्ती० ना० स्त्री० दुर्गादेवी, वृक्ष विशेष।

जयन्तीपुर० ना० पु०शिलहट सेदक्षकोसपरकादेशजिसको जयन्ता कहते हैं।

जयबेर० गु० जितनेवार।

जयमान० जयवन्त० जयवान्० } गु० जयकरनेहा-रा, जीतनेवाला

जयवती० ना० स्त्री० अग्निकी जिह्वा विशेष, गु० जीत-न हारी।

जया० ना० स्त्री० हर, विष्णु-क्रान्ता, भांग, देवी वि०

जयी० गु० जय करने हारा

जर० ना० पु० जड़, ज्वरविशेष

जरण० ना० पु० जीरा सुफ़ेद जलन।

जरन० अ० क्रि० जलन।

जरना० अ० क्रि० जलना।

जरा० ना० स्त्री० बुढ़ापा वृद्धावस्था।

जरांस० ना० पु० ज्वरांश।

जराना० स० क्रि० जलाना।

जरायजरी० गु०स्त्री०जड़ाऊ

जरायु० ना०स्त्री०कोष,पेटकुहि

जरायुज० ना० पु० जो कोष से उत्पन्न हो, जो भिल्ली से उत्पन्न हो, अर्थात् मनुष्यादि ।

जरासन्ध० ना० पु० मगधका राजा, जरानाम राक्षसी से जोड़ागया ।

जर्जर० गु० निर्ब्बल, जांजर, जीर्ण ।

जर्जरी० ना० पु० लहसुन ।

जल० ना० पु० पानी ।

जलअलि० ना० पु० पानी का भंवर ।

जलकन्द० ना० पु० सिंघाड़ा ।

जलकामा० ना० स्त्री० ऊंधा होली ।

जलक्रीड़ा० ना० स्त्री० पानीमें का खेल ।

जलकुक्कुड़०, जलकुक्कुट० ना० पु० पनडुब्बी, मुर्ग़ाबी ।

जलखानि० ना० पु० मेघ, समुद्र, नदी ।

जलगोजक० ना० पु० चिलगोज़ा ।

जलचर० गु० जलजन्तु, पनिहा, जलके चरनेहारे जन्तु ।

जलचरेश० ना० पु० मगरमच्छ, ग्राह ।

जलज० ना० पु० कमल, गु० जो कुछ जलमें उपजे ।

जलजन्तु० ना० पु० जलमें रहनेहारे जीव ।

जलजन्त्र० ना० पु० बम्बा, फ़व्वारह जलयन्त्र ।

जलजला० गु० महाक्रोधी ।

जलजलाना० अ० क्रि० आगहोजाना, झुंझलाना ।

जलजलाहट० ना० स्त्री० कोप, क्रोध, झुंझलाहट ।

जलजात० ना० पु० कमलादि ।

जलजान० ना० पु० नाव, जहाज़ ।

जलमधु० ना० स्त्री० मुलहटी

जलतरङ्ग० ना० पु० बाजा विशेष, जलकी लहरि।

जलतरङ्गी० ना० स्त्री० बाजा विशेष बजानेवाला।

जलतरण० ना० पु० तैरना, नाव वा जहाज़ चलाने की विद्या।

जलथल० ना० पु० जल और स्थल।

जलद० ना० पु० मेघ।

जलधर० ना० पु० मेघ, समुद्र।

जलधार० } ना० स्त्री० पानी
जलधारा० } की धारा।

जलधि० ना० पु० समुद्र।

जलन० ना० पु० ज्वलन, तप, क्रोध।

जलना० अ० क्रि० बरना, दह-कना।

जलनिधि० ना० पु० समुद्र।

जलनीम० ना० पु० औषधि, विशेष।

जलन्धर० ना० पु० रोगविशे[ष]
जिसमें रोगी पानीबहुत
पीता है, राजाविशेष

जलपाई० ना० स्त्री० वृक्षविशेष

जलपान० ना० पु० पानीपीना
कलेवा।

जलपुट० ना० पु० पानी क[ा]
बर्त्तन।

जलबल० गु० जो जलने [से]
नाशगया, ना० पु० पा[नी]
केवल।

जलमय० ना० पु० जलार्णव
प्रलय।

जलमानुष० ना० पु० मनुष[्य]
रूपी जलजन्तु।

जलमार० ना० पु० विष, ज़हर

जलमाल० ना० स्त्री० नदी।

जलराशि० ना० पु० समुद्र।

जलरुह० ना० पु० कमल।

जलवैया० ना० पु० जला[नेवाला]
द्वारा।

जलशायी० ना० पु० विष्णु, नारायण।

जलसैनी० ना० स्त्री० जलमें सोना, जलमें रहना, तपस्या विशेष, मत्स्य।

जलसूत० ना० पु० नहरुवा।

जला० ना० स्त्री० झील।

जलाकार० ना० पु० जल का आकार।

जलाना० स० क्रि० बालना, दाहना।

जलबला० } गु० चिड़चिड़ा,
जलाभुना० } क्रोधी।

जलार्णव० ना० पु० जलप्रलय, जलका समुद्र।

जलावन० ना० पु० ईंधन।

जलाशय० } ना० पु० तालाब,
जलाश्रम० } पोखर।

जलाश्रय० ना० पु० जलके भरोसे।

जलिया० ना० पु० कहार, धीमर, मछुआ।

जलेबी० ना० स्त्री० मिठाई, विशेष।

जलेश० ना० पु० वरुणदेव, समुद्र।

जलोद० ना० पु० क्षीरोद, मेघ।

जलोदर० ना० पु० जलन्धर।

जलौका० ना० स्त्री० जोंक।

जल्पना० अ० क्रि० बकना, निजबड़ाईकरना, अस्वार्थ बात कहना।

जल्पाक० गु० बकवादी, निजबड़ाई करनेहारा।

जव० ना० पु० यव, जौ, जल्दी

जवन० ना० पु० यवन, घोड़ा

जवस्या० ना० स्त्री० हर्र।

जवनेष्ट० ना० पु० लहसुन।

जवा० ना० पु० अंगुलीकी गांठि में चिह्न, पुष्पविशेष ।

जवाह्वा० ना० स्त्री० अजवाइन् ।

जवाद० ना० स्त्री० केसर ।

जवाधिक० ना० पु० घोड़ा ।

जवानी० ना० स्त्री० अजवाइन् खुरासानी ।

जवानिक०, जवासाह्वा० } ना० पु० अजवाइन् ।

जवाखार० ना० पु० औषधि टक्षविशेष ।

जवासा० ना० पु० कांटीला विशेष ।

जस० ना० पु० यश ।

जसत०, जसता० } ना० पु० धातुविशेष ।

जसयत०, जसयति०, जसवन्त०, जसस्वी०, जसी० } गु० कीर्त्तिमान्, प्रतिष्ठित, यशी, यशस्वी ।

जसुमति०, जसोदा०, जसोमति० } ना० स्त्री० नन्दरानी, यशोदा ।

जहर्षभी० ना० स्त्री० कौंचबीज ।

जच० अव्य० जहां, यत्र ।

जह्नु० ना० पु० मुनिविशेष ।

जह्नुसुता० ना० स्त्री० गङ्गाजी ।

जहां० अव्य० जच, यच, जिसस्थान में, जिधर ।

जहीं० अव्य० जिसकिसीजगह ।

जा० सर्व० जिस ।

जाई० गु० जनी, ना० स्त्री० बेटी ।

जांगर० ना० पु० पिण्डलीसमेत जांघ, घुटना ।

जांघ० ना० स्त्री० जङ्घा, जानु ।

जांघिया० ना० पु० काछना ।

जांच० ना० स्त्री० अटकल, परख, कस ।

जांचना॰स॰ क्रि॰ कसना, परखना, देखना, दुहराना, ठीककरना, परीक्षा करना।

जांता॰ना॰ पु॰ पाषाण का यन्त्रजिसमें गेहूं पीसते हैं, चक्की।

जाकड़॰ना॰ पु॰ जाकट, बन्धक, शहना।

जाकर॰ना॰ पु॰ जिसहाथ में, सर्व॰ जिसका।

जाग॰ना॰ पु॰ निद्राका त्याग, यज्ञ।

जागत॰ना॰ स्त्री॰ चौकसाई।

जागतीज्योति॰ गु॰ अद्भुत पराक्रमी।

जागना॰स॰क्रि॰नींदसेउठना, चेतना।

जागरण॰ना॰पु॰नींदकात्याग, रातिको व्रतादि में जागना।

जागल॰ना॰पु॰ श्यामअगरु।

जागा॰ना॰ पु॰ जातिविशेष।

जागू॰ना॰ पु॰ जागनेहारा।

जाग्रत्॰ना॰ स्त्री॰ स्वप्न और सुषुप्ति से भिन्न अवस्था।

जाङ्गली॰ना॰ पु॰बिधारा।

जाचक॰ना॰ पु॰ याचक, मागनेहारा।

जाचना॰स॰ क्रि॰ मांगना, चाहना।

जाचा॰गु॰ मांगा, चाहा।

जाच्यमान॰गु॰ मागा वा चाहा भया, अधमदान।

जाजक॰ना॰ पु॰ झांझ वा ढोलक बजानेहारा।

जाजा॰ना॰ स्त्री॰ कलौंजी।

जाजामन्ती॰ ना॰ स्त्री॰ जय जयवन्ती।

जाट॰ना॰ पु॰ राजपूतों में जातिविशेष।

जाठ॰ना॰ स्त्री॰ कोल्हू की धुरी।

जाड़॰ना॰ स्त्री॰ मसूड़ा।

जाड़ा॰ना॰ पु॰ शीत, ठंड, शीतकाल।

जाड़ी॰ना॰ स्त्री॰ दांतों की पांति।

जाड्य॰ना॰ पु॰ जड़ता, शीतलता, मूढ़ता।

जात॰ना॰ स्त्री॰ जाति, यात्रा, मेला, गु॰ जना।

जातक॰गु॰ पुत्र, बच्चा।

जातकर्म॰ना॰ पु॰ जन्मसंस्कार विशेष यथा छठीआदि।

जातना॰ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, दुःख, दण्ड, वेदन।

जातपांत॰ना॰ स्त्री॰ पीढ़ी, वंशावली।

जातरूप॰ना॰ पु॰ सुवर्ण, कांचन।

जातवेद॰ना॰ पु॰ अग्निदेव।

जाति॰ना॰ स्त्री॰ वर्ण, क़ौम एकरूपसे बहुतसे पिण्डों में समानधर्म, यथापशुत्व, मनुष्यत्व, उत्पन्न।

जातिकोश॰ना॰ स्त्री॰ जावित्री।

जातिपत्री॰ना॰ स्त्री॰ जावित्री, बिरादरी की चिट्ठी।

जातिभ्रष्ट॰गु॰ पापादि के कारण जो जाति से निकालागया वा निकल गया।

जातिवाचक॰गु॰ जिससंज्ञा से जातिमात्र का बोध होवे यथा पशु, पक्षी।

जातिस्तज॰ना॰ पु॰ जायफल।

जाती॰ना॰ स्त्री॰ मालती, जावित्री, पुष्पविशेष।

जात्यायत॰गु॰ जिसक्षेत्र की आमने सामने की भुजा तुल्य और चारों कोण सम हैं।

जात्यत्रिभुज० ना० पु० त्रिकोण जिसका एक कोण सम कोण हो।

जात्रा० ना० स्त्री० यात्रा, चलना।

जात्री० ना० पु० यात्री, जानेवाला।

जान० ना० पु० विमान, सवारी, वाहनादि डीठ, बुन्द, ज्ञान, सब, गु० ज्ञानी।

जानकी० ना० स्त्री० श्रीसीताजी।

जानपहिचान० ना० पु० चिन्हार, मुलाकात।

जाना० अ० क्रि० चलना।

जानु० ना० पु० घुटना, गांठि।

जानो० अव्य० समझा, अ० क्रि० जाना।

जानना० स० क्रि० पहिचानना, समझना।

जाप० ना० पु० जप, पाठ।

जापक० }
जापी० } गु० जपकरनेहारा।

जाब० ना० पु० दाढी।

जाबी० ना० स्त्री० छोटी दाढी।

जाम० ना० पु० पहर।

जामदग्न्य० ना० पु० परशुराम, जमदग्निके पुत्र।

जामन० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष जाउन, जमावन।

जामवन्त० ना० पु० ऋक्षोंका प्रधान विशेष।

जामवन्ती० ना० स्त्री० कृष्णचन्द्र की स्त्री।

जामा० ना० पु० एडीतक पहिरने का वस्त्र विशेष।

जामाता० }
जामातृ० } ना० पु० बेटी का पति।

जामिनी० ना० स्त्री० रात्रि, यामिनी, जमन देशकी भाषा वा वस्तु।

जायपत्री० ना० स्त्री० जावित्री

जायफल० ना० पु० फलविशेष।

जाया० ना० स्त्री० पत्नी, स्त्री, भार्य्या, गु० जनी।

जार० ना० पु० उपपति, यार, दूसरापति।

जारज० } ना० पु० विजन्मा,
जारजात० } शंकरवर्णी, उपपति जाता, यार का जन्माया।

जारन० ना० पु० जलावन।

जारना० स० क्रि० जलाना, फूकना, दाहना।

जारल० ना० पु० काष्ठविशेष।

जाल० ना० पु० जिससे मछली आदिपकडते हैं झंझरी, माया, पाखण्ड, भंवर, फांसी।

जालगि० अव्य० जिसलिये, सर्व० जिसकेलिये।

जालरन्ध्र० ना० पु० झरोखा, जालीका।

जाला० ना० पु० जिसको मक
डी बनाती है, घटा
मोतियाविन्दु।

जालिका० ना० स्त्री० झंझरी

जालिनी० ना० स्त्री० मुरहर
देवदाली।

जालिया० ना० पु० छलिया
जालवाला।

जाल० ना० स्त्री० बहुतछिद्र
की खिडकी वा कपड
आदि।

जालौन० ना० पु० बुन्देलखण
का नगर विशेष।

जावक० ना० पु० आलता, मह
वर, सेंधुर।

जावका० ना० स्त्री० लौंग।

जावनी० ना० स्त्री० अजवाइन्

जावा० ना० पु० उपद्वीपविशेष

जावां० ना० पु० दो पुत्र जो
एकहीसाथ उत्पन्न हों

जावालि० ना० पु० मुनिविशेष

जाविनी० ना० स्त्री० वृक्षविशेष की छाल।

जासु० सर्व्व० जिससे जिसको।

जान्हवी० ना० स्त्री० गङ्गाजी।

जाहि० सर्व्व० जिसको।

जाही० ना० स्त्री० जूही, जाती।

जिगजिगिया० गु० चापलूसी करनेवाला।

जिगजिगी० ना० स्त्री० लपट सपट, चापलूसी।

जिगना० ना० पु० वृक्षविशेष।

जिगीषा० ना० स्त्री० इच्छा, जयकी इच्छा।

जिङ्गणी० ना० पु० जिगना।

जिजिया० ना० स्त्री० बड़ीब-हन, चूंची।

जिठनिया० } ना० स्त्री० जेठ
जिठानी० } की स्त्री।

जितना० ना० पु० } परिमाण
जितनी० स्त्री० } वा अवधि
वा संख्या का बोधक।

जितयोनि० ना० पु० हरिण

जिता० } गु० परिमाण वा
जितेक० } अवधि वा संख्या
बोधक।

जितेन्द्रिय० } ना० पु० जिसने
जितेन्द्री० } इन्द्रियों को
वश किया है।

जिधर० अव्य० यत्र, जहां।

जिन० ना० पु० ऋषिविशेष।

जिभारा० गु० गप्पी, जोकठोर
बात कहता है।

जिम० अव्य० जिमि, यथा, जैसे

जिमाना० स० क्रि० खिलाना

जिमि० अव्य० यथा, जैसे।

जिय० } ना० पु० आत्मा
जियरा० } प्राण, जान।

जियाना० स० क्रि० जिलाना प्राण दान देना ।
जियावना० स० क्रि० जियाना।
जियौट० गु० स्त्री० सूरता, सूर, योद्धा ।
जिलाना० स० क्रि० प्राणदान देना, जीता करना ।
जिवाना० स० क्रि० जिमाना, जिलाना ।
जिष्णु० ना० पु० अर्जुन, इन्द्र ।
जिस० सर्व० सम्बन्ध में आता है ।
जिहि० सर्व० जिस ।
जिह्म० ना० पु० कपट, मूढ़ता ।
जिह्मकर० गु० कपटी, छली ।
जिह्मग० ना० पु० बाण, तीर ।
जिह्वग० ना० पु० सर्प, सांप ।
जिह्वता० ना० स्त्री० अधिक-वार्त्ता की शक्ति ।
जिह्वा० ना० स्त्री० रसना, जीभ ।
जिह्वाग्र० ना० पु० मुखाग्र, ज़बानी ।
जिज्ञासा० ना० स्त्री० जानने की इच्छा ।
जिज्ञासी० } गु० अभिलाषी,
जिज्ञासु० } जानने की इच्छा रखने हारा ।
जिज्ञास्य० गु० जानने के योग्य है ।
जी० ना० पु० जीव, प्राण, मर्यादा का सूचक ।
जीका० ना० स्त्री० जीविका
जीड़ुराना० स० क्रि० सिकोड़ना ।
जीत० ना० स्त्री० जय, फ़तह ।
जीतना० स० क्रि० जयकरना, हराना ।
जीतब० ना० पु० आत्मा, हिया, ज़िन्दगी ।
जीतवन्त० } ना० पु० जिस
जीतवैया० } की जय हुई जयमान ।

जीता० गु० प्राणधारी अर्थात् मरानहीं ।

जीति० ना० स्त्री० जय जीत ।

जीतिया० ना० स्त्री० लड़कों के जीने के लिये स्त्रियों का व्रत विशेष ।

जीतू० ना० पु० जयवन्त, जीत वैया ।

जीना० अ० क्रि० जीतारहना ।

जीभ० ना० स्त्री० जिह्वा, रसना, ज़बान् ।

जीभारा० गु० गप्पी, बक्की ।

जीभी० ना० स्त्री० जीभ का मैल उतारनेकीवस्तु ।

जीमना० स० क्रि० खाना, भोजन करना ।

जीमार० गु० जो हनने के योग्य है, निज इच्छा मारने द्वारा ।

जीमूत० ना० पु० मेघ, देवदाली ।

जीरक० ना० पु० ज़ीरासफ़ेद ।

जीरन० गु० जीर्ण, पुराना ।

जीरा० ना० पु० औषधि विशेष का बीज ।

जीर्ण० गु० बुड्ढा, पुराना, सड़ा, जाजर ।

जील० ना० स्त्री० गाने में अति तीक्ष्ण स्वर ।

जीव० ना० पु० प्राण, शरीरादिका धारक, बृहस्पति, चन्द्रमा सदाजियो ।

जीवखानि० ना० पु० ईश्वर, अनादिपुरुष ।

जीवगर०, जीवट० } गु० सूर्मा, योद्धा, दृढ़ता ।

जीवड़ा० ना० पु० प्राण, प्रियतम ।

जीवत० गु० जीते ।

जीवदान० ना० पु० रक्षाकरना प्राण बचाना ।

जीवधारी० ना० पु० प्राणी, हैवान् ।

जीवन० ना० पु० जीविका, जन्म से मृत्युतक का काल, जल।

जीवनमूल० ना० स्त्री० जीविकामूल, हयात कीजड़।

जीवना० अ० क्रि० जीता रहना।

जीवनि० ना० स्त्री० } सञ्जीवन बूटी।
जीवनिया० ना० स्त्री० }

जीवन्त० गु० जीता।

जीवन्ती० ना० स्त्री० सञ्जीवन बूटी, गुरच।

जीवभद्रा० } ना० स्त्री० मजीवनबूटी।
जीववर्द्धिनी० }

जीवा० ना० स्त्री० जीवन्ती, जो चापके एकाग्रसे द्वितीयाग्रतक हो।

जीविका० ना० स्त्री० वृत्ति, निर्वाह का उपाय।

जीह० ना० स्त्री० जीभ, रसना।

जीहारना० अ० क्रि० निराश होना, डरसे दब-रहना।

जुआ० ना० पु० छलकर्म, कीट विशेष, माची।

जुआरि० ना० स्त्री० अन्न विशेष।

जुआरी० ना० पु० द्यूत कर्मी छलकारी, दुष्ट।

जुग० ना० पु० युग।

जुगति० ना० स्त्री० युक्ति, स्त्र द्व्यर्थ।

जुगती० गु० छली, चतुर, ठठोल, द्व्यर्थ बोलने हारा उपायी।

जुगनी० ना० स्त्री० } मक्खी जो रात को चमकती है, गले का भूषण विशेष।
जुगनू० ना० पु० }

जुगवना० स० क्रि० रक्षाकरना, बचाना।

जुगवैया॰ना॰ पु॰ जुगवने-हारा।

जुगाना॰स॰ क्रि॰ यत्नकरना, किसी के उपकार हेत उपकार करना।

जुगालना॰स॰क्रि॰पागुराना, पागुरकरना।

जुगाली॰ना॰ स्त्री॰ पागुर।

जुगुप्सा॰ना॰ स्त्री॰ निन्दा, कुत्सा।

जुगुप्सित॰गु॰निन्दित,कुत्सित।

जुभावट॰ना॰ पु॰ युद्ध वा समर भाव।

जुभावना॰स॰ क्रि॰ युद्ध में मरवाडालना।

जुटना॰अ॰ क्रि॰ भिड़ना, मिलना, सटना।

जुटाना॰स॰ क्रि॰ भिड़ाना, मिलाना।

जुटैया॰ना॰ पु॰ भिडैया, लड़ाका।

जुठारना॰स॰ क्रि॰ जूठा करना।

जुड़ना॰अ॰ क्रि॰ मिलजाना, सटिजाना।

जुड़ाई॰ना॰ स्त्री॰ जोड़नेका पैसा, जोड़ने का काम, और जुकाम, श्लेष्मा, ठण्ढ।

जुड़ाना॰स॰ क्रि॰ मिलाना, मिलवाना, अ॰ क्रि॰ ठण्ढाना, सताना, द-मलेना।

जुड़िया॰ } ना॰ पु॰ दोलड़के
जुड़िहा॰ } जो एक साथ उपजें।

जुताई॰ना॰ स्त्री॰ खेतजोतने का काम वा जोतने का पैसा।

जुताना॰स॰ क्रि॰ हलचलाके खेत दुरुस्त कर्ना।

जुतियाना॰स॰ क्रि॰ जूतों से मारना।

जुद्ध०ना० पु० युद्ध।

जुधिष्ठिर०ना०पु० युधिष्ठिर।

जुन्हरी०ना० स्त्री० जुआर।

जुन्हाई०ना० पु० चन्द्रमा, स्त्री० चांदनी।

जुन्हार०ना०स्त्री० अन्नविशेष जुआर।

जुन्हैया०ना० स्त्री० चांदनी, चन्द्रमा।

जुरादेना०स० क्रि० पाना।

जुराना०अ० क्रि० धीरज-होना, स० क्रि० एकट्ठा होना, पाना।

जुरावना०गु० जो पाने के योग्यहे, मिलनहार।

जुरुआ०ना०स्त्री० जोरू, पत्नी।

जुर्ना०अ० क्रि० मिलना, प्राप्त होना, सटना, भिड़ना, एकट्ठा होना।

जुल०ना० पु० छल।

जुवती०ना० स्त्री० युव[illegible] जवान औरत।

जुवराज०ना० पु० युवरा[illegible] वलीअहद।

जुवा०गु० युवा, ना० पु०[illegible] जुआ।

जुवार०ना० पु० अन्न विशे[illegible]

जुवारी०ना० पु० जुआ[illegible] जूपी।

जुहार०ना० पु० सला[illegible] प्रणाम।

जू०अव्य० जी।

जूआ०ना० पु० गाड़ी वा [illegible] का काठ जिसमें [illegible] मचते हैं, माची, [illegible] जूप।

जूआट०ना० पु० जूआ।

जूआरी०ना० पु० जूआखे[illegible] में चतुर।

जूं०ना० स्त्री० चीलड़।

जूझ०ना० पु० युद्ध, समर

जूझना० अ० क्रि० लड़ना, लड़ाई में कटना, अर्थात् लड़मरना ।

जूट० ना० पु० झगड़ा ।

जूठ० ना० पु० खायाभया ।

जूठन० ना० स्त्री० भोजन के पीछे शेष रहना ।

जूठा० गु० जूठ, खायाहुआ ।

जूड़० गु० ठण्ढा, शीतल, ना० पु० शीत ।

जूड़ा० ना० पु० ठण्ढा, शीत, सिरके पीछेगांठि दिये हुये बाल ।

जूड़ी० ना० स्त्री० अन्तरिया, जाड़े का रोग ।

जूता० ना० पु० } पनही, चमड़ेकीपादुका।
जूती० ना० स्त्री० }

जून० ना० पु० समय, काल, वक्त ।

जूना० ना० पु० तृणकी रस्सी, ऐंठीहुई घास ।

जूप० ना० पु० जूआ ।

जूपी० गु० जुआरी ।

जूरा० ना० पु० बालों की गांठि, चोटी ।

जूरी० ना० स्त्री० समूह, जुरी

जूस० ना० पु० परेह, रोगी का पथ्य, शोरबा ।

जूह० ना० पु० समूह, जूआ ।

जूही० ना० स्त्री० पुष्प का वृक्ष बिशेष ।

जे० सर्व० जो, सब ।

जेट० ना० स्त्री० ढेर ।

जेठ० ना० पु० पति का बड़ाभाई, ज्येष्ठ ।

जेठरा० गु० पहिलौठा, पतिका बड़ाभाई ।

जेठा० गु० पहिलौठा, बड़ा, कुसुम का पहिला रङ्ग ।

जेठानी० ना० स्त्री० जेठ की स्त्री ।

जेठी० गु० बड़ी ।

जेठीमधु० ना० पु० मुलहठी।

जेठौत० ना० पु० जेठका पुत्र।

जेता० } गु० जितना।
जेतिक० }

जेब० ना० पु० ख़लीता, पाकट, फ़ारसी शब्द है।

जेयमान० गु० जीतनेवाला, जयमान।

जेर० ना० पु० खेरी।

जेवड़ा० ना० पु० रस्सा, डोर।

जेवना० स० क्रि० खाना, भोजन करना।

जेवनार० ना० स्त्री० खाना, भोजन, यज्ञ।

जेवरी० ना० स्त्री० रस्सी, डोरि।

जेहर० ना० पु० स्त्रियों का भूषण विशेष।

जैत० ना० पु० वृक्षविशेष, रागिनी विशेष।

जैन० ना० पु० नास्तिकों का मत विशेष।

जैनी० गु० जैन मत वाला, स-रावक, सरौगी।

जैमाला० ना० स्त्री० जयमाला, जीति की माला।

जैमिनि० ना० पु० मुनिविशेष।

जैमिनी० गु० ब्रह्मवादी।

जैसा० अव्य० यथा।

जैहैं० अ० क्रि० जायंगे।

जो० सर्व० यह शब्द सम्बन्ध का बोधक है, अव्य० यदा-यदि।

जोआरभाटा० ना० पु० समु के जलका चढ़ा उतार।

जोड़० ना० स्त्री० जोरू, दुलहन

जों० अव्य० जो, यदि, जैसा ज्यों।

जोंक० ना० स्त्री० जलौका, रक पा, जल जन्तु।

जोंकर० अव्य० जिस प्रकार।

जोंहीं० अव्य० जिस समय।

जोख० ना० स्त्री० तोल।

जोखना० स० क्रि० तोलना।

जोखिम० ना० स्त्री० चिन्ता, शङ्का, घटी।

जोखिमी० ना० पु० जोखिम उठाने हारा।

जोखों० ना० स्त्री० जोखिम।

जोग० ना० पु० योग।

जोगमाया० ना० स्त्री० माया रूपी शक्ति जो जोगियों में है जिस करके वह कहते हैं कि हम अपना स्वरूप अपने वश राखें।

जोगवत० क्रि० परखत, राखत, रखत।

जोगा० गु० योग्य।

जोगाभ्यास० ना० पु० जोग का अभ्यास।

जोगिन्० ना० स्त्री० जोगन्, जोगी की स्त्री।

जोगिनी० ना० स्त्री० देवी की सहचरी।

जोगिया० ना० पु० जोगी, गु० रङ्गविशेष, ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

जोगी० ना० पु० योगी, शान्त।

जोगेश्वर० ना० पु० योगेश्वर, तपस्वी, पुजारी, विशेष श्री महादेव जी, श्री-विष्णु नारायण।

जोग्य० गु० योग्य, उत्तम, अच्छा।

जोजन० ना० पु० योजन, चार कोस।

जोट० ना० पु० साथ, जोड़ी, गु० सम।

जोटा० ना० पु० जोड़ा।

जोड़० ना० पु० मेल, गांठ, येगली, मीज़ान्।

जोड़ती० ना० स्त्री० लेखा, गिनती।

जोड़न० ना० पु० सोहागा, सांठन, जामन्।

जोड़ना० स० क्रि० मिलाना, एकट्ठा करना, लगाना, सङ्कलनकरना, धनबटोरना, बनाना, गांठना।

जोड़ा० ना० पु० युग्म, दूसरा, जूता, धोती, एक बार पहिरने के कपड़े।

जोड़ाई० ना० स्त्री० जोड़नेका काम वा पैसा।

जोड़ी० ना० स्त्री० युग्म, दूसरा।

जोत० ना० स्त्री० उजाला, प्रकाश, ज्योति, हल प्रवाह, किरण, टेम, दृष्टि।

जोतना० स० क्रि० नांधना, जुये में लगाना, हलाई करना, खेत बनाना।

जोतमान्० गु० ज्योतिष् मान्, चमकदार।

जोतार० ना० पु० हलवाहा, किसान्।

जोति० ना० स्त्री० जोत, प्रकाश, तारा, द्युति, आंखिआदि की, ईश्वर।

जोतिष० ना० पु० ज्योतिष, नजूम।

जोतिषी० गु० ज्योतिषी, नजूमी।

जोतिस्वरूप० गु० तेजस्वी, एक नाम श्री भगवान का है।

जोती० ना० स्त्री० तराजू के पल्ले की रस्सी, खड़ाऊं की रस्सी।

जोत्स्ना० ना० स्त्री० चन्द्रिका, चन्द्रकला।

जोत्स्नी० ना० स्त्री० रात्रि, रैन, निशा।

जोधन० ना० पु० लड़ाई, समर।

जोधा० ना० पु० योद्धा।

जोन०, **जोनि**० ना० स्त्री० योनि।

जोन्ह०ना० पु० चन्द्रमा, चांदनी।

जोबन०ना० पु० यौवन, छाती, स्तन।

जोबनवती० गु० यौवनवती।

जोबनमा० } ना० पु० जोबन,
जोबना० } यौवन।

जोय०ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, जोरू।

जोयसी० गु० ज्योतिषी।

जोरू० ना० स्त्री० पत्नी, भार्य्या, बीबी।

जोला०ना० पु० छल, धोखा।

जोवत० क्रि० चाहत, देखत।

जोवना० स० क्रि० देखना, ताकना।

जोसी०ना० पु० ज्योतिषी, जाति विशेष।

जोहना० स० क्रि० बाटदेखना, ढूंढना।

जौ०ना० पु० अन्न विशेष, यव
अव्य० जब, यदि।

जौतुक०ना० पु० यौतुक दायज़ा।

जौन० सर्व० जो।

जौलौ० अव्य० जबतक।

ज्या०ना० स्त्री० माता, पृथ्वी, कमान का रोदा।

ज्याना० स० क्रि० पालना, जिलाना।

ज्येष्ठ०ना० पु० जेठकामहीना, बड़ाभाई, गु० श्रेष्ठ, उत्तम।

ज्येष्ठा०ना० स्त्री० १८ अठारहवां नक्षत्र।

ज्योति०ना० स्त्री० जोति, लालचन्दन।

ज्योतिर्गण०ना० पु० तारागण।

ज्योतिष०ना० पु० विद्याविशेष, शास्त्र विशेष, इल्म नजूम।

ज्योतिषी०ना० पु० ज्योतिष शास्त्रका ज्ञाता, नजूमी, पण्डित।

ज्योतिष्मती०ना० स्त्री० मालकंगनी।

ज्योतिष्मान्०गु० प्रतापी, तेजस्वी।

ज्योत्स्ना०ना० स्त्री० चांदनी।

ज्यौनार०ना० स्त्री० खाना, पाक, भोजन।

ज्वर०ना०पु०तप,ताप,बुखार।

ज्वरविनाशिनी०ना० स्त्री० गुरच, मजीठ।

ज्वरा०ना० स्त्री० मृत्यु,मौत।

ज्वरान्तक०ना० पु० चिरायता।

ज्वलन० ना० स्त्री० जलन, आगिकी जीभ विशेष।

ज्वार०ना० पु० अन्न विशेष।

ज्वारी०ना० पु० जूआरी।

ज्वाला०ना० स्त्री० आंच, लौ, लपक, आग।

ज्वालामुखी०ना०स्त्री० स्थान विशेष जिसमें अग्नि सदैव प्रज्वलित रहती है।

[झ]

झंखाड़०ना० पु० विना पत्ते के वृक्ष।

झंझट०ना० पु० झगड़ा, घबराहट।

झंझटी०गु० कठिन,झगड़ालू।

झंझना०गु० चिड़चिड़ा।

झंझनाना०अ० क्रि० टुनटुनाना, बजना, और पड़पड़ाना।

झंझनाहट०ना० स्त्री० चिड़चिड़ाहट, झनकार।

झंझावायु०ना० पु० प्रचण्ड पवन, आंधी।

झंवाना०अ० क्रि० धूपसे कृष्ण वर्ण होना, स० क्रि० झामे से पांव धोना, सुखाना।

झक०ना० पु० क्रोध।

झकझोरी०ना० स्त्री० छीना-छानी।

झकना०अ० क्रि० बकना, बकबक करना, हाय हाय करना।

झकरी०ना० स्त्री० दोहनी।

झकाझक०गु० झलाझल।

झकोर०ना० स्त्री० टोटा, विपत्ति, बोछार।

झकोरना०स० क्रि० चलाना, जैसे आंधी में झड़ी।

झकोरा०ना० पु० झपास, वायुसमेत झड़ी, बौछार।

झकोलना०स०क्रि० डुलाना।

झक्कड़०ना०पु०आंधी, चौबायी।

झक्की०ना० पु० विना प्रयोजन बकवादी।

झखना०अ० क्रि० झंखना।

झगड़ना०अ० क्रि० लड़ना, भिरना।

झगड़ा०ना०पु०लड़ाई, रगड़ा।

झगड़ाना०स० क्रि० झगड़ा कराना, लड़ाना।

झगड़ालिन्०गु०लड़ाकास्त्री।

झगड़ालू०ना० पु० लड़ाका।

झगा०ना० पु० झंगा।

झगुला०ना० पु० कुर्त्ता।

झझा०ना० पु० लम्बीदाढ़ी।

झझकारना०स० क्रि० दबकाना, दबाना।

झझला०ना० पु० मिठाई विशेष।

झञ्झर०ना० पु० झझर।

झञ्झरी०ना०स्त्री०झरोखा।

झञ्झा०ना०स्त्री० झड़ीसमेत आंधी।

झञ्झावायु०ना०पु० प्रचण्ड-पवन, आंधी।

झट०गु०उतावली, अव्य०शीघ्र।

झटक०ना० स्त्री० खसोट, उछाल।

झटकना० स० क्रि० खसोटना, निझोटना, अ० क्रि० दुबला होजाना।

झटका० गु० जो झटकेसे मारा-गया, फाड़ागया, ना० पु० खींच, खसोट।

झटकाना० स० क्रि० झटका, लगाना।

झटपट० अव्य० तुरन्त, शीघ्र।

झटास० ना० पु० झड़ाक, बौछार।

झटिति० अव्य० तुरन्त, शीघ्र।

झड़० ना० स्त्री० झड़ी, ताला विशेष, तालेकीकल।

झड़न० ना० स्त्री० टपकन, जैसे फल पक कर गिरते हैं, बत्ती की टेम का फूल।

झड़ना० अ० क्रि० टपकना, गिरना, पतन होना, निकलना, छनना, नौबत बजना।

झड़प० ना० स्त्री० कडुआहट हमला।

झड़पना० अ० क्रि० लड़ना हमलाकरना।

झड़पाझड़पी० ना० स्त्री० लड़ाई, दपटादपटी।

झड़पाना० स० क्रि० लड़ाना।

झड़बेर० ना० पु० } जङ्गली
झड़बेरी० ना० स्त्री० } बेर।

झड़वाना० स० क्रि० झड़ाना।

झड़ाक० } ना० पु० उता-
झड़ाका० } वली, फुर्त्ती, हड़-बड़ी।

झड़ाझड़० अव्य० चटपट।

झड़ाना० स० क्रि० झाड़दिल-वाना, झाड़ फूक कराना।

झड़ी० ना० स्त्री० लगातार वृष्टि और ऊपरी प्राप्ति।

झड़ौता० ना० पु० फलादिका अन्तसमय।

झगड़ा० ना० पु० ध्वजा, पताका।
झगड़ूला० गु० पत्तों से घना वृक्ष, बालों से घना शिर।
झनक० ना० पु० धातुकी दो वस्तुभिड़ने काशब्द।
झनकना० अ० क्रि० झनझनाना।
झनकार० ना० स्त्री० झंझकार, ठनकार।
झनकारना० स० क्रि० बजाना।
झनवां० ना० पु० धानविशेष।
झप० अव्य० झट, तुरन्त, शीघ्र।
झपकना० स० क्रि० झलना, पंखाहिलाना, अ० क्रि० लपकना, झपटलेना, पलकमारना।
झपकाना० स० क्रि० पलकमारना, मटकाना।
झपकी० ना० स्त्री० लपक, मटकी, नींद।
झपट० ना० स्त्री० लपक, चढ़ाई डांट।
झपटना० अ० क्रि० लपकना, चढ़िदौड़ना।
झपट्टा० ना० पु० धावा, दौड़, लपक।
झपट्टामारना० स० क्रि० झपटलेना।
झपलाना० स० क्रि० खंगालना, धोना।
झपाझपी० ना० स्त्री० उतावली, हड़बड़ी।
झपात० ना० स्त्री० स्फूर्त्ति जल्दी।
झपाना० अ० क्रि० झपकीलेना, ढपाना।
झपास० ना० स्त्री० फूही, झींसी।
झपासिया० गु० छली, अधर्मी
झबकाना० स० क्रि० घाबरा करना।
झबिया० ना० पु० भूषणविशेष

झबुआ॰ पु॰ जिसकुत्तेवा बकरे के बाल बड़े बड़े हों, झुकाझूआ।
झब्बा॰ना॰ पु॰ लटकना।
झमक॰ना॰ स्त्री॰ चमक।
झमकड़ा॰ना॰ पु॰ चटकीला, भटक।
झमकना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, नाचना।
झमका॰ना॰ पु॰ प्रताप, भान।
झमकी॰ना॰ स्त्री॰ झमक, झलक, चमक।
झमझम॰ अव्य॰ लगातार।
झमझमाना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना।
झमरझमर॰ अव्य॰ बूंदबूंदसे।
झमाका॰ना॰ पु॰ झड़ी, वेगताई।
झमाझम॰ अव्य॰ झमझम।
झम्पा॰ पु॰ झपाझूआ, ढकाभया, मा॰ पु॰ चङ्गुल।

झर॰ना॰ पु॰ सोता, झरन झड़ी, जलन।
झरना॰ना॰ पु॰ सोता, झर[illegible] झारने वाला।
झरोखा॰ना॰ पु॰ झंझरी खिड़की।
झझर॰ना॰ पु॰ झंझर।
झर्नी॰ना॰ पु॰ सोता, झाड़[illegible] का कपड़ा, बहुत छेदक[illegible] सूप विशेष, अ॰ क्रि॰ झड़ना, गिरना।
झल॰ना॰ स्त्री॰ क्रोध, जल[illegible] जलाहट, आग की उष्णता।
झलक॰ना॰ स्त्री॰ चमक[illegible] उजाला।
झलकना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना।
झलका॰ना॰ पु॰ फफोला फोला।
झलकाना॰ स॰ क्रि॰ चमकाना उज्ज्वल कराना।
झलकी॰ना॰ स्त्री॰ दृष्टि।

झलझल॰ना॰ पु॰ चमक, लहक।

झलझलाना॰ अ॰ क्रि॰ चमकना, क्रोधितहोना।

झलझलाहट॰ना॰ स्त्री॰ चमक, परपराहट।

झलना॰ स॰ क्रि॰ झपकना, अ॰ क्रि॰ सुधरना।

झलमल॰ना॰ पु॰ चमक।

झलहाया॰ गु॰ बसवासी, ज्वलित।

झलाझल॰ गु॰ ज्योतिष्मान, स्त्री॰ झलक।

झलाबोर॰ गु॰ चमकीला, भड़कीला, ना॰ पु॰ चमत्कार।

झलाना॰ स॰ क्रि॰ सुधारना, जोड़ना।

झलार॰ ना॰ पु॰ झाड़ी।

झष॰ ना॰ पु॰ मछली, मत्स्य।

झषकेतु॰ ना॰ पु॰ कामदेव, प्रद्युम्नजी।

झांई॰ ना॰ स्त्री॰ परछाई, लहसुन, मुखपरश्यामता होजाना।

झांक॰ ना॰ पु॰ ताक, ना॰ पु॰ हिरण वा पक्षियों का झुण्ड।

झांकड़॰ ना॰ पु॰ झाड़ी।

झांकना॰ स॰ क्रि॰ झपकेदेखना, ताकना।

झांकाझांकी॰ ना॰ स्त्री॰ देखादाखी, ताकाताकी।

झांख॰ ना॰ पु॰ हिरणविशेष।

झांझ॰ ना॰ स्त्री॰ बड़ामञ्जीरा, झगड़ा।

झांझट॰ ना॰ पु॰ झगड़ा, रगड़ा।

झांझा॰ ना॰ पु॰ कीट विशेष, झगड़ा।

झांझिया॰ गु॰ क्रोधी, बखेड़िया।

झांझो॰ ना॰ स्त्री॰ खेलविशेष।

झांपना ० स० क्रि० ढांपना, छुपाना।

झांवरा ० गु० काला।

झांवली ० ना० स्त्री० चोचल, हाव, भाव।

झांवा ० ना० पु० अत्यन्त पक्की ईंट।

झांसना ० स० क्रि० उभारना।

झांसा ० ना० पु० फुसलावा, धोखा।

झांसी ० ना० पु० बुन्देलखण्ड में नगर विशेष।

झांसू ० ना० पु० फुसलाऊ, धोखाबाज।

झाऊ ० ना० पु० छोटा वृक्ष विशेष।

झाग ० ना० पु० फेना।

झाझा ० ना० पु० मादकवस्तु।

झाड़ ० ना० पु० छोटावृक्ष, जोपीतलआदिका बनता है।

झाड़खण्ड ० ना० पु० बन, बैजनाथ के पासका वन विशेष, गु० झाड़ूला, छन।

झाड़न ० ना० पु० बुहारन, कचरा, कर्कट, कूड़ा, पोंछन।

झाड़ना ० स० क्रि० बुहारना, फर्चाकरना, पटकना, निकालना।

झाड़न्त ० अव्य० सभी।

झाड़ा ० ना० पु० गुह, मलका त्याग, हगना।

झाड़ी ० ना० स्त्री० बधना, बन, जङ्गल।

झाड़ू ० ना० स्त्री० बढ़नी, बुहारी।

झापा ० ना० पु० टोकरीविशेष।

झावा ० ना० पु० चमड़े का पात्र तेल घी मापने के लिये।

झामा ० ना० पु० झांवा।

झार० ना० पु० आगकीलव, ज्वाला, सब, अव्य० कडुआहट ।

झारि० अव्य० सब, तमाम, कमाल ।

झारी० ना० स्त्री० थाली, झाड़ी, दो मुख का जलपात्र विशेष ।

झाल० ना० पु० कडुआहट, बड़ी टोकरी, धातुका सुधारना ।

झालना० स० क्रि० चिकनाना, ओपना, जोड़ना ।

झालर० ना० स्त्री० आंचल, गुच्छे ।

झालरा० ना० पु० सोता, गु० बढ़ाऊआ ।

झिझक० ना० स्त्री० चौंक, भड़क, डर, भय ।

झिझकना० अ० क्रि० चौंकना, भड़कना, डरना ।

झिझका० गु० चौंकाऊआ, भयमान ।

झिझकाना० स० क्रि० भड़काना, डराना, चौंकाना, भबकाना ।

झिझंकी० ना० स्त्री० भड़की, चौंक, डर ।

झिञ्झा० ना० पु० जिगनाहन, फूटीकौड़ी ।

झिञ्झाणी० ना० स्त्री० जिगनाहन ।

झिञ्झा० ना० स्त्री० फूटीकौड़ी ।

झिड़क० ना० स्त्री० धमकी, भबकी, गटकी ।

झिड़कना० स० क्रि० घुड़कना, दबकाना, धमकाना, झटकादेना ।

झिड़काझिड़की० ना० स्त्री० झगड़ाझिगड़ी ।

झिड़की० ना० स्त्री० घुड़की ।

झिनहट्टा० } गु० सुखटा ।
झिनहड्डा० }

झिरझिर० गु० जोपतलीधार से बहता, पतला ।

झिरझिरा० गु० बहुतपतला।

झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।

झिलगा० ना० पु० खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानी खाट।

झिलङ्गा० ना० पु० पदाति विशेष।

झिलम० ना० स्त्री० युद्ध में पहिरन के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप परलोहे का कटोरा, बकतर।

झिलमिल० ना० पु० हार विशेष।

झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।

झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।

झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।

झींकना० अ० क्रि० पछिताना शोकित होना, पीनगर आना।

झींगट० ना० पु० माझी पटनी।

झींगा० ना० पु० जल की प्रसिद्ध।

झींगुर० ना० पु० कीटविशेष घुरघुरा।

झीण०
झीन०
झीना० } गु० सूक्ष्म, पतला बारीक।

झीरुका० ना० स्त्री० झींगुर कीट।

झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ जलाशय, बडाताल।

झीसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार छोटी २ बूंदें।

झुकना० अ० क्रि० निहुरना चलना, क्रोधित होना व्याकुल होना।

झुकाना० स० क्रि० निठुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० चला-वट, निठुराई।

झुन्झलाना० अ० क्रि० चिड़ चिड़ाना, जलजलाना।

झुठलाना० } स० क्रि० झूंठा-
झुठालना० } करना, मिथ्या-बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झण्डा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झांडी, वृक्षों का समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुना० ना० पु० खिलौना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैंजनी।

झुमका० ना० पु० कान का भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० भाड, मण्ड-ली, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरियाना० स० क्रि० सिकाना, सोहना, पोंछना, उज्ज्व-ल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

झुर्री० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जला-देना, भुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।

झुलझुली० ना० स्त्री० कान के पात।

झिरझिरा॰ गु॰ बहुतपतला।

झिरझिराना॰ अ॰ क्रि॰ बहना, तिरतिराना।

झिलगा॰ ना॰ पु॰ खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु॰ पुरानी खाट।

झिलङ्गा॰ ना॰ पु॰ पदाति विशेष।

झिलम॰ ना॰ स्त्री॰ युद्ध में पहिरने के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप परलोहे का कटोरा, बकतर।

झिलमिल॰ ना॰ पु॰ द्वार विशेष।

झिलमिलाना॰ अ॰ क्रि॰ लहराना, चिनगी निकलना।

झिल्लिका॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर।

झिल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।

झींकना॰ अ॰ क्रि॰ पछिताना, शोकित होना, पीनगर... आना।

झींगट॰ ना॰ पु॰ माझी... पटनी।

झींगा॰ ना॰ पु॰ जल की... प्रसिद्ध।

झींगुर॰ ना॰ पु॰ कीटविशेष, घुरघुरा।

झीण॰ झीन॰ झीना॰ गु॰ सूक्ष्म, पतला, बारीक।

झीरुका॰ ना॰ स्त्री॰ झींगुर कीट।

झील॰ ना॰ स्त्री॰ बहुत बड़... जलाशय, बडाताल।

झीसी॰ ना॰ स्त्री॰ फूही, फुहार छोटी २ बूंदें।

झुंझलाना॰ अ॰ क्रि॰ निडरना चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

झुकाना० स० क्रि० निहुराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट० ना० स्त्री० चलावट, निहुराई।

झुन्झलाना० अ० क्रि० चिड़ चिड़ाना, जलजलाना।

झुठलाना० } स० क्रि० झूंठा-
झुठालना० } करना, मिथ्या-
बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड० ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा० ना० पु० पताका, झण्डा।

झुण्डी० ना० स्त्री० झांडी, वृत्तों का समूह।

झुन० ना० पु० थोड़ीसमानता।

झुनझुना० ना० पु० खिलौना विशेष।

झुनझुनी० ना० स्त्री० पैंजनी।

झुमका० ना० पु० कानका भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट० ना० पु० भाड, मण्डली, झूमक।

झुराना० अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने० गु० सूखे।

झुरिआना० स० क्रि० सिकाना, सोहना, पोंछना, उज्ज्वल करना।

झुरी० ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

झुनी० अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना० स० क्रि० जला-देना, भुलसाना।

झुलना० अ० क्रि० लटकना, डुलना।

झुलझुली० ना० स्त्री० कान के पात।

झिरझिरा० गु० बहुतपतला।
झिरझिराना० अ० क्रि० बहना, तिरतिराना।
झिलगा० ना० पु० खाट की पुरानी और टूटी रस्सी की बिनावट, गु० पुरानी खाट।
झिलङ्गा० ना० पु० पदाति विशेष।
झिलम० ना० स्त्री० युद्ध में पहिरने के लिये लोहे की कुर्त्ती, टोप परलोहे का कटोरा, बकतर।
झिलमिल० ना० पु० द्वार विशेष।
झिलमिलाना० अ० क्रि० लहराना, चिनगी निकलना।
झिल्लिका० ना० स्त्री० झींगुर।
झिल्ली० ना० स्त्री० झींगुर, अति सूक्ष्म चमड़ा, खेड़ी।

झींकना० अ० क्रि० पछिताना, शोकित होना, पीनगमे आना।
झींगट० ना० पु० माझी पटनी।
झींगा० ना० पु० जल कीट प्रसिद्ध।
झींगुर० ना० पु० कीटविशेष, घुरघुरा।
झीण०
झीन०
झीना० } गु० सूक्ष्म, पतला, बारीक।
झीरुका० ना० स्त्री० झींगुर, कीट।
झील० ना० स्त्री० बहुत बड़ा जलाशय, बड़ाताल।
झीसी० ना० स्त्री० फूही, फुहार, छोटी २ बूंदें।
झुकना० अ० क्रि० निहुरना, चलना, क्रोधित होना, व्याकुल होना।

झुकाना। स० क्रि० निझराना, लचाना, क्रोधित करना, अ० क्रि० क्रोधित होना।

झुकावट। ना० स्त्री० चलावट, निझराई।

झुञ्झलाना। अ० क्रि० चिड़ चिड़ाना, जलजलाना।

झुठलाना। } स० क्रि० झूंठा-
झुठालना। } करना, मिथ्या-
बतलाना, अशुद्ध करना।

झुण्ड। ना० पु० मण्डल, समूह, अखाड़ा।

झुण्डा। ना० पु० पताका, झण्डा।

झुण्डी। ना० स्त्री० झांडी, वृक्षों का समूह।

झुन। ना० पु० थोड़ी समानता।

झुनझुना। ना० पु० खिलोना विशेष।

झुनझुनी। ना० स्त्री० पैंजनी।

झुमका। ना० पु० कानका भूषण विशेष, फूल वा फल का गुच्छा, फूल विशेष।

झुरमुट। ना० पु० भाड, मण्डली, झूमक।

झुराना। अ० क्रि० सूखना स० क्रि० सुखाना।

झुराने। गु० सूखे।

झुरिआना। स० क्रि० सिकाना, सोहना, पोंछना, उज्ज्वल करना।

झुरी। ना० स्त्री० शरीर के मांस का सिकोड़।

झुर्नी। अ० क्रि० कुम्हलाना, सूखना।

झुलकाना। स० क्रि० जलादेना, भुलसाना।

झुलना। अ० क्रि० लटकना, डुलना।

झुलझुली। ना० स्त्री० कान के पात।

झुलसना। अ० क्रि० भुलसना, जलजाना।

झुलसाना। स० क्रि० भुलसाना, जला देना।

झुल्ला। ना० पु० पहिरने का वस्त्र विशेष।

झुंझल। ना० पु० क्रोध का आवेश।

झूंटर। ना० स्त्री० भूमिजिसमें वर्षा में दो वार अन्न बोते हैं।

झूंठनझांठन। ना० पु० छूटा, बचा।

झूठ। गु० मिथ्या, अशुद्ध।

झूठा। गु० मिथ्यावादी, छूतहुआ, ना० पु० उच्छिष्ट, खानाखायकेरहगया।

झूना। ना० पु० पक्कानारियल, महीन वस्त्र, चूल्हे में इंधन और आगरखना।

झूमक। ना० स्त्री० झुमट।

झूमझूम। ना० पु० घन, लट
लटक।

झूमना। अ० क्रि० लहरना
हिलाना, ऊंघना, उम
गडना, घिरना।

झूरना। स० क्रि० कूटना, पे
से फल झाड़ना
सूखना।

झूरा। गु० सूखा, मुरझाय
हुआ।

झूल। ना० स्त्री० बैलादि पशु
ओं का ओढ़ना।

झूलना। अ० क्रि० डोलना
हिलना, लटकना, ना०
पु० छन्द विशेष।

झूला। ना० पु० हिंडोल
ढांख वृक्ष।

झोंक। ना० स्त्री० ढकेल, धक्का
झकोड़।

झोंकना। स० क्रि० ढकेलना
फेंकना, इंधन भाड़ में
डालना।

झोंटा०ना० पु०
झोंटी०ना० स्त्री० } शिरकेपीछे केबाल, झूलेका हिलाना ।

झोंपड़ा०ना० पु०
झोंपड़ी० स्त्री० } मढ़ी, छप्पर का छोटाघर ।

झोंपा०ना० पु० फलकागुच्छा, बाल, घिराव ।

झोंरा०ना० पु० गुच्छा ।

झोक०ना० स्त्री० झोंक ।

झोका०ना०पु० झोंका, ठोकर, ठेस, झकोरा ।

झोझ०ना० पु० खोंता, ओझ, बड़ापेट ।

झोझा०ना० पु० ओझा, बड़पेटा, बड़ापेट ।

झोटिङ्ग०ना० पु० प्रेतभेद ।

झोटी०ना० स्त्री० चोटी ।

झोल०ना० स्त्री० कपड़े की सकोड़ वा चुन्नत, बच्चे ।

झोला०ना०पु० थैला, अर्द्धाङ्ग ।

झोली०ना० स्त्री० थैली ।

झौंरा०गु० सांवला, पीला ।

झौंसना०अ० क्रि० बहुतजलजाना ।

झौंसा०गु० जोबहुतजलगया ।

झौड़०ना० स्त्री० झगड़ा ।

झौरी०ना०स्त्री०खेत की घास ।

[ट]

टक०ना० स्त्री० स्वभाव, ताक, दृष्टि ।

टकटकी० ना० स्त्री० घूर, ताक ।

टकना०अ० क्रि० सिलना, सिलजाना ।

टकराना०स० क्रि० टक्करखिलवाना, टक्कर मारना, अ० क्रि० टटोलना ।

टकवाना०स०क्रि०सिलवाना, सिलाना ।

टकसाल० ना० पु० स्थान, जहां रुपया आदि बनाया जाता है।

टकसालिया० } ना० पु० टक
टकसाली० } साल का काम करने हारा।

टका० ना० पु० दो पैसे।

टकाई० ना० स्त्री० सिलाई, कार।

टकी० ना० स्त्री० ताक, ढुकी।

टकुआ० ना० पु० तकला, तकुआ।

टकैत० } गु० धनवान्, माल-
टकैता० } दार।

टकोर० } ना० पु० चुचकारी,
टकोरा० } चुमकारी, अतिछोटा कच्चा आंब, ढोल बजाने की गति वा शब्द।

टकोरना० स० क्रि० सेंकना, ततारना।

टकौना० ना० पु० टका।

टक्कर० ना० स्त्री० ठोकर, ठेला ठेली, सिर से सिर लड़ाना, जैसे मेढ़े लड़ाते हैं।

टखना० ना० पु० गुल्फ, घुटना

टघलना० अ० क्रि० पिघलना

टघलाना० स० क्रि० पिघलाना।

टङ्क० ना० पु० चार माशे की तौल, खड्ग।

टङ्कण० ना० पु० सोहागा।

टङ्कोर० ना० स्त्री० धनुष के रोदे का शब्द।

टङ्कोरना० स० क्रि० धनुष की पच्च झाड़ना।

टङ्गना० अ० क्रि० लटकना।

टङ्गड़ी० ना० स्त्री० टांग, गोड़।

टञ्च० गु० सूम, कृपण।

टटका० गु० नया, नवीन, ना० पु० चतारापुतारा।

टटकी॰ना॰ स्त्री॰ नई, नवीन, ताज़ी।

टटआनी॰ना॰ स्त्री॰ छोटी घोड़ी।

टटिया॰ना॰ स्त्री॰ टट्टी, झांप, द्वारबन्द करने को जो त्वणादिकी बनती है।

टटीहरा॰ना॰ पु॰ } पक्षी वि-
टटीहरी॰ ना॰ स्त्री॰ } शेष।

टटुआ॰ना॰ पु॰ छोटा घोड़ा।

टटुई॰ना॰ स्त्री॰ छोटी घोड़ी।

टटोलना॰स॰ क्रि॰ टोया टाई करना, अंगुलियों से दबाना।

टट्टड़ी॰ना॰स्त्री॰ चांदी, बाड़।

टट्टर॰ }
टट्टा॰ } ना॰ पु॰ बड़ी टट्टी।

टट्टी॰ना॰ स्त्री॰ टटिया, फर-क्रिया।

टट्टू॰ना॰ पु॰ छोटा घोड़ा।

टनटा॰ना॰ पु॰ बखेड़ा, लड़ाई, खटापटी।

टप॰ना॰ पु॰ कूद, फांद, बूंद।

टपक॰ना॰ स्त्री॰ पीड़ा, टप-कने का शब्द।

टपकना॰अ॰ क्रि॰ टपटपाना, चूना, छूना, रिसना, टीसना।

टपका॰ना॰ पु॰ पानी की बूंद, फल जो वृक्ष से पककर गिरता है, यथा आम।

टपकाना॰स॰ क्रि॰ चुआना, छानना, रसाना।

टपजाना॰अ॰क्रि॰ भूल जाना, कूद जाना।

टपपड़ना॰स॰ क्रि॰ और के काम में हाथ देना।

टपना॰अ॰ क्रि॰ भूलना, कूदना।

टपाना॰स॰ क्रि॰ भुलाना, फदवाना, कुदवाना।

टप्पा० ना० पु० डाकभर, डाकघर, मैदान, जहांतक गोली जाती है, रागिणी विशेष ।

टभक० ना० स्त्री० जो शब्द पानी गिरने से किसी गढ़े वा बर्तन में होता है ।

टभकना० अ० क्रि० चूना, टभक होना, बोलना ।

टर० ना० स्त्री० शेखी, एंठ, गु० मतवाला, अचेत ।

टरटर० ना० स्त्री० बकबक ।

टरटराना० स० क्रि० बकबक करना ।

टरटरी० ना० स्त्री० बकबकी ।

टरना० अ० क्रि० डुलना, टलना, हटना ।

टराना० स० क्रि० टलवाना, हटाना ।

टर्रा० गु० झगरा, दुष्ट, बक्की, बकवादी ।

टर्राना० स० क्रि० बकबक करना, झगराना, एंठ के बात करना ।

टलजाना० } अ० क्रि० हट-
टलना० } जाना, जाता रहना ।

टलप० ना० स्त्री० टुकड़ा, छांट ।

टलमलाना० अ० क्रि० डग, मगाना, ललचाना ।

टलाटली० ना० स्त्री० मिष, हीलाबाज़ी ।

टलाना० स० क्रि० हटाना, छिपाना ।

टवर्ग० ना० पु० टकारादि पांच अक्षर ।

टसक० ना० स्त्री० चमक टीस ।

टसकना० अ० क्रि० हिलना, चमकना, चटना ।

टसकाना० स० क्रि० हिलाना, चमकाना ।

टसना० अ० क्रि० मसकना, फटना ।

टहका० ना० स्त्री० गांठकी पीड़ा।

टहकना। अ० क्रि० दुखना, पीड़ापाना।

टहटह० ना० पु० सुन्द-
टहटहा० रता, नवीनता।

टहना। ना० पु० शाखा,डाल।

टहनी० ना० स्त्री० शाखा, डाली।

टहल० ना० स्त्री० टहली, सेवा, काम।

टहलना। अ० क्रि० हवाखाना, बाहर फिरना।

टहलनी० ना० स्त्री० टहलुनि, दासी, लौंडी।

टहलाना। स० क्रि० चलाना, फिराना, हवाखिलाना।

टहलुआ। ना० पु० सेवक, दास, परिचारक।

टहलुई। ना० स्त्री० दासी, लौंडी।

टहो। ना० पु० जन्मतीपुत्रका शब्द।

टहोका। ना० पु० घूंसा, चपेटा।

टांक० ना० पु० टङ्क।

टांकना। स० क्रि० सीवना, लिखना।

टांका। ना० पु० लपको, तेपचीर, सांठन, जोड़न।

टांकी० ना० स्त्री० चट, खदरा, कुदरा, कुल्हाड़ी।

टांकू० पु० टांकनेहारा।

टांग० ना० स्त्री० एडीसे घुटने तकका नाम, लटकाव।

टांगन० ना० पु० पहाड़ीघोड़ा विशेष।

टांगना। स० क्रि० लटकाना, हिलगाना।

टांगी० ना० स्त्री० टांकी।

टांच० } पु० कटीला, टेढ़ा,
टांचड़ा० } कुजाति, उजड़।

टांट० ना० स्त्री० चांदी।

टांढ।० गु० पेढ़ा, कड़ा, ठोस, कम।

टांठाई० ना० स्त्री० पोढ़ाई, कड़ाई।

टांड़० ना० पु० मचान।

टांड़ा० ना० पु० खेप, बनिजारे की वस्तु।

टाट० ना० पु० सनका बिना हुआ बिछौना, अजाए।

टाटक० गु० टटका।

टाटा० ना० पु० टाटा, बड़ी टट्टी।

टाटी० ना० स्त्री० टट्टी।

टाड़ी० ना० स्त्री० छोटी कुल्हाड़ी।

टानना० स० क्रि० तानना, खेंचना।

टाप० ना० स्त्री० घोड़े के खुर का शब्द, घोड़े की अगले खुरों की मार।

टापना० स० क्रि० टापमारना ढूंढना।

टापा० ना० पु० खांचा।

टापू० ना० पु० द्वीप, जज़ीरह।

टाबर० ना० पु० छोटी झील।

टारना० स० क्रि० टालना।

टाल० ना० स्त्री० टालमटोल, छलकरके काल काटना, अन्न वा, लकड़ी आदि का ढेर, टाल, मल्लयुद्ध करने में छल।

टालटूल० ना० पु० टालमटोल।

टालना० स० क्रि० छल करके बतफेरना, वा बदलना वा उड़ाना, हटाना।

टालमटोल० ना० स्त्री० चकर मकर, हीलाबाज़ी।

टाला० ना० पु० टाल।

टिकटिकी० ना० स्त्री० चिपकली।

टिकठी० ना० स्त्री० काठ की तिपाई वा चोपाई, अरथी।

टिकना० अ० क्रि० रहना, ठहरना।

टिकली० } ना० स्त्री० बिन्दी
टिकुली० } जिसको स्त्रियां माथेपर लगाती हैं।

टिकाऊ० गु० ठहराऊ, चलाऊ।

टिकाना० स० क्रि० रखना, ठहराना, अटकाना।

टिकाव० ना० पु० ठहराव, अटकाव।

टिकासर० ना० पु० टिकनेकी जगह, टिकाव।

टिकासा० गु० टिकने हारा, ठहरनेवाला।

टिकिया० ना० स्त्री० बाटी, अंगाकडी, छोटी रोटी, किसी वस्तु को बाटके गोलाकार चपटी वस्तु बनाना।

टिकोर० ना० पु० लोथड़ी, लोपड़ी।

टिक्कड़० } ना० पु० अंगाकड़ा,
टिक्कर० } कड़ीगोल रोटी विशेष।

टिक्ली० ना० स्त्री० टिकली।

टिक्की० ना० स्त्री० टिकिया।

टिघलना० अ० क्रि० पिघलना, गलना।

टिघलाना० स० क्रि० पिघलाना, गलाना।

टिटकारना० स० क्रि० टिक टिक करके पशु को चलाना वा हांकना।

टिटकारी० ना० स्त्री० टिक टिक करना।

टिटीहरी० } ना० स्त्री० पक्षी
टिट्टिभ० } विशेष।

टिड्डा० ना० पु० } उड़ताकीड़ा।
टिड्डी० स्त्री० }

टिपका ० ना० पु० रङ्ग का चिन्ह जो अङ्गुली से लगा है ।

टिप्पन ० ना० पु० टीका, विवर्ण ।

टिप्पस ० ना० स्त्री० अभिमान, दाव ।

टिभाना ० स० क्रि० प्रतिदिन थोड़ी सी जीविका देना ।

टिभाव ० ना० पु० प्रतिदिन थोड़ी सी जीविका ।

टिमटिम ० ना० पु० शरांटा, शब्द ।

टिमटिमाना ० स० क्रि० झल झलाना, जगमगाना ।

टिहरा ० ना० पु० छोटा गांव, पुरवा ।

टिहरी ० ना० स्त्री० छोटी सी बस्ती ।

टींट ० ना० स्त्री० करील का फल ।

टीक ० ना० स्त्री० सिर, वा गले का गहना ।

टीका ० ना० पु० तिलक, टिप्प... माथे का गहना विश... अर्थ कहना वा लिख... ब्याह में कन्या को ओ... से लग्नबन्धन के लि... प्रथम जो कुछ जाता ... राज्याभिषेक ।

टीटभी ० ना० स्त्री० औषधि विशेष ।

टीड़ी ० ना० स्त्री० टिड्डी ।

टीप ० ना० स्त्री० छापा... तमस्सुक, तामके ... चना, स्वर० उड़ान... टवाहट ।

टीपटाप ० ना० स्त्री० बनाव... बनावट ।

टीपना ० स० क्रि० दाबना, टट... लना, निचोड़ना, बिल... लगाना, लिखना ।

टीला ० ना० पु० टाल, पहाड़ी...

टीस ० ना० स्त्री० पीड़ा, टपक... धड़क ।

टीसना॰ अ॰क्रि॰ टीसमारना, धमकना, धड़कना।

टुक॰ गु॰ थोड़ा, अल्प, जरा।

टुकड़ा॰ ना॰ पु॰ एक खण्ड, चिट।

टुकसा॰ गु॰ थोड़ासा।

टुड्डा॰ ना॰ पु॰ छोटी पूंछ।

टुच्चा॰ } ना॰ पु॰ लुच्चा, गुण्डा,
टुच्चा॰ } लपका, तुच्छ।

टुन्ना॰ ना॰ पु॰ नन्हा।

टुण्टुक॰ ना॰ पु॰ स्योनाकवृक्ष।

टुण्टुनाना॰ अ॰ क्रि॰ गुन गुनाना, धीरज से अलापना, धीरे धीरे बजाना।

टुण्ड॰ ना॰ पु॰ हाथकटा, डालीकटा वृक्ष।

टुण्डा॰ गु॰ हाथकटा, लूला, अपांग।

टुण्डियाचढ़ा॰ ना॰ अ॰ क्रि॰ हाथ पीछे बांधना।

टुण्डी॰ ना॰ स्त्री॰ नाभि, गु॰ जिस स्त्री का हाथकटा वा टूटा हो।

टुसकना॰ } अ॰ क्रि॰ टोकना,
टुसकना॰ } कूकना।

टूं॰ ना॰ पु॰ वायु सड़ने का शब्द अर्थात् पादने का शब्द।

टूंगना॰ स॰ क्रि॰ चोंचियाना, चिचोरना, खुटकना।

टूंडी॰ ना॰ स्त्री॰ नाभि, ठूंट।

टूक॰ } ना॰ पु॰ टुकड़ा, ढोलक
टूको॰ } का एक शब्द।

टूट॰ ना॰ स्त्री॰ खण्डन, फूटना टोटा लिखनमें जो भूलके ऊपर लिख दिया, त्रुटि।

टूटना॰ अ॰ क्रि॰ झमकना दौड़ना, चढ़ाई करना, फूटना, फटना, फसके होना, गढ़ का छूटना, पत्ते का ऊपर से नीचे उतरना।

टटा॰गु॰ फूटा, टुकड़े भया, ना॰ पु॰ टोटा, न्यूनता।

टूम॰ना॰ स्त्री॰ थोड़ीबात, भूषण विशेष, छतरी।

टूमटाम॰ना॰ पु॰ कुछथोड़ी-बात।

टूसा॰ना॰ पु॰ आंक का फल, मदार का फल।

टूसी॰ना॰ स्त्री॰ कोंपल, कली।

टेंगरा॰ना॰ पु॰ } मछली वि-
टेंगरी॰ स्त्री॰ } शेष।

टेंट॰ना॰ पु॰ करील वा कपास का पकाफल, फुली।

टेंटर॰ना॰ पु॰ फलविशेष, आंखका दोदावढाहुआ, अर्थात् आंखका निकाम होजाना।

टेंटा॰ना॰ पु॰ } करीलका बड़ा
टेंटी॰ स्त्री॰ } पकफल, व्यर्थ भाषण, कटिरोग विशेष, कटि, बैल का कांधा।

टेटुआ॰ना॰ पु॰ नरी, मांसी नरेटी, गले की पोंगली हड्डी।

टेंटें॰ना॰ पु॰ चेंचें, किलकिला-हट।

टेहू॰ना॰ स्त्री॰ आड़, थूनी क्रि॰ पैनीकरी।

टेक॰ना॰ स्त्री॰ थूनी, आड़, टेकनी, प्रतिज्ञा।

टेकन॰ना॰ स्त्री॰ आड़, थांभ।

टेकना॰स॰ क्रि॰ आड़ना, थांभना, सहारा लगाना।

टेकनी॰ना॰ स्त्री॰ टेकन, थूनी।

टेकर॰ } ना॰ पु॰ टीला,
टेकरा॰ } ऊंचा।

टेढ़॰ ना॰ स्त्री॰ बक्रता, कज।

टेढ़ा॰गु॰ बक्र, जो सूधा नहीं है।

टेढ़ाई॰ना॰ स्त्री॰ बक्रता, बांक-पन, कज।

टेढ़ी० ना० स्त्री० गर्व, अहङ्कार, हट. बांकी।

टेनी० ना० स्त्री० छोटाउगला. जो अहीररखते हैं।

टेम० ना० स्त्री० दीपककीजलन वा लय वा जोति।

टेर० ना० स्त्री० स्वर, लय, पुकार।

टेरना० अ० क्रि० पुकारना, ललकारना, अलापना।

टेलना० स० क्रि० पेलना, धुके-ड़ना।

टेव० ना० स्त्री० चाल, चोट, स्वभाव।

टेवकिया० ना० स्त्री० छोटी टेवकी।

टेवकी० ना० स्त्री० थूनी, खम्भा, थम्भ ला।

टेवना० स० क्रि० बाढ़देना, बाढ़रखना, वा रखाना।

टेवा० ना० पु० जन्मपत्री का देखना वा निकालना, चाट।

टेहरा० ना० पु० छोटागांव, पुरवा।

टेहला० ना० पु० विवाह की रीति।

टोआई० ना० स्त्री० कुआई।

टोंटा० ना० पु० पटाका, सुर्रा, पोड़. बारूत को पुड़िया, बांसका पोढ़।

टोंटी० ना० स्त्री० पर्नाला, मोरी।

टोक० } ना० स्त्री० अट-
टोकटाक० } काव, रुकाव, छेड़छाड़।

टोकना० स० क्रि० पकना, रोकना, डाहलगाना, बुरीदृष्टिसे देखना।

टोकरा० ना० पु० डोरा, डलिया झोआ।

टोकरी० ना० स्त्री० डोरी, डलिया।

टोकाटोकी० ना० स्त्री० क-काक, पूछपांछ, छेड़ छाड़।

टोटका० ना० पु० मोहनी, लटका, वशीकरण।

टोटरू० ना० पु० घुघू विशेष।

टोटा० ना० पु० घटी, हानि, न्यूनता।

टोड़ी० ना० स्त्री० रागिणी विशेष।

टोना० ना पु० जादू, वशीकरण, स० क्रि० टटोलना।

टोनहा० न० पु० नटका, ओझा, बन्हा, जादूगर।

टोनहाई०, टोनही०, टोनहैया० — ना० स्त्री० कटिनी जादूगरनी।

टोप०, टोपा० — ना० पु० कानसमेत सिर ढकने का वस्त्रविशेष।

टोपी० ना० स्त्री० सिरढकने का वस्त्र विशेष, कुलाह।

टोरा० ना० पु० भीतिमेंपानीके बचाव के लिये आड़ लगाकर छाना अर्थात् छज्जा निकालने की वस्तु, तोड़ा।

टोल० ना० स्त्री० सभा, सङ्गति

टोला० ना० पु० वाड़, बस्ती, मुहल्ला।

टोली० ना० स्त्री० टोल, समूह

टोहना० स० क्रि० ढूंढना, टटोलना।

टोना० ना० पु० टोनहा।

[ठ]

ठई० अ० क्रि० ठहराई, मुक़र्रर की।

ठकठक० ना० पु० बहुतपरिश्रम का कार्य्य, गढ़त शब्द विशेष।

ठकठकाना० स० क्रि० ठोंकना, खटखटाना।

ठकठकिया० ना० पु० बखेड़िया, झगड़ालू।

ठकठेला० ना० पु० धक्कापक्की, झगड़ा, बखेड़ा।

ठकठौआ० ना० स्त्री० पनसोई।

ठकुरसोहाती० गु० मुख देखी बात कहना, श्रोता के मन भावित वार्त्ता करना।

ठकुराई० ना० स्त्री० ईश्वरता, प्रधानता, राज्य।

ठकुरायन० ना० स्त्री० ठाकुर की स्त्री० रानी।

ठग० ना० पु० गठिकटा, चोर, प्रतारक, धोखा देने हारा।

ठगई० ना० स्त्री० प्रतारणा, चोरी, ठगाई।

ठगना० स० क्रि० छलना, चोराना, धोखा देना।

ठगनी० ना० स्त्री० ठगकी स्त्री चोट्टी।

ठगाई० ना० स्त्री० प्रतारणा, चोरी, छल।

ठगाना० स० क्रि० छलाना, चोरी करवाना।

ठगिन० ना० स्त्री० ठगनी।

ठगिया० ना० पु० ठग, प्रतारक, चोर, छली।

ठगौरी० ना० स्त्री० ठगई।

ठचरा० ना० पु० बखेड़ा, झगड़ा।

ठठ० ना० पु० भीड़, मण्डली।

ठठक० ना० स्त्री० रुकाव, अटकाव, डर, ठिगाव।

ठठकना० अ० क्रि० रुकना अटकना, आश्चर्य में हो जाना, ठिगना।

ठठना० स० क्रि० बनाना, सजना, दुरुस्त करना, अ० क्रि० पिटना मारे जाना।

ठठरा० ना० पु० आड, घेरा ।

ठठरी० ना० स्त्री० ठाठ, रथी, दुर्बल शरीर ।

ठठाना० स० क्रि० पीटना, मारना, कूटना, दुःख में अपना शिर पीटना, सताना ।

ठठेरा० ना० पु० कसेरा, जातिविशेष ।

ठठेरिन० } ना० स्त्री० ठठेरे
ठठेरी० } की स्त्री ।

ठठार० } गु० हंसोड़, ठट्ठा,
ठठोल० } बाज़ ।

ठठोली० ना० स्त्री० परिहास, हांसी ।

ठट्ठ० ना० पु० ठठ ।

ठट्ठा० ना० पु० परिहास, खिल्ली ।

ठड्डा० ना० पु० गुड्डीके बीचका काष्ठ, मुड्डा ।

ठण्ड० ना० स्त्री० शीत, जाड़ा, हिम ।

ठण्डक० ना० स्त्री० शीतलता, सरदी ।

ठण्डा० गु० शीतल, सर्द ।

ठण्डाई० ना० स्त्री० शीतलता, ठंडी औषधि, जुड़ाई, बनाई हुई भङ्ग ।

ठण्डी० ना० स्त्री० शीतल ।

ठण्ढा० गु० ठण्ड ।

ठनकाना० अ० क्रि० टीसना, टपकना, झनकना ।

ठनठनाना० अ० क्रि० झन-झनाना, झनकना ।

ठनाका० ना० पु० झनक[illegible] झनकार ।

ठन्ना० अ० क्रि० ठहरना, जचना ।

ठपना० अ० क्रि० छपना, छ[illegible] पजाना, भगजाना ।

ठप्पा० ना० पु० छापने [illegible] यन्त्र, सांचा, [illegible] ठप्पा ।

ठमकना। अ० क्रि० मटक-कर चलना।

ठार० ना० स्त्री० बहुतजाड़ा, बड़ीसर्दी।

ठेंया। ना० पु० माटी का कूंडा विशेष।

ठरना। ना० पु० मादक वस्तु विशेष, अ० क्रि० ठठुर जाना।

ठवन० ना० स्त्री० चाल, उठने की रीति।

ठसक० ना० स्त्री० महत, पति-देखाव, सजाव।

ठसकना। अ० क्रि० ठुसकना, स० क्रि० पटकना।

ठसका। ना० पु० पटकी, अहं-कार।

ठसनी। ना० स्त्री० ठांसनेकी वस्तु।

ठसाठस० गु० कचाकच, म-चामच, गचागच।

ठस्सा। ना० पु० अहङ्कार, सांचा, ढांचा।

ठहरठहर० गु० कलहना।

ठहरना। अ० क्रि० रुकना, रहना, ठीक होना नि-पटना।

ठहराव। ना० पु० रुकाव, निपटाव।

ठहराना। स० क्रि० रखना, रोकना, निपटाना।

ठहाका। ना० पु० धमाका, भदाका, भड़ाका।

ठां० } ना० पु० स्थान,
ठांव० } जगह।

ठांसना। स० क्रि० ठूंसना घुसेड़ना।

ठाई० ना० स्त्री० ठांव, ठौर।

ठाउ० ना० पु० ठांव, ठौर।

ठाकुर० ना० पु० ईश्वर, देवता, सालि ग्राम, मर्त्ति देश, पति, राजा, नाई।

ठाकुरद्वारा॰ ना॰ पु॰ देवालय, दौहरा।

ठाट॰ }
ठाठ॰ } ना॰ पु॰ ठठरी, सैंताव चुकोता, भड़क, भीड़ भाड़, समूह, रचना।

ठाड़ा॰ गु॰ खड़ा, सीधा जो बेंड़ा नहीं।

ठाढ़॰ गु॰ ऊंचा, औघट खड़ा।

ठाढ़ा॰ }
ठाढ़ि॰ } गु॰ खड़ा, खड़ी।

ठानना॰ स॰ क्रि॰ मनलगाना, ठहराना, निश्चय करना।

ठाला॰ गु॰ खाली, कार्य्यरहित समय।

ठाहर॰ ना॰ पु॰ ठिकाना, जगह।

ठिकरा॰ ना॰ पु॰ फूटे बर्तन का टुकड़ा, ठीकरी।

ठिकाना॰ ना॰ पु॰ स्थान, वास, ठौर, सिवाना।

ठिकानो॰ गु॰ ठिकाने वाला, ठिहारा।

ठिङ्गना॰ गु॰ नाटा, छोटा, बावन, बांठा।

ठिटक॰ ना॰ स्त्री॰ आश्चर्य में होना, भय वश होना।

ठिठकना॰ अ॰ क्रि॰ भयवश होकर वा आश्चर्य्यित होकर खड़ा होना।

ठिठरना॰ अ॰ क्रि॰ जमना, ठण्ढ होना, अकड़ जाना।

ठिठरा॰ गु॰ अकड़ा, शून्य, जड़ाया हुआ।

ठिठराहट॰ }
ठिठुर॰ } ना॰ स्त्री॰ ठण्ढ से अकड़ाहट।

ठिठुरना॰ अ॰ क्रि॰ ठिठरना।

ठिठुरा॰ गु॰ ठिठरा।

ठिलिया॰ ना॰ स्त्री॰ घड़ा, गगरी।

ठीक० गु० शुद्ध, खरा, योग्य सत्य, उचित, अदाता, कीचड़, ना०पु० जोड़।

ठीकठाक० गु० शुद्ध, यथा दुरुस्त।

ठीकमठाक० अव्य० शुद्धता से।

ठीकरा० ना० पु० ठिकरा।

ठीकरी० ना० स्त्री० छोटा ठिकरा, गिटकी, योनि में स्थान विशेष।

ठीका० ना०पु० भाड़ा, चुकौता, इजारह।

ठुकराना० स० क्रि० ठोकर मारना।

ठुड्डी० ना० स्त्री० ठोढ़ी, चोल-री वा मखाना जो भन-ने में खिला नहीं अ-र्थात् लावा नहीं भया।

ठुका० ना० स्त्री० सिसक।

ठुकना० अ० क्रि० सिसकना।

ठुमक० ना० स्त्री० सुन्दर चाल से चलन, मटक।

ठुमकना० अ० क्रि० सुडौल से चलना, अकड़ से चलना।

ठुमका० गु० छोटा, नाटा, बांठा।

ठुमकी० गु० आलसी० ठिङ्गनी ना० स्त्री० पतङ्ग को उड़ा के हिलाना।

ठुमकना० अ० क्रि० हवा छोड़-ना, पादना धीमे धीमे रोना।

ठुमकी० ना० स्त्री० शब्द स-हित वायु को छोड़ना।

ठुसाना० स० क्रि० ठसाना ठांसना।

ठूंठ० ना० पु० पत्र रहित तोड़ी हुई डाली, वा डाल पात रहित वृक्ष, टुण्ड।

ठूंठा० } गु० टुण्डा, वृक्ष
ठूंठिया० } जिसकी डालियां काटी गई, सूखा वृक्ष।

ठूंठी० ना० स्त्री० खूंटी, अना-ज की।

ठेवना। ना० पु० ठेवका।

ठेंगा। ना० पु० लाठी, अङ्गुष्ठ, लिङ्ग।

ठेंगाबाजना। स० क्रि० बिगाड़ना।

ठेंठ। गु० निपट, चोखा, केवल, निरा।

ठेंठी। ना० स्त्री० कान का मैल, डट्टा, धोती।

ठेक। ना० स्त्री० टेकनी, भाड़ बड़ाबोरा जो अन्न से भरा है।

ठेका। ना० पु० ठट्टा, ठीका, इजारह।

ठेकी। ना० स्त्री० सिरसे बोझ उतारके सुस्ताने का स्थान, जहां अन्न वा लकड़ी का गंज है।

ठेयो। ना० स्त्री० ठट्टा।

ठेलना। स० क्रि० ढकेलना, रेलना, झोंकना, हटाना।

ठेला। ना० पु० धक्का।

ठेलाठेली। ना० स्त्री० धक्का धक्की।

ठेवना। ना० पु० घटना, जानु।

ठेस। ना० स्त्री० ठोकर, चपेट, झोंक।

ठेसना। स० क्रि० छेड़ना, ठोकर लगाना, ठांसना।

ठेसरा। ना० पु० नाकचढ़ी।

ठोंकना। स० क्रि० मारना गाड़ना, अंगुली से बजाना।

ठोंग। ना० स्त्री० चोंच वा अङ्गुली से मारना।

ठोंगना। } स० क्रि० चोंचियाना, चिकोरना
ठोंगाना। }

ठोंक। ना० स्त्री० चोंच, ठोर।

ठोंक। ना० स्त्री० मार, कूट, ठोंकने का शब्द।

ठोकर। ना० स्त्री० ठेस, ठेसलगने की वस्तु, पांवकी हूल

ठोढ़ी। ना० स्त्री० ठुड्डी।

ठोर॰ना॰ स्त्री॰ चोंच।

ठोला॰ना॰ पु॰ शुकादि के निमित्त पात्र जिसमें दानापानी रखते हैं, अंगुलियों की गांठ।

ठोस॰गु॰ टांठा, जो खोखला नहीं है।

ठोसना॰स॰ क्रि॰ ठांसना।

ठोसाई॰ना॰ स्त्री॰ टांठाई, दृढ़ता।

ठौर॰ना॰ स्त्री॰ स्थान, जगह।

[ड]

डकराना॰अ॰क्रि॰ कूकमारके रोना।

डकार॰ना॰ स्त्री॰ उद्गार, आरोग्य।

डकारना॰अ॰क्रि॰ ढिकारना, हुंकारना, और पचाजाना।

डकैत॰ना॰ पु॰ डाकू, चोर, बटमार।

डकैती॰ना॰ स्त्री॰ चोरी, बटमारी, डाका।

डकौत॰ } ना॰ पु॰ वर्णशंकरकी जाति विशेष, जिसका बाप ब्राह्मण और महतारी ग्वालिन थी।
डकौतिया॰ }

डग॰ना॰ पु॰ चलावा, फाल, पद, डेग।

डगडगाना॰अ॰क्रि॰ हिलना, चमचमाहटसे चलना।

डगना॰अ॰ क्रि॰ हिलना, डिगना।

डगमग॰गु॰ चञ्चल, चलायमान।

डगमगाना॰अ॰ क्रि॰ खड़खड़ाना, हिलना।

डगर॰ना॰ स्त्री॰ मार्ग, सड़क, पैंडा।

डगरना॰अ॰ क्रि॰ हिलना, फिरना।

डगरा॰ना॰ पु॰ बांसकाबनाया हुआ पात्र विशेष।

डग्गा ० ना० पु० दुर्ब्बल घोड़ा विशेष ।

डङ्क ० ना० पु० चमक, बिच्छू आदिका विषयुत कांटा ।

डङ्का ० ना० पु० ढका, धौंसा, नक़ारह ।

डङ्किनी ० ना० स्त्री० डाकिनी ।

डङ्कियाना ० स० क्रि० डङ्क मारना, चमकना ।

डङ्कीला ० गु० जिसजन्तु के डङ्क हो ।

डटना ० अ० क्रि० अड़ना, भिड़ना, तकना, बनना ।

डटैया ० ना० पु० डटनेवाला ।

डढना ० अ० क्रि० जलजाना, भुनजाना ।

डढमुण्डा ० गु० दाढ़ीरहित ।

डढियल ० गु० दाढीवाला ।

डढुआ ० } गु० जलाहुआ, जलगया ।
डढ़ोई ० }

डण्ड ० ना० पु० बाहु, भुजा, व्यायामकरना, साधन विशेष, दण्ड ।

डण्डवत् ० ना० स्त्री० दण्डवत्, प्रणाम विशेष, पायलागी ।

डण्डा ० ना० पु० सोंटा, सीढ़ी का पाया, दस्ता, ।

डण्डिया ० ना० पु० स्त्रियों के पहिरने का वस्त्र विशेष और बाज़ार का कर उगाहनेहारा ।

डण्डी ० ना० स्त्री० बेंटी, बेंट, तराज़ के पलड़ों में लगानेका काष्ठ संन्यासी, हरसिंघाड़आदिकीनली, दाण्डी ।

डण्डीर ० ना० स्त्री० धारी, लकीर, लीख ।

डपटना ० अ० क्रि० पुकारना, डांटना, सरपटदौड़ना ।

डफ ० ना० पु० बाजाविशेष ।

डफारना। ० अ० क्रि० कूकमारना, बिलखना ।

डफाली ० ना० पु० डफबजाने हारा ।

डब ० ना० पु० बल, पराक्रम, जेब, चमड़ा जिससे कुप्पा बनाते हैं ।

डबका। ० ना० पु० टटका, कूपका जल, गु० मोटा ।

डबडबाना। ० अ० क्रि० भरना, जैसे आंख आंसू से भर आती है ।

डबरा ० ना० पु० गीली भूमि, खिवार, छपरी ।

डबरिया ० गु० खब्बा, बांयाहाथ, वामहस्ता ।

डबोना ० स० क्रि० डुबाना ।

डब्बा ० ना० पु० बड़ी डिबिया ।

डब्बू ० ना० पु० लोहेकाकर्छा ।

डमरुआ ० ना० पु० घुटनाकी गांठि ।

डमरु ० ना० पु० बाजाविशेष ।

डमरुमध्य ० ना० पु० डमरु का मध्यभाग, खाकनाय, जोअपने भेदा बड़ेस्थल के भागोंकोमिलावे ।

डर ० ना० पु० भय, भीत, शङ्का

डरना ०
डरपना ० } अ० क्रि० भय-खाना ।

डरपोक ० गु० डरनेवाला, भयमान् ।

डरवैया ० गु० भयमान्, हेठा, डरपोक ।

डराऊ ० गु० भयङ्कर ।

डराक ० गु० भयमान् ।

डराना ०
डरावना ० } स० क्रि० भयदेना, भयखिलाना ।

डरी ० ना० स्त्री० मांसकीबोटी, छोटाटुकड़ा, ढेला ।

डरीला ० गु० मांस बोटियों वाला ।

डरौना० गु० डराऊ ।

डलवा० ना० पु० टोकरा ।

डलवाना० स० क्रि० झोंकवाना, गिरवाना, घुसड़ाना ।

डला० ना० पु० बड़ा टुकड़ा वा ढेला, टोकरा ।

डलिया० ना० स्त्री० छोटी टोकरी ।

डली० ना० स्त्री० छोटा टुकड़ा वा ढेला, सुपारी ।

डस० ना० स्त्री० तराजू की रस्सी, दशा ।

डसना० स० क्रि० काटना, चमकना, डङ्कियाना ।

डसौना० ना० पु० बिछौना ।

डहक० ना० पु० गुफा, खोह, चोरगड़हा, लालच, बिगाड़, डौंक ।

डहकना० अ० क्रि० डोंकना, लालच करना, बिगड़ना ।

डहकाना० स० क्रि० निराश करना, ललचाना, बिगाड़ना ।

डहडहा० गु० प्रफुल्लित, खिला हुआ, चैतन्य ।

डहडहाना० अ० क्रि० खिलना, फूलना ।

डांक० ना० पु० जगजगा, बिच्छू आदि का डंक ।

डांग० ना० स्त्री० लाठी, पहाड़ की चोटी ।

डांगर० गु० दुर्बल, ना० पु० दुर्बलपशु, मूलीका फूला हुआ पत्ता ।

डांटना० स० क्रि० ताड़नकरना, घुड़कना ।

डांठल० ना० पु० } डण्डी, बोंट ।
डांठी० ना० स्त्री० }

डांड० ना० पु० बदला, दण्ड, ताड़ना, नावखेवने का अस्त्र, चप्पू, रीढ़, डण्डीर ।

डांडना० स० क्रि० बदलालेना, दगडलेना ।

डांडा० ना० पु० मेंड,सिवाना, धूरा ।

डांडो० ना० स्त्री० खेवनेहारा, खेवैया ।

डांमाडोल० ना० पु० इधरसे उधर रवड़ना ।

डांवरू० ना० पु० शेरकाबच्चा ।

डांस० ना० पु० डङ्क, मच्छड़ ।

डाक० ना० स्त्री० टप्पा, अन्तररहित वमन, डाकिनी का पति,डाका,डाक ।

डाकना० स० क्रि० वमनकरना, उछालकरना ।

डाका० ना० पु० चोरों का धावा ।

डाकिन्०, डाकिनी० } ना० स्त्री० डायन्, चुड़ैल, योगिनी भेद ।

डाकिया० ना० पु० डाकू, डाकलेजाने वाला ।

डाकौ० गु० खाऊ, पेटू ।

डाकू० ना० पु० डकैत, चोर, बटमार ।

डाट० ना० स्त्री० घुड़क,धमक, ढढ्ढी ।

डाटना० स० क्रि० डांटना, क्रोधसे देखना ।

डाढ़० ना० स्त्री० पिछलेदांत

डाढ़ी० ना० स्त्री० ठुड्डी पर के बाल ।

डाब० ना० पु० परतला,कच्चा नारियल, टण विशेष ।

डाबर० ना० पु० हाथ धोने का पात्र, गोल तालाब, झाबर ।

डाभ० ना० पु० कुशा, डाब, दर्भ ।

डाभर० ना० पु० धूना, राल

डायन्० ना० स्त्री० डाकिनी ।

डार० ना० स्त्री० डाली, डाल ।

डारना० स० क्रि० डालना ।

डारिम०ना० पु० दाड़िम, अनार फल।

डाल०ना० स्त्री०डाली, शाखा, टहनी।

डालना०स० क्रि० फेंकना, घुसेड़ना, झोंकना।

डाला०ना० पु० डोला, बड़ी-डाली।

डाली०ना०स्त्री०टहनी, शाखा फलादिका भेद, पुष्पादि रखने के लिये बांस का पात्र।

डासन०ना०पु० बिछौना।

डासना०स० क्रि० बिछाना।

डाह०ना० पु० द्रोह, द्वेष, पेटमें आगि पड़ना।

डाहना०अ० क्रि० बैरीहोना, द्वेषीबनना।

डाही०ना० स्त्री० द्रोही, द्वेषी, कलेजेपर आगिजलना, मन्दाग्नि।

डिगना०अ० क्रि० हिलना, लहकना, हटना, टलना, चलायमान होना।

डिगाना०स० क्रि० हिलाना, चलाना।

डिठना०स० क्रि० देखना, दुक्कीलगाना।

डिठियारा०गु० देखनेवाला, द्रष्टा।

डिण्डर०ना० पु० समुद्रफेन।

डिण्डुभ०ना० पु० सांप।

डिण्डिम०ना० स्त्री०डमरू।

डिबिया०ना० स्त्री०ढकनेसमेत काठ का गोल पात्र विशेष।

डिब्बा०ना० पु० बड़ीडिबिया।

डिब्बी०ना० स्त्री० डिबिया।

डिम्भ०ना० पु० दम्भ, पाखण्ड, अहङ्कार।

डिम्भी०गु० पाखण्डी, दम्भी।

डींग०ना० पु० बड़ाई, अपनी बड़ाई।

डींगमारना॰ अ॰ क्रि॰ निज बड़ाई करना।

डीठ॰ } नाo स्त्रीoदृष्टि,नज़र।
डीठि॰ }

डील॰ नाo पुo तन, क़द।

डीला॰ नाo पुo ढेला, मिट्टी का टुकड़ा।

डीह॰ नाo पुo खेड़ा, उजाड़ गांव।

डीहा॰ नाo पुo टीला।

डुक्का॰ नाo पुo मुक्का, घूंसा।

डुकरवा॰ नाo पुo बूढ़वा, बुड्ढा।

डुकरिया॰ नाoस्त्रीoबुढ़िया।

डुगडुगाना॰ अo क्रिo डङ्का बजाना, तिमतिमाना।

डुबकी॰ नाoस्त्रीoबुड़की,गोता।

डुबाना॰ सo क्रि॰ बोरना, डुबोना।

डुबाव॰ नाo पुo जलस्थानजो बूड़ने के योग्य है।

डुबोना॰ सo क्रिo बोरना, डुबाना।

डुरियाना॰ सoक्रिo फिराना, रस्सीमें बांध के ले चलना।

डुलना॰ अo क्रिo हिलना, चलना।

डुलाना॰ सo क्रिo हिलाना, चलाना।

डूंगर॰ नाo पुo पहाड़इत्यादि, ब्रजविलासेयथा, दिया ही में सब खोदि बहावे, डूंगर को घरनाम मिटावे।

डूब॰ नाo पुo डुबकी।

डूबना॰ अoक्रिo डुबकीमारना, बड़ना, उजड़ना, चिन्ता में होना।

डूबा॰ गुo बूड़ाभया।

डेग॰ नाo पुo डग, फलांग।

डेढ़॰ गुoएक और आधा $1\frac{1}{2}$

डेढ़गति॰ना० स्त्री० नाच विशेष।

डेरा०ना० पु० डेरा, घर, तम्बू, गु० भेंगा।

डेल॰ } ना० पु० ढेला।
डेला॰ }

डेवढ़ा०गु॰ एक और आधा, डेढ़गुणा।

डेवढ़ाना०स॰ क्रि० डेवढ़ा, करना वा लेना।

डेवढ़ी॰ना० स्त्री० देहली।

डेऊड़॰ना० स्त्री० बन्दूकों की बाढ़िदगना।

डेऊड़ी॰ना० स्त्री० डेवढ़ी।

डैन॰ना० पु० पंख, पक्ष।

डैना०ना० पु० डाल।

डोई॰ना० स्त्री० काठकी कर्छी।

डोंगा॰ना० पु० } छोटीएककाठकीनाव।
डोंगी॰ स्त्री० }

डाडी॰ना० स्त्री० ढिंढोरा।

डोरा॰ना० पु० दो मुख का सांप।

डोकर॰ } गु० बुड्ढा, बूढ़ा।
डोकरा॰ }

डोकरी०ना०स्त्री० बुड्ढी।

डोब॰ना० पु० डूब।

डोबा०ना० पु० ताल, पोखरा, मूर्छा।

डोम॰ } ना० पु० जाति विशेष।
डोमड़० }

डोमिनी॰ना॰ स्त्री० डोम की स्त्री।

डोर॰ना० स्त्री० रस्सी।

डोरा॰ना० पु० सीवनेकासूत, रस्सा, धागा, धार, लगाव।

डोरिया॰ना० पु० सूती, मा-लदई, कपड़ाविशेष।

डोरी॰ना० स्त्री० रस्सी।

डोल०ना० पु० पानीभरने के लिये लोहे वा चमड़े का पात्रविशेष, जन्माष्ट-मी में कृष्णजन्म के लिये मण्डप विशेष।

डोलची०ना० स्त्री० छोटा डोल।

डोलना०अ० क्रि० हिलना, टलना, फिरना, झूलना।

डोला०ना० पु० पालकी विशेष।

डोली०ना० स्त्री० पालकी विशेष जो स्त्रियों के लिये है।

डौंगा०ना० पु० गर्गज, मचान।

डौंडी०ना० स्त्री० डोंडी, मनादी।

डौढी०ना० स्त्री० डेवढी, ड्यौढ़ी, गु० ड्यौढ़ा।

डौल०ना० पु० प्रकार, ढब, ब्योंत, स्वरूप, आकार।

ड्यौढ़ा०गु० डेवढ़ा।

ड्यौढ़ी०ना० स्त्री० डेवढ़ी, गु० डेढ़गुणा।

[ढ]

ढक०ना० पु० तौलविशेष।

ढकना०स० क्रि० ढपना, छुपना, ना० पु० ढापने की वस्तु विशेष।

ढकनी०ना० स्त्री० चपनी।

ढकार०ना० स्त्री० ढकार, डकार।

ढकेल०ना० पु० रेल, धक्का।

ढकेलना०स० क्रि० ठेलना, रेलना, झांकना।

ढकेलू०ना० पु० ढकेलने हारा

ढक्का०ना० पु० बाजाविशेष।

ढङ्ग०ना० पु० चाल, लक्षण, निशान।

ढट्ठा०ना० पु० ठेपी।

ढड़कौवा०ना० पु० जङ्गली कौआ, ढालू।

ढड़वा०ना० पु० पक्षी विशेष।

ढण्ढोरना०स० क्रि० ढूंढना।

ढण्ढोरा० ना० पु० राजा की ओरसेकोई आज्ञासुनाने को बाजा बजा के कहाना।

ढण्ढोरिया० ना० पु० ढण्ढोरा बजानेहारा।

ढनमनना० अ० क्रि० गिरपड़ना।

ढनमनी० गु० स्त्री, गिरपड़ी हुई।

ढपढपाना० स० क्रि० ढोलको पीटना।

ढपना० अ० क्रि० छिपना।

ढब० ना० पु० डौल, रूप, चाल, रीति, बनावट, हथौटी।

ढबरा० गु० गदला, मैला।

ढबीला० गु० सजीला, सुडौल।

ढबुआ० ना० पु० पैसा।

ढमलाना० अ० क्रि० डगराना।

ढलकना० अ० क्रि० डगरना, फिरना, बहना।

ढलका० गु० चौंधना, भक्का, छलका।

ढलकाना० स० क्रि० औंधाना, बहाना।

ढलना० अ० क्रि० गिरना, पिछलना, बीटना, छलकना, डगरना, झुकना, भर जाना।

ढलमलाना० अ० क्रि० डगमगाना।

ढलाना० स० क्रि० सांचे में डालना, बहाना।

ढलैत० ना० पु० ढाल तलवार बांधनेहारा।

ढहाना० स० क्रि० गिरवाना। उजड़वाना।

ढहना० } अ० क्रि० गिरपड़ना, उजड़ना।
ढहपड़ना० }

ढाई० गु० अढाई २ $\frac{1}{2}$।

ढांकना० स० क्रि० ढांपना छुपाना।

ढांग०ना० स्त्री० कन्दला, शिखर।

ढांचा०ना० पु० ठाठ, घर, सांचा, खाटकाघेरा।

ढांपना०स० क्रि० ढांकना, छुपाना।

ढांसना०स० क्रि० दोषदेना।

ढांसा०ना० पु० लिस, दोष।

ढाक०ना० पु० पलाशकावृक्ष, शुह्रत, छुपाव, सांपका विष उतारने में एक प्रकार का बाजा।

ढाका०ना० पु० बङ्गाले का नगर विशेष।

ढाटा०ना० पु० डाढीबन्धन, ठट्ठा।

ढाटी०ना० स्त्री० कसन, यन्त्रणा, फांदा जो घोड़े के मुखपर बांधते हैं।

ढाढस०ना० स्त्री० धीरज, सूरमापन, दिलासा, शान्ति, भरोसा।

ढाढिन्०ना० स्त्री० ढाढ़ी की स्त्री।

ढाढी०ना० पु० जाति विशेष जो बजाते और गाते हैं।

ढाना०स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।

ढाबर०गु० मैला, गन्दला।

ढाबा०ना० पु० जाल, ओरी, ओलती।

ढार०ना० स्त्री० भांति, कान का गहना, विशेष।

ढारना०स० क्रि० ढालना।

ढारी०गु० भरीहुई।

ढारू०गु० ढालू।

ढाल०ना० पु० उतार, ना० स्त्री० फरी।

ढालना०स० क्रि० सांचेमें उतारना, औंधाना, बिगाड़ना।

ढालवा०गु० उतारू, जोसांचे में उतारागया।

ढालू० गु० उतारू, बेंड़ा, बिगाड़ू, सांचेका उतारना।

ढाहना० स० क्रि० गिराना, उजाड़ना।

ढाहा० ना० पु० नदी का कराड़ा।

ढिग० ना० स्त्री० पास, समीप।

ढिठाई० ना० स्त्री० चञ्चलता, गुस्ताख़ी।

ढिड़िम० ना० पु० टटीहरी, पक्षी।

ढिबका० ना० पु० उभार, गुमड़ा।

ढिमढिमी० ना० स्त्री० खञ्जरी विशेष।

ढिल्लड़०
ढिल्लर० } गु० आलसी, सुस्त।

ढीठ०
ढीठा० } गु० चञ्चल, निडर, बेअदब, धौंताल, मगरा।

ढीठैंदे० गु० धौंताली वा चञ्चलता से।

ढील० ना० स्त्री० आसकत... बिलम्ब, देर, छूट।

ढीलाई० ना० स्त्री० शिथिलता... आलस्य।

ढीहा० ना० पु० टीला।

ढुकना० अ० क्रि० झुकना... सिरझुकाना।

ढुकी० ना० स्त्री० ताक।

ढुरना० अ० क्रि० फिरना... लुढ़कना।

ढुलना० अ० क्रि० ढुरना, ढ... ना, मरना।

ढुलाई० ना० स्त्री० उठवाने... पैसा वा काम।

ढुलवाना०
ढुलाना० } स० क्रि० उठव... ना, छलकाना...

ढूआ० ना० पु० तूदा, मे... मिट्टीका पिण्ड।

ढूंढढांढ़० ना० पु० खो... झाड़ीझूंडी।

ढूंढन० ना० पु० खोज।

ढूंढना॰स॰ क्रि॰ खोजना, तलाश करना।

ढूंढार॰ना॰ पु॰ देशविशेष।

ढूंढिया॰ना॰ पु॰ जैनलोगों में भिखारी, गु॰ ढूंढने वाला, ढुंढाव।

ढूक॰ना॰ स्त्री॰ हुकी, ताक, पैठ।

ढूकना॰अ॰ क्रि॰ बन्दकरना, मूचना, छपिके पास आना, पैठना।

ढूसर॰ना॰ पु॰ जाति विशेष।

ढेंकली॰ना॰ स्त्री॰ कूपसेजल निकालने का यन्त्र।

ढेंका॰ना॰ पु॰ } कूटने का
ढेंकी॰ना॰ स्त्री॰ } यन्त्र।

ढेंड़स॰ना॰ पु॰ तरकारी विशेष।

ढेंड़ी॰ना॰स्त्री॰ पोस्ताकाफूल।

ढेढा॰ना॰ पु॰ गर्भ, गर्भता, बड़ापेट, दोनों पैरों का बीच, गदरा।

ढेक॰ना॰ पु॰ पक्षी विशेष।

ढेकुली॰ना॰ स्त्री॰ रहटी, चरखी।

ढेढ॰ना॰ पु॰ चमारकी जाति, विशेष, कौआ।

ढेढी॰ना॰ स्त्री॰कानका गहना विशेष।

ढेर॰ना॰ पु॰ रास, टाल, बहुतात।

ढेरा॰ ना॰ पु॰ मंगा, जिससे बाधी ऐंठते हैं।

ढेरी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटा ढेर।

ढेला॰ ना॰पु॰माटी कालोंदा।

ढेलाचौथ॰ ना॰स्त्री॰ भादों कीचौथ।

ढैया॰ ना॰स्त्री॰अढैया।

ढैयाटेकर॰गु॰जो उजड़गया।

ढोआ। नाo पुo पर्ववाल्यो हार में फल वा फूल जोछोटे लोग लाते हैं।

ढोक। नाo स्त्रीo तृष्णावत्, पियास।

ढोकना। सo क्रिo पीना, घूंटना।

ढोका। नाo पुo पत्थर आदि का टुकडा, ढेर।

ढोटा। नाo पुo लड़का।

ढोना। सo क्रिo लेजाना, उठाना

ढोर। नाo पुo गायगोरू।

ढोरा। नाo पुo ताज़िया जो मुसल्मान बनाते हैं।

ढोरी। नाo स्त्रीo ढौंरी, चोंप।

ढोल। नाo पुo बाजा विशेष।

ढोलक। नाo पुo छोटाढोल।

ढोलकिया। नाo पुo ढोल बजानेहारा।

ढोलकी। नाo स्त्रीo छोटा ढोल।

ढोलन। नाo पुo प्यारा, स... लिया।

ढोलना। नाo पुo ढोल के समान यन्त्र विशेष।

ढोला। नाo पुo छोकरा, रा... विशेष।

ढोलिया। } नाo पुo ढोल
ढोलैत। } बजानेहारा।

ढोली। ना स्त्रीo दोसौ पा... का परिमाण।

ढौंचा। गुo साढ़ेचार $4\frac{1}{2}$

ढौरी। नाo स्त्रीo डोरी, दृढ़... चोंप।

[त]

तई। अव्यo तलक, लग, ना... स्त्रीo दृष्टि, ताक।

तऊ। अव्यo तौभी, तथापि, तद...

तक। अव्य, तलक, लग, न... स्त्रीo दृष्टि, ताक, तरा... तखड़ी।

तकतक॰ ना॰ पु॰ पशु आदि चलाने का शब्द।

तकना॰ स॰ क्रि॰ ताकलगाना, अ॰ क्रि॰ दृष्टि देना।

तकला॰ ना॰ पु॰ तकुआ।

तकली॰ ना॰ स्त्री॰ अटेन, परेता।

तकवाहा॰ ना॰ पु॰ रक्षक, चौकीदार, पहरू।

तकाना॰ स॰ क्रि॰ टुकी लगाना, लखाना।

तकिया॰ ना॰ स्त्री॰ पु॰ सिरहने की वस्तुविशेष।

तकुआ॰ ना॰ पु॰ सूतकातने के लिये लोहे की शलाका जो चरखे में लगती है।

तक्र॰ ना॰ पु॰ मट्ठा, छाछ।

तखड़ी॰ } ना॰ स्त्री॰ तुला
तखरी॰ } तराज़ू।

तखान॰ ना॰ स्त्री॰ बढ़ई।

तगण॰ ना॰ पु॰ जिसके अन्त का अक्षर लघु होता है, गण विशेष।

तगना॰ स॰ क्रि॰ तागा डालना।

तगाई॰ ना॰ स्त्री॰ सिलाई, सिलाई का पैसा।

तगाना॰ स॰ क्रि॰ तागा डलाना, सिलाना।

तग्गा॰ ना॰ पु॰ सीने के लिये बनाया हुआ सूत।

तघड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ करधनी।

तङ्गा॰ ना॰ पु॰ दो पैसा।

तचना॰ अ॰ क्रि॰ गर्म होना।

तचाना॰ स॰ क्रि॰ गर्म करना वा कराना।

तच्छरीर॰ ना॰ पु॰ उसका शरीर।

तज॰ ना॰ पु॰ औषधि, वृक्षविशेष।

तजन॰ ना॰ स्त्री॰, छोड़न, त्यागन।

तजना॰ स॰ क्रि॰ त्यागना, छोड़ना।

तजिय॰ अव्य॰ छोड़िय।

तज्जन॰ ना॰ पु॰ उसका मनुष्य।

तट० ना० पु० तीर, पास, किनारा।

तटस्थ० गु० तीरवासी।

तटिनी० ना० स्त्री० नदी।

तट्टीका० ना० पु० उसका टीका।

तड़० ना० पु० पक्ष।

तड़क० ना० स्त्री० तर्क, टेंड़, आड़।

तड़कना० अ० क्रि० फटना, फूटना।

तड़का० ना० पु० प्रातः काल, भोर।

तड़के० अव्य० सवेरे।

तड़तड़ाना० अ० क्रि० रिसना० झिर झिराना, फटने का शब्द।

तड़प० ना० स्त्री० चटक, झपट, उचक, उतावली।

तड़पना० अ० क्रि० तलफना, धड़कना, कुदकना, फटफटाना, हाथ पांव पटकना।

तड़पाना० स० क्रि० तलफाना, धड़काना।

तड़पीला० गु० फुर्तीला, चटपटिया।

तड़फ० ना० स्त्री० व्याकुलता, धड़क।

तड़फड़ाना० अ० क्रि० धड़कना, घबराना।

तड़फड़ाहट० ना० स्त्री० व्याकुलता, घबराहट।

तड़फना० अ० क्रि० व्याकुल होना, फटफटाना।

तड़फाना० स० क्रि० तड़पाना।

तड़ा० ना० पु० टापू, द्वीप।

तड़ाक० गु० भड़कीला, चमकीला।

तड़ाका० ना० पु० मारने का शब्द, चटाका।

तड़ाग० ना० पु० तालाव, पोखरा।

तड़ाड़ा० ना० पु० जलकीधारा, तरेड़ा।

तड़ाया० ना० पु० चटक, भड़क।

तड़ावा० ना० पु० ढङ्ग, बनाव।

तडित्० ना० स्त्री० बिजली।

तडित्वान्० ना० पु० मेघ।

तण्डुल० ना० पु० तन्दुल, चावल।

तत्० अव्य० वह, सो, तौन, समूह, ना० पु० ईश्वर।

तताना० स० क्रि० गर्मकरना।

ततेड़ा० ना० पु० पानी गर्म करने का पात्र विशेष।

तत्कन्द ना० पु० अदरक, वाराही कन्द।

तत्काल० अव्य० उसीसमय।

तत्तत्कार्य्य० ना० पु० उसी उसी काममें।

तत्ता० गु० गर्म, ज्वलित, क्रोधी।

तत्पर० गु० आसक्त, चतुर, निपुण, सचेत।

तत्फल० ना० पु० पीलूवृक्ष, गजपीपरि, जामुनवृक्ष, उसकाफल।

तत्व० ना० पु० सार, प्रकृति, यथार्थ, मूलसत, भाव, जोकिसीसेबनान हो।

तत्ववल्का० ना० स्त्री० मुरहरी।

तत्वज्ञ० गु० मनुष्यादि जो बोलसके बातकरे, तत्व वस्तु जाननेहारा यथा, ब्रह्मवेत्ता।

तत्वज्ञान० ना० पु० ब्रह्मज्ञान, अध्यात्मज्ञान।

तत्क्षण० अव्य० उसी समय, तुरन्त, उसीक्षण।

तत्र० अव्य० तहां।

तथा० अव्य० तिसीप्रकार, तैसा, वैसाही।

तथाच० अव्य० जैसे, चुनांचि:।

तथापि० अव्य० तौभी।

तद० अव्य० तब, तिससमय।

तदनन्तर० अव्य० तिसकेपीछे।

तदनु० अव्य० तेहि अनुसार, तिसपीछे।

तदा० अव्य० तब, तहां।

तदपि० अव्य० तौभी।

तद्गत० गु० उसमेंगयाहुआ।

तद्गति० ना० स्त्री० उसकीदशा, उसकीमाया।

तद्गुणविशिष्ट० गु० वहगुण जिसमें है।

तद्धवि० ना० पु० उसकेयज्ञ का हव्य।

तद्भय० ना० पु० उसकेडर।

तद्भावबोधक० गु० उसभाव का बोधक।

तधी० अव्य० तिसीसमय, तभी।

तन० ना० पु० शरीर, देह, पुत्र, औरविस्तार।

तनक० गु० थोड़ा, अल्प।

तनय० ना० पु० पुत्र, लड़का, सुत।

तनया० ना० स्त्री० पुत्री, कन्या सुता।

तनापा० ना० पु० जवानी तरुणाई।

तनी० ना० स्त्री० अंगरखे क बन्धन, तनया।

तनु० ना० पु० शरीर, देह।

तनुक० गु० थोड़ा, अल्प।

तनुजा० ना० स्त्री० तनय पुत्री।

तनुत्राण० ना० पु० बकत कवच।

तनूदरी० ना० स्त्री० स्त्री, नारी अबला।

तनूरुह० ना० पु० शरीर बाल।

तनोति० अ० क्रि० विस्तारक

तन्त० ना० पु० तार, सुख, सि तुरन्त, सन्तान, औष तदबीर।

तन्तनाना० अ० क्रि० पिन नाना, मन्नाना

तन्त्रनाहट० नाο स्त्री० मन्त्रा-हट, जलनसे जोपीड़ा ।

तन्तु० नाο पुο सूत, तार ।

तन्तुना० नाο पुο ततुना, तार ।

तंत्र० नाο पुο तोटका, लटका, शास्त्रोक्तमन्त्र शिवकृत ग्रन्थ विशेष, वीणा ।

तंत्री० गुο तंत्र का करने वाला, गाने वाला ।

तंत्रीनाद० नाο पुο वीणा का शब्द ।

तन्द्रा० नाο स्त्री० थकाई, श्रम, मूर्छा ।

तन्द्री० नाο स्त्री० भौंह, भृकुटी ।

तन्दुल० नाο पुं० चावल ।

तन्ना० अο क्रिο खिचना, फैलना ।

तन्नाना० अο क्रिο पिनपिनाना, क्रोधित होना ।

तन्नेत्र० नाο पुο उसकी आंखि ।

तन्मय० गुο उसमें भराहुआ ।

तन्मात्र० अव्य, केवल वह ।

तप० नाο स्त्री० ताप, उष्ण, नाο पुο तपस्या, माघ का महीना ।

तपत० नाο स्त्री० उष्ण, गुο गर्म, तत्ता ।

तपन० नाο पुο उष्ण, ज्वलन, सूर्य्य, औरभिलावाद्वक्ष ।

तपना० अο क्रिο ऐश्वर्य्य वान् होना, उष्ण होना, अति तेजयुत होना ।

तपनीय० नाο पुο सूर्य्य ।

तपलोक० नाο पुο स्वर्गविशेष, लोक विशेष ।

तपसी० नाο पुο तपस्वी ।

तपस्य० नाο पुο फागुन मास यथा, मधुस्तथा माधव संज्ञकश्च शुक्रः शुचिश्चा थनभो नभस्यौ, तयेषु ऊर्ज्जश्च सह सहस्यौत-पस्तपस्या विति ते क्रमेण १ ।

तपस्या० ना० स्त्री० तप, योग, ईश्वर भजन।

तपस्विनी० ना०स्त्री० तपस्या करने हारी स्त्री।

तपस्वी० ना० पु० तपस्याकरने हारा, योगी।

तपा० ना० पु० अचक, योगी जोगी।

तपाना० स० क्रि० गर्मकरना, तताना, अरपना।

तपास० ना० स्त्री० किरण, धूप, परिश्रम दौड़धूप।

तपिच्छ० ना० पु० तापिच्छ, तमाल, वृत्त।

तपी० ना० पु० तपा, मुनि।

तपेश्वर०
तपेश्वरी०
तपोधन० } ना० पु० तपी, मुनि।

तपोधना० ना० स्त्री० मुगडी, और तपोधन की स्त्री, तपेश्वरिन् स्त्री।

तपोमय० गु० तपस्या युक्त।

तप्त० गु० तत्ता, गरम, तपत।

तप्ताङ्ग० ना० पु० ज्वरविशेष देह गरम।

तब० अव्य० तिस समय।

तबी०
तभी० } अव्य० तिसी समय।

तम०
तमः० } ना० पु० अन्धकार क[illegible] गुण, अंधेरा तमोगु[illegible] राहुग्रह, क्रोध, अज्ञान अति, पदान्त में ब[illegible] तातका बोधक।

तमक० ना० स्त्री० गर्व, घम[illegible] गड, मुखका लालहोना[illegible] झुन्झाहट, टर्र।

तमकना० स० क्रि० मुखला[illegible] होना, दहकना, द[illegible] दगाना, निष्कारणक्रोध[illegible]

तमका० ना० पु० धूपकीमा[illegible] बहुत गर्मी।

तमचुर० ना० पु० कुक्कुट, मुरग[illegible]

तमतमाना॰ अ॰ क्रि॰मुखमें लाली होना,दगदगाना।

तमस॰ ना॰ पु॰ तम, मनु विशेष।

तमस्विनी॰ ना॰ स्त्री॰ राति, रैन।

तमारि॰ ना॰ पु॰ सूर्य्य।

तमाल॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष, तिलक जो चन्दन से बनाते हैं।

तमालपत्र॰ ना॰ पु॰ तमाकू।

तमिस्र॰ ना॰ पु॰ तम, अन्धकार।

तमी॰ ना॰ स्त्री॰ रात, निशा।

तमीचर॰ ना॰ पु॰ निशाचर, चोर, उल्लू, चमगीदड़।

तमोगुण॰ ना॰ पु॰ मनोवृत्ति विशेष वा दोष जिससे काम क्रोधादि उपजते हैं।

तमोल॰ ना॰ पु॰ ताम्बूल, पान।

तमोलिन्॰ ना॰ स्त्री॰ तमोली की स्त्री।

तमोली॰ ना॰ पु॰ जातिविशेष जो पान बेचते हैं।

तम्बू॰ ना॰ पु॰ रावटी, पाल, कपड़े का कोठा।

तम्बूल॰ ना॰ पु॰ ताम्बूल।

तम्बेरम॰ ना॰ पु॰ स्तम्बेरम, हाथी।

तर॰ अव्य॰ तल, पदान्त में अधिकता का चिह्न, बड़तात का सूचक।

तरई॰ ना॰ स्त्री॰ तारा, नक्षत्र।

तरकारी॰ ना॰ स्त्री भाजी।

तरङ्ग॰ ना॰ पु॰ लहर, उमङ्ग, ललक।

तरङ्गिनि॰ }
तरङ्गिनी॰ } ना॰ स्त्री॰ नदी।

तरङ्गी॰ ना॰ पु॰ बहुरङ्गी, लहरी।

तरण० ना० पु० मुक्तिमय, पार-
होना, उद्धारहोना ।

तरणि० ना० पु० सूरज, नाव ।

तरणी० ना० स्त्री० नाव, तरनी ।

तरन० ना० पु० तरण ।

तरफना० अ० क्रि० तड़फड़ाना ।

तरबूज़० ना० पु० हिन्दवाना,
फलविशेष ।

तरल० गु० चञ्चल तीक्ष्ण, ओछा,
ना० पु० धतूरावृक्ष ।

तरलता० ना० स्त्री० चञ्चलता
तेज़ी ।

तरला० ना० पु० बांस विशेष,
गु० जो सबसे नीचला
वा दूसरे से नीचला ।

तरलाई० ना स्त्री० तरलता ।

तरव० ना० पु० वृक्ष ।

तरवर० ना० पु० बड़ावृक्ष ।

तरस० ना पु० शीघ्र, जल्दी,
लालच, दया, कृपा,
कल्क ।

तरसना० अ० क्रि० जीलगाकर
रहना, ललचाना,
दयालु होना, पसी-
जना ।

तराई० ना० स्त्री० दलदल,
चराओ, नीचान् ।

तरान्० ना० पु० उगाही प्राप्त ।

तराना० स० क्रि० पारकराना,
पैराना, बचाना ।

तरि०
तरी० } ना० स्त्री० नाव, नौका ।

तरीन० ना० स्त्री० तरीकाबहु
बचन, नावें ।

तरु० ना० पु० वृक्ष ।

तरुण० गु० युवा, जवान ।

तरुणता०
तरुणाई० } ना० स्त्री० यौवन,
किशोर, जवानी ।

तरुणी० ना० स्त्री० युवती,
जवान् स्त्री ।

तरेड़ा० ना० पु० टोंटीसे
पानी का गिरना ।

तरैया० ना० पु० तारागण, तारा, कविवाक्य यथा दोहा० यथा तरैया प्रात के सब नृप भये उदास, लखि दिनमणिकर राम छवि सकुचाने चक्षुश्वास।

तरौस० ना० पु० किनारा, बिहारी लाल सप्तशति कायां, श्यामसुरति करि राधिका तकति तरणि जा तीर, अंसुन करत तरौस को खिनक खरोंहो नीर।

तरौना० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष, बिहारी लाल सप्त शतिकायां, लसत श्वेत सारी ढप्यो तरल तरौना कान, पर्यो मनो सुरसरि सलिल रवि प्रतिबिंब विहान।

तर्क० ना० स्त्री० बुद्धि से विवेचना अनुमानोक्ति, न्याय शास्त्र, दलील।

तर्कण० ना० पु० कूदन, नई बात बनाना, शङ्का करना।

तर्कित० गु० शङ्कित, लंघित, तर्क कियागया।

तर्की० ना० स्त्री० तरपतिया, ताड़पत्र रचित, कानका भूषण विशेष।

तर्कुल० ना० पु० ताड़का फल।

तर्खा० गु० धाराजो बहुत शीघ्र बहती है।

तर्जन० ना० पु० कोप।

तर्जना० अ० क्रि० कोपकरना, कूदना।

तर्जनी० ना० स्त्री० अङ्गुष्ठ के पास की अङ्गुली।

तर्तराना० गु० जो बहुतचिकना, गोलाई से जोटपकताहै, अ० क्रि० सन्नाटभरना, गलफटाकी करना।

तर्राहट० ना० स्त्री० सन्नाटा, गीदड़ भबकी, गल फटाकी ।

तर्पण० ना० पु० पितादि के निमित्त जल दान देना, मंगल, उल्लास ।

तर्राना० अ० क्रि० बड़बड़ाना, खुनसाना, कुड़कुड़ाना ।

तर्रारा० ना० पु० शीघ्रता ।

तर्वरिया० ना० पु० खड्ग, तलवार बांधने हारा ।

तर्स० ना० स्त्री० दया, कृपा, रहम् ।

तर्सों० अव्य० परसें के आगेका दिन ।

तल० ना० पु० अधोभाग, पाताल विशेष, हष्टि ।

तलक० अव्य० तक, लग ।

तलछट० ना० स्त्री० निचोड़, मैल, खूद ।

तलतलाना० स० क्रि० हिलाना ।

तलना० स० क्रि० घी वा तेल में भूनना ।

तलपट० गु० मलमेट, चौपाट

तलफना० अ० क्रि० तरफना ।

तलमलाना० अ० क्रि० ललचाना ।

तलवरिया० ना० पु० तर्वरिया ।

तलवार० ना० पु० खड्ग, तरवार ।

तला० ना० पु० पेंदा, थाह, जूतीके नीचे का भाग, पद, देवता ।

तलातल० ना० पुं० पाताल विशेष ।

तली० ना० स्त्री० तला, बकनी, निस्पर्शी ।

तलुआ० } ना० पु० पांवके
तलूआ० } नीचे का भाग ।

तले० अव्य० नीचे ।

तलैया० ना० स्त्री० छोटातालाब

तल्प० ना० स्त्री० शय्या, सेज, बिस्तर ।

तल्लीला॰ना॰ स्त्री॰ उसकी लीला।
तवर्ग॰ना॰ पु॰ तकारादिपांच अक्षर।
तवल्कार॰ना॰ पु॰ लकार, तेरालिखा हुआ।
तष्टना॰स॰ क्रि॰ भागदेना, बांटना।
तष्टित॰गु॰ भाजित,बांटागया।
तसला॰ना॰ पु॰ खानापकाने का पात्र विशेष।
तस्कर॰ना॰ पु॰ चोर।
तस्करता॰ना॰ स्त्री॰ } चोरी।
तस्करत्व॰ना॰ पु॰ } चोरी।
तस्करी॰ना॰ स्त्री॰ } चोरी।
तस्मिन्॰सर्व्व॰ तौनमें, उसमें।
तस्य॰सर्व्व॰ उसका।
तसू॰ना॰ पु॰ माप विशेष, फ़ारसी शब्द है।
तहां॰अव्य॰ तिस स्थान, उस जगह।
तहियां॰गु॰ पहिले।
तहीं॰अव्य॰तिसीवाउसस्थान।
तक्षक॰ना॰ पु॰ मुख्यसांप।
तज्ञ॰गु॰ ज्ञाता, ज्ञानी, स्वरूप ज्ञाता।
ता॰सर्व्व॰ उसको।
ताइत॰ना॰ पु॰ यन्त्र, गण्डा।
ताई॰ना॰ स्त्री॰ चाची।
ताऊ॰ना॰ पु॰ बड़ाचचा।
तांगा॰ना॰ पु॰ गाड़ी विशेष जो सजी नहीं है।
तांत॰ना॰स्त्री॰चमड़ेकीरस्सी।
तांतबांधना॰स॰ क्रि॰ बच्चा को चुपाना।
तांता॰ना॰ पु॰ पांति, पंक्ति, तार।
तांती॰ना॰ पु॰ धुनिया, विहना, पटकार।

तांबड़ा० ना० पु० तांबेकावर्ण, मानिक्य के समान झूठा पत्थर।

तांबा० ना० पु० धातुविशेष।

ताक० ना० पु० दृष्टि, दुक्की।

ताकना० स० क्रि० देखना, झांकना, घूरना।

ताकझांक० ना० स्त्री० ठीक समय, दृष्टिरखना।

ताग० ना० पु० सूत, धागा।

तागना० स० क्रि० सीवना, सूत डालना।

तागा० ना० पु० सूत, धागा।

ताजक० ना० पु० ज्योतिष का ग्रन्थ विशेष।

ताजन० ना० पु० कोड़ा।

ताटङ्क० ना० पु० कर्ण भूषण विशेष।

ताड़० ना० पु० वृक्षविशेष, ना० स्त्री० पहिचान।

ताड़क० ना० पु० ताटङ्क, ताड़नेहारा।

ताड़न० ना० पु० झिड़की दण्ड, डांट।

ताड़ना० स० क्रि० पहिचानना, बूझना, अटकलना, दण्ड देना, मारना।

ताड़नीय० गु० ताड़नाकरनेके योग्य।

ताड़का० ना० स्त्री० सुबाहु की माता, राक्षसी।

ताड़ित० गु० ताड़नदियागया, मारागया।

ताड़ी० ना० स्त्री० ताड़कारस।

ताण्डव० ना० पु० तांडव, नृत्य विशेष।

तात० ना० पु० पिता, गुरु, मित्र, पुत्र, भाई, प्रभु, सेवका-दिका बोधक, गु० तत्ता गरम, उष्ण।

तातनी० } सर्व० उसकी, उ-
तातनो० } सका।

तातैं० } सर्व्व० तिससे, उससे,
ताते० } तिसकारण।

तात्कालिक०गु० उसी समय का।

तात्पर्य्य०ना० पु० अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब, हासिल।

तादात्म्य०ना० स्त्री० तत्स्वरूपता।

तादृश०गु० वैसाही।

तान०ना० स्त्री० राग का जो उच्चारण, स्वर।

तानसेन०ना० पु० रागी विशेष।

ताना०ना० पु० वस्त्रका लम्बा सूत।

तानी०गु० रागी, गवैया, ना० स्त्री० तानी।

तांत्रिक०ना० पु० सिद्धान्तका जानने हारा विद्वान्, तन्त्रशास्त्रज्ञ।

तानना०स० क्रि० कसना, खींचना, फैलाना।

ताप०ना० स्त्री० उष्णता, तप, ज्वर, मनकादुख, दण्ड।

तापती०ना० स्त्री० नदीविशेष।

तापना०स० क्रि० आंचलेना, घमाना।

तापस०ना० पु० तपस्वी, शान्त।

तापिच्छ० } ना० पु० तेंदुआ,
तापिञ्ज० } वृक्ष, तमाल।

तापी०ना० स्त्री० नदी विशेष, जो विंध्य के दक्षिण ओर है।

तापीय०ना० पु० सोनामक्खी।

तापुत्र०ना० पु० तमालपत्र।

ताप्य०ना० पु० सोनामक्खी।

ताफता०ना० पु० रेशमीकपड़ा जिसको धूपछांह कहते हैं।

तामचीनी० ना० स्त्री० तांबा जिसमें और धातु भी जड़ा होवे।

तामड़ा० ना० पु० तांबेकेरङ्ग, कौमणि।

तामपुष्प० ना० पु० कुम्भी।

तामरस० ना० पु० कमल।

तामल० ना० पु० देशविशेष।

तामलकी० ना०स्त्री० भूआंरा

तामस० ना० पु० तमोगुण का कार्य्य, ना० पु० तम, क्रोध।

तामसिक० } गु० तमोगुणयुक्त,
तामसी० } क्रोधी।

तामसी० ना० स्त्री० रात, क्रोधी।

तामह० सर्व्व० उसमें।

तामा० ना० पु० तांबा।

तामिली० ना० स्त्री० भाषा विशेष।

तामेश्वर० ना० पु० तांबेकी बङ्ग।

ताम्बूल० ना० पु० पान।

ताम्र० ना० पु० तांबा।

ताम्रचूड़ ० ना० पु० मुरग़ा करौंदा।

ताम्रवर्ण० ना० पु० हरिन तांबेके रङ्ग।

ताम्रवल्ली० ना०स्त्री० मजीठ

ताम्रसार० ना० पु० लालचन्दन।

ताम्राक्ष० ना० पु० कोयल।

तार० ना० पु० बानर विशेष मोतीमाला, निर्मलमोती, उच्चस्वर, ताड़।

तारक० ना० पु० मुक्तिदाता रांगाधातु, गुरू, उद्धार करनेहारा, जोपारल गावे, मन्त्रविशेष, दैत विशेष।

तारकारि० ना० पु० स्वामि कार्तिक।

तारकी॰ ना॰ स्त्री॰ देवदाली।

तारकूट॰ ना॰ पु॰ रूपापीतल।

तारकेश्वर॰ ना॰ पु॰ सदाशिवजी।

तारण॰ ना॰ पु॰ उद्धार करनेहारा, उद्धार का कर्ता, मुक्तिदाता, तारनेहारा।

तारणीय॰ गु॰ तारने हारा, योग्य, उद्धार करने लायक।

तारतम्य॰ ना॰ पु॰ न्यूनाधिक, थोड़ाबहुत।

ताअर्थ॰ ना॰ पु॰ उसका अर्थ, उसकेलिये।

तारना॰ स॰ क्रि॰ उतारना, पारकरना, मुक्तिदेना।

तारा॰ ना॰ पु॰ नक्षत्र, ना॰ स्त्री॰ नेत्रकीपुतली, अङ्गद की महतारी।

तारागण॰ ना॰ पु॰ नक्षत्रोंका समूह।

तारापथ॰ ना॰ पु॰ आकाश।

तारिका॰ ना॰ स्त्री॰ पुतली, नक्षत्र।

तारिणी॰ ना॰ स्त्री॰ उद्धार करनेहारी।

तारुण्य॰ ना॰ स्त्री॰ तरुणता, जवान, जुवा।

तारू॰ ना॰ पु॰ तालू।

तार्किक॰ ना॰ पु॰ नैयायिक न्याय शास्त्र जानने हारा।

तार्क्ष्य॰ ना॰ पु॰ रसौत, गरुड़, पक्षी, पक्षितार्क्ष्यौ गरुत्मन्तौ शकुन्तौ भास पक्षिणौ इत्यमरः।

ताल॰ ना॰ पु॰ ताड़वृक्ष, तालाव, हरताल, ना॰ स्त्री॰ करताल, रागका परिमाण, मल्लयुद्धमें वा ऊपर बाहु पटकना।

तालखजूरी॰ ना॰ स्त्री॰ दुपहरिया वृक्ष।

तालध्वज० ना० पु० श्री बलरामजी।

तालपत्री० } ना० स्त्री० मूसली, औषधि।
तालमूलिका० }

तालवृन्त० ना० पु० ताड़ का पंखा।

तालव्य० ना० पु० जो अक्षर तालुसे उच्चारण किये जावें यथा, त, थ, द, ध, न, ल, स,।

ताला० ना० पु० कुफ़ल, द्वार-बन्दकरने का यन्त्र।

तालाङ्क० ना० पु० श्री बलदेवजी।

ताली० ना० स्त्री० कुंजी, चाबी, दोनों हाथोंको आपस में मारने से जो शब्द होता है।

तालीस० ना० पु० वृक्ष विशेष।

तालु० } ना० पु० मुखमें ऊपर का भाग।
तालू० }

ताव० ना० पु० ताप, क्रो
बल, चटक, ऐंठ, काग़ज़
तखता, क्रम।

तावत्० अव्य० इत्ता, वहां
तबतक।

तावना० स० क्रि० गरम कर
कसना, ऐंठना।

ताश० } ना० पु० मक्खीफ
तास० } लप्पा, पारसी है।

तासु० } सर्व० उसको
तासुको० } का।

ताहि० सर्व० उसको।

ताह्वरी० ना० स्त्री० भोज
विशेष।

तिकतिक० ना० पु० गा
आदि के बैल चलाने
यहशब्दबोलाजाता

तिकुरी० ना० स्त्री० तिह
तीसरा

तिकोनिया० गु० तीन के
का पदार्थ

तिक्क। ना० पु० मांसका छोटा, टुकड़ा।
तिक्त० गु० तीता, चरपरा, ना० पु० चिरायता।
तिक्तका। ना० स्त्री० चिरपोटा।
तिक्तचक्रा। ना० स्त्री० कुटकी।
तिक्ता। ना० स्त्री० कालीमिरच, खीरा।
तिखरा। गु० तिबारा, तिहरा।
तिखरा करना। स० क्रि० तीन बेर जोतना।
तिखारना। स० क्रि० ठहराना सचकरना, यत्नसेपूछना, तीनबेर जोतना।
तिगुण० } गु० जिसका तीन-
तिगुना० } गुनहै, तिहराना।
तिग्म० ना० पु० पीपरि।
तिजरा। ना० पु० } अन्तरिया
तिजरी० स्त्री० } तीसरेदि-
तिजारी० स्त्री० } न जाड़ा और विष-मका आना।

तिणुका। ना० पु० घास, घासका टुकड़ा।
तित० अव्य० तिधर, तब।
तितना। ना० पु० } गु० प्रमाण
तितनी० स्त्री० } वा अवधि वा निश्चय बोधक।
तितरबितर० गु० भिन्न, भिन्न, संग फूट जाना।
तितरी० } ना० स्त्री० कीटविशेष
तितली० } जो उड़ता है।
तिथि० ना० स्त्री० चन्द्रकलाकी क्रियासे उपलक्षितकाल, दिन, तारीख।
तिथिपत्र० ना० पु० पत्रा, जंत्री।
तिथिक्षय० ना० पु० तिथिका अवम्, हानि।
तिदरा० ना० पु० } तीनद्वार
तिदरी० ना० स्त्री० } कास्थान।

तिधारा० ना० पु० पौधा विशेष, तीनधार का सङ्गम।

तिनकना० अ० क्रि० धड़कना, फड़फड़ाना, टीसना।

तिनका० ना० पु० डांडीवा टह-नी वा घासका छोटा, टुकड़ा।

तिन्तिणी० ना० स्त्री० अमि-लोद्य।

तिन्दुक० ना० पु० तेंदुवा, तमा-लद्य।

तिन्दुला० ना० स्त्री० पीपरि।

तिन्नी० ना० स्त्री० चावल वा, उसका पौधाविशेष।

तिबारा० गु० तीनिबेर ना० पु० तीन दरका।

तिब्बत० ना० पु० देशविशेष जो हिमालयके उत्तरमेंहै।

तिमि० ना० स्त्री० मछली, अव्य, तैसे, उसीविधि।

तिमिङ्गिल० ना० पु० मत्स्य, मछली।

तिमिर० ना० पु० अन्धकार, अज्ञान।

तिमिरहर० ना० पु० सूरज।

तिय० ना० स्त्री० योषिता,
तिया० स्त्री० नारि॥

तिरके। ना० गु० तीनकोन वालापदार्थ।

तिरखूंटी० ना० स्त्री० तीनकोन का अस्त्र विशेष।

तिरछा० गु० टेढ़ा, आड़ा, हठीला।

तिरछाना० स० क्रि० टेढ़ाक-रना, अ० क्रि० हठोला होना, हठकरना।

तिरछी० गु० टेढ़ी, बांकी।

तिरतिराना० अ० क्रि० रिस-ना, झिर झिराना।

तिरना० अ० क्रि० पैरना, तैरना।

तिरपद० ना० पु०
तिरपदी० स्त्री० } तिपाई, तीनपद

तिरपन॰ गु० पचास, और तीन० ५३।

तिरपौलिया० ना० पु० धनुषाकारके तीन द्वारका स्थान।

तिरफल॰ ना० पु० त्रिफला, तीनफलका अर्थात् आंवला, हर्र, बहेड़ा।

तिरभङ्गा० गु० तिरछा खड़ा होना।

तिरभङ्गी॰ ना॰ स्त्री० छन्द विशेष, ना० पु० श्रीकृष्ण चन्द्रजीकाएकनाम।

तिरस्कार॰ ना० पु० निन्दा, भञ्जन, अवज्ञा, अपमान।

तिरसठ॰ गु० साठि और तीन, ६३।

तिरहुत॰ ना० पु० देश विशेष, नगर विशेष।

तिरोधान॰ ना० पु० पोशाक, आच्छादन, वस्त्र।

तिरोहित॰ गु० छुपाहुआ, गुप्त, ना० पु० मिथिलादेश।

तिमिरी॰ ना० पु० तेलकीबूंद जो पानीपर बहती है थर थरा।

तिमिराना॰ अ० क्रि० झूलना, लहरना, थरथराना, चमकना यथा तेल की बूंद पानीपर।

तिमिराहट० ना० स्त्री० थर थराहट, फरफराहट।

तिमिरी॰ ना० स्त्री० घुमड़ी।

तिर्यक्‌पति॰ }
तिर्यग्पति॰ } ना॰ पु० शार्दूल, सिंह।

तिल॰ ना॰ पु० पौधा विशेष जिसके बीजसे तेलनिकालते हैं, शरीरमें कालाचिह्नविशेष, क्षण।

तिलक० ना० पु॰ ललाट में विहित चन्दनादि का टीका, पीनाखली, अर्थकरना, अर्थ, वृक्षविशेष गु० शिरोमणि।

तिलकुट० ना० पु० तिल और मिठाई विशेष।

तिलङ्गा० ना० पु० तैलङ्गा, सिपाही।

तिलङ्गी० ना० स्त्री० गुड्डी, पतङ्ग।

तिलचट्टा० ना० पु० कीट विशेष।

तिलचावली० ना० स्त्री० तिल और चावलों की मिलौनी, काले और सफेद बालों की मिलौनी।

तिलचूरी० ना० स्त्री० मिठाई विशेष।

तिलड़ा० ना० पु०
तिलड़ी० ना० स्त्री० } तीनिलड़ का भूषण विशेष।

तिलपर्णी० ना० स्त्री० चन्दन।

तिलपिष्टक० ना० पु० पीना, तिलकी खली।

तिलबर० ना० पु० पक्षी विशेष।

तिलभेद० ना० पु० पोस्त का बिरवा।

तिलहा० गु० तेलिया।

तिलुआ० ना० स्त्री० पिलई।

तिलोत्तमा० ना० स्त्री० मुख्य अप्सरा।

तिष्ठना० अ० क्रि० ठहरना, स्थिर होना, बिराजना।

तिष्ठित० गु० ठहरा हुआ।

तिष्य० ना० स्त्री० आठवां नक्षत्र, पुष्य।

तिसका० सर्व० उसका, जिसका

तिसरायत० ना० पु० मध्यवर्ती, गैरियत, दुजागी, अपनायतरहित।

तिसूत० ना० पु० औषधि विशेष।

तिहत्तर० गु० सत्तर और तीन, ७३।

तिहरा० गु० तिगुणा, तिलड़ा

तिहराना० स० क्रि० तिहरा करना।

तिहरावट० ना० स्त्री० तिगुणा करनेका काम।

तिहारे० सर्व्व० तिहारे।

तिहाई० ना० स्त्री० तीसरा भाग $\frac{1}{3}$।

तिहायत० ना० पु० तिसरायत।

तिहारी० ना० स्त्री० } सर्व्व०
तिहारे० ना० पु० } तेरी,
तिहारो० ना० पु० } तेरे।

तिहूं० गु० तीनों, तीन।

तिहूंपुर० } ना० पु० तीनों
तिहूंलोक० } लोक।

तीखा० गु० तीक्ष्ण, चरपरा।

तीखी० गु० सूक्ष्मस्वर, पैनी।

तीखुर० ना० पु० श्वेतवस्तु जिसका व्रतके दिन फलाहार करते हैं।

तीछन० गु० तीक्ष्ण, तीव्र, तेज़।

तीज० ना० स्त्री० तृतीया।

तीजा० गु० तीसरा, मृतक के तीसरे दिनका काम वा तीसरा दिन।

तीजिया० } ना० स्त्री० श्रावण
तीजैं० } शुदी तीज का त्योहार।

तीत० गु० तीता।

तीतर० ना० पु० पक्षीविशेष।

तीतरी० ना० स्त्री० तितरी, पतङ्गा विशेष।

तीता० गु० कड़ुवा, पड़पड़ा, तीखा।

तीन० गु० त्रि, ३।

तीनतेरह० गु० तित्तर बित्तर।

तीय० ना० स्त्री० अबला, स्त्री।

तीयल० ना० स्त्री० स्त्रीके पहिरनेके तीनों वस्त्र।

तीर० ना० पु० समुद्र वा नदीका तट, अव्य० ढिग, पास।

तीरथ०ना० पु० पुण्यस्थान, यात्रा।

तीरथराज०ना० पु० प्रयाग।

तीर्थ०ना० पु० तीरथ।

तीली०ना० स्त्री० पिञ्जड़ा की कामी।

तीव्र०गु० अत्यन्तकड़ुवा तीता, पैना।

तीसरा०गु० तृतीय।

तीसी०ना० स्त्री० अलसी, जिसका तेल निकालते हैं।

तीखा०ना० पु० मरुआ, मिरच, गु० पड़पड़ा, तत्ता, क्रोधी, भांभिया, पैना, तीता।

तुक०ना० स्त्री० पद, सम्बन्ध।

तुकला०ना० पु० } छोटीपतङ्ग बिशेष।
तुकली०ना० स्त्री० }
तुक्कल०ना० पु० }

तुक्का०ना० पु० बाण जिसकी नोकनहीं है छोटा-पर्व्वत।

तुगावंशी० } ना० पु० वंशरोचन।
तुगाक्षीरी० }

तुङ्ग०गु० ऊंचा, लम्बा, समूह।

तुङ्गद्रुम०ना० पु० नारियल।

तुच्छ०गु० शून्य, कुत्सित, अपमानी।

तुड़ाना०स० क्रि० तोड़ाना।

तुण्ड०ना० पु० चोंच, मुख।

तुतरा०गु० जोतुतलाताहो।

तुतराना०अ० क्रि० अधूरा बोलना जैसे बालक बोलते हैं।

तुतला०गु० तुतरा।

तुतलाना०अ०क्रि०तुतराना।

तुत्थ० } ना०पु०नीलाथोथा
तुत्थिक० }

तुनतुनाना० अ० क्रि० शर्राटा देना।

तुन० ना० पु० वृक्ष विशेष।

तुन्दिल० गु० तोंदेलवड़ीतोंदका।

तुन्न० ना० पु० तुन, टूटा।

तुपक० ना० पु० बन्दूक़।

तुपकिया० ना० स्त्री० छोटी बन्दूक़।

तुम० सर्व्व० मध्यम पुरुष का सूचक वा वाचक।

तुमतनौ० सर्व्व० तुम्हारा।

तुमाई० ना० स्त्री० तुमानेका पैसा।

तुमाना० स० क्रि० धुनवाना।

तुमुल० ना० पु० रौला, हल्लड़।

तुम्बा० ना० पु० लौका, कद्दू।

तुम्बिका० } ना० स्त्री० लौकी,
तुम्बी० } कद्दू, बजाने की तोमी जो मदारी लोग रखते हैं।

तुरई० ना० स्त्री० तरकारी विशेष।

तुरक० ना० पु० तुरुक, देश विशेष।

तुरग०
तुरङ्ग०
तुरङ्गम० } ना० पु० घोड़ा।

तुरङ्गाह्वा० ना० स्त्री० असगन्ध।

तुरत०
तुरन्त० } अव्य० शीघ्र, अभी।

तुरपना० स० क्रि० सीना, टांकना विशेष।

तुरही० ना० स्त्री० बाजाविशेष नरसिंघा।

तुराई० ना० स्त्री० तोशक, रज़ाई।

तुराना० अ० क्रि० छूटजाना, छुड़ाना, मर्य्यादासे बाहिरचलना, बहिचलना।

तुराषाट्० ना० पु० इन्द्र।

तुरिय० ना० पु० घोड़ा।

तुरी० ना० पु० घोड़ा, ना० स्त्री० तुरही ।

तुरीय० ना० पु० मुक्तयवस्था, मुक्ति, मोक्ष चौथा ।

तुरुक० } ना० पु० यवन, देश
तुरुष्क० } विशेष ।

तुर्त्त० }
तुर्त्तफुर्त्त० } अव्य० तुरन्त,
तुर्त्तीव० } शीघ्र ।
तुर्त्तीफुर्त्ती० }

तुल० गु० तुल्य ।

तुलना० अ० क्रि० तुलापर चढ़ना, तुल्यहोना ।

तुलसा० } ना० स्त्री० छोटा
तुलसी० } वृक्ष जिसकी पत्ती विष्णु वा सालग्राम को चढ़ाते हैं ।

तुलसीदास० ना० पु० प्रसिद्ध भक्त श्रीरामायण भाषा बनाने हारे ।

तुला० ना० स्त्री० तराजू, अपनी देहकी बराबर दानदेना सातवीं राशि विशेष ।

तुलाना० स० क्रि० तौलाना, तुलापरचढ़ाना, तकुआ ठीक कराना ।

तुलित० गु० तुलाहुआ, तुलापर चढ़ाया गया ।

तुली० ना० स्त्री० मोटीसींक, चित्रलिखने की क़लम ।

तुल्य० ना० पु० समान, बराबर, सदृश ।

तुल्यता० ना० स्त्री० समानता, बराबरी ।

तुवर० ना० पु० तिल ।

तुवरी० ना० स्त्री० फटकरी ।

तुष० ना० पु० धानादिकाछिलका

तुषार० ना० पु० शीत, पाला, हिम ।

तुष्ट० गु० प्रसन्न, तृप्त, सन्तोषी ।

तुष्टता० ना० स्त्री० प्रसन्नता, तृप्ति, सन्तोष ।

तुष्टित० गु० प्रसन्नित, सन्तोषित।
तुसार० ना० पु० तुषार।
तुहिन० ना० पु० तुसार, तुषार, हिम।
तुम्हें० सर्व्व० तुझको।
तू० सर्व्व० मध्यम पुरुष का एक वचन।
तूंतांकरना० स० क्रि० तुकारना।
तूकारनी० स० क्रि० अबे तबे करना।
तूष्टौ० गु० सन्तोषित।
तूण० } ना० पु० बाणरखनेकाघर, तरकश।
तूणीर० }
तूतई० ना० स्त्री० टोंटीदार मिट्टीका बर्तन।
तूतिया० ना० पु० नीलाथोथा।
तूबरि० ना० स्त्री० तुम्बी।
तूमना० } स० क्रि० रुईको हाथसे बनाना।
तूम्ना० }

तूर० ना० पु० तूर्य्य, नक्कारह।
तूरक० ना० पु० जलपिप्पल।
तूरना० स० क्रि० तोड़ना।
तूरी० ना० पु० धतूरा।
तूर्ण० ना० पु० शीघ्र, जल्द।
तूर्य० ना० पु० नक्कारह, नगाड़ा।
तूल० ना० स्त्री० निर्बीजकपास अर्थात् रुई, तुल्य।
तूलनीय० ना० पु० कदमवृक्ष।
तूलिनी० ना० पु० सेमरवृक्ष।
तूवर० ना० पु० राजपूतों में जाति विशेष।
तृण० ना० पु० घास।
तृणराज० ना० पु० नारियल, उख, ताल वृक्ष।
तृणवत्० गु० घासके समान निकम्मा।
तृणावर्त्त० ना० पु० दैत्यविशेष बौड़रा, घासका भंवर।

तृणोदक० ना० पु० घासपानी।
तृतीय० गु० तीसरा।
तृतीया० ना० स्त्री० तीन, तीसरीतिथि, तीसरी।
तृतीयान्त० गु० जिसकेअन्तमें तृतीयाका चिह्न है।
तृतीयांश० ना० पु० तीसरा भाग।
तृप्त० गु० सन्तुष्ट।
तृप्ति० ना० स्त्री० भोजनादि करके सन्तोष।
तृष्टता० } ना० स्त्री० निसोत।
तृष्टत्० }
तृषा० ना० स्त्री० प्यास।
तृषार्त्त० गु० पिपासाकरके व्याकुल।
तृषावन्त० } गु० पिपासाशक्त, प्यासा।
तृषित० }
तृष्णा० ना० स्त्री० प्यास, लालच, अभिलाषा।
ते० अव्य० से, सर्व्व, वे, ये।
ते० सर्व्व० तु० अव्य, से।
तेतालीस० गु० चालिस औ[र] तीन, ४३।
तेतीस० गु० तीसऔरतीन, ३३
तेंदुआ० ना० पु० चीताविशेष[,] वृक्ष विशेष।
तेंदू० ना० पु० वृक्ष वा उसका फल विशेष।
तेईस० गु० बीसऔरतीन २३
तेज० ना० पु० दहक, प्रताप[,] बल, अग्नि।
तेजअति० ना० पु० सूर्य, भाष[ा] में प्रचलित है।
तेजपात० ना० पु० तेज क[ी] पत्ती।
तेजमान्० } गु० प्रतापी, चम[क]-
तेजवन्त० }
कीला, चमत्कारी।
तेजवल० ना० पु० औषधिविशे[ष]
तेजवल्ली० } ना० स्त्री० ते-
तेजस्विनी० } जबल।

तेजस्कर० ना० पु० वीर्य्यबढ़ाने हारा, द्रव्य, पुष्टई।

तेजस्वी० } गु० प्रतापी, दीप्ति-
तेजोमय० } मान्, तेजवाप्रकाश से युक्त।

तेता० गु० तितना।

तेमन० गु० ओदा, गीलाई, व्यञ्जन।

तेरस० ना० स्त्री० त्रयोदशी।

तेरह० गु० दश और तीन १३।

तेरुस० ना० पु० तीसरा वर्ष, त्योरुस।

तेल० ना० पु० चिकना, चिकनाहट, तिलादि का रस।

तेलिन्० ना० स्त्री० तेली की स्त्री।

तेलिया० ना० पु० तेलकासा रङ्ग विशेष।

तेली० ना० पु० तैलकार जाति विशेष।

तेवर० ना० स्त्री० घुमनी, घुमड़ी, गु० तीखड़ा।

तेवराना० अ० क्रि० घुमड़ीमें होना, गिरपड़ना।

तेवरी० ना० स्त्री० घुमड़ी घुमनी, दृष्टि।

तेवहार० ना० पु० पर्व्व, त्योहार।

तेह० ना० पु० क्रोध, झांझ बहादुरी, साहस।

तेहर० ना० स्त्री० स्त्रीकेपांवका गहना विशेष।

तेहा० ना० पु० तेह।

तेही० अव्य० अभी, सर्व्व, उसको।

तैतिल० ना० पु० करणविशेष

तैरना० स० क्रि० पैरना।

तैल० ना० पु० तेल।

तैलकार० ना० पु० तेली।

तैलङ्ग० ना० पु० करणाटक देश वा उसके वासी।

तैलङ्गा० ना० पु० तैलङ्गदेश के लोग, और अंगरेज़ों के प्यादे।

तैसा० गु० तिसके समान, अव्य० त्योंकर।

तो० अव्य० तब, तदा, निस्सन्देह, सर्व्व, तुझ।

तों० अव्य० योंकर।

तोंद० ना० पु० बड़ापेट।

तोंदी० ना० स्त्री० नाभि।

तोंदैल० } गु० जिसका पेट
तोंदैला० } बड़ा है।

तोंही० अव्य० तभी, उसीसमय में।

तोकहं० सर्व्व० तुझको।

तोड़० ना० पु० फूट, नदी की धारा का बल, दही का पानी।

तोड़जोड़० ना० स्त्री० बात बनाना।

तोड़ना० स० क्रि० फोड़ना
रुपया भुनाना, टुकड़
कर्ना।

तोड़ल० ना० पु० कड़ा खगौ
रा हाथके।

तोड़वाना० स० क्रि० फोड़
वाना, टुकड़े करान
रुपया भुनवाना व
भुनाना।

तोड़ा० ना० पु० चटका, स
ख रुपयोंकी थैली, रंज
में आगिलगानेकी वस्
चरची, गलेकी सांक
धन्नी का टुकड़ा।

तोड़ाना० स० क्रि० तोड़वाना

तोतला० गु० हकला।

तोतलाना० अ० क्रि० हक
लाना।

तोता० ना० पु० शुक, सुगा

तोपना० स० क्रि० ढांप
गाड़ना।

तोपाना० स० क्रि० गड़वान

तोबड़ा॰ना॰ पु॰ थैलीजिसमें घोड़े को दाना दिया जाता है।

तोमर॰ना॰ पु॰ बाण, तीर, छन्द विशेष।

तोय॰ना॰ पु॰ जल, पानी।

तोयनिधि॰ना॰ पु॰ समुद्र, जलधि।

तोयपिप्पली॰ना॰ स्त्री॰ जलपीपल।

तोर॰ना॰ पु॰ दहलविशेष, सर्व्व॰ तेरा।

तोरण॰ना॰ पु॰ फूलोंकी माला जो आनन्द वा त्योंहार के दिनबांधतेहैं।

तोरी॰ना॰स्त्री॰ककरीविशेष।

तोल॰ना॰ स्त्री॰ तौल।

तोलक॰ } ना॰ पु॰ बांट जो
तोला॰ } बारहमाशेभरहोता है वा सोलहमाशेभर।

तोष॰ना॰ पु॰ हर्ष, तृप्ति, धीरज।

तोषक॰गु॰ हर्षदाता, धीरज दाता।

तोषित॰गु॰ हर्षित, धीरजवान्।

तोहि॰सर्व्व॰ तुझको।

तौ॰अव्य॰ तब, तो।

तौंसना॰अ॰ क्रि॰ धूपकेकारणसे शिथिलहोना।

तौल॰ना॰ पु॰ जोख, परिमाण की क्रिया।

तौलना॰स॰ क्रि॰ जोखना, परिमाण करना।

तौलवाई॰ } ना॰ स्त्री॰ तौ-
तौलाई॰ } लने का कामवा पैसा।

तौलाना॰स॰क्रि॰जोखवाना

तौलिया॰ } ना॰ स्त्री॰ पात्र
तौली॰ } विशेष।

तौहो॰अव्य॰ अभी।

तैाहू॰ अव्य॰ तथापि।

त्यक्त॰ गु॰ जिसको त्यागदिया।

त्याग॰ ना॰ पु॰ छुड़ाव वैराग्य।

त्यागन॰ ना॰ पु॰ तजन, विराग, छोड़न।

त्यागना॰ स॰ क्रि॰ छोड़ना, तजना।

त्यागी॰ गु॰ वैरागी, छोड़ेहुये।

त्याज्य॰ गु॰ जो त्यागने के योग्य है।

त्यों॰ अव्य॰ तैसे, इस प्रकार, एकही समय में।

त्योंधा॰ गु॰ चुन्धला।

त्योनार॰ ना॰ स्त्री॰ चतुराई, चालाकी।

त्योनारी॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री जो अपनाकामबड़ी चतुरतासे स्वच्छ बनाती है।

त्योरुस॰ ना॰ पु॰ दोवर्षपहिले।

त्योरी॰ ना॰ स्त्री॰ मत्थेकी सकोड़, घुमनी

त्योरीचढ़ाना॰ अ॰ क्रि॰ क्रो-धित होना।

त्योहार॰ ना॰ पु॰ पर्व, पव... आनन्द का दिन।

त्रपा॰ ना॰ स्त्री॰ लाज, ह...

त्रय॰ गु॰ त्रि, ३।

त्रयईषा॰ ना॰ स्त्री॰ तीनि... अर्थात् पुत्र, सम्प... पत्नी।

त्रयगङ्गा॰ ना॰ स्त्री॰ तीनग... अर्थात् मन्दाकिनी, ... गीरथी, प्रभावती।

त्रयताप॰ ना॰ स्त्री॰ तीनत... अर्थात् दैहिक, दै... भौतिक।

त्रयपावक॰ ना॰ पु॰ ती... ग्नि अर्थात् आहवन... दक्षिणाग्नि, गार्ह... अथवा जठरानल, द... नल, वडवानल।

त्रयरेखा॰ ना॰ स्त्री॰ ती... खा, अर्थात् त्रिव... तीनलकीर

त्रयरोग० ना० पु० तीनरोग, अर्थात् वात, पित्त, कफ।

त्रयीतनु० ना० पु० सूर्य्य।

त्रयोदशी० ना० स्त्री० तेरस।

त्र्यम्बक० ना० पु० श्रीशिवजी,

त्रसित० गु० डरताहुआ, भयमान्।

त्रस्त० गु० कायर, डरपोक, नामर्द।

त्राण० ना० पु० रक्षा, निस्तार, उद्धार।

त्राणकर्त्ता० गु० रक्षक।

त्राणी० गु० त्राणकर्त्ता, रक्षक।

त्रात० गु० बचायागया, रक्षित।

त्राता० गु० रक्षक, पालक।

त्रास० ना० पु० भय, दुःख।

त्रासक० गु० भयदायक, दुःखदाता।

त्रासा० } गु० भयमान, डराहुआ।
त्रासित० }

त्राहु० } अव्य० दया चाहने का शब्द, पश्चात्ताप का शब्द।
त्राहि० }

त्रि० गु० तीन, ३ परन्तु यह शब्द विशेष के आगे योग होता है यथा, त्रिभुवन, त्रिपुर।

त्रिंश० गु० तीसवां $\frac{1}{30}$।

त्रिंशति० गु० तीस, ३०।

त्रिक० } ना० पु० गोखुरू।
त्रिकटु० }

त्रिकाल० ना० पु० तीनकाल, अर्थात् भूत, भविष्य, वर्तमान, अथवा, प्रातःकाल, मध्यान्ह, सन्ध्या।

त्रिकुट० ना० पु० सिंघाड़ा

त्रिकुटा० ना० पु० सोंठ, मिरच, पीपर।

त्रिकूट० ना० पु० पर्वत विशेष जिसपर लङ्का है।

त्रिकोण० ना० पु० तीनकोन, तीनकोनेवाला सिंघाड़ा।

त्रिगुण० ना० पु० तीनबेर, तीनगुणअर्थात् सात्विक, राजस, तामस।

त्रिजग० ना० पु० तीनलोक, तिर्यग्।

त्रिजगयोनि० ना० पु० पशु-पक्षी आदि।

त्रिज्या० ना० स्त्री० व्यासार्द्ध, आधाविस्तार।

त्रिदन्ता० ना० पु० महामेदा।

त्रिदश० ना० पु० देवता, गु० तेरह, १३।

त्रिदशकास्यपस्त्री० ना० स्त्री० तेरह कश्यप की स्त्री, अर्थात् दिति, अदिति, कद्रू, विनता, श्रीधामा, भानुयोगेश्वरी, श्रीगातिलका, घरनेलिका, पवनावर्ती, मेधावती, कनकदंष्ट्रा, वन्ध्या, कनकमाला, १३।

त्रिदोष० ना० पु० तीन[illegible] अर्थात् कफ, वात, [illegible] पित्त।

त्रिदशालय० ना० पु० स्व[illegible]

त्रिदिव० ना० पु० स्वर्ग।

त्रिधा० गु० तीनठाम, त[illegible] प्रकार।

त्रिध्वनि० ना० स्त्री० तीनध्व[illegible] अर्थात् मधुर म[illegible] गम्भीर।

त्रिनयन० } ना० पु० श्री[illegible]
त्रिनेत्र० } शिव।

त्रिनेत्रा० ना० स्त्री० भ[illegible] विशेष।

त्रिपथगा० ना० स्त्री० श्रीग[illegible] जी[illegible]

त्रिपद० ना० पु० } तिप[illegible]
त्रिपदी० ना० स्त्री० }

त्रिमर्गी० ना० स्त्री० श[illegible] ० पर्णी

त्रिपादिका० ना० स्त्री० हंस-पादी।

त्रिपु० ना० पु० सीसा, धातु, विशेष।

त्रिपुंसी० ना० स्त्री० इन्द्र वारुणी।

त्रिपुटा० ना० स्त्री० हंसपादी।

त्रिपुटी० ना० स्त्री० निसोत।

त्रिपुण्ड्र० ना० पु० शाक्त मतका तिलकजोआड़ा होताहै, वैष्णव मत का तिलक जो ठाढ़ा होता है।

त्रिपुर० ना० पु० त्रिलोक, दैत्य विशेष।

त्रिपुरारि० ना० पु० श्रीमहा-देवजी।

त्रिपुस० ना० पु० खीरा।

त्रिपौलिया० ना० पु० तीनि द्वार का मार्ग।

त्रिफला० ना० पु० तीन फल, अर्थात् आंवला, हड़, बहेड़ा।

त्रिभङ्गा० गु० तिरछा खड़ा होना।

त्रिभङ्गी० ना० पु० छन्दविशेष, श्री कृष्णचन्द्र जी का एक नाम।

त्रिभुज० गु० तीन भुजा का, तिकोना।

त्रिभुवन० ना० पु० तीनलोक अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, पाताल।

त्रिमुहानी० ना० स्त्री० त्रि-बेणी।

त्रिय० } ना० स्त्री० अबला
त्रिया० } पत्नी, नारी।

त्रिलोक० ना० पु० त्रिभुवन, और ऊर्द्ध, मध्य, अधःवा, उत्तम, मध्यम और नीच।

त्रिलोकी० ना० पु० तीन लोक का समुदाय।

त्रिलोह० ना० पु० पीतल।

त्रिशङ्कु० ना० पु० राजाविशेष।

त्रिशूल० ना० पु० महादेवका अस्त्र विशेष।

त्रिसन्ध्या० ना० स्त्री० तीन संध्या अर्थात् प्रातः काल, मध्यान्ह, संध्या।

त्रिसंध्यास्वरूप० ना० पु० रक्त, शुक्ल, श्याम।

त्रिस्रोता० } ना० स्त्री० श्री
त्रिस्रोता० } गङ्गा जी।

त्रुटि० ना० स्त्री० टूट, न्यूनता।

त्रेता० ना० पु० युग विशेष।

त्रैराशिक० गु० तीन राशिका गणित।

त्रोटक० ना० पु० छन्द विशेष।

त्रोण० ना० पु० तूण, तरकश।

त्वं० सर्व्व, तू।

त्वक्० ना० स्त्री० छाल, स्पर्शेन्द्रिय, खाल।

त्वचा० ना० स्त्री० छिलका, बकला, खाल।

त्वची० ना० पु० बांस, गु० त्वचा धारी।

त्वदंघ्रि० ना० पु० तुम्हारे चरण।

त्वदीय० सर्व्व, तुम्हारो, रामायणे यथा त्वदीय भक्ति संयुतं।

त्वरा० ना० स्त्री० उतावली।

[थ]

थई० ना० स्त्री० वस्त्रादिका ढेर।

थंब० }
थंबा० } ना० पु० खम्भ, थूनी, खम्भ।
थंभ० }

थंभना० अ० क्रि० ठहरना, रुकना, संभलना।

थक० ना० पु० थक्का।

थकथक० गु० लथपथ।

थकना० अ० क्रि० मांदा होना, हारना

थका॰ गु॰ मांदा, हारा।

थकाना॰ स॰ क्रि॰ मांदा करना, हराना।

थकित॰ गु॰ थका, जो रुक गया, अचम्भित।

थक्का॰ ना॰ पु॰ चकान।

थन॰ ना॰ पु॰ गौआदि का स्तन।

थनी॰ ना॰ स्त्री॰ घोड़े का दोष विशेष।

थनैला॰ ना॰ पु॰ थन का रोग विशेष।

थनेसरी॰ ना॰ पु॰ कुरुक्षेत्र के ब्राह्मण।

थपक॰ ना॰ पु॰ थाप।

थपड़ा॰ ना॰ पु॰ थप्पड़, चपेटा।

थपड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ ताली।

थपना॰ स॰ क्रि॰ स्थापना, बैठाना, अ॰ क्रि॰ स्थापित होना, बैठजाना।

थपा॰ गु॰ स्थापित, बैठाया-हुआ।

थपाना॰ स॰ क्रि॰ स्थापित-कराना, बैठाना।

थपेड़ा॰ }
थप्पड़॰ } ना॰ पु॰ चपेटा।

थमना॰ अ॰ क्रि॰ रुकना।

थम्बना॰ }
थम्भना॰ } अ॰ क्रि॰ रुकना।

थर॰ ना॰ पु॰ सिंह, और शेर का खोह।

थरथर॰ गु॰ कम्पा।

थरथराना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, कम्पना।

थरथराहट॰ }
थरथरी॰ } ना॰ स्त्री॰ कपकपी, कम्पाहट।

थरहरना॰ }
थरहराना॰ }
थर्राना॰ } अ॰ क्रि॰ कांपना, कम्पना हलहलाना

थल॰ ना॰ पु॰ भूमि, स्थल।

थलकना॰ अ॰ क्रि॰ धड़कना, तलपना।

थलथलकना॰ } अ॰ क्रि॰ हिलना,
थलथलाना॰ } यथा स्थूल मनुष्य का मांस हिलता है।

थलचर॰ } गु॰ मनुष्यादि।
थलचारी॰ }

थलिया॰ ना॰ स्त्री॰ भोजन करने का पीतलादि का पात्र।

थली॰ ना॰ स्त्री॰ घर, पाण्डुर।

थवई॰ ना॰ पु॰ राज, मीमार, घरकारी।

थहराना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना।

थाङ्॰ ना॰ स्त्री॰ चोरोंकीमांदि।

थांगी॰ ना॰ पु॰ चोर, धनिक।

थांभ॰ ना॰ पु॰ स्तम्भ।

थांभना॰ स॰ क्रि॰ टेकना, थाड़ना, अटकाना, रोकना, सहायताकरना।

थांवला॰ ना॰ पु॰ वृक्षादि
का थाला।

थाकना॰ अ॰ क्रि॰ थकना।

थाका॰ गु॰ थका।

थाती॰ } ना॰ स्त्री॰ धरोह
थाथी॰ } अमानत, सौंप।

थान॰ ना॰ पु॰ साराकपड़
अश्वादि के रहने
स्थान, मुद्रा, कक्ष,
कान, ठिकाना।

थाना॰ ना॰ पु॰ रक्षकों
स्थान, बांसों
ढेर।

थानी॰ ना॰ पु॰ स्थान
स्वामी, थांगी।

थाप॰ ना॰ स्त्री॰ धौल, थप
पशुका पांव, मर्या
बैठक।

थापना॰ स॰ क्रि॰ थोप
धौलियाना, ना॰
व्यवहारविशेष, स्था
करना।

थापा॰ ना॰ पु॰ पशुके पांव का चिह्न, थपा ।
थापित॰ गु॰ बैठायागया, स्थापित, निचत भया, मुक़र्रर हुआ ।
थापी॰ ना॰ स्त्री॰ थापने का शब्द, काठकीवस्तु विशेष जिससेछतपीटते हैं ।

थाम॰ ना॰ पु॰ यम्भ, थूनी ।
थामना॰ स॰ क्रि॰ रोकना, पकड़ना ।
थार॰ / थाल॰ ना॰ पु॰ बड़ीथाली ।
थाला॰ ना॰ पु॰ थांवला, थाल ।
थाली॰ ना॰ स्त्री॰ भोजनकरने का पात्र विशेष ।
थावर॰ ना॰ पु॰ स्थावर, वृक्षादि, अचल ।
थाह॰ ना॰ स्त्री॰ नदी कीतली, नदी में वह स्थानजहां पैदल उतर जावें ।
थाहा॰ ना॰ पु॰ नदीकास्थान जो गहिरा न हो ।
थाही॰ ना॰ स्त्री॰ थाहपना, गु॰ जोगहरी नहीं ।
थिति॰ ना॰ स्त्री॰ स्थिति, थिरता, पालन ।
थिर॰ गु॰ स्थिरअचल, क़ायम ।
थिरकना॰ अ॰ क्रि॰ चमत्कार करके नाचना ।
थिरकाना॰ स॰ क्रि॰ चमत्कार से नचाना ।
थिरकी॰ ना॰ स्त्री॰ चमत्कार, घुमाव ।
थिरता॰ ना॰ स्त्री॰ / थिरत्व॰ ना॰ पु॰ स्थिरता अचलता ।
थिरा॰ ना॰ स्त्री॰ पृथ्वी, धरती ।
थिराना॰ स॰ क्रि॰ बैठाना, ठहराना, अ॰ क्रि॰ बैठना, ठहरना, पानी की मिट्टीका बैठजाना ।

थीर॰ गु॰ सुखित, स्थिर, मन्दा।

थुकथुकाना॰ अ॰ क्रि॰ कुवासनादि घिन की वस्तु देखकर थूकना, वा कुदृष्टि दूर करने के लिये थूकना।

थुकाना॰ स॰ क्रि॰ थूकफिकवाना, औरनिन्दा कराना।

थुथकारना॰ स॰ क्रि॰ तुच्छ करके किसू को बाहर करना।

थुथनी॰ ना॰ स्त्री॰ शूकरादि का मुख।

थुथाना॰ स॰ क्रि॰ मौंहें टेढ़ी करना।

थूक॰ ना॰ पु॰ मुखमेंकापानी।

थूकना॰ स॰ क्रि॰ मुखमें से पानी फेंकना।

थूणी ना॰ स्त्री थूनी।

थूतड़ा॰ ना॰ पु॰ }
थूथन॰ ना॰ पु॰ }
थूथना॰ ना॰ पु॰ }
थूथनी॰ स्त्री॰ } शूकर रा ... का मुख

थूनी॰ ना॰ स्त्री॰ धरन, टेकन

थूहर॰ ना॰ पु॰ वृक्ष विशेष

थेईथेई॰ ना॰ स्त्री॰ चह ... बहल।

थेगली॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़े ... जोड़, पैवन्द।

थेवा॰ ना॰ पु॰ नग।

थैला॰ ना॰ पु॰ }
थैलिया॰ स्त्री॰ }
थैली॰ स्त्री॰ } बटुआ ... दुलमि ... यान।

थोक॰ ना॰ पु॰ समूह, ढे ... एक भाग, टोल ... महल्ला।

थोड़॰ ना॰ पु॰ फले केले ... गर्भा।

थोड़ा॰ गु॰ अल्प, कम।

थोथला॰ गु॰ भोंता, मोटा।

थोथा॰ ना॰ पु॰ औषधिविशेष फलरहित, गु॰ छूछा, पोपला, बदसूरत, कुभण्डा।

थोप॰ ना॰ पु॰ पालकीके बांस के अन्तका भूषण, छाप।

थोपना॰ स॰ क्रि॰ टेकना, छोपना, गांजना, बटोरना।

थोपियाना॰ अ॰ क्रि॰ बुन्दियाना, झिरझिराना।

थोपी॰ ना॰ स्त्री॰ थप्पा।

थोब॰ } ना॰ स्त्री॰ लटी का
थोभ॰ } टेकन।

थोहर॰ ना॰ पु॰ थूहर।

थौना॰ ना॰ पु॰ गौने के पीछे स्त्री की विदा।

[द]

द॰ अव्य॰ यह अक्षर जबशब्दके अन्तमें आता है तब उसका अर्थ देनेहारा होजाता है यथा सुखद अर्थात् सुखदेनेहारा।

दई॰ ना॰ पु॰ देव, भगवान्, ब्रह्मा, स्त्री, मिठाईविशेष।

दंश॰ ना॰ पु॰ बन की मकड़ी, दांत।

दंशन॰ ना॰ पु॰ दांतों से काटन।

दंष्ट्री॰ ना॰ पु॰ शूकर, सर्प।

दंस॰ ना॰ पु॰ कुत्ता, सिंह, डांस।

दखन॰ ना॰ पु॰ दक्षिण।

दगड़॰ ना॰ पु॰ धक्का, ढक्का डङ्का, राह।

दगड़ा॰ ना॰ पु॰ पैंड़ा।

दगड़ाना॰ स॰ क्रि॰ चलाना, दौड़ाना, डगराना।

दगदगा॰ गु॰ चमकीला।

दगदगाना० अ० क्रि० चमकना, चहकना, तमतमाना ।

दगदगाहट० ना० स्त्री० चमक ।

दगधना० स० क्रि० जलाना, छेड़ना, सताना, डांटना, युथकारना ।

दगला० ना० पु० रुईभरा अंगरखा ।

दग्ध० गु० जो जलगया ।

दग्धा० गु० जला, तिथिविशेष, वार विशेष, मास युक्त तिथि ।

दङ्गल० ना० पु० चौकी विशेष, बक्रतात ।

दङ्गा० ना० पु० बखेड़ा, रौला ।

दङ्गैत० गु० रौला वा बखेड़ा करनेहारा ।

दटना० अ० क्रि० अड़ना, साम्नाकरना ।

दण्ड० ना० पु० लाठी, शासन, डांट, घड़ी, छुड़ौती, जुर्माना ।

दण्डक० ना० पु० राजाविशेष, गु० दण्डकर्ता ।

दण्डधर० } ना० पु० यमराज, गु० दण्ड बांधने हारा ।
दण्डधारी० }

दण्डमान० गु० दुखदाता, दण्डदाता, ना० पु० जमराज ।

दण्डवत्० ना० स्त्री० दण्ड के समान पड़के प्रणाम करना ।

दण्डादण्डी० ना० पु० आपस में लाठी से लड़ना ।

दण्डायमान० ना० पु० दण्डा की नांई खड़ा ।

दण्डित० गु० दण्डलिया गया, सतायागया, पीड़ित, शिक्षाकियागया ।

दण्डी॰ना॰ पु॰ तपेश्वरी, गु॰ दुखरूपी, डांडी।

दण्ड्य॰गु॰ दण्डदेनेके योग्य।

दतवन॰ } ना॰पु॰ दन्तधावन,
दतून॰ } मिसवाक।

दतूना॰ना॰ पु॰ पौधाविशेष।

दतूली॰ना॰ स्त्री॰ छोटे २ दांत।

दतौन॰ना॰ पु॰ दतून।

दत्त॰गु॰ जो दियागया।

दत्तात्रेय॰ना॰ पु॰ हरिअवतार मुनिविशेष।

ददरीक्षेत्र॰ना॰ पु॰ भृगुमुनि का स्थान पटना के पास है।

ददियाल॰ } ना॰ पु॰ दादा
ददियाला॰ } का घर, पुरुषे।

ददोड़ा॰ना॰ पु॰ मच्छड़ आदि के काटने की सूजन।

दद्रू॰ना॰ पु॰ दादुरोग।

दधि॰ना॰ पु॰ दही, समुद्र।

दधिकांदो॰ना॰ पु॰ जन्माष्टमी के दूसरेदिन का पर्व्वानन्द।

दधिमुख॰ना॰ पु॰ लड़का बहुतकम उमर, बाल्य, वानर विशेष जो राम दलमें था।

दधिरिपु॰ना॰ पु॰ अगस्ति मुनि।

दधिवल॰ना॰ पु॰ सुग्रीव का पुत्र विशेष।

दधिसुत॰ना॰ पु॰ चन्द्रमा आदिक।

दधीचि॰ना॰ पु॰ मुख्यराजा, मुनि विशेष।

दनुज॰ना॰ पु॰ दैत्य, राक्षस।

दनुजपति॰ }
दनुजराज॰ } ना॰ पु॰ दैत्यों का राजा।
दनुजाधिप॰ }

दनुजारि० ना० पु० देवता, श्रीनारायण ।

दनुजेश० } ना० पु० दैत्यों का राजा ।
दनुजेश्वर० }

दन्त० ना० पु० दांत, दशन ।

दन्तकाष्ठ० ना० पु० दतूनकरना, दतून ।

दन्तधावनी० ना० पु० धनियां ।

दन्तवीज० ना० पु० अनार ।

दन्तशठ० ना० पु० माई औषधि, जंभीरी ।

दन्तशूल० ना० पु० दांतों की पीड़ा ।

दन्तिका० ना० स्त्री० बड़ी छतावर ।

दन्ती० ना० पु० हाथी ।

दन्तीफल० ना० पु० पिस्ता ।

दन्तुर० } गु० जिसके दांत
दन्तोल० } होंठ से नढके, या
दन्तैल० } जिसजन्तु आदि के
बड़े२ दांत हो ह्बड़ा, ह्बिला ।

दन्त्य० गु० जिन अक्षरों का उच्चारण दांतसे होता है यथा, तथदधन लस ।

दन्दनाना० अ० क्रि० विराजना, निडरबैठना ।

दन्ना० ना० पु० इन्द्रिय, लिंग, गु० निडर ।

दन्नापेल० गु० व्यभिचारी, अतिनिश्शङ्क ।

दपट० ना० स्त्री० दौड़, झपट, डांट ।

दपटना० अ० क्रि० दौड़ना, डांटना ।

दपटाना० स० क्रि० दौड़ाना, डांटदिखाना ।

दबकना० अ० क्रि० छिपना, घातमें बैठना ।

दबकर० ना० स्त्री० कल ।

दबकाना० स० क्रि० धमकाना, डांटना, लुकाना ।

दबकी० ना० स्त्री० दांव, छिपकी ।

दबकीला० } गु० घुसड़ू, दब-
दबकैल० } कने हारा ।

दबड़्ग० } गु० कुशील, कुढङ्गा ।
दबड़्गा० }

दबना० अ० क्रि० नीचे होना, कुचिलना, कानिकरना, मानना ।

दबा० ना० पु० दांव, घात ।

दबाना० स० क्रि० दाबना, निचोड़ना, डांटना ।

दबाव० ना० पु० पराक्रम, आधीनता, बोझ, अदब ।

दबीला० ना० पु० ओषधि विशेष, बैठा, चप्पू ।

दबेपांव० अव्य० होले, धीमे ।

दबेल० ना० पु० प्रजा, अधीन ।

दबोचना० स० क्रि० दबाय डालना ।

दम० ना० पु० मनको निजवश रखना अर्थात् इन्द्रियोंको रोकना, दौना सुगन्धि ।

दमक० ना० स्त्री० चमक, दहक, झलक, दाह ।

दमकना० अ० क्रि० झलकना, चमकना ।

दमड़ा० ना० पु० सम्पत्ति दौलत ।

दमड़ी० ना० स्त्री० पैसे का आठवां भाग ।

दमदमाना० स० क्रि० हिलाना ।

दमन० ना० पु० सूरमा, नागदौन, पुष्प विशेष, अधीनता, नाशन, दमयन्ती ।

दमनीय० गु० दमनके योग्य, दमनकारक, तोड़नेहारा, रामायणे यथा, कुंवरिमनोहरि विजय बड़ि कीरति अति कमनीय, पावनहारविरञ्चि जनु रच्यौ न धनुदमनीय ।

दमयन्ती० ना० स्त्री० राजा नलकी भार्य्या।

दमाना० स० क्रि० लचकाना, निङराना, खुदवाना।

दमामा० ना० पु० डंका, धौंसा।

दम्पति० } ना० पु० स्त्री
दम्पती० } पुरुष।

दम्भ० ना० पु० अहंकार, घमण्ड, पाखण्ड, छल, बनाव।

दम्भी० गु० अहंकारी, घमण्डी, पाखण्डी छली।

दम्य० गु० शास्य, ना० पु० खेला।

दया० ना० स्त्री० कृपा, करुणा, दान वितरण।

दयायुक्त० }
दयालु० }
दयावन्त० } गु० कृपावन्त, मिलन सार, दाता, मायावन्त मेहरबान।
दयावान्० }
दयाशील० }

दर० ना० पु० मोल, भाव, शंख, छेद, डर, पीड़ा।

दरकना० अ० क्रि० चिरजाना, फटना।

दरका० ना० पु० दारर, फटाव।

दरकाना० स० क्रि० फाड़ना, चीरना।

दरकी० गु० स्त्री० फटी।

दरदर० ना० पु० ईंगुर सिन्दूर।

दरदरा० गु० अधकूटा, अधपिसा।

दरश० } ना० पु० दर्श, दे-
दरस० } खना।

दरही० ना० स्त्री० मछली विशेष।

दरांती० ना० स्त्री० हंसिया, कटनी।

दरार० } ना० पु० दरका
दरारा० } चीर।

दरि० ना० स्त्री० मोल, भाव।

दरिद्र० ना० पु० } दीनता,
दरिद्रता० स्त्री० } कङ्गाल-
ता, निर्धनता।

दरिद्री० गु० दीन, कङ्गाल।

दरी० ना० स्त्री० खोह, गुफा, बिछौना विशेष।

दरीभृत्० ना० पु० पर्ब्बत, पहाड़।

दरीन० ना० स्त्री दरीका बक्र वचन।

दर्दुर० ना० पु० मेंढक।

दर्प० ना० पु० अहंकार, अभिमान, मान।

दर्पक० ना० पु० कामदेव।

दर्पण० ना० पु० आदर्श, मुकुर, शीशा।

दर्पणी० ना० स्त्री० दर्पण।

दर्पणीय० गु० सुन्दर दिखनोट सुथरा, अच्छा।

दर्पणोदर० ना० पु० चौरस दर्पण कापेट।

दर्पी० गु० अभिमानी, मानी।

दर्भ० ना० पु० कुश, घास।

दर० ना० पु० दरारा।

दरीना० अ० क्रि० निडर, आगे बढ़ना, बेधड़क आगे चलेजाना।

दर्बिका० ना० स्त्री० गोभी।

दर्बी० ना० स्त्री० कर्छी।

दर्बीकार० ना० पु० सांप।

दर्श० ना० पु० दृष्टि, परिवा, प्रतिपदा।

दर्शक० गु० दिखनौट, देखने वाला।

दर्शकता० ना० स्त्री, दर्शन, दिखावट।

दर्शन० ना० पु० दृष्टि, भेंट।

दर्शनधारी० गु० सुन्दर।

दर्शनी॰ ना॰ स्त्री॰ हुण्डी विशेष जिसका देखतेही रुपया दिया जावे।

दर्शी॰ गु॰ देखने वाला।

दल॰ ना॰ पु॰ पत्ता, बड़ीफौज, ढेर, मोरपंख।

दलक॰ ना॰ स्त्री॰ झलक।

दलकना॰ अ॰ क्रि॰ झलकना।

दलदल॰ ना॰ पु॰ धसाव, पांक, कीचड़।

दलदलाना॰ अ॰ क्रि॰ कांपना, थरथराना।

दलदलाहट॰ ना॰ स्त्री॰ थरथराहट, कम्प।

दलन॰ ना॰ पु॰ नाशन, दो टूक करने का काम विशेष।

दलना॰ स॰ क्रि॰ दोटूककरना।

दलबादल॰ ना॰ पु॰ मेघोंका समूह।

दलवाना॰ स॰ क्रि॰ दोटूक कराना।

दलवैया॰ ना॰ पु॰ दलनेहारा

दलाना॰ स॰ क्रि॰ दलवाना

दलिद्र॰ ना॰ पु॰ } दरिद्र
दलिद्रता॰ स्त्री॰ }

दलिद्री॰ गु॰ दरिद्री।

दलित॰ गु॰ दोटूक कियागया आधा।

दलिया॰ ना॰ पु॰ अधकुट्टा अधपिसा।

दलिहन॰ ना॰ पु॰ जो अन्न दाल के काम आता यथा चरद आदि।

दली॰ गु॰ दोटूक कीगई, ना॰ पु॰ छत्त।

दलेंता॰ ना॰ पु॰ } छोटी
दलेंती॰ ना॰ स्त्री॰ } चक्की।

दव॰ ना॰ पु॰ बनकी आग बाता, दावा।

दवागि०
दवाग्नि०
दवानल०
दवारि० } ना० पु० वनकी आगि।

दश० गु० दस, १०।

दशकण्ठ० ना० पु० रावण।

दशगात्र० ना० पु० मृतक का कर्म विशेष।

दशदिग्पाल० ना० पु० दश-दिशापाल अर्थात् इन्द्र, १ अग्नि, २ यम, ३ नैर्ऋति ४ वरुण, ५ वायु, ६ कुवेर, ७ ईशान, ८ ब्रह्मा ९ अनन्त १०।

दशदिशा०
दशदिशि० } ना० स्त्री० दश ओर अर्थात् पूर्व, आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, अध ऊर्ध्व, १०।

दशन० ना० पु० दांत।

दशम० गु० दसवां।

दशमांश० ना० पु० दसवां भाग।

दशमी० स्त्री० दशवींतिथि।

दशरथ० ना० पु० श्री राम चन्द्र जीके पिता।

दशहरा० ना० पु० ज्येष्ठ वा आश्विनि शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि।

दशा० ना० स्त्री० अवस्था, व्यवस्था, गति।

दशांश० ना० पु० दशवां भाग, $\frac{1}{10}$

दशांगुल० ना० पु० फलविशेष अर्थात् खरबूजा।

दस० गु० दश, १०।

दसन० ना० पु० दशन, दांत।

दसम० गु० दशम, दसवां।

दसरथ० ना० पु० दशरथ।

दसहरा० ना० पु० दसहरा।

दसी॰ ना० स्त्री० सूत, दशा, गाड़ी की फड़।

दसीला॰ गु० सुखकी दशा में रहने हारा।

दसीखा० ना० पु० पंख का भाड़ना।

दसोंद्वार॰ ना० पु० शरीरके दशद्वारअर्थात्आंख,कान,नाक,मुख,लिंग,गुदा, चांदि,परन्तु चांदिरहित केवलनवद्वार ठीक हैं।

दसौंधी॰ ना० पु० भाट,बरदैत।

दस्यु॰ ना० पु० वैर, चोर।

दस्युवृत्ति॰ ना०स्त्री० चोरी।

दह० ना० पु० महराव।

दहक॰ ना०स्त्री०दाह,चमक।

दहकना॰ अ० क्रि॰ जलना, पछिताना, सत्या नाश होना।

दहकाना।० स०क्रि० जलाना, बिगाड़ना०, पश्चात्ताप कराना, गर्माना।

दहन॰ ना० पु॰ अग्नि।

दहनं॰, दहना।०, दहनौ॰ } अ० क्रि० जलना, बरना।

दहलना॰ अ॰ क्रि० दबना, कांपना।

दहलाना० स० क्रि० दबाना, कम्पाना।

दहसेरा० ना० पु० दस सेर का तोल।

दहा॰गु०जल गया वा जला। झुवा।

दहाड़ना॰ अ० क्रि० गर्जना, यथा शेरका शब्द।

दहाना॰स० क्रि० जलाना।

दहिना॰गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

दही०नाο पुο गोरस, दधि, गुο जलगई।

दहेंड़ी०नाο स्त्रीο दही की हांडी।

दहेड़०नाο पुο पक्षीविशेष।

दहेल०नाο पुο पक्षीविशेष।

दह्यो०नाο पुο दही, सοक्रिο जलाया।

दक्ष०नाο पुο निपुण, चतुर, ब्रह्मा का पुत्र जिसको ब्रह्माने दक्षिणाङ्गुष्ठ से उत्पन्न किया था, स्मृति विशेष।

दक्षन०नाο पुο दक्षका बहुवचन भाषामें प्रचलित है यथा देव देवन, और लोक लोकन आदि।

दक्षसुत०नाο पुο प्रचेता।

दक्षसुता०नाο स्त्रीο दक्ष की कन्या विशेष, सती।

दक्षिण०गुο खरा, उदित, सूर्य्यका वामाभाग, दहिना, दखिन।

दक्षिणअक्षांश० नाο पुο रेखाभूमिके दक्षिणकेन्द्र तक जो माप है।

दक्षिणकेन्द्र०नाο पुο जिसके चारोंओर हिम समुद्र है वा जिसको हिन्दू शास्त्रज्ञ बड़वानल कहते हैं।

दक्षिणखण्ड०नाοपुοविन्ध्याचल के दक्षिण का देश विशेष।

दक्षिणा०नाο स्त्रीο कर्मकरवाने के निमित्त ब्राह्मण को दान देना, कार्य्य कावेतन।

दक्षिणाग्नि०नाο पुο अग्नि विशेष।

दक्षिणायन०नाο पुο कर्क संक्रान्ति से धनुः संक्रान्ति तक का काल।

दक्षिणीय०गुο दक्षिणदेश के मनुष्यादि।

दा० अव्य० पदान्त में दाताका अर्थ सूचक यथा सुखदा अर्थात् सुखदाता ।

दाई० ना० स्त्री० दूध पिलाने हारी ।

दाऊ० ना० पु० बड़ा चचा, श्रीबलदेवजी का एक नाम ।

दांड़० ना० पु० दण्ड, चम्पू ।

दांड़ा० ना० पु० रीति, धूरा सिवाना ।

दांड़ाभेंड़ा० ना० पु० सिवाना, छोर, धूरा ।

दांड़ी० ना० पु० नाविक, नावचलाने हारा, ना० स्त्री० दण्डीतुलाआदिकी।

दांत० ना० पु० दन्त, दशन ।

दांतन० ना० पु० दन्त धावन, काष्ठ, दतून ।

दांतपीसना० अ० क्रि० किचकिचाना ।

दांताकिलकिल० ना० स्त्री० झगड़ा बखेडा ।

दांती० ना० स्त्री० आराकेदांत

दांव० ना० पु० घात, अवसर होड़, बारी ।

दाख० ना० पु० अंगूर ।

दाग़० ना० पु० चिन्ह य शब्द फारसी काहे ।

दाग़ना० स० क्रि० चिह्नकर ना, छोड़ना, यह शब्द यामिनी भाषाका है ।

दाडिम० ना० पु० अनार ।

दाढ़ी० ना० स्त्री० ठोढ़ीपरके बाल ।

दातन० ना० पु० दतून ।

दातव्य० गु० देने के योग्य दातापन ।

दातव्यता० ना० स्त्री० दाता पन, देनहारी ।

दाता० गु० पु० धर्मात्मा, देने हारा, दयालु ।

दातार॰ गु० दाता,

दात्र॰ना॰ पु॰ दरांतीविशेष।

दाद॰ना॰ पु॰ रोग विशेष, दद्रु।

दादमर्द्दन॰ना॰ पु॰ दद्रुमर्द्दन, औषधि विशेष।

दादा॰ना॰पु॰ पिताकापिता, बड़ाभाई।

दादी॰ना॰ स्त्री॰ पिता की माता।

दादु॰ना॰ पु॰ दादरोगविशेष दद्रु।

दादुर॰ना॰ पु॰ मेंढ़क।

दादू॰ना॰ पु॰ महापुरुष विशेष, जिसने अपना पन्थ चलाया औ जाति का बिहना था।

दाधना॰स॰ क्रि॰ दग्धना।

दान॰ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धन का त्याग,भूर, ख़ैरात।

दानपत्र॰ना॰ पु॰ पुण्यार्थ धनादि का दानपत्र, माफ़ी नामा।

दानव॰ना॰ पु॰ दैत्य,असुर।

दानवारि॰ना॰ पु॰ देवता, श्रीविष्णुजी।

दाना॰ना॰ पु॰ अश्वादि के खाने का अन्न।

दानी॰गु॰ दाता, सख़ी।

दाप॰ना॰ पु॰ क्रोध, अभिमान।

दापक॰गु॰क्रोधी,अभिमानी।

दाबना॰स॰ क्रि॰ दबाना।

दाम॰ना॰ पु॰ रुपया पैसा, ना॰ स्त्री॰ माला, रस्सी, गु॰ पैसे का चौबीसवां भाग, मोल।

दामवती॰ना॰ स्त्री॰माला।

दामासाही॰ ना॰ स्त्री॰ यथार्थ भागकी कर्तव्यता।

दामिनी॰ना॰ स्त्री॰ बिजली, कौंधा।

दाम्मी० नाο स्त्रीο यथार्थ विहारी।

दामोदर० नाο पुο श्रीकृष्ण चन्द्र जीका एक नाम, वर्द्धमानदेशका एकनद, गुο जिसके पेटतक मालाहो।

दाम्भिक० गुο दम्भी, पाखण्डी, अभिमानी।

दाय० नाο पुο पैतृकधन।

दायक० नाο पुο देनेहारा।

दायजा० नाο पुο व्याह का दान, यौतुक।

दाया० नाο स्त्रीο दावा, कृपा, मया, दया।

दार० नाο स्त्रीο दारा, काष्ट, दारु।

दारचीनी० नाο स्त्रीο काष्ट विशेष।

दारा० नाο स्त्रीο स्त्री, पत्नी, जोरू।

दारिका० नाο स्त्रीο लड़की, लकड़ी।

दारिद० नाο पुο दरिद्र।

दारिदी०
दारिद्री० } गुο दरिद्री।

दारिद्र० नाο पुο दरिद्रता।

दारी० नाο स्त्रीο लौंडी जो लूटकरके लाई है।

दारु० नाο पुο काष्ठ, वृ विशेष।

दारुक० नाο पुο श्रीकृष्णजी का रथवान्।

दारुगत० गुο काष्ठान्तर, का ठके भीतर।

दारुजचित्र० नाο पुο का की पुतली।

दारुण० गुο भयानक, असह्य कठिन नाο पुο चीत औषधि।

दारुनारि० नाο स्त्रीο का की पुतली।

दारुफल० नाοपुο चिलगोज़

दारुमय० गु० जो काष्ठ से निर्मित।

दारुहरिद्रा० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दारू० ना० स्त्री० औषधि, मद, यह शब्द यामिनी भाषा का है।

दारूड़ा० ना० पु० } मदिरा,
दारूड़ी० ना० स्त्री० } मद।

दारौ० ना० पु० दाड़िम, अनार, विहारीलालसतिकायां, सुभरभरौ तुवगुणगणन पचयेकपट कुचाल, क्यों धोंदारौ लौंहियोदरकत नहिंनन्दलाल।

दार्ढ्य० ना० पु० दृढ़ता।

दार्वा० } ना० स्त्री० रसौत।
दार्व्य० }

दार्वी० ना० स्त्री० दारुहल्दी।

दाल० ना० स्त्री० चनेआदि अन्न के दो खण्ड।

दालिद्र० ना० पु० दरिद्र।

दालिद्री० गु० दरिद्री।

दाव० ना० पु० दांव, घात, पेंच, होड़, कुल्हाड़ी विशेष, वन।

दावन० ना० पु० गाहन, चलावन, कुचलन।

दावना० स० क्रि० दाबना।

दावरि० ना० स्त्री० रस्सी।

दावा० ना० पु० दाईकास्वामी। दवा।

दावाग्नि० } ना० पु० बनमें
दावानल० } उपजके जोअग्नि बनको जलावे, बनकी अग्नि।

दाशरथि० ना० पु० श्री राम चन्द्रादि।

दास० ना० पु० भृत्य, सेवक, नौकर।

दासता० ना० स्त्री० लौंडीपना, सेवकाई।

दासा० ना० पु० हंसुआ, कड़ी के नीचे का काष्ठ जो भीत पर रखते हैं।

दासी० ना० स्त्री० चेली, लौंडी, सेवकिन्।

दास्य० ना० पु० दासता।

दाह० ना० स्त्री० जलन, दहक।

दाहक० गु० जलाने वाला, ना० पु० अग्नि,।

दाहना० स० क्रि० जलाना।

दाहिना गु० दक्षिण, सीधा, सहायक।

दाक्षायणी० ना० स्त्री० देवी विशेष।

दाक्षिक० ना० पु० सिंघाड़ा।

दिक० ना० पु० दिग् दिशा, ओर, तरफ़।

दिकपाल ना० पु० दिग्पाल, दिशा का मालिक।

दिखलाना० स० क्रि० दिखाना।

दिखाई० ना० स्त्री० सुझाई, लखाई।

दिखाऊ० गु० सुन्दर, दिखनौट, सजीला।

दिखाना० स० क्रि० सुझाना, लखाना, बताना।

दिखाव० ना० पु० भड़काव, टीमटाम, छटा।

दिग्० ना० स्त्री० दिशा, ओर, तरफ।

दिग्वान्० } ना० पु० रखवारा, पहरू।
दिग्वार० }

दिग्शूल० ना० पु० दिशाशूल, किसी दिशि में जाने के लिये बुरादिन, यथा सोमवार शनिश्चर पूर्व को, वृहस्पति दक्षिण को शुक्र रविवार पश्चिम को मंगलबुधउत्तरको।

दिगम्बर० गु० वस्त्र हीन, नग्न, परम हंस।

दिगीश० ना० पु० इन्द्रादि।

दिग्गज० ना० पु० एक दिशा का रक्षक हाथी।

दिग्गी० ना० स्त्री० बड़ा पोखरा।

दिग्पाल० ना० पु० इन्द्रादि दश १०।

दिग्भाग० ना० पु० दिशाका भाग, देश।

दिग्विजय० ना० स्त्री० सब देशों का जीतना।

दिग्विजयी० ना० पु० जो सब दिशाओं को जीते।

दिग्विभाग० ना० पु० दिग्भाग, देश।

दिठौना० ना० पु० चशमा, उपनेत्र, ऐनक।

दिण्ड० ना० पु० नृत्य विशेष।

दिति० ना० स्त्री० दैत्यमाता, कश्यप की स्त्री।

दितिसुत० ना० पु० असुर, दैत्य हिरण्याक्षादि।

दिन० ना० पु० सूर्य्योदय से सूर्य्यास्त तक का काल, रोज़।

दिनकर० ना० पु० सूर्य्य।

दिनदानि० गु० बड़ा दाता, दीन प्रति पालक।

दिनपति० ना० पु० सूर्य्य।

दिनप्रति० अव्य० प्रतिवासर, हररोज़।

दिनमणि० ना० पु० सूर्य्य।

दिनमान० ना० पु० दिनका परिमाण।

दिनाई० ना० स्त्री० दाद, संझ्या।

दिनामार० ना० पु० डेन्मार्क देश के लोग।

दिनी० गु० बहुत दिनका, पुराना।

दिनेश० ना० पु० सूर्य्य।

दिनैला० गु० दिनी, पुराना।

दिया० ना०पु० दीपक, चिराग।

दियासलाई० ना० स्त्री० दिया जलाने के लिये वस्तु विशेष।

दिलवाना० स० क्रि० देना धातु की प्रेरणार्थक क्रिया, दिलाना।

दिलवाली० ना० पु० दिल्लीके बासी।

दिलवैया० ना० पु० दिलवाने हारा।

दिलाना० स०क्रि० दिलवाना।

दिलीप० ना०पु० राजाविशेष।

दिल्ली० ना० पु० नगर विशेष जो भूतकाल में भरतखण्डकी राजधानीथा।

दिव:० ना० पु० स्वर्ग, आकाश।

दिवस्पति० ना० पु०स्वर्ग का राजा, इन्द्र।

दिवस० ना० पु० वासर,दिन

दिवह० ना०पु० मुख्यपवन।

दिवा० ना० पु० दिन।

दिवाकर० ना० पु० सूर्य्य।

दिवान्ध० ना० पु० जो दि… में नहीं देखसकतायथ… उलूक, चमगीदड़आदि

दिवाला० ना० पु० ऋणभर… में असमर्थ।

दिवारी० } ना० स्त्री० का…
दिवाली० } तिक मास क…
अमावस का त्यौहार… दीपमालिका।

दिविषद० ना० पु० देवता

दिवेश० ना० पु० इन्द्र।

दिवौकस० ना० पु० देवता

दिव्य० गु० शपथ,स्वच्छ, उज्ज्व… ना० स्त्री० लौंग।

दिव्यतना० ना०स्त्री० अप्सर…

दिव्यदृष्टि० ना० स्त्री० उज्ज्वल दृष्टि, अलौकिक ज्ञान ।

दिव्यवसन० } ना० पु० उज्ज्वलवस्त्र, स्वच्छ कपड़े, साफ़पोशाक ।
दिव्यवस्त्र० }

दिव्यस्थान० ना० पु० उज्ज्वल मकान, पवित्र स्थान ।

दिव्यज्ञान० ना० पु० उज्ज्वल ज्ञान, अलौकिक ज्ञान ।

दिश० } ना० स्त्री० पूर्वादि दश, ओर, तरफ़ ।
दिशा० }

दिशाशूल० ना० पु० दिग्शूल ।

दिशि० ना० स्त्री० दिशा ।

दिशिनाथ० ना० पु० दिशपाल ।

दिशिप० } ना० पु० दिग्पाल ।
दिशिपाल० }

दिष्ट० ना० पु० भाग्य, प्रारब्ध ।

दिसावर० ना० पु० देसावर ।

दिहरा० ना० पु० देवालय ।

दिहली० ना० स्त्री० ड्योढ़ी, चौखट, देहली ।

दीखना० अ० क्रि० दिखाई देना ।

दीठा० गु० देखने हारा ।

दीठ० } ना० स्त्री० दृष्टि, दर्शन ।
दीठि० }

दीधिति० ना० स्त्री० किरण ।

दीन० गु० कङ्गाल, आधीन, दुखी ।

दीनता० } ना० स्त्री० दरिद्रता, आधीनता, ग़रीबी ।
दीनताई० }

दीनदयालु० गु० दीनप्रतिपालक, ग़रीबपरवर, दीनोंपर दयाकरनेहारा ।

दीनपाल० }
दीनप्रतिपालक० } गु० दीनदयालु, दीनोंकापालने हारा ।
दीनबन्धु० }

दीना० स० क्रि० देना, दीनमहा ।

दीनानाथ० गु० दीनपाल, दीनदयालु ।

दीप० ना० पु० दिया, चिराग द्वीप ।

दीपक० ना० पु० दीप, दिया रागविशेष, अजवायन् ।

दीपदान० ना० पु० दिया जलाना ।

दीपनी० ना० स्त्री बटपची ।

दीपनीया० } ना० स्त्री० अजवायन् ।
दीप्य० }

दीपमाला० } ना० स्त्री० दिवाली ।
दीपमालिका० }

दीपसुत० ना० पु० काजल ।

दीपि० स० क्रि० दीपदेकर ।

दीपिका० ना० स्त्री० दीपक का प्रकाश ।

दीपित० गु० दीपदियागया ।

दीप्त० गु० प्रज्वलित, प्रकाशित ।

दीप्ति० ना० स्त्री० चम[illegible] प्रकाश ।

दीर्घ० गु० लम्बा, गुरु, द्वि[illegible] तिक अक्षर ।

दीर्घक० ना० पु० श्वेतजीर[illegible] सफेदज़ीरा ।

दीर्घकीलक० ना० पु० [illegible] कोल ।

दीर्घजङ्घ० ना० पु० ऊंट ।

दीर्घजिह्वा० ना० स्त्री० रा[illegible] विरोचन की कंन्या ।

दीर्घदण्ड० ना० पु० अर[illegible] एरण्ड, रण्ड ।

दीर्घदर्शी० गु० अग्रशोच[illegible] दूरअन्देश ।

दीर्घपत्रक० ना० पु० लह[illegible] पुनर्नवा ।

दीर्घपत्रा० ना० स्त्री० चि[illegible] पोंटा ।

दीर्घपुष्पक० ना० पु० मदा[illegible] आंक ।

दीर्घपृष्ठ० ना० पु० सांप ।

दीर्घमूल० ना० पु० जवासा, शालपर्णी ।

दीर्घमूलक० ना० पु० विधारा ।

दीर्घसूत्री० ना० पु० जो विलम्बसे कामको करे ।

दीवट० ना० स्त्री० दीपकरखने का आधार ।

दीवली० ना० स्त्री० छोटादिया ।

दीवा० ना० पु० दीपक, दिया ।

दीसना० स० क्रि० देखना ।

दीसा० स० क्रि० भू, देखा, देखता ।

दीह० ना० पु० बड़ा, रामचन्द्रिकायां यथा, दीह दीह दिग्गजनके केशव मनोकुमार, दीन्हेराजा दशरथहि दिग्पालन उपहार ।

दीक्षा० ना० स्त्री० मन्त्र का ग्रहण, उपदेश ।

दीक्षित० गु० दीक्षाकियागया, ना० पु० ब्राह्मणजातिविशेष ।

दु० गु० दो २ ।

दुः० अव्य० शब्दकीआदिमें निषेधवानिंदाका सूचक ।

दुःकर्णी० ना० स्त्री० किरवाली ।

दुःख० ना० पु० पीड़ा, क्लेश, कष्ट, व्यथा ।

दुःखड़ा० ना० पु० आपदा, दुर्गति ।

दुःखदाई० गु० दुःखदाता ।

दुःखदाता० गु० दुःख देनेहारा ।

दुःखना० अ० क्रि० पीड़ाहोना ।

दुःखाना० स० क्रि० दुःखदेना ।

दुःखित०, दुःखिया०, दुःखियारा०, दुःखियारी०, दुःखी० } गु० पीड़ित, क्लेशित, अभागी, कङ्गाल ।

दुःखशील० गु० जिसका स्वभाव दुष्ट हो।

दुःप्रधर्षिणी० ना० स्त्री० श्वेतकटाई।

दुःसमय० ना० पु० विपत्ति काल।

दुःस्पर्शा० ना० स्त्री० जवासा।

दुकर० ना० पु० दोनोंहाथ।

दुकान० ना० पु० दोनोंकान, हाट।

दुकाल० ना० पु० विपत्तिकाल, दुर्भिक्ष।

दुकूल० ना० पु० रेशमी वस्त्र विशेष, दोनोंतट।

दुख० ना० पु० दुःख।

दुखद०, दुखदा०, दुखदाई०, दुखदाता० } गु० दुःखदाई, कष्टदेनेवाला।

दुखत्रय० ना० पु० तीन दुख अर्थात् दैविक, दैहिक, भौतिक, अथवा, कफ, पित्त, और वात।

दुखारी०, दुखित०, दुखिया०, दुखियारा०, दुखियारी०, दुखी० } गु० दुःखित, पीड़ित।

दुखेन० ना० पु० दुःखयुत, दुःखकरके।

दुगई० ना० स्त्री० चियारी, कैंची, जो छपर मे लगाते हैं।

दुगन०, दुगना० } गु० द्विगुण, दोहरा, दूना।

दुग्ध० ना० पु० दूध।

दुग्धिका० ना० स्त्री० दूधिया पौधा।

दुग्धिनी० ना० स्त्री० कडुई-तोंबी ।

दुग्धी० ना० स्त्री० दूधियापोधा, सेऊड़ ।

दुचित० } गु० जिसकामनदो
दुचिता० } ओरलगाहो ।

दुचिताई० ना० स्त्री० चिन्ता, दुविधा, भ्रम ।

दुचित्ता० गु० दुचित ।

दुत० अव्य० दूर ।

दुतकार० ना० पु० धरहना, झिड़क ।

दुतकारना० स० क्रि० सांसना, कुत्तेकोडांटना ।

दुतकारी० ना० स्त्री० सांस, ताड़न ।

दुताना० स० क्रि० दबाना, डांटना ।

दुति० ना० स्त्री० चटक, भड़क, सुन्दरता ।

दुतिवन्त० } ना० गु० भड़कीला, चमकदार,
दुतिवान्० } सुन्दर, सूर्य्य चन्द्रादि यथा हैं, रामचन्द्रिकायां यथा दुतिवन्तनको विपदा अतिकीन्ही, धरणी कहं दुन्दुवधूगहिदीन्ही ।

दुदही० } ना० स्त्री० औषधि
दुद्धी० } पौधा विशेष ।

दुधा० ना० स्त्री० दोजगह, दोप्रकार ।

दुधार० } गु० दूधदेनेहार,
दुधारा० } दोधारकी ।

दुधैल० गु० दूधदेनेहारी ।

दुन्दभि० ना० स्त्री० नकार:, निशान्, दैत्य विशेष, जिसको बालिनेमाराथा ।

दुपट्टा० ना० पु० ओढ़ने का वस्त्र विशेष ।

दुपद्० ना० पु० दोपांववाला अर्थात् मनुष्य।

दुपहरिया० ना० स्त्री० पुष्प विशेष।

दुबधा० ना० स्त्री० सन्देह, अधड।

दुबला० गु० दुर्बल।

दुबलाई० } ना० स्त्री० दुर्बलता।
दुबलापा० }

दुबिधा० ना० स्त्री० सन्देह, छपांच, शक।

दुबिधि० ना० स्त्री० दोतरह, दोप्रकार।

दुमुख० ना० पु० राक्षसविशेष, दोमुखवाला।

दुभाव० ना० पु० दुबिधा।

दुभाषिया० } गु० दोभाषाओं काजाननेहारा।
दुभाषी० }

दुर० अव्य० शब्द के प्रथम में संयोगिकअव्यय जिसका अर्थकु, कठिन, ना० स्त्री० कानका भूषणजो लड़के पहिनते हैं।

दुरतिक्रम० गु० कठिन, मुश्किल।

दुरद० ना० पु० हाथी।

दुरध्वा० ना० स्त्री० कुमार्ग, बुरीराह।

दुरना० अ० क्रि० छुपना, लुकना।

दुरदृष्ट० ना० पु० मन्दभाग्य।

दुरन्त० गु० अशान्त, कठिन, अन्तहीन।

दुराचार० गु० जिसका व्यवहारनिन्दित है, ना० पु० निन्दित व्यवहार वा कर्म।

दुराचारी० गु० जिसका व्यवहारनिन्दित है।

दुरात्मा० गु० पापी, दुष्ट।

दुराधर्ष० गु० अडर, अभय, अशङ्क ।

दुराना० स० क्रि० छुपाना, लुकाना ।

दुराराध्य० गु० कष्टसे सेवनेके योग्य ।

दुरारोह० ना० पु० ताड़वृक्ष ।

दुरालभा० } ना० स्त्री०
दुरालम्भा० } जवासा ।

दुराव० ना० पु० छुपाव, छल ।

दुराशा० ना० स्त्री० कुत्सित आशा, दुष्टतृष्णा ।

दुरित० ना० पु० पाप, दोष ।

दुरी० ना० स्त्री० खेलमें दो पड़ना वा दूआ ।

दुरुखा० गु० जिसकी दोनों ओर एक सा होवे, यह शब्द फ़ारसी का है ।

दुरेफ० ना० पु० भौंरा ।

दुर्ग० ना० पु० गढ़, घाट, क़िलअ, अगम ।

दुर्गति० ना० स्त्री० कुगति, बुरी अवस्था, नरक, दरिद्रता ।

दुर्गन्ध० ना० स्त्री० } दुर्ग-
दुर्गन्धि० ना० स्त्री० } न्धि, बोय, कुवास ।

दुर्गन्धा० ना० स्त्री० पियाज़, गु० कुवासित ।

दुर्गम० गु० औघट, गम्भीर, अगम्य, कठिन ।

दुर्गमता० ना० स्त्री० गम्भीरता, औघटता ।

दुर्गा० ना० स्त्री० भगवती विशेष ।

दुर्गामी० गु० कुगामी, कुमार्गी, बद चलन् ।

दुर्घट० गु० जो कष्ट से हो सके कुघाट, औघट ।

दुर्जन० ना० पु० शत्रु, गु० दुष्ट, अपकारी ।

दुर्जनता० } नाo स्त्री० शठता, द्रोह, दुष्टता।
दुर्जनताई० }

दुर्जय०गु० बलवान् शत्रु, जो पराभव न होसके।

दुर्दशा०नाo स्त्री० दुर्गति, विपत्ति।

दुर्नाम०ना० पु० बदनाम, अपयश।

दुर्नामी०गु० बदनाम, अपयशी, अपकीर्त्ती।

दुर्नाद०नाo पु० राक्षसविशेष, कुत्सितनाद।

दुर्नीति०नाo स्त्री० कुचाल, अनीति, अन्याय।

दुर्बल० गु० दुर्बल, निर्बल, असमर्थ।

दुर्बलता०नाo स्त्री०निर्बलता, असामर्थ्य।

दुर्भगा० गु० अभागिन् स्त्री, जिसका स्वामी प्यार नहीं करता है।

दुर्भाग्य० गु० प्रारब्धही[न], अभागी।

दुर्भाव० नाoपुo बुरास्वभा[व]

दुर्भिक्ष० नाo पुo अकाल, काल, कुसमय।

दुर्मति० ना० स्त्री० कुबु[द्धि], मूर्खता।

दुर्मद० गु० मस्त, मदगलि[त], मत्त, सिड़ी।

दुर्मनी०नाo स्त्री०दूब घास[।]

दुर्मुख० नाo पुo नाग विशे[ष], बानरों का एक राज[ा], गु० कठोर भाषी।

दुर्मूल्य० गु० महंगा।

दुर्योग० नाo पुo बहुते[रे] बाधकों का समूह,कुस[ं]गति।

दुर्योधन० नाo पुo राज[ा], कौरवाधीश।

दुर्लभ०गु० जो दुःख से मि[ले], अनोखा।

दुर्लक्षण ० ना० पु० अशुभ चिन्ह।

दुर्वचन ० ना० पु० बुरीबात, गाली।

दुर्वर्ण ० ना० पु० बुराखप, कुवर्ण, चांदी।

दुर्वर्णता ० ना० स्त्री० कुरूपता, चांदी।

दुर्वाक्य ० } ना० पु० बुरीबात,
दुर्वाच्य ० } गाली।

दुर्वाद ० ना० पु० कुत्सितवार्ता, बुरी बातें।

दुर्वासा ० ना० पु० मुनि विशेष।

दुर्बुद्धि ० ना० स्त्री० मूर्खता, कुबुद्धि, नादानी।

दुर्बुद्धी ० गु० नादान, कुबुद्धि, मूर्ख।

दुलकी ० ना० स्त्री० कूकरचाल, घोड़े की एक प्रकारकी चाल विशेष।

दुलड़ा ० ना० पु० } दोलड़ा,
दुलड़ी ० ना० स्त्री० } दुगुन।

दुलत्ती ० ना० स्त्री० पशुका पिछले दो पैरों का मारना।

दुलहा ० ना० पु० वर, बनरा, दूल्हा।

दुलहिन् ० ना० स्त्री० नईबहू, बधू बनी बनरी।

दुलाई ० ना० स्त्री० ओढ़नेका वस्त्र विशेष।

दुलार ० ना० पु० प्यार, स्नेह।

दुलारा ० ना० पु० } गु० प्यार
दुलारी ० स्त्री० } युत, प्यारा, प्यारी लाडिला, लाडिली।

दुवार ० ना० पु० द्वार।

दुविद ० ना० पु० बानरविशेष।

दुबे ० ना० पु० ब्राह्मण जाति विशेष।

दुशाला ० ना० पु० पाटवस्त्र बिशेष।

दुष्कर० गु० जोकष्टसेकियाजाय।

दुष्कर्म०
दुष्कृत० } ना० पु० कुकर्म, पाप।

दुष्कर्मी० गु० कुकर्मी, पापी।

दुष्ट० गु० बुरा, उत्पाती, नीच, कठिन।

दुष्टता० ना० स्त्री० नीचता, पाप, बुराई।

दुष्टजन्तु० ना० पु० सर्पादि, मूज़ी जानवर।

दुष्टा० ना० स्त्री० छिनाल, सापिन्, पापिन्।

दुस्तर० गु० जोतरने के योग्य न होवे, कठिन, अगम्य।

दुस्पर्शा० ना० स्त्री० छोटी कटाई।

दुसह०
दुस्सह० } गु० जो सहा न जावे असह्य।

दुहना० स० क्रि० दूधनिकालना, निचोड़ना।

दुहनी० ना० स्त्री० पात्र जिस
दूध दुहते हैं।

दुहाई० ना० स्त्री० न्याय
लिये पुकार, हायहा
शपथ, किरिया, क़सम।

दुहाईतिहाई० ना० स्त्री
कई बार दुहाई कर्ना

दुहाना० स० क्रि० दूध निक
वाना।

दुहार० ना० पु० दूध दोह
वाला।

दुहिता० ना० स्त्री० कन्या
पुत्री।

दुहेला० गु० कठिन, भारी

दूआ० ना० पु० दोका अङ्क

दूज० ना० स्त्री० द्वितीया तिथि

दूजवर० ना० पु० जिसने
बिवाह किये।

दूजा० गु० दूसरा।

दूत॰ ना॰ पु॰ समाचार पहुंचानेहारा, सन्देशिया, हरकारह, शैतान्, पैगंबर।

दूतता॰ ना॰ स्त्री॰ चालाकी, तोड़फोड़ और दूतका काम।

दूती॰ ना॰ स्त्री॰ कुटनी।

दूध॰ ना॰ पु॰ दुग्ध, गोरस, क्षीर।

दूधिया॰ गु॰ दूधका, ना॰ पु॰ अनेक पौधों का नाम जिनका रस दूधकासा होता है।

दूधी॰ गु॰ दूधका, दुधैला, ना॰ पु॰ आहार, मांडी, दुधियापौधा।

दूना॰ गु॰ द्विगुण, दोहरा।

दूब॰ ना॰ स्त्री॰ दूर्वा, घासविशेष।

दूबर॰ गु॰ कठिन, दुर्बल।

दूबिया॰ ना॰ स्त्री॰ तृण की हरियाई।

दूर॰ ना॰ स्त्री॰ अन्तर, बीच, दूर, व्यवधान, अव्य, परे।

दूरगम॰ ना॰ पु॰ गदहा।

दूरतर॰ गु॰ बहुतदूर।

दूरदर्शक॰ ना॰ पु॰ दूरबीन्-यन्त्र, गु॰ दूरकादेखने वाला, अग्रशोची।

दूरदर्शी॰ ना॰ पु॰ विवेकी, दूरअन्देश।

दूरदृग्॰ ना॰ पु॰ गिद्ध।

दूरबीन्॰ ना॰ स्त्री॰ दूर की वस्तुदेखने का यन्त्र, गु॰ दूर का देखनेहारा, शब्द फारसीका है।

दूरमूल॰ ना॰ पु॰ जवासा।

दूर्वा॰ ना॰ स्त्री॰ तृण विशेष, दूबघास।

दूषक॰ गु॰ दोष लगानेहारा, दूषणकर्ता टोकनेवाला, विठोकनेहारा।

दूषण॰ ना० पु० निशाचर विशेष, दोष।

दूषित॰ गु० दोषलगाया गया, दोषयुत।

दूष्य॰ गु० निन्दित, कुत्सित।

दूसरा॰ गु० दूजा, अन्य।

दृग्॰ ना० पु० नयन, नेत्र, आंख।

दृगञ्चल॰ ना० पु० नयनकोर, पलककी चाल।

दृढ़॰ गु० पोढ़ा, अचल, कड़ा, मज़बूत।

दृढ़ता॰ ना० स्त्री० } पोढ़ाई,
दृढ़त्व॰ ना० पु० } पौरुष, पायदारी।

दृढ़ाना॰ स० क्रि० पोढ़ाकर्ना।

दृश्य॰ गु० जो देखनेकेयोग्य है, जो देखाजावे।

दृष्ट॰ गु० जोदेखागया, प्रकट।

दृष्टिकूट॰ ना० पु० पहेली।

दृष्टान्त॰ ना० पु० उपमा, [u]दाहरण, मिसाल

दृष्टि॰ ना० स्त्री० दर्शन, न[…] दीठि, आंख

दृष्टिगोचर॰ गु० जो आं[…] सामने हो[…]

दृषद्भेद॰ ना० पु० पाषाण[…]

दृषद्गर्भ॰ ना० पु० पन्ना[…]

देआड़ा॰ ना० पु० दीमक[…] बनायाहुआघर[…]

देखना॰ स० क्रि० लखना[…] [दृ]ष्टिकरना, विलोकना[…]

देखवैया॰ ना० पु० दे[…] हारा[…]

देनलेन॰ ना० पु० व्यव[…]

देना॰ स० क्रि० देडा[…] सौंपना[…]

देमारना॰ स० क्रि० पट[…] फेंकदेन[…]

देय॰ }
देयमान॰ } गु० देनेके[…]

देर० } ना० स्त्री० विलम्ब,
देरी० } ढील।

देव० ना० पु० देवता, मेघ, देना।

देवऋषि० ना० पु० देवर्षि, नारदमुनि।

देवक० ना० पु० देवकीकापिता, देवता, गु० देनेहारा।

देवकांडर० ना० पु० घनसुर।

देवकी० ना० स्त्री० श्री कृष्ण कीमाता।

देवकुसुमा० ना० स्त्री० लौंग।

देवगरी० ना० स्त्री० रागिनी विशेष।

देवगृह० ना० पु० देवालय, द्यौहरा

देवठान० ना० स्त्री० देवोत्थानी, कार्तिक सुदी एकादशी को ये त्योहार होता है।

देवतरु० ना० पु० कल्पवृक्ष, का कईवृक्ष।

देवता० ना० पु० देव, सुर, फ़रिश्तह।

देवताड़० ना० पु० देवदाली।

देवदत्त० ना० पु० संज्ञाविशेष, गु० जो देवता का दियाहुआ है।

देवदारु० ना० पु० वृक्ष वा काठ विशेष।

देवधुनि० ना० स्त्री० श्रीगङ्गा जी।

देवनागरी० ना० स्त्री० हिन्दीके यथार्थ अक्षर।

देवनारि० ना० स्त्री० देवता कीस्त्री।

देवपूजक० ना० पु० देवताकी पूजा करनेहारा, पौत्तलिक मूर्त्ति पूजक।

देवपूजा० ना० स्त्री० देवता का पूजन।

देवबधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, राजरानी, सीता जू, रामचन्द्रिकायां, देवबधूजबहीहरिल्यायो क्योंतबह्यौं तजितांहिन आयो।

देवमुनि० ना० पु० नारदजी।

देवर० ना० पु० पतिकाछोटा भाई।

देवराणी० | देवरानी० | ना० स्त्री० देवर की स्त्री, देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां देवराजालिये देवरानी मनोपुत्र संयुक्त भूलोक में सोहियो।

देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।

देवृ० ना० पु० देवर।

देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकु रद्वारा, देहरा, यथा तुलसीदेवल देवको लागे लाखकरोरि, कागअभा गेहगिभर्‍यो महिमाभई नथोरि।

देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर ज़ाफ़रान्।

देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत

देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।

देवसर० ना० पु० मानसरोवर।

देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरह-री, देवतों का समूह।

देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।

देवस्थान० ना० पु० देवालय, देवता का घर।

देवस्व० ना० पु० देवताकाधन

देवा० ना० पु० देवता, देने-हारा।

देवाङ्गना० ना० स्त्री० देवी, देववामा।

देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवाल० ना० पु० देनेहारा।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर।

देवाला० ना० पु० दिवाला।

देवालिया० गु० जिसका दिवालानिकलगया।

देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी।

देवालेई० ना० स्त्री० देनलेन।

देवी० ना० स्त्री० देवताकीस्त्री, भगवती, मुरहरी ओषधि।

देवेन्द्र० ना० पु० देवाधि राज अर्थात् इन्द्र।

देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्षकी तिथि जिसमें विष्णु नींदसे उठतेहैं, वा कार्तिकशुक्लएकादशी।

देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर।

देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता।

देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक, रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत।

देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह।

देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली।

देशमात्र० गु० सर्वत्र, सबदेश।

देशाचार० ना० पु० देशकी रीति।

देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना।

देशाधि०, देशाधिप०, देशाधिपति० } ना० पु० राजा, बादशाह।

देशाधीश०, देशाध्यक्ष० } ना० पु० देशका रक्षकवा राजा।

देशान्तर० ना० पु० दूसरादेश

देववधू० ना० स्त्री० देवता की पत्नी, राजरानी, सोता जू, रामचन्द्रिकायां, देववधूजवहीहरिल्यायो क्योंतवहीं तजिताहिन आयो।

देवमुनि० ना० पु० नारदजी।

देवर० ना० पु० पतिकाछोटा भाई।

देवराणी० | ना० स्त्री० देवर
देवरानी० | की स्त्री, देवताओं की रानी अर्थात् इन्द्राणी, रामचन्द्रिकायां देवराजाजिये देवरानी मनोपुत्र संयुक्त भूलोक में सोहियो।

देवरिपु० ना० पु० दैत्य, निशाचर।

देवर्षि० ना० पु० नारदमुनि।

देष्ट० ना० पु० देवर।

देवल० ना० पु० मन्दिर, ठाकु रद्वारा, द्योहरा, यथ तुलसीदेवल देवकोलागि लाखकरोरि, कागअभ गेहगिभयो महिमाभ नयोरि।

देववल्लभा० ना० स्त्री० केसर ज़ाफ़रान्।

देववाणी० ना० स्त्री० संस्कृत

देववृक्ष० ना० पु० कल्पवृक्ष।

देवसर० ना० पु० मानसरोवर

देवश्रेणी० ना० स्त्री० सुरह री, देवतों का समूह।

देवस्त्री० ना० स्त्री० देवता की पत्नी।

देवस्थान० ना० पु० देवालय देवता का घर।

देवस्व० ना० पु० देवताकाधन

देवा० ना० पु० देवता, देने हारा।

देवाङ्गना० ना० स्त्री० देवी देववामा।

देवारि० ना० पु० दैत्य, निशाचर ।

देवाल० ना० पु० देनेहारा ।

देवालय० ना० पु० देवस्थान, देवता का घर ।

देवाला० ना० पु० दिवाला ।

देवालिया० गु० जिसका दिवालानिकलगया ।

देवाली० ना० स्त्री० दिवाली, दिवारी ।

देवालेई० ना० स्त्री० देनलेन ।

देवी० ना० स्त्री० देवताकीस्त्री, भगवती, सुरहरी ओषधि ।

देवेन्द्र० ना० पु० देवाधि राज अर्थात् इन्द्र ।

देवोत्थान० ना० स्त्री० कार्तिक शुक्लपक्षकी तिथि जिसमें विष्णु नींदसे उठतेहैं, वा कार्तिकशुक्लएकादशी ।

देव्यालय० ना० पु० देवी का मन्दिर ।

देव्याश्रय० ना० पु० देवी की सहायता ।

देश० ना० पु० पृथ्वी का खण्ड विशेष, लोक, रागिनी विशेष, मुल्क, विलायत ।

देशपति० ना० पु० राजा, बादशाह ।

देशभाषा० ना० स्त्री० देशकी बोली ।

देशमात्र० गु० सर्वत्र, सबदेश ।

देशाचार० ना० पु० देशकी रीति ।

देशाटन० ना० पु० देशों में फिरना ।

देशाधि०, देशाधिप०, देशाधिपति० — ना० पु० राजा, बादशाह ।

देशाधीश०, देशाध्यक्ष० — ना० पु० देशका रक्षकवा राजा ।

देशान्तर० ना० पु० दूसरादेश

देशावर० ना० पु० परदेश, अन्यदेश।

देशी० गु० जो देशका है।

देह० ना० स्त्री० तन, शरीर।

देहरा० ना० पु० दौहरा, देवालय।

देहली० ना० स्त्री० चौखट, डौढ़ी।

देही० गु० शरीरी, ना० पु० जीव, प्राण।

दैजा० ना० पु० कंन्यादान, यौतुक।

दैत्य० ना० पु० असुर, दितिजात।

दैत्यगुरु०
दैत्यपुरोधा०
दैत्यपुरोहित०
दैत्यपूज्य०
दैत्याचार्य्य } ना० पु० शुक्राचार्य्य।

दैत्यारि० ना० पु० देवता, श्रीविष्णुजी।

दैदीप्य० गु० प्रकाशित, रोशन

दैदीप्यमान० गु० प्रकाशित चमकीला।

दैन्य० ना० पु० दीनता।

दैय० ना० पु० दैव, ईश्वर।

दैया० ना० स्त्री० माता।

दैव० ना० पु० प्रारब्ध, ब्रह्मा देवके आधीन।

दैवगति० ना० स्त्री० कर्मकी चाल, ब्रह्माकीगति।

दैवतामणि० ना० स्त्री० म हामेदा।

दैवयोग० ना० पु० कर्मप्रभाव इत्तिफ़ाक़न्।

दैववादी० गु० आलसी, भा ग्याधीन।

दैवज्ञ० ना० पु० गणक, ज्यो तिषी।

दैवात्०
दैवी० } अव्य० अकस्मात नागहान्।

दैविक० गु० जो देवता करके होवे।

दो० गु० दूसरीसंख्या २।

दोऊ० गु० दोनो।

दोक० ना० पु० बछेडा, दोवर्ष का घोड़ा।

दोचर० गु० दुहरा, दूसरा।

दोजीवा० ना०स्त्री०गर्भिणी।

दोझा० ना० पु० द्विजवर।

दोदना० स० क्रि० मुकरना।

दोना० ना० पु० दोना, पत्तों का पात्र,पुष्पविशेष।

दोनाली० ना० स्त्री० बन्दूक़ दोनालकी।

दोबर० गु० दोबेर, दुहरा।

दोमुहा० ना० पु० दोमुखका सांप।

दोय० गु० दो २।

दोल० ना० पु० डोल।

दोष० ना० पु० निन्दा, अपगुण, चूक, अपराध, काम क्रोधादि, कलङ्क।

दोषक० गु० निन्दक, अपगुणी, पापी।

दोषना० स० क्रि० दोषदेना वा दोषलगाना।

दोषित० } गु० कलङ्कित,पापी
दोषी० } अपयशी,अपराधी।

दोहत्तड़० ना० पु० दोनोंहाथों का देमारना।

दोहता० ना० पु० नाती।

दोहती० ना०स्त्री० नातिनी, नातिन्।

दोहद० ना० पु० स्नेह, प्रीति, हित, गर्भ।

दोहन० ना० पु० रसका खीचना।

दोहन० } स० क्रि० दूहना,
दोहना० } गारना।

दोहनी ० ना० स्त्री० दूहनेका पात्र।
दोहरा ० गु० द्विगुण, दोलड़।
दोहराव ० ना० पु० दोहराने का काम।
दोहा ० ना० पु० छन्द विशेष।
दोहाई ० ना० स्त्री० दुहाई।
दोहान ० ना० पु० दो वर्ष का गौ का बच्चा, खेला।
दौड़ ० ना० स्त्री० बहुत शीघ्र चलनेकीचाल, धावा।
दौड़धूप ० ना० स्त्री० जतन, परिश्रम।
दौड़ना ० अ० क्रि० बहुतशीघ्र चलना, धावा।
दौड़ाक ० ना० पु० दौड़नेहारा।
दौड़ादौड़ी ० ना० स्त्री० वेगा वेगी।
दौड़ाना ० स० क्रि० शीघ्र चलाना।
दौड़ाहा ० ना० पु० सन्देशिया, अगुआ।
दौहित्र ० ना० पु० नाती, नवासा।
दौहित्री ० ना० स्त्री० नातिनी, नवासी।
द्युमणि ० ना० पु० सूर्य्य।
द्यूत ० ना० पु० जूआ, जूप।
द्यौरानी ० ना० स्त्री० देवर की स्त्री।
द्रम्म ० ना० पु० १६ पणका।
द्रव ० गु० बहताहुआ, घुला।
द्रविड़ ० ना० पु० देशविशेष।
द्रवित ० गु० बहताहुआ, कृपायुत, नम्रतामय।
द्रवौ०, द्रवहु० } अ० क्रि० दयाकरो।
द्रव्यजन्यभाव ० गु० वस्तु और वस्तु रचित पदार्थ का सम्बन्ध।
द्रष्टा ० ना० पु० देखनेवाला।

द्रावक॰गु॰ घुलावन हारा, कृपालु।

द्रावन॰ना॰ पु॰ निर्मली।

द्राविड़॰ना॰ पु॰ कचूर,द्रविड़ देश का ब्राह्मण, वा लोग।

द्राविड़ी॰ना॰ स्त्री॰ छोटीइ-लायची, द्रविड़देश की भाषावावासीवावस्तु।

द्रावी॰ना॰ पु॰ सुहागा।

द्राक्षा॰ना॰स्त्री॰अंगूर,दाख।

द्रुत॰ना॰ पु॰ जल्द, शीघ्र।

द्रुपद॰ना॰ पु॰ राजाविशेष।

द्रुपदी॰ना॰ स्त्री॰ द्रौपदी, पाण्डवों की स्त्री।

द्रुम॰ना॰ पु॰ वृक्ष, पेड़।

द्रुमलिक॰ना॰ पु॰ राक्षस विशेष।

द्रुहिण॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा।

द्रोण॰ना॰ पु॰ कालाकाग, वारिज, पर्वत विशेष, द्रोणाचार्य्य।

द्रोणपुष्पी॰ना॰ स्त्री॰ गूमा पौधा।

द्रोणाचार्य्य॰ना॰ पु॰ कौरव और पाण्डवोंकागुरु।

द्रौपदी॰ना॰ स्त्री॰ पांडवोंकी स्त्री, द्रुपदकन्या।

द्रोह॰ना॰ पु॰ वैर, शत्रुता, अदावत।

द्रोहिया॰ } ना॰पु॰शत्रु,वैरी,
द्रोही॰ } मुद्दई।

द्वन्द्व॰ना॰ पु॰ युगल, जोड़ा, रागद्वेषादि, कलह, दुस्वभाव।

द्वादश॰गु॰ बारह १२।

द्वादशउपवन॰ना॰ पु॰ बारह उपवन अर्थात् शान्तनुकुण्ड,राधाकुण्ड, गोवर्द्धन, परमन्दर, बरसाना, संकेत, नन्दघाट, चीरघाट, बलरामस्थल, नन्दगांव, गोकुल, चन्दनवन १२।

द्वादशभानु० ना० पु० बारह सूर्य्यनाम अर्थात् विष्णु, शक्र, अर्यमा, धाता, पूषण, त्वष्टा, विवस्वान्, सविता, भग, वरुण, अंशुमलि, तेजपति।

द्वादशभानुकला० ना० स्त्री० बारह सूर्य्य की कला अर्थात् तपिनि, तापिनी, धूम्र, मरीची, ज्वालिनी, रुचि, रुचिनिम्न, भोगदा, विश्वबोधिनी, धारिणी, क्षमा।

द्वादशवन० ना० पु० बारह वन ब्रजके अर्थात् मधुवन, तालवन, वृन्दावन, कुमुदवन, कामवन, कोटवन, चन्दनवन, लोहवन, महावन, खदिरवन, बेलवन, भाण्डीर।

द्वापर० ना० पु० तीसरा युग जो ८६४००० वर्षका होता है।

द्वार० ना० पु० घरकामुख, दरवाज़ा।

द्वारपाल० } पु० ड्योढ़ी-
द्वारपालक० } वान्, द्वारका रक्षक।

द्वारा० अव्य० कारणसे, वसीला, मारफत।

द्वारावती० ना० स्त्री० द्वारिका।

द्वारिका० ना० स्त्री० नगर प्रसिद्ध जो गुजरात में है।

द्वारिकाधीश० } ना० पु०
द्वारिकानाथ० } श्रीकृष्ण-चन्द्र जी।

द्वारी० ना० पु० द्वारपाल।

द्विगुण० गु० दूना, दोहरा।

द्विज० ना० पु० पक्षी, दांत ब्राह्मण, नक्षत्र, कौआ।

द्विजदोष० ना० पु० ब्रह्महत्या।

द्विजनायक० ना० पु० ब्राह्मण, गरुड़, चन्द्रमा, सिंह।

द्विजन्मा० ना० पु० ब्राह्मण।

द्विजपति० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजपत्नी० ना० स्त्री० ब्राह्मणी।

द्विजप्रिया० ना० स्त्री० सोमवल्ली, ब्राह्मणी।

द्विजराज० ना० पु० द्विजनायक।

द्विजा० ना० स्त्री० छोटी इलायची।

द्विजाङ्गिका० ना० स्त्री० कुटकी।

द्विजाति० ना० पु० द्विज, ब्राह्मण।

द्वितीय० गु० दूसरा।

द्वितीया० ना० स्त्री० दूज, दूसरी तिथि, दूसरी,।

द्वितीयान्त० गु० जिसके अन्त में द्वितीया का प्रत्यय होवे।

द्वित्व० अव्यय० दोहरा करना।

द्विधा० अव्य० दो प्रकार।

द्विपद० ना० पु० मनुष्य।

द्विरसन० ना० पु० सांप।

द्विरागमन० ना० पु० गौना, चलौआ।

द्विरुक्ति० ना० स्त्री० पुनरुक्ति, फेरफेर कहना।

द्विरेफ० ना० पु० भौंरा।

द्विवचन० ना० पु० द्वित्वसंख्या युक्त जो शब्द, जिसका भाषा में प्रयोग नहीं है।

द्विविद० ना० पु० वानरविशेष।

द्विषट्० गु० द्वादश, वा अष्ट।

द्विस्वभाव० ना० पु० दुविधा।

द्विचिंशल्लक्षण० ना० पु० बत्तीस लक्षण अर्थात्, सुरत, स्वरूप, शील, सत्य, पराक्रम, शुद्धात्मा, अभ्यास, वरविद्या, सुमान, परमज्ञान, शास्त्रज्ञान, परस्त्री त्याग, पूर्णता, लोकेश, दास विभाग, पुष्टविद्या, प्रियवाद, सत्सङ्ग, अकाम, गुणपूर्ण, मातृ भक्ति, पितृ भक्ति, गुरुभक्ति, जितेन्द्रिय, दातृत्व, धर्मात्मा, देवपूजन, अल्पनिद्रा, स्वल्पाहार, स्वच्छता, पुष्टता, धीरज, ३२।

द्वीप० ना० पु० टापू, पृथ्वी, का खण्ड, जो जल से घिरा हुआ है, पृथ्वी के सप्त खण्डों में से एक।

द्वीपवती० ना० स्त्री० नदी

द्वीपशत्रु० ना० पु० छतावर, सतावर।

द्वीपसम्भवा० ना० स्त्री० पिण्ड, खजूर।

द्वीपिका० ना० स्त्री० सतावर, छतावर।

द्वीपी० ना० पु० सिंह, शेर।

द्वेष० ना० पु० वैर, द्रोह, हिंसा ईर्षा।

द्वेषी० ना० पु० शत्रु, वैर, हिंसक।

द्वै० गु० दो० २।

द्वैत० ना० पु० सन्देह, भेद, दुगुना, हट।

द्वैतवादी० ना० पु० भेदवादी।

द्वैध० ना० पु० संदेह, दोखण्ड।

द्वैधीकरण० ना० पु० छेदन।

द्वैमातुर० ना० पु० श्रीगणेशजी

द्वैमधुक० ना० पु० मुलहटी।

द्वैष० ना० पु० द्वेष।

द्व्यर्थ० गु० जिसमें दो प्रकार के अर्थ हों।

द्व्यक्षर० गु० जिसमें दो अक्षर हों।

[ध]

धंधलाना० स० क्रि० छलना, धोखा देना।

धंधक० गु० बहु चिन्तक, धन्धे वाला, धन्धक।

धंधा० ना० पु० काम, धन्धा।

धंधार० गु० उदास, एकान्ती,

धंधारी० ना० स्त्री० उदासी, अकेला पन।

धंसना० अ० क्रि० धसना, गड़ना बैठ जाना।

धकधक० ना० पु० धड़क, भय से कलेजा कांपना।

धक्का० ना० पु० ढकेल, झोंक, ठेला।

धक्काधक्की० ना० स्त्री० ठेला ठेली।

धगडा० ना० पु० यार,
धग्गड० लगुआ।

धज० ना० पु० चाल, आसन, डौल, रूप, ठाठ, सामान साज़ बाज़।

धजभङ्ग० ना० पु० नपुंसकी।

धजा० ना० स्त्री० पताका, ध्वजा।

धजीला० गु० धजसे चलने वाला, सजीला।

धज्जी० ना० स्त्री० पुराने कपड़े का टुकड़ा।

धड० ना० पु० देह, शिरसे नीचे का तन।

धडक० ना० स्त्री० फड़क, भय, धड़धडाहट।

धडकना० अ० क्रि० फड़कना, हिलना, धक धकाना।

धड़का० ना० पु० भय, सन्देह, दुबिधा, धड़क।

घड़काना॰ स॰ क्रि॰ डराना, घड़ घड़ाना अ॰ क्रि॰ घड़कना ।

घड़ा॰ ना॰ पु॰ यथा, पद्य, तौल जोख ।

घड़ाका॰ ना॰ पु॰ धांय धाय हड़हड़ाहट, शब्द होना ।

घड़ी॰ ना॰ स्त्री॰ लकीर, पांच सेरकी तौल, वा जितना एकबार तोला जावे ।

घत॰ ना॰ पु॰ हाथी चलाने का शब्द ।

घतूरा॰ ना॰ पु॰ पौधा विशेष ।

घतूरिया॰ गु॰ छलिया, बहुरूपिया ।

घधकना॰ अ॰ क्रि॰ भभकना, धायं धायं जलना ।

घन॰ ना॰ पु॰ द्रव्य, अर्थ, सम्पत्ति लक्ष्मी शुक्र ।

घनका॰ ना॰ स्त्री॰ गोटेसे बनी वस्तु जो टोपीआदि में लगाते हैं ।

घनकटी॰ ना॰ स्त्री॰ कपड़ विशेष, धान का टनेका समय ।

घनञ्जय॰ ना॰ पु॰ अग्नि, अर्जु पाण्डु पुत्र, पवन ।

घनन्तर॰ ना॰ पु॰ धन्वन्तरि

घनद॰ ना॰ पु॰ कुबेर, धन दाता ।

घनपति॰ ना॰ पु॰ कुबेर, धनी ।

घनवन्त॰ } गु॰ द्रव्यवान् लच
घनवान्॰ } वान् ।

घना॰ ना॰ स्त्री॰ स्त्री, न ना॰ पु॰ भक्तविशेष ।

घनाकुला॰ ना॰ स रासना

घनाढ्य॰ गु॰ धनवान्, दार

धनाध्यक्ष० ना० पु० धन का स्वामी, कुवेर।

धनान्ध० गु० जो धनके कारण अन्धा अर्थात् अहंकारी हो रहा हो।

धनार्जन० ना० पु० द्रव्य का उपार्जन।

धनाशा० ना० स्त्री० अर्थ की आशा।

धनासरी० } ना० स्त्री० रागिणी विशेष।
धनासिरी० }

धनिक० ना० पु० महाजन, ऋणका दाता।

धनिया० ना० पु० बीज विशेष, ना० स्त्री० नारि।

धनिष्ठा० ना० स्त्री० तेईसवां नक्षत्र।

धनी० गु० लक्ष्मीवान् मालदार, ना० पु० मालिक, स्वामी।

धनु:० ना० पु० धनुष, और नवीं राशि चारि हाथ का प्रमाण, भिलावां।

धनुपट० ना० पु० चिरौंजी।

धनुर्द्धर० ना० पु० जिस मनुष्य के पास धनुष रहता हो, विशेष अर्जुन।

धनुर्विद्या० ना० स्त्री० युद्धविद्या, और बाण ज्ञान, तीरन्दाज़ी।

धनुष० ना० पु० कमान्, कमठा।

धनुषाकृति० } ना० पु० धनुष के डौल।
धनुषाकार० }

धनुषी० } ना० स्त्री० छोटा धनुष, धनकीकमठी।
धनुही० }

धनेश० ना० पु० पक्षी विशेष, कुवेर, गु० धनवान्।

धन्य० गु० प्रशंसा के योग्य, गुणी।

धन्ययासक० ना० पु० जवासा।

धन्यवाद० ना० पु० स्तुति, कृतज्ञता, गुणमानना।

धन्यवादी० गु० कृतज्ञ, सूत, गुणगायक।

धन्या० ना० स्त्री० नदीविशेष।

धन्याक० ना० पु० धनिया।

धन्वन्तरि० ना० पु० वैद्यविशेष जो स्वर्ग वासियों के वैद्य हैं।

धन्वायास० ना० स्त्री० जवासा।

धन्वी० गु० धनुर्द्धर।

धप० } ना० पु० चपेटा, थप्पड़, छलावा।
धप्पा० }

धब्बा० ना० पु० कपड़े में जो लीख, कपड़े का दाग़।

धमक० ना० स्त्री० भयकासूचकशब्द, पैरों का शब्द, विशेष।

धमकना० अ० क्रि० टीसना, धड़कना, जगमगाना, स० क्रि० मटकाना।

धमका० ना० पु० बड़ीधूप, सांस, भारीवस्तु के गिरने का शब्द।

धमकाना० स० क्रि० झिड़कना, डांटना।

धमकाहट० } ना० स्त्री० घुड़की, डाट।
धमकी० }

धमधूसड़० गु० मोटा, स्थूल।

धमन० ना० पु० नड़कुल।

धमनी० ना० स्त्री० नारी, नली।

धमाका० ना० पु० तोपविशेष जो हाथीपर रखते हैं, भारी वस्तु गिरने का शब्द।

धमाचौकड़ी० ना० स्त्री० रेला, बखेड़ा।

धमाधम० ना० पु० पांवपीटने का शब्द, लगातार पीटना।

धमार० } ना० पु० ताल विशेष वा गीत विशेष
धमाल० } जो होलीमेंगातेहैं।

धमिना० ना० पु० सांपविशेष।

धमोका० ना० पु० खंजरी विशेष।

धम्मिल्ल० ना० पु० केशपास, वेणी।

धर० ना० स्त्री० धरती, ना० पु० धड़।

धरक० ना० स्त्री० धड़क।

धरका० ना० पु० धड़का।

धरणि० } ना० स्त्री० पृथ्वी,
धरणी० } धरती, ज़मीन।

धरणीधर० ना० पु० शेषादि, सांप।

धरती० ना० स्त्री० पृथ्वी, ज़मीन।

धरधरा० ना० पु० धड़ाका।

धरन० ना० स्त्री० कड़ी।

धरना० स० क्रि० रखना, सोंपना, पकड़लेना ना० पु० किसी के द्वारपर अड़ना।

धरनी० ना० स्त्री० धरणी, धरन।

धरनैत० ना० पु० धरनादेने वाला।

धरपना० स० क्रि० दबाना, डपटना, झपटना।

धररुह० ना० पु० वृक्ष पौधामात्र, जोपृथ्वीपरउगे।

धरषना० स० क्रि० घिसना, रगड़ना।

धरहर० ना० स्त्री० सहाय, मदद, सहजराम कृत प्रह्लाद चरित्रेयथा, यहि संसार असारमहं राम नामस्रुतिसार, रविसुत पुरधरहरकरै नरहरि नामउदार।

धरा० ना० स्त्री० धरती, पृथ्वी क्रि० भू० रक्खा, पकड़ा।

धरातल०ना० पु० पृथ्वीतल, रूयज़मीन।

धराधर०ना० पु० शेषादि।

धराना०अ० क्रि०ऋणीहोना, स० क्रि० रखवाना, पकड़ाना, लदाना।

धरासुर०ना० पु० ब्राह्मण।

धरित्री०ना० स्त्री० पृथ्वी, भूमि।

धरोहर०ना० स्त्री० थाती, सौंप, अमानत।

धरौना०ना०पु० पुनर्विवाह।

धर्त्तव्य०गु० ग्राह्य।

धर्त्ता०ना० पु० ऋणी, धारणिक।

धत्तूर०ना०पु० धतूरा,जिसके फलमें विषहोता है।

धर्म०ना० पु० न्याय, कीर्त्ति, पुण्य, व्यवहार, चाल, गुण, काम, मज़हब।

धर्मकूप०ना० पु० काशीजो
स्थान विशेष।

धर्ममूल०ना० पु० वेद, शास
गुरु।

धर्मराज०ना० पु० जमरा
नीति युतराज्य, रा
युधिष्ठिर।

धर्मशाला० ना० स्त्री० ध
विचारने का स्थान।

धर्मशील०ना० गु० भक्तिम
न्, कीर्तिमान्, साधु

धर्माधिकार०ना० पु० पु
कर्म की पदवी, भग
का काम।

धर्माधिकारी०गु० जो पु
कर्मका सिरताजहो

धर्मात्मा०गु०कीर्तिमान्,स
ना० पु० वृक्ष
में जातीसरा
उसका नाम

धर्माध्यक्ष०गु० न्यायी, वि
रकर्त्ता

धर्मावतार॰ना॰ पु॰ धर्मका अवतार।

धर्माज्ञा॰ना॰ स्त्री॰ धर्म की आज्ञा।

धर्मिष्ठ॰ } गु॰ धर्म में जिनकी
धर्मी॰ } निष्ठा है पुण्यवान्।

धर्षण॰ना॰पु॰ धांसन्, रगड़न्।

धर्षना॰ स॰ क्रि॰ कोपना, रगड़ना।

धवल॰ना॰ पु॰ शुक्लवर्ण।

धवलाख्य॰ना॰ पु॰ पियाज़।

धवलागिरि॰ना॰ पु॰ पर्व्वत विशेष।

धसकना॰ अ॰ क्रि॰ गड़ना, धसजाना।

धसन्॰ना॰ पु॰ धसान्, धसने की अवस्था।

धसना॰ अ॰ क्रि॰ घुसड़ना, चुभना, छिदना, पैठना।

धसान॰ना॰ पु॰ दलदल, गड़न्, धसन।

धसाना॰ स॰ क्रि॰ घुसेड़ना, घुसेड़वाना, पैठालना, पैठवाना, पिलाना।

धसाव॰ना॰ पु॰ धसान्।

धांधल॰ना॰पु॰ नटखटी, फरफन्द, झगड़ा।

धांधली॰ गु॰ झगड़ाल, नटखट।

धांगर॰ना॰ पु॰ जातिविशेष।

धांयधांय॰ना॰ स्त्री॰ तोपों का शब्द, धड़ाका।

धांसना॰ स॰ क्रि॰ खांसना, खोंखना।

धांसी॰ना॰ स्त्री॰ खांसी, खोंखी।

धाई॰ना॰ स्त्री॰ दूधपिलानेवारी।

धाक॰ना॰ स्त्री॰ ठाठ, प्रताप, कीर्ति, भय, डर, ढाक।

धागा॰ना॰ पु॰ सूत, डोरा।

धाता॰ना॰ पु॰ ब्रह्मा, सूर्य्य।

धातु॰ना॰ पु॰ तांवा आदि, वीर्य्य, क्रियावाचकशब्द, मसदर।

धातुमाक्षिक॰ना॰ पु॰ सो नामखी।

धातुसाधित॰गु॰ जो धातु से बनाया गया।

धात्वितर॰गु॰धातुसेरहित,।

धान॰ना॰ पु॰ अन्नविशेष।

धाना॰अ॰ क्रि॰ दौड़ना, टहलकरना,स॰ क्रि॰पूजना, अर्चना।

धानी॰ना॰ स्त्री॰ धानविशेष, धानके सदृश रङ्ग विशेष।

धानुक॰ना॰ पु॰ धनुहार, कमानदार, और जाति विशेष।

धानेय॰ना॰ पु॰ धनिया।

धान्य॰ना॰ पु॰ धनिया, धान, धन, माल।

धान्यक॰ना॰ पु॰ धनिया

धाप॰ना॰ स्त्री॰ हायमे तिहाई का माप, तक मनुष्य एक स्वा दौड़सके

धाम॰ना॰ पु॰ घर,स्थान, तन, किरण, ज्यो वैकुंठ, ब्रह्म।

धामा॰ना॰पु॰बेतकाटोक

धामिन्॰ना॰ पु॰ सूर्य्य।

धाय॰ना॰ स्त्री॰ धाई।

धायमारना॰अ॰क्रि॰ पुक केरोना,दौड़केमारना

धार॰ना॰ स्त्री॰ लकीर, व, अस्त्र कीबाढ़

धारक॰ना॰ पु॰ ऋणी।

धारण॰ना॰ पु॰ धारने अवस्था, मानलेना क्रि॰ धारना, मं करना।

धारणा० स० क्रि० रखना, संभालना, धराना, ना० स्त्री० योगकर्मविशेष।

धारना० स० क्रि० धारणा।

धारस० ना० स्त्री० ढाड़स, धीरज।

धारा० ना० स्त्री० प्रवाह, बहाव, रीति।

धारावाहिक० गु० विच्छेद बिनु।

धारि० ना० स्त्री० डाकू की सेना।

धारित० गु० जो धारण किया गया।

धारी० ना० स्त्री० लकीर, पौधाविशेष।

धार्तराष्ट्र० ना० पु० कालाहंस, यथा, राजहंसास्तु ते चंचुचरणैर्लोहितैः सिताः। मलिनैर्मल्लिकाख्यास्ते धार्तराष्ट्राः सितेतरैः। इत्यमरः धृतराष्ट्र का पुत्र, सुयोधन।

धाव० ना० पु० पौधाविशेष दौड़।

धावंक्षुश० ना० पु० दौड़नेवाला खरगोश।

धावन० ना० पु० सन्देशिया, दूत, हरकारह।

धावना० अ० क्रि० दौड़ना, फिराकरना, चढ़ना, रबड़ना, अर्चना।

धावनी० ना० स्त्री० दूती, छोटीकटाई खेत।

धावमान० गु० दौड़ताभया।

धावा० ना० पु० दौड़, चढ़ाई, वृत्तविशेष।

धाह० ना० स्त्री० शराटा, कूक।

धात्री० ना० स्त्री० धरती, सरस्वती, धाई, ना० पु० आंवला।

धिक्० अव्य० निन्दाका बोधक शब्द, फिट, लानत कुछनभये।

धिक्कार० ना० पु० फिटकार, निन्दा, श्राप, लानत।

धिक्कारना० स० क्रि० निन्दा करना, फिटकारना, लानत करना।

धिक्कारी० गु० शापित, निन्दित, फिटकारी।

धिग्० अव्य० धिक्।

धिया० ना० स्त्री० बेटी, पुत्री।

धिरयो० क्रि० धमकाया, डांटा।

धिराना० स० क्रि० धमकाना, डांटना।

धिषण० ना० पु० ब्रह्मा, बृहस्पति।

धिषणा० ना० स्त्री० बुद्धि।

धी० ना० स्त्री० बुद्धि, बेटी।

धीति० ना० स्त्री० प्रतीति, विश्वास, कविवाक्ययथा, सोहिहारबैठायसखितू किनजलहितजाय, धीतिलालतेरीकहा दधि चुराइ ब्रजखाय।

धीम० ना० पु० ढील, कोमलता।

धीमर० ना० पु० कहारजाति विशेष।

धीमा० गु० ढीला, कोमल, मध्यम।

धीमाई० ना० स्त्री० ढील, धीरज, सुस्ती।

धीमान्० गु० बुद्धिवान्, चतुर।

धीमेधीमे० अव्य० हौलेहौले।

धीय० ना० स्त्री० बुद्धि, कंन्या।

धीर० गु० ढीला, सन्तोषी, जीवटा, स्थिर, ना० पु० धीरज।

धीरज० ना० पु० धैर्य्य, स्थिरता, साहस, सन्तोष।

धीरजी० गु० दृढ़, सन्तोषी, स्थिर।

धीरता० ना० स्त्री० धैर्य्य, स्थिरता, साहस।

धीरा० गु० कोमल, सन्तोषी, साहसी, विचारशील।

धीरिया० ना० स्त्री० बेटी।

धीरी० ना० स्त्री० नेत्रकीपुतली

धीर०गु० दृढ़, धीरजी, बहादुर।
धीवर०ना०पु० धीमर, कैवर्त्त।
धुंगार० ना० पु० छौंकन, बघार।
धुंगारना०स० क्रि० बघारना, छौंकना।
धुंधकार०ना० पु० अंधेरा।
धुंधकारना०अ० क्रि० धुआं समेत आगका जलना।
धुंधराना०अ० क्रि० अन्धा-होना।
धुंधला०गु० अन्धा, अन्धला, ना० पु० अन्धेरा।
धुंधलाई०ना० स्त्री० अन्धेरा, धुंधलाई।
धुंधेला०गु० छली, ठग।
धुकड़ी०ना० स्त्री० छोटीथैली, पैसारखनेकीहोतीहै।
धुकधुकी०ना० स्त्री० कण्ठका भूषण विशेष, घबराहट, सन्देह, ध्यान।
धुत्ता०ना० पु० धूर्त्तता।
धुन०ना० स्त्री० चसका, लौ, अभ्यास, परिश्रम, टहक, उमङ्ग।
धुनकना०स० क्रि० तूमना, धुनना।
धुनना०स० क्रि० तूमना, पीटना, मारना।
धुनिया० ना० पु० त्रिहना, तूमनेवाला।
धुन्ना०स० क्रि० धुनना।
धुमला० गु० धुन्धा, अन्धा, अन्धेरा।
धुमलाई० ना० स्त्री० अंधियारा।
धुर०ना० पु० आरम्भ, अवधि, पास, बोझ।
धुरपद०ना० पु० गीतविशेष।
धुरसांझ०ना० स्त्री० गोधूली, सायंकाल।
धुरन्धर०गु० धुरीधरनेवाला, ना० पु० धवहृक्ष।

धुरवा॰ ना॰ पु॰ मेघ, काव्ये-
यथा, धुंधुआरे धुरवा
चकपासा। समुझि परे
नहिं अवनिअकासा।

धुरव्य॰ ना॰ पु॰ मेघ।

धुरियाना॰ स॰ क्रि॰ मटिया-
ना, धूललगाना, धूल
फेंकना।

धुरी॰ ना॰ स्त्री॰ काष्ठवालोहे
की वस्तु जिसपर पहिया
फिरता है।

धुलना॰ अ॰ क्रि॰ स्वच्छहोना,
पाकहोना, धोजाना।

धुलवाना॰ स॰ क्रि॰ धुलाना।

धुलाई॰ ना॰ स्त्री॰ वस्त्रधोने
का काम वा पैसा।

धुलाना॰ स॰ क्रि॰ मैलनिक-
लाना, वस्त्रकोस्वच्छ
करवाना।

धुलेंडी॰ ना॰ स्त्री॰होली का
दूसरादिन।

धुस्सा॰ ना॰ पु॰ लोई, ऊर्ण-
वस्त्र विशेष।

धूआं॰ } ना॰ पु॰ धुंवा, धूम
धूंवा॰ }

धूंवारा॰ ना॰ पु॰ धुंवानिक
लने का स्थान।

धूंधरा॰ ना॰ पु॰ अंधेरा।

धूत॰ गु॰ धूर्त्त।

धूति॰ ना॰ स्त्री॰ ठग, छली
यथा, तुलसी रघुब
सेवकहि सकेन कलि
युगधूति।

धूना॰ ना॰ पु॰ राल।

धूनी॰ ना॰ स्त्री॰ धुंवा, अ
गजो साधुलोग ताप
हैं, गु॰ स्थिर।

धूप॰ ना॰ स्त्री॰ घाम, सुग
द्रव्यजो पूजामें जला
चढ़ाते हैं, वृक्षविशेष
उसका काष्ठविशेष।

धूपना॰ स॰ क्रि॰ राललगाना, धूपजलाना ।

धूपित॰ गु॰ धूपदियागया ।

धूम॰ ना॰ पु॰ धुंवा, ना॰ स्त्री॰ रौला, बखेड़ा, उत्पात, भीड़ ।

धूमकेतु॰ ना॰ पु॰ अग्नि ।

धूमधाम॰ ना॰ पु॰ धुंवांका घर, छुड़ा, रौला, बनाव ।

धूमपुष्पा॰ ना॰ स्त्री॰ अग्नि जिह्वा विशेष ।

धूमयोनि॰ ना॰ पु॰ मेघ, बादल ।

धूमर॰ धूमरा॰ धूमल॰ धूमला॰ } गु॰ भदमैला, धुमैला, धुंवाका रङ्ग ।

धूमशिखा॰ ना॰ पु॰ अग्नि ।

धूमशीर्षा॰ ना॰ स्त्री॰ अग्नि जिह्वा विशेष ।

धूम्रा॰ गु॰ धूमला ।

धूम्री॰ गु॰ उत्पाती, जिसकीधूम होरही ।

धूम्र॰ ना॰ पु॰ धूंवां, ऊंट ।

धूम्रपान॰ ना॰ पु॰ धुवांका पीना ।

धूम्रपानयंत्र॰ ना॰ पु॰ हुक्का ।

धूम्रयोनि॰ ना॰ पु॰ मेघ, बादल ।

धूम्राक्ष॰ ना॰ पु॰ राक्षस विशेष,

धूर॰ ना॰ स्त्री॰ धूलि ।

धूरा॰ ना॰ पु॰ जो रोगी के हाथ पांव आदि में रगड़ते हैं ॥

धूरि॰ ना॰ स्त्री॰ धूलि ।

धूरी॰ ना॰ स्त्री॰ धुरी ।

धूर्त्त॰ गु॰ नटखट, शठ, ठग, ना॰ पु॰ धतूरा ।

धूर्त्तता॰ ना॰ स्त्री॰ ठगई, शठता ।

धूल० } नाoस्त्रीoरज, रेणु,
धूलि० } खाक।

धूसना० सo क्रिo ठांसना, भरना, दबाना।

धूसर० गु० मिट्टी लगाये हुये-नाo पु० जाति विशेष।

धूसरि० नाo स्त्रीo धूलि।

धूहा० नाo पुo धोखा, पक्षी आदिके डराने के लिये खेत मेंगाड़ते हैं, तूदा।

धृक्० } अव्यo धिक्।
धृग्० }

धृत० गुo जो धारण किया जाय, रक्खा गया।

धृतराष्ट्र० नाo पुo दुर्योधन का पिता।

धृति० नाo स्त्रीo दृढ़ता, कामोंमें धीरज।

धृष्ट०गु० विशारद, चतुर,परिपूर्ण, पण्डित, शाली।

धेंगामुष्टी०नाoस्त्रीघूसमघूसा।

धेनु० नाo स्त्रीo गायवा बछड़ासमेत गाय, दुधार गाय।

धेनुक० नाo पुo खर रूपी दैत्य विशेष।

धेनुमति० नाo स्त्रीo गोमती नदी।

धेला० नाo पुo अधेला।

धेली० नाo स्त्री० अधेली, आधा रुपया।

धैर्य्य० नाo पुoधीरता,धीरज

धैर्य्यवान्० गुo धीरजी, संतोषी।

धैवत० नाo पुo रागका स्वर विशेष।

धोआ० नाo पुo फलकी डाली।

धोई० नाoस्त्रीo भिगोई हुई दाल।

धोंवाला० ना० पु० धुंवा निकलनेका मार्ग।

धोक० ना० स्त्री० देवता के आगे झुकना, आड, तकिया।

धोकड० गु० महा बली।

धोखा० ना० पु० भ्रम, छल, धांधल।

धोता० ना० पु० धूर्त्त, पाखण्डी।

धोती० ना० स्त्री० कटि में पहिरनेका वस्त्रविशेष।

धोना० स० क्रि० पखारना, फीचना।

धोप० ना० स्त्री० खड्गविशेष।

धोब० ना० स्त्री० पछालन, धोने का काम।

धोबिन्० ना० स्त्री० धोबी की स्त्री०।

धोबी० ना० पु० कपड़ा धोने वाला।

धोरी० ना० स्त्री० मुख्यबैल जो गाड़ी में सबसे पहिले मचाया जाताहै।

धौ० ना० पु० वृक्ष विशेष।

धौं० अव्य० अथवा, वा, मानो, या।

धौंक० ना० स्त्री० हंफाहट, आंच, आग।

धौंकना० स० क्रि० धोकनीसे आग फूकना।

धौंकनी० ना० स्त्री० धोंकी, खलेती जिससे आगको प्रचण्डकरतेहैं, निगाली।

धौंकी० ना० स्त्री० धौंकनी।

धौंताल० गु० धनवान, बलवान्, सूर्मा, दुर्जन।

धौंताली० ना० स्त्री० धन, बल, सूर्मापन, दुष्टता।

धौंन० ना० पु० चारि पंसेरी का परिमाण।

धौंस० ना० पु० दौड, धंकी।

धौंसा० ना० पु० बड़ाडंका।

धौंसिया० ना० पु० दौड़करने वालों का प्रधान।

धौर० ना० पु० कपोत की जाति विशेष।

धौरा० गु० धोला।

धौल० ना० स्त्री० टीप, थप्पड़।

धौलधप्पा० ना० पु० धप्पा धप्पी।

धौला० गु० श्वेत, सफ़ेद।

धौलाई० ना० स्त्री० उज्ज्वलता, गोराई।

धौलाना० } स० क्रि० थप्पड़
धौलियान्० } मारना, मुकियाना।

ध्यान० ना० पु० विचार, सोच, चिन्ता।

ध्यानी० गु० विचारवान्, सोंची।

ध्याना० } स० क्रि० सोचना,
ध्यावना० } विचारना, मानना, भजना, गाना यशका।

ध्रुव० ना० पु० धुरी, योग, राग विशेष, दैत्य विशेष, उत्तर दक्षिणकेन्द्र, स्थान में प्रायस्थिर एकतारा, उत्तानपाद का पुत्र भक्त विशेष, गु० स्थिर, अचल, सनातन, निश्चय।

ध्रुवतारा० ना० पु० उत्तर दक्षिण केन्द्रमें प्रायस्थिर एक तारा।

ध्रुवनन्दा० ना० स्त्री० श्रीगंगाजी।

ध्रुवपद० ना० पु० ध्रुरपद गीत बिशेष।

ध्रुवमत्स्ययंत्र० ना० पु० कुतबनुमा।

ध्रुवा० ना० स्त्री० शालपर्णी, कील, लगाव।

ध्वंस० ना० पु० नाश।

ध्वंक्षोली० ना० स्त्री० काकोली

ध्वज० ना० स्त्री० झण्डा, पताका, ध्वजा।

ध्वजिनी॰ ना॰ स्त्री॰ सेना, फ़ौज।

ध्वजा॰ ना॰ स्त्री॰ पताका।

ध्वनि॰ ना॰ स्त्री॰ शब्द, बाजे का शब्द।

ध्वनित॰ गु॰ संक्षेप से कथित।

ध्वनी॰ ना॰ स्त्री॰ नदी, गु॰ शाब्दक।

ध्वन्यात्मक॰ गु॰ शब्द विशेष जिसमें वर्णविवरणहो।

ध्वस्त॰ गु॰ भ्रष्ट, खराब।

ध्वान॰ ना॰ पु॰ शब्द।

ध्वान्त॰ ना॰ पु॰ अंधियारा, काव्ये यथा, यथा ध्वान्त विध्वंस आदित्यकारी, तथा देवविप्रौघ शोक प्रहारी।

[न]

न॰ अव्य॰ अ॰ नहीं।

नक॰ ना॰ स्त्री॰ नाक।

नकचढ़ा॰ गु॰ क्रोधी, चिड़ चिड़ा

नकछिकनी॰ ना॰ स्त्री॰ पौधा विशेष।

नकटा॰ गु॰ नाक कटा।

नकड़ा॰ ना॰ पु॰ नाक में रोग विशेष।

नकतोडा॰ गु॰ हंसोड, धूर्त्त।

नकसीर॰ ना॰ स्त्री॰ नाक की शिरा।

नकार॰ अव्य॰ ना॰ पु॰ अस्वीकार।

नकारना॰ स॰ क्रि॰ नकार, करना, मुकरना।

नकुल॰ ना॰ पु॰ न्यौला सांप का वैरी, बगुला, पाण्डु का पांचवां पुत्र।

नकुआ॰ ना॰ पु॰ नाक, अग्र।

नकेल॰ ना॰ स्त्री॰ काठ की वस्तु विशेष जो ऊंट की नाक में पहिनाते हैं।

नक्का० ना० पु० पांसे वा ताश का दुक्का ।

नक्की० ना० स्त्री० नाकसे बोलना, जूप में एक बढ़ना गण्डे से ।

नक्कीमूठ० ना० स्त्री० द्यूत विशेष, जूआ विशेष ।

नक्कू० गु० अपयशी, बदनाम ।

नक्र० ना० पु० कुम्भीर, मगर नाका ।

नख० } ना० पु० अंगुलियों
नखर० } के अग्र परका अस्थि भाग, नाखून, नह ।

नखरेखा० ना० स्त्री० खसोट, बकोट ।

नखियाना० स० क्रि० खसोटना, बकोटना ।

नखी० गु० नख धारी, नख वाला पशु ।

नग० ना० पु० अंगूठी का पाषाण विशेष, मणि, पर्वत, दृच धाम ।

नगचाई० ना० स्त्री० अवाई ।

नगचाना० अ० क्रि० पास आना ।

नगचाहट० ना० स्त्री० नगचाई ।

नगदौना० ना० पु० पौधा विशेष ।

नगन० ना० पु० हाथी, गु० नग्न ।

नगभिन्नक० ना० पु० पाषाण भेद ।

नगर० ना० पु० शहर, पुरी, ग्राम ।

नगरकोट० ना० पु० कोट कांगड़ा ।

नगरनारी० ना० स्त्री० गणिका, वेश्या ।

नगरवर्ती० ना० पु० नगर वासी ।

नगरवासी० गु० पुरीवा शहर का वासी ।

नगरी॰ ना॰स्त्री॰ छोटानगर, बस्ती।

नगा॰ ना॰ स्त्री॰ नारी, स्त्री।

नग्न॰ नङ्ग॰ नङ्गा॰ } गु॰ दिगम्बर, वस्त्रहीन।

नङ्गी॰ ना॰ स्त्री॰ नग्न स्त्री।

नचवाना॰ स॰ क्रि॰ नचाना, नाचकराना।

नचवैया॰ ना॰ पु॰ नाचने हारा।

नचाना॰ स॰क्रि॰नाचकराना।

नट॰ ना॰ पु॰ दीठबन्दों वा नाचने हारों की जात विशेष,कौतुकी,स्वांगी।

नटखट॰ गु॰ धूर्त,कपटी,छली, फरफन्दिया।

नटखटी॰ ना॰ स्त्री॰ धूर्तता, कपट, छल, फरफन्द।

नटत॰ क्रि॰ अस्वीकार करता है, नाचता है।

नटना॰ अ॰ क्रि॰ नमानना, अस्वीकार करना।

नटनागर॰ ना॰ पु॰ चरतु। नट, डीठबन्द,टोनहा।

नटभूषण॰ ना॰ पु॰ हरताल, नटका भूषण।

नटवर॰ नटवा॰ } ना॰पु॰ डीठबन्द, टोनहा।

नटसाल॰ ना॰पु॰टूटाकांटा।

नटिन्॰ नटिनी॰ } ना॰ स्त्री॰ नटकी स्त्री।

नटी॰ ना॰ स्त्री॰ वेश्या, नाचनेहारी।

नटुआ॰ नटुवा॰ } ना॰ पु॰ नटवा।

नठना॰ अ॰ क्रि॰ नशना, बिगड़ना,स॰क्रि॰नाशना, बिगाड़ना।

नत॰ गु॰ नम्र, ना॰ पु॰ तगरु ओषधि, अव्य॰ नतरु, नहीं तो।

नतरु० अव्य० नहीं तो।

नताङ्गी० ना० स्त्री० ककरासिंघी।

नति० ना० स्त्री० प्रणाम, नमस्कार।

नतिनी० ना० स्त्री० नातिन्, दौहित्री।

नतैत० ना० पु० नातेदार, सम्बन्धी, गोतैत।

नथ० ना० स्त्री० नाक में का गहना विशेष, नथुनी।

नथना० अ० क्रि० छिदना, फसना, ना० पु० नथुना।

नथनी० ना० स्त्री० नाथने का अस्त्रविशेष, नथुनी।

नथी० गु० छिदी, फंसी।

नथुआ० ना० पु० छिदुआ।

नथुई० ना० स्त्री० छिदुई।

नथुना० ना० पु० नाक का मार्ग।

नद० ना० पु० ब्रह्मपुत्रादि जल प्रवाह विशेष।

नदिया० ना० स्त्री० छोटी-नदी, ना० पु० नगर विशेष।

नदी० ना० स्त्री० जो जल की धारा पर्वतादि से निकलकर देशान्तरों में होकर समुद्र में जावे, जैसे गङ्गा और सिन्धु आदि।

नदीकान्ता० ना० स्त्री० कागजंघाबूटी।

नदोला० ना० पु० नाद।

ननद० } ना० स्त्री० ननदी
ननदिया० } पति की बहिन्।

ननदी० ना० स्त्री० पति की बहिन्।

ननिहाल० ना० पु० नाना का घर वा घराना।

नन्द० ना० पु० श्री कृष्णचन्द्र के कथित पिता, बेटा नौ ९।

नन्दन ० ना० पु० देव उपवन, देववन, चन्दन, लड़का गु० आनन्ददाता।

नन्दलाल ० ना० पु० श्रीकृष्ण चन्द्रजी।

नन्दिग्राम ० ना० पु० बस्ती विशेष, जहां भरतजी तपस्या करते थे।

नन्दिनी ० ना० स्त्री० पार्व्वती, पुत्री, पत्नीकी बहिन, प्रियंगु, सोंठि, हर्र।

नन्दी ० ना० पु० शिवजी का वाहन।

नन्दीगण ० ना० पु० शिवजी का गण।

नन्दीघोष ० ना० पु० रथजो, अग्निदेवने अर्जुन को दियाथा।

नन्दोई ० ना० पु० पतिकीबहिन का स्वामी, ननद का पति।

नन्दोला ० ना० पु० नांद।

नन्दोसी ० ना० पु० नन्दोई।

नन्हा ० गु० छोटा, लघु।

नपुंसक ० ना० पु० क्लीव, हीजड़ा, मोर।

नपुंसकलिङ्ग ० ना० पु० तीसरालिङ्ग।

नभः ० ना० पु० आकाश, आश्रय, और आवणमास।

नभग ० गु० पक्षी, नक्षत्र, ग्रह, देवता।

नभगनाथ ० ना० पु० गरुड़, चन्द्रमा।

नभगामी ० गु० पक्षीआदि, नभग।

नभगेश ० ना० पु० नभगनाथ, गरुड़, चन्द्रमा।

नभश्चर ० ना० पु० आकाश में उड़नेहारे, यथा पक्षी, तारागण, ग्रह, देवता।

नभस्य ० ना० पु० भाद्रपद।

नभस्वत् ० ना० पु० पवन, वायु।

नमः० ना० पु० नमस्कार, त्याग।

नमत० गु० प्रणामकरते।

नमन० गु० सदृश, समान।

नमस्कार० ना० पु० प्रणाम, सन्मानका बोधक।

नमस्कारी० ना० पु० लजालू।

नमस्य० गु० नमस्कारकेयोग्य।

नमामि० क्रि० नमस्कार करता हूं।

नमित० गु० नीचेसिर किये, शिरझुकाये, नमस्कार करते।

नमो० ना० पु० नमस्कार, वा प्रणामकरताहूं, दोहा, नमोनमो शुकदेव जी करोंप्रणाम अनन्त। तुव प्रसादस्वरभेदको चरणदासवरनन्त १, इतिस्वरोदये।

नम्र० गु० विनयी, मिलनसार, आधीन, नर्म।

नम्रता० ना० स्त्री० आधीनता विनय, नर्मी।

नय० ना० पु० नीति, क़ानून

नयन० ना० पु० नेत्र, आंख

नयनअमिय० ना० पु० नेत्र का अमृत, यथा, श्रीगुरुप दरजमञ्जुलअञ्जन। नय अमिय दृग दोष विभ ञ्जन। इतिरामायणे।

नया० गु० नवीन, ताज़ा।

नर० ना० पु० मनुष्य, पुरु पुंस।

नरक० ना० पु० पापों के भो फलकास्थान, दैत्यवि जिसे भौमासुर भी क ते हैं।

नरकट० ना० पु० सरकण्ड तृणविशेष जिसकी च बनती हैं।

नरकसी० ना० स्त्री० ह गवा

नरकुल॰ ना॰ पु॰ नरकट।
नरपति॰ ना॰ पु॰ मनुष्यों का रक्षक, राजा।
नरपुर॰ ना॰ पु॰ मर्त्यलोक।
नरवाहन॰ } ना॰ पु॰ कुवेर,
नरयानी॰ } यक्षराज।
नरसिङ्गा॰ ना॰ पु॰ बाजाविशेष, तुरही।
नरसिङ्गिया॰ ना॰ पु॰ नरसिङ्गाबजानेहारा।
नरसिंह॰ ना॰ पु॰ विष्णु का चौथा अवतार।
नरसों॰ अव्य॰ बीता हुआ चौथादिन, चौथादिन आनेवाला।
नरहड़॰ ना॰ पु॰ पिण्डली की हड्डी।
नरहरि॰ ना॰ पु॰ नरसिंह जी, कवि विशेष।
नरहरिदास॰ ना॰ पु॰ गोसाईं तुलसीदास के सद्गुरु।

नरान्तक॰ ना॰ पु॰ नरों का काल, दैत्य विशेष।
नरिया॰ ना॰ स्त्री॰ छोटीनाली, खपरा।
नरी॰ ना॰ स्त्री॰ चर्म विशेष, लोहेका यन्त्र विशेष, जिसमें बानेका सूत रखते हैं।
नरूख॰ गु॰ पुल्लिङ्ग।
नरट॰ ना॰ पु॰ } सांसी,
नरटा॰ ना॰ पु॰ } नली,
नरटी॰ ना॰ स्त्री॰ } नटई।
नरेन्द्र॰ } ना॰ पु॰ राजा,
नरेश॰ } बहुतदेश का प्रतिपालक।
नरोत्तम॰ गु॰ अच्छा मनुष्य, ना॰ पु॰ श्रीकृष्णजी।
नर्त्तक॰ ना॰ पु॰ नाचनेहारा।
नर्त्तकी॰ ना॰ स्त्री॰ नीच, नाचनेवाली।

नर्त्तन० ना० पु० नाच, नृत्य।

नर्मदा० ना० स्त्री० नदीविशेष।

नल० ना० पु० मुख्यवानर, मुख्यराजा, कुवेरका पुत्र, नड़कुल, फोंफी, खोखल।

नलकूवर० ना० पु० कुवेर के बालक।

नलपुरष्टिक० ना० पु० कलिहारी।

नला० ना० पु० उदर में स्थान विशेष।

नलिका० ना० स्त्री० नली, नाड़ी।

नलिन० ना० पु० कमल।

नलिनी० ना० स्त्री० बहुतनलिनका संयोगस्थान वा कमलिनी।

नली० ना० स्त्री० नरेटी, फोंफी, नाल, नरहड़, लोहेका यन्त्र जिसमें सूतरख कर बिनते हैं।

नलुआ० ना० पु० भारी बां... का एक पोड़ जो पच... आदि रखने के का... आता है।

नव० गु० गिनती विशेष, ... नया।

नवखण्ड० ना० पु० पृथ्वी ... नौभाग अर्थात् भरतख... ण्ड, इलावर्त, किं पुरु... भद्र, केतुमाल, हिरण... रम्य, हरि, कुरुखण्ड।

नवजल० ना० पु० प्रथम वर्ष... नयापानी।

नवयौवना० ना० स्त्री० जो... वनवती।

नवद्वार० ना० पु० शरीर ... नौ द्वार अर्थात्, आंख... कान २ नाक २ मु... गुदा, लिङ्ग।

नवधा० गु० नौप्रकार।

नवधाभक्ति० ना० स्त्री० नौप्रकारकी भक्ति अर्थात्, सत्संग, हरिकथा, गुरुसेवा, हरिगुणगान, वेदपाठ, सज्जनधर्म, समभाव, लाभालाभसम, हरिशरण।

नवधाभजन० ना० पु० नौप्रकार का भजन, अर्थात्, हरिगुण श्रवण, हरिगुणकीर्त्तन, हरिस्मरण, हरिपदसेवन, हरिअर्चन, हरिपदवन्दन, दास्यभाव, मित्रभाव, आत्मज्ञान ९।

नवनाटिका० ना० स्त्री० नौस्वांसा अर्थात् इड़ा, पिङ्गला, सुषम्णा, पयस्विनी, कुहू, गन्धारी, शंखिनी, पूषा, अलम्बुषा।

नवनि० ना० स्त्री० झुकनि, प्रणाम।

नवनिधि० ना० स्त्री० कुवेर काधन।

नवनीत० ना० पु० मक्खन, नैनू, मसका।

नवबधू० ना० स्त्री० नईबधू, नईदुलहन्।

नवबाला० ना० स्त्री० नवजोबना।

नवम० गु० नवां $\frac{1}{9}$।

नवमांश० ना० पु० नवांभाग।

नवमी० ना० स्त्री० नवींतिथि, नवीं।

नवरङ्ग० ना० पु० कामदेव, नयारङ्ग, नौरङ्ग।

नवरत्न० ना० पु० बाङ्गमेंपहिरनेके लिये भूषण विशेष।

नवरस ० ना० पु० नयारस वा नौप्रकारका रस अर्थात् शृङ्गाररस, वीररस, वीभत्स, शान्तरस, भद्र रस, करुणारस, अद्भुत, हास्य, भयानक ९ ।

नवल ० गु० सुन्दर, नया, ना० पु० केडापौधा ।

नवला ० ना० स्त्री० नवबाला, नवयोवना ।

नवा ० ना० गु० नया ।

नवाड़ा ० ना० पु० नावविशेष ।

नवाना ० स० क्रि० झुकाना, झुकाना, दोहरा, आधीनकराना ।

नवाना ० अ० क्रि० रमना, भटकना ।

नवारी ० ना० स्त्री० पुष्पविशेष वा उसका वृक्ष ।

नवासी ० गु० अस्सी और नौ, ८९ ।

नवी ० ना० स्त्री० रस्सी जिससे गायके पांव दूध दुहते समय बांधते हैं ।

नवीन ० गु० नया, ताज़ा ।

नवीनता ० ना० स्त्री० नयापन ।

नवोढ़ा ० ना० स्त्री० नईस्त्री, नवयौवना ।

नवोद्भिद ० ना० पु० अङ्कुर, अंखुआ ।

नव्य ० गु० नया, नवीन, उपरा ।

नव्वे ० गु० नवदहाई, ९० ।

नश्वर ० गु० नाशवान्, विनाशी, झूंठ ।

नशावा ० क्रि० मिटाया, नाशदिया ।

नखत ० ना० पु० नक्षत्र, तारागण, तारा ।

नष्ट ० गु० जिसका नाशहोगया भ्रष्ट ।

नष्टता ० ना० स्त्री० भ्रष्टता ।

नष्टा० ना० स्त्री० व्यभिचारिणी।

नस० ना० स्त्री० नाड़ी, रग।

नसाना० स० क्रि० नाशकरना, बिगाड़ना।

नसी० ना० स्त्री० फालेकाअग्र भाग, वाफालाजोनोहे का हलमेंलगता हे।

नस्य० गु० सानुनासिक, ऊलास, जो नासिका से सूंघते हैं।

नह० ना० पु० नख, नाखून।

नहक० गु० दुबला, पतला, सुखटा।

नहट्टा० ना० पु० बकोट, खसोट।

नहनी० ना० स्त्री० नहनीं, रुखानाविशेष।

नहरवा० ना० पु० रोगविशेष।

नहनीं० ना० स्त्री० नखकाटने का अस्त्र विशेष।

नहलाना० स० क्रि० स्नान कराना, नहाना।

नहान्० ना० पु० स्नान।

नहाना० अ० क्रि० स्नानकरना।

नहारमुह० अव्य० विनाखाये।

नहारू० ना० पु० चमड़े का टुकड़ा।

नहियर० ना० पु० स्त्री की ससुराल वा मैका।

नहीं० अव्य० निषेध, न।

नक्षत्र० ना० पु० तारा, तारा-गण।

ना० अव्य० नहीं।

नाईं० अव्य० प्रकार सदृश, समान।

नाइन्० ना० स्त्री० नाई की जोरू।

नाई०, नाऊ० } ना० पु० नापित, जातिविशेष, छौरकार।

नाक० ना० पु० आकाश, स्वर्ग, स्त्री, नासिका।

नाकड़ा० ना० पु० नाक में रोगविशेष।

नाकपति० ना० पु० इन्द्र।
नाकनटी० ना० स्त्री० अप्सरा, परी।
नाका० ना० पु० मार्गवा पेड़ का अन्त, सूईका छेद, गलो, नक्र, जलजन्तु विशेष।
नाकिन० ना० स्त्री० नाककीस्त्री।
नाग० ना० पु० सांप, पच, हाथी, दुष्टनर, सूक्ष्मवायु भेद।
नागउरग० ना० पु० सीसा- धातु।
नागकंन्या० ना० स्त्री० कंन्या जो पाताल में रहती है, सुलोचना, मेघनाद की बीबी।
नागकेसर० ना० पु० पुष्प विशेष।
नागगर्भ० ना० पु० सिन्दूर, बन्दन।
नागचाम्पेय० ना० पु० नाग- केसर।
नागज० ना० पु० सिन्दूर, बन्द
नागदन्ती० ना० स्त्री० इन्
वारुणी।
नागदमनी० ना० स्त्री० ना
गदौन।
नागदौन० ना० पु० पौध
विशेष, मरुआ।
नागन० ना० स्त्री० सांपिनी
नागनी० ना० स्त्री० पान
नागकी स्त्री।
नागपञ्चमी० ना० स्त्री० आ
वण शुक्लपञ्चमी क
पर्व्व विशेष।
नागपत्नी० ना० स्त्री० सांपि
न, नागिन।
नागपाश०, नागपास० ना० पु० पांस
वा बन्धनविशे
नागपुर० ना० पु० नगरविशे
नागलोक।
नागफांस० ना० स्त्री० फां
विशेष।

नागबला॰ ना॰ स्त्री॰ गंगेरुआ।

नागबल्ली॰ ना॰ स्त्री॰ नागबेलि।

नागबेलि॰ ना॰ स्त्री॰ पान आदि।

नागभाषा॰ ना॰ स्त्री॰ प्राकृत भाषा जो पातालके रहने हारे बोलते हैं।

नागमाता॰ ना॰ स्त्री॰ कद्रू, मनसिल।

नागर॰ ना॰ पु॰ गुजराती ब्राह्मणकी जाति विशेष, नगरोत्पन्न अर्थात् चतुर, और पानी औरा, सोंठि।

नागरङ्ग॰ ना॰ पु॰ नारङ्गी।

नागरमोथा॰ ना॰ पु॰ सुगन्धितणविशेष का मूल।

नागरि॰ } ना॰ स्त्री॰ चतुरस्त्री, नागरकी स्त्री।
नागरिन्॰ }

नागरिपु॰ ना॰ पु॰ न्यौला, मोर, गरुड़, सिंह।

नागरी॰ ना॰ स्त्री॰ संस्कृत के अक्षर, चतुरस्त्री।

नागल॰ ना॰ पु॰ हलखेत जोतने का।

नागा॰ ना॰ पु॰ संन्यासी, नग्न।

नागाह्वा॰ ना॰ स्त्री॰ नागदौन।

नागारि॰ ना॰ पु॰ नागरिपु।

नागार्जुन॰ ना॰ पु॰ सहस्त्र बाहु राजा विशेष।

नागिन्॰ } ना॰ स्त्री॰ सांप की स्त्री।
नागिनी॰ }

नागौर॰ ना॰ पु॰ मारवाड़ देशके पासका प्रदेश।

नाघना॰ } स॰ क्रि॰ लांघना, पार जाना।
नाङ्घना॰ }

नाच॰ ना॰ पु॰ नृत्य।

नाचना॰ अ॰ क्रि॰ नाच करना, कूदना।

नाज॰ ना॰ पु॰ अन्न, अनाज।

नाट० ना० पु० बासा।

नाटक० ना० पु० ग्रन्थविशेष।

नाटा० गु० ठिंगना, टेनी।

नाटिका० ना० स्त्री० नाड़ी।

नाटी० ना० स्त्री० छोटी, ठिंगनी।

नाठि० ना० स्त्री० नाश, विनाश।

नाठी० गु० नाशगई।

नाड़० ना० स्त्री० ग्रीवा, नाली।

नाड़िका० ना० स्त्री० एकघड़ी।

नाड़ी० ना० स्त्री० पेटमेंकी नस, रोगपरीक्षा के लिये हाथमें की एकरग, स्वासा, नस, नली।

नाड़ीतिक्त० ना० पु० चिरायता।

नाड़ीधम० ना० पु० सोनार, स्वर्णकार।

नाड़ीमण्डल० ना० पु० नाड़ियों का समूह।

नाड़ीज्ञान० ना० पु० रोग परीक्षा, और स्वास का ज्ञान।

नात० ना० पु० सम्बन्ध, रिश्त ह, बिरादरी।

नातर० } अव्य० नान्यथ
नातरु० } नहीं तो।

नाता० ना० पु० सम्बन्ध।

नातिन० ना० स्त्री० कन्या क कन्या, बेटाकी बेटी।

नाती० ना० पु० बेटीका पु बेटाका पुत्र, रामाय यथा उत्तमकुल पुल के नाती, शिव विर पूजे बहुभांती।

नाथ० ना० पु० स्वामी, प्र ना० स्त्री० बैलकी न कीरस्सी, घावकीबत्ती।

नाथना० स० क्रि० छेदन बैल की नाक में र डालना।

नाथित० गु० जो नाथागया।

नाद० ना० पु० शब्द, गरज, गीत, राग।

नादना० स० क्रि० आरम्भ-करना।

नादिया० ना० पु० नन्दी, पशु विशेष जो जोगियों के पासहोता है।

नाधना० स० क्रि० जुयेमें लगाना, आरम्भकरना।

नाधा० ना० पु० तालाब वा नदी मेंसे पानीनिकालने का गढ़ा।

नानक० ना० पु० सिक्खों का गुरु विशेष।

नाना० ना० पु० माताकापिता, गु० अनेक, बहुत, समूह।

नानाकार० गु० बहुतरूपके, अनेकप्रकारके।

नानाकारण० ना० पु० अनेकप्रकारके कारण।

नानाप्रकार० } गु० अनेक-
नानाभांति० } प्रकार।

नानारूप० ना० पु० अनेक रूप।

नानार्थ० ना० पु० अनेकअर्थ।

नानाविधि० गु० अनेकप्रकार।

नानी० ना० स्त्री० माता की माता।

नान्द० ना० स्त्री० नांद, मिट्टी का बड़ाबर्तन विशेष।

नान्दिया० ना० पु० शिवका वाहन, वृषभ।

नान्दीमुख० ना० पु० श्राद्ध विशेष जो पुत्र जन्म के पीछेहोता है वा विवाहादिमें।

नान्धना० स० क्रि० आरम्भ करना।

नान्यतर० } अव्य० अन्यथान-
नान्यथा० } हीं, असत्यनहीं।

नाप० नाο स्त्री० माप, परिमाण ।

नापना० स० क्रि० मापना, परिमाण करना ।

नापित० नाο पु० नाई, हज्जाम ।

नाभि० नाο स्त्री० पेटके मध्य का स्थान, ढोंढ़ी, तोंदी, नाο पु० राजाविशेष ।

नाम० नाο पु० कीर्त्ति, यश, विख्याति, संज्ञा ।

नामकरण० नाο पु० संस्कार विशेष, नामरखना ।

नामानि० नाο पु० नाम का बहुवचन ।

नामी० गु० प्रसिद्ध, कीर्त्तिमान्, विख्यात, यशी, मशहूर ।

नायक० नाο पु० मुखिया, प्रधान, स्वामी, सुन्दर रीतिसे गायकवानर्त्तक, बनजारोंका प्रधान ।

नायका० नाο स्त्री० नायिका ।

नायन्० नाο स्त्री० नाई की जोरू ।

नायिका० नाο स्त्री० नायक की स्त्री, धर्मी, चिया कुट्टनी ।

नार० नाο स्त्री० नारि, नाल भुण्ड, ग्रोवा ।

नारक० नाο पु० नरक ।

नारकी० गु० नरकनिवासी नरकी ।

नारङ्क० नाο पु० } फल
नारङ्गी० नाο स्त्री० } विशेष

नारद० नाο पु० मुनिविशेष

नारा० नाο पु० नाला, कमर बन्द ।

नाराच० नाο पु० बाण, तीर

नारायण० नाο पु० श्रीभग वान् ।

नारायणी० ना० स्त्री० लक्ष्मी, छतावरपौधा, नारायण सम्बन्धी, ज्योति विशेष।

नारि० ना० स्त्री० स्त्री, अबला, नाडी, जिसमें बाने का सूत रख कर बुनते हैं, बन्दूक बिनाकाठ, बांस का पोढ़ जिसमें लोन पानी आदि भरके बैल गायआदिको पिलाते हैं।

नारिकेर०
नारिकेल०
नारियल० } ना० पु० फल विशेष।

नारियली० ना० पु० नारियल का ऊक्का।

नारी० ना० स्त्री० अबला, स्त्री० नाड़ी० सागविशेष, जिसे कर सुआ कहते हैं।

नाल० ना० पु० कमलादि की डण्डी, नार, फोंफा, नल, नली।

नालकी० ना० स्त्री० पालकी विशेष।

नाला० ना० पु० जल निकलने का मार्ग।

नालिसिन्दूक० ना० पु० संभालू।

नाली० ना० स्त्री० मुहरी छोटा नाला, जिसगढ़े में दण्ड करते हैं, जिस काठ को चढ़ाते हैं।

नाव० ना० स्त्री० नौका, तरनी।

नावना० स० क्रि० झुकाना, डालना, नवाना।

नावरि० ना० पु० निवारा, जलक्रीड़ा।

नाविक० ना० पु० मांझी, नाव वा जहाज़ चलाने हारा, मल्लाह, कप्तान्।

नाशक० गु० नाश करने हारा, मिटाने हारा।

नाशन० ना० पु० मिटावन, मेटन।

नाशना० स० क्रि० मिटाना, ध्वंस करना, नासना।

नाशपाती० ना० स्त्री० फल विशेष।

नाशा० ना० स्त्री० नासिका।

नाशास्फोटन० ना० पु० नक छीकनी पौधा।

नाशिका० ना० स्त्री० नासिका, नाक।

नास० ना० पु० सुंघनी, हुलास।

नासना० अ० क्रि० भागना, स० क्रि० नाश कर्ना।

नासा० ना० स्त्री० नाक, नाकड़ा।

नासिका० ना० स्त्री० नाक।

नास्ति० अव्य० जो नहीं है।

नास्तिक० } ना० पु० जिनके
नास्तिकी० } मतमें पर लोक की बात कोनहीं मानते हैं, जैनी।

नाह० ना० पु० नाथ, स्वामी।

नाहर० ना० पु० शेर, व्याघ्र।

नाहीं० अव्य० नहीं।

निः० अव्य० यहशब्दजिसशब्द-पहिलेकेसंयोगीहोवेउसका अर्थ रहित करे, यथा, निः शङ्क, अर्थात् शङ्का रहित, निषेध।

निःपाप० गु० अदोष।

निःशङ्क० गु० निडर, अभय।

निःशेष० गु० शेषरहितअर्थात् सम्पूर्ण।

निःषठ० गु० अति मूर्ख।

निःसङ्ग० गु० सङ्ग रहित अर्थात् अकेला।

निःसरण० ना० पु० शरण हीनअर्थात्मृत्यु, उपाय, बिदा।

निःस्व० गु० दरिद्री, अधन।

नि० अव्य० में भीतर, ऊपर, रहित।

निकंटक० गु० सुगम, बेखटके, निर्दोष, सीधा, सुखी, बेधड़के।

निकंद० गु० स्कन्ध रहित, अर्थात्उखड़ा, निर्मूल।

निकंदन० गु० निर्मूलकर्त्ता, उखाड़ने हारा।

निकट० अव्य० पास, समीप, क़रीब।

निकटवर्त्ती० ना० पु० पासही, समीपमें।

निकटी० ना० स्त्री० छोटी तराज़ू।

निकम्मा० गु० निर्गुणी जो किसी कामका नहीं है, शिथिल।

निकर० ना० पु०समूह, झुण्ड, सारे, सब।

निकरना० अ० क्रि० निकलना।

निकरम्ब० ना० पु० समूह, गिरोह।

निकलचलना० अ० क्रि० भाग जाना, बहके बोलना, अधिक हो जाना।

निकलना० अ० क्रि० निकसना, बहना, आगेजाना, भागना, उठना, उखड़ना।

निकलपड़ना० अ० क्रि० बाहर आना।

निकसना० अ० क्रि० निकालना।

निकाना० स० क्रि० खेतकी घास निकालना।

निकाम० गु० अति, कामना रहित, बेकाम।

निकाय० ना० पु० सब, सम, स, समूह।

निकारना॰ स॰ क्रि॰ निकालना, अस्वीकारकरना।

निकाल॰ ना॰ पु॰ उभार, निकास, जोड़तोड़।

निकालना॰ स॰ क्रि॰ उतारना, बिनना, चुनना, उठाना, उखाड़ना।

निकास॰ ना॰ पु॰ कगर, नगर की आस पास, मार्ग निकलने का चुकौता, मूल।

निकासना॰ स॰ क्रि॰ निकालना।

निकासी॰ ना॰ स्त्री॰ कर, महसूल, बेठ।

निकासू॰ गु॰ जो निकाला गया,

निकेत॰ ना॰ पु॰ घर।

निकुच॰ ना॰ पु॰ बड़हल।

निकुञ्ज॰ ना॰ पु॰ कुञ्ज, मंडवा।

निकुटी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटी इलायची।

निकुम्भिला॰ ना॰ स्त्री॰ राक्षसोंका ओहरा।

निकृष्ट॰ गु॰ अधम, नीच, ख़राब।

निषङ्ग॰ ना॰ पु॰ तून, तरकश।

निखट्टू॰ गु॰ आलसी, उड़ाऊ, लुटाऊ।

निखगड॰ गु॰ मध्य।

निखरना॰ अ॰ क्रि॰ छिलका उतरना, उजलाहोना, चमड़ा उधड़ना।

निखराना॰ स॰ क्रि॰ उजला कराना, फर्चाना।

निखर्ब॰ गु॰ १० खर्ब, १००००००००००००

निखारना॰ स॰ क्रि॰ उजला करना, कपड़ेको माँड़ निकालना।

निखारा॰ गु॰ स्वच्छ, उज्ज्वल।

निखिल॰ गु॰ सर्व, सम्पूर्ण, बिलकुल।

निखोट० ना० पु० खोटरहित मनुष्य ।

निखोड़ना। ० स० क्रि० छीलना, उधेड़ना ।

निगड़० ना० पु० कटि बन्धन, बेड़ी, पैकड़ी, काठ ।

निगत० गु० नङ्गा ।

निगन्दना० स० क्रि० तागना ।

निगन्दा। ० ना० पु० } तागने का काम ।
निगन्दाई। ० ना० स्त्री० }

निगम० ना० पु० बेद, नीचे, जहां जानसके।

निगमनदी० ना० स्त्री० श्री गङ्गाजी।

निगमनिवासी० ना० पु० ब्रह्मा, बेदनिवासी ।

निगर० ना० पु० दीर्घ, बड़ा, ठोस ।

निगलना। ० स० क्रि० लीलना, घूंटना ।

निगाली० ना० स्त्री० हुक्का पीने की नली, फुकनी ।

निगुण० गु० निर्गुण ।

निगूढ़० गु० अतिअगम, दुगम, अतिकठिन, अप्रकट, गुप्त ।

निगोड़ा। ० ना० पु० अकर्मी, चाण्डाल ।

निग्गर० गु० ठोस ।

निग्रह० ना० पु० त्याग, रोक, घिन, चिढ़, कुपथ, दण्ड ।

निग्रही० गु० ताड़नेहारा, रोकनेहारा ।

निघटत० क्रि० घटतेही ।

निघटना० अ० क्रि० घटना ।

निघटाना० स० क्रि० घटवाना।

निघटी० क्रि० भू० घटी वा बहुत घटगई ।

निघण्ट० ना० पु० औषधिवर्णन, रोगपरीक्षा ।

निघरघटा० ना० पु० दुलष-ना,हढ़ाईकरना,ढिठाई करना।

निचय० ना० पु० समूह।

निचिन्त० गु० चिन्तारहित, अचिन्त, अशोच।

निचिन्ताई० ना० स्त्री० अप्रमाद, सुभीता, बेखटके।

निचोड़० ना० पु० काम का पूराहोना वा कुछशेष-रहना।

निचोड़ना० स० क्रि० दबाना, गारना, चूसलेना।

निचोड़ू० गु० लुटेरा,गाजधप।

निचोलनि० ना० स्त्री० चो-लनी, कपड़ा, वस्त्र।

निछावर० ना० स्त्री० उतारा, बलि।

निज० गु० आप,निश्चय,उत्कृष्ट।

निजका० गु० अपना।

निजगति० ना० स्त्री० अपन[illegible] दशा वा चाल।

निजगुरु० ना० पु० अप[illegible] गुरु।

निजतंत्र० गु० निजइच्छ[illegible] स्ववश।

निजपति० ना० स्त्री० अप[illegible] प्रतिष्ठा, ना० पु० अ[illegible] ना स्वामी।

निजवर्ती० गु० निजाश्रि[illegible] स्वतन्त्र।

निजसांझ० ना० स्त्री० अवस[illegible] निज समय।

निजस्थान० ना० पु० अप[illegible] घर वा स्थान।

निजानन्द० ना० पु० [illegible] अपनेसुखमें,निजमेंमग्न

निजाश्रित० गु० स्ववश, [illegible] जवश, अथवा [illegible] भरोसे।

निझाना० स० क्रि० निरेख[illegible] झांकना

निझोटना० स० क्रि० खसोटना, झटकना।

निझोल० गु० झोलरहित अर्थात् सुडौल चलने द्वारा।

निठुर० गु० कठोर, निर्दय, असनेही, बिनप्रीति।

निठुरता० } ना० स्त्री० कठोरता, निर्दयता।
निठुराई० }

निडर० गु० निर्भय, अशङ्क।

निढाल० } गु० स्थावर, अचल।
निढोल० }

नित० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।

नितनव० गु० नितनया।

नितप्रति० अव्य० नित्य, प्रतिदिन।

नितम्ब० ना० पु० चूतड़, कटिके पीछे का नीचला भाग।

नितम्बिनी० ना० स्त्री० युवती, स्त्री, औरत।

नितान्त० अव्य० अत्यन्त, अधिक।

नित्य० अव्य० नितप्रति, सदा, सत्य, पवित्र, अमर।

नित्यकर्म० ना० पु० स्नानपूजादि कर्त्तव्यकर्म, शुक्लकर्म।

नित्यता० ना० स्त्री० सदापन, सदैव।

नित्यदान० ना० पु० प्रतिदिन देना, सत्यदान, सात्विकदान।

नित्यानन्द० ना० पु० सर्वदा काल आनन्द।

नियम्भ० ना० पु० स्तम्भ, पीलपाया।

नियरा० गु० पासो, फर्क्का।

नियारना० स० क्रि० उड़ेलना, फर्क्का करना।

निदग्धिका० ना० स्त्री० खेतछोटीकटाई।

निदरहि० क्रि० निन्दाकरे, नामाने।

निदरना० स० क्रि० निन्दा करना।

निदरि० अ० क्रि० निरादर करके, अपमानकर।

निदाघ० ना० पु० ग्रीष्म, गर्मी।

निदान० अव्य० अन्त, पीछे, पूरा, निपट, ना० पु० रोगपरीक्षा, औषधिकथन, अन्त विचार, कारण।

निदेश० ना० पु० आज्ञा, अनुशासन, कीन्हसिमोर निदेशनिमेटू, देंवदबाय नागतर पेटू, इति प्रह्लाद चरित्रे सहज रामकाव्ये।

निद्रा० ना० स्त्री० औंघाई, नींद।

निद्रारि० ना० पु० चिरायता।

निद्रालु० गु० स्वभाव वश जो अधिक सोवे।

निद्रित० गु० निंदासा, सोवासा।

निधड़क० गु० निर्भय, अ[illegible]
अचानक।

निधन० ना० पु० मृत्यु, ना[illegible]
धनहीन।

निधरक० गु० निधड़क।

निधान० ना० पु० स्थान, [illegible]
धन, आधार, भांड़ा

निधि० ना० स्त्री० कुवेरका[illegible]
रत्न, सम्पत्ति, ना०
समुद्र, गु० नौ, ६

निधिजात० ना० पु० चन[illegible]
आदि

निधिसुता० ना० स्त्री०
लक्ष्मीजी

निनन्द० } ना० पु० श[illegible]
निनाद० } शराटा, ध्वनि

निनाया० ना० पु० खट[illegible]

निनायो० ना० पु० रोगवि[illegible]

निन्दक० गु० निन्दाकरने[illegible]
नींदनेहार।

निन्दकाई॰ना॰ स्त्री॰ निन्दकता, निन्दा।

निन्दना॰ स॰ क्रि॰ दोषदेना, कलङ्क लगाना।

निन्दनीय॰ गु॰ निन्दाकेयोग्य।

निन्दा॰ ना॰ स्त्री॰ दोष, कलङ्क, बुराकहना।

निन्द्य॰ गु॰ निन्दाकेयोग्य।

निनावा॰ ना॰ पु॰ रोगविशेष।

निन्नानवे॰ गु॰ एकोनशत, ९९।

निपट॰ अव्य॰ निरानिर, अधिक, बहुत, अति, सरासर, सर्व।

निपटना॰ अ॰ क्रि॰ चुकना, पूराहोना।

निपटाना॰ स॰ क्रि॰ चुकाना, पूराकरना, ठहराना, निवड़ना।

निपटारा॰ ना॰ पु॰ निवड़ा, फैसला।

निपटारू॰ ना॰ पु॰ निबेड़ा।

निपात॰ ना॰ पु॰ मृत्यु, नाश, गिरना।

निपाता॰ क्रि॰ नाशकिया, मिटाया।

निपान॰ ना॰ पु॰ जलाशय, दोहनी।

निपुण॰ गु॰ प्रवीण, चतुर, स्याना।

निपूता॰ गु॰ जिसके सन्तान नहीं।

निफल॰ गु॰ निरर्थ, फलरहित।

निबटेरा॰ ना॰ पु॰ निस्तोक, छुटानो।

निबड़ना॰ अ॰ क्रि॰ निपटना, होचुकना।

निबन्ध॰ ना॰ पु॰ बन्धेज़, इक़रार, गु॰ जो ठहरगया।

निबन्धन॰ ना॰ पु॰ बन्धन, ठहराव।

निबन्धित॰ गु॰ जो ठहरगया, बन्धित।

निबल० गु० निर्बल, लाचार, बुड्ढा ।

निबाह० ना० पु० समाप्त, निबेड़ा, निर्वाह, बात का पूराकरना ।

निबाहू० गु० टिकाऊ, ना० पु० निपटाहू ।

निबेड़ना० स० क्रि० निपटाना ।

निबेड़ा० ना० पु० निबटेरा, निपटारा ।

निबेड़ि० गु० निबाहू ।

निभ० ना० पु० तुल्य, बराबर ।

निभना० अ० क्रि० निबाहहोना, पारहोना ।

निभाना० स० क्रि० निबाहना, पारकरना ।

निमकी० ना० स्त्री० लोन का निम्बू ।

निमकौड़ी० ना० स्त्री० नीब का फल ।

निमन० गु० ठोस, पोढ़ा, सुन्दर ।

निमनाई० ना० स्त्री० पोढ़ा

निमनाना० स० क्रि० पो करना, संभालना ।

निमंच०
निमंचण० } ना० पु० न्योत

निमाना० गु० भोला, मैदान

निमि० ना० पु० राजाविशे

निमित्त० ना० पु० कार लिये, भाग, हेतु ।

निमिष० ना० पु० थोड़ीदे पलक, चाल ।

निमिषमाच० ना० पु० अ न्त थोड़ाकाल ।

निमीलन० ना० पु० क झपकी, पलक ।

निमेष० ना० पु० पलक, पल

निम्न० गु० नीचास्थान, चान्, अधो

निम्नगा० ना० स्त्री० नदी

निम्ब० ना० पु० नीबवृक्ष।

निम्बक० ना० पु० निम्ब।

निम्बरक० ना० पु० नीब वा महानीब।

निम्बू०
निम्बूक० } ना० पु० नीबू।

नियत० गु० जोठहैकागया, मुक़र्रर, क़ायम।

नियन्ता० ना० पु० स्वामी, अध्यक्ष, सारथी, नियतकर्त्ता।

नियम० ना० पु० प्रण, वचन, अङ्गीकार, जो कुछ धर्म की क्रियाकरे, यथाव्रत।

नियमित० गु० निश्चित, प्रणकिया गया।

नियमन० ना० पु० नीमवृक्ष, रोक।

नियर०
नियरे० } अव्य० समीप, पास।

नियराई० ना० स्त्री० समीपता, निकटता।

नियामक० ना० पु० नाविक, नियन्ता।

नियुक्त० गु० नियोजित, स्थापित।

नियुत० गु० दशलाख, १००००००।

नियोग० ना० पु० प्रेरणआज्ञा, तथा, मुक़र्ररकरना।

नियोजन० ना० पु० स्थापन, आज्ञा।

नियोजित० गु० स्थापित, रक्खा।

निर्० अव्य, नि:।

निरखना० स० क्रि० देखना, विलोकना।

निरङ्कार० गु० निराकार।

निरङ्कुश० गु० स्वेच्छाचारी, निडर।

निरञ्जन० गु० निर्मल, रागरहित, अविद्यारहित, ना० पु० ईश्वर।

निरत० गु० अतिप्रीतिमय, लीन ।

निरतक० ना०पु० नचवैया ।

निरर्थ० गु० झूंठ, निःप्रयोजन, बेफ़ायदह ।

निरन्त० गु० अन्तरहित, अपरम्पार, ना०पु० आकाश, ईश्वर ।

निरन्तर० अव्य, नित्यप्रति, जिसमें वियोग नहीं, सत्य, अन्तरबिन ।

निरख० गु० दृष्टा, देखनेवाला ।

निरपराध० } गु० अपराध रहित, निर्दोष ।
निरपराधी० }

निरम्बु० गु० जलरहित ।

निरय० ना०पु० नरक, दोज़ख़ ।

निरर्थक० गु० ढीला, प्रमादी, अनरीति, अर्थरहित, निष्प्रयोजन ।

निरवग्रह० गु० स्वच्छ... स्वतन्त्र

निरवद्य० गु० आनन्दित, ... कथ्य ।

निरवारण० ना०पु० छुट... न, बचाव, सुलझावट ।

निरवारना० स० क्रि० छो... लना, छोड़ाना ।

निरस० गु० रसहीन, फीका... बदमज़ह ।

निरस्त० गु० त्यागित, जिस... अस्तनहो ।

निरस्त्र० गु० अस्त्रहीन ।

निरस्य० गु० त्यागनेके योग्य... त्यागकिये ।

निरा० गु० केवल, सारा... ठेठ, रूखा ।

निराकांक्षी० ना० पु० नि... स्पृह, आकांक्षारहित ।

निराकार० गु० आकारहीन... यथा ईश्वर ।

निरादर॰ गु॰ आदररहित, अवज्ञा युत, वा अवज्ञा करनेहारा।

निराधार॰ गु॰ सहारारहित, आधारहीन।

निरामिष॰ गु॰ मांसरहित भोजन।

निरालम्ब॰ गु॰ आलम्बरहित, अवलम्बहीन।

निरालस्य॰ गु॰ आलस्यहीन, कामकाजी, मिहनती, उपायी।

निराश॰ गु॰ भरोसारहित, आशाटूटगई।

निराहार॰ गु॰ भोजनहीन, बिनकुछखाये।

निरिच्छा॰ }
निरिच्छित॰ } गु॰ इच्छारहित, बिनइच्छा, जिसको कुछचाहनहीं।

निरीश॰ गु॰ स्वामीरहित, जिसका मालिकनहो, मतिहीन, ना॰ पु॰ जीवअर्थात् ईश्वरनहीं।

निरीह॰ गु॰ चेष्टारहित यथा ईश्वर।

निरीक्षण॰ ना॰ पु॰ ताक, दृष्टि।

निरुत्तर॰ गु॰ उत्तरहीन, लाजवाब।

निरुपधि॰ गु॰ निष्प्रयोजन।

निरुपम॰ }
निरुपमा॰ } गु॰ उपमाहीन, दृष्टान्तरहित।

निरुपाधि॰ गु॰ उपाधिरहित, बेखटके।

निरुपाय॰ गु॰ उपायहीन, बिनाउपाय किये।

निरूप॰ गु॰ रूपहीन, निराकार।

निरूपण॰ ना॰ पु॰ दृष्टि, निर्णय, जवाब, विस्तार पूर्वक कथन।

निरूपित॰ गु॰ जो विस्तार पूर्वक कहागया वा निर्णय किया गया, निश्चय युत, स्थापित।

निरेखना। स० क्रि० विलोकना, झांकना।

निरोग। निरोगी। } गु० निरोग, भला, चङ्गा, रोगरहित।

निरोध। ना० पु० घेरना, गांसना।

निर्गत। गु० निकला।

निर्गता। गु० निकलकर, ना० स्त्री० निकली।

निर्गम। ना० पु० जहां जाय न सके, अगम।

निर्गुण। गु० गुण हीन, निकम्मा, मूर्ख।

निर्गुण्डी। ना० स्त्री० संभालू।

निर्घण्ट। ना० पु० सूचीपत्र।

निर्घात। ना० पु० वज्र, शब्द।

निर्घृणा। गु० निर्दया, कठोर।

निर्घोष। ना० पु० ध्वनि, शब्द।

निर्जर। ना० पु० देवता, जो बूढ़ा न हो, गु०।

निर्जन। गु० मनुष्य हीन, जन रहित।

निर्जरनदी। ना० स्त्री० श्री गङ्गा जी।

निर्जल। गु० जलहीन, सूखा, पायाब।

निर्जीव। गु० जिसमें जीव नहीं है यथा मिट्टी पत्थर आदि, मृतक।

निर्जीस। गु० सार, सिद्धान्त

निर्झर। ना० पु० झरना।

निर्झरिणी। ना० स्त्री० नदी

निर्णय। ना० पु० निश्चय, ठिकाना, न्याय, झगड़ा मिटाना।

निर्णीत। गु० निश्चित, निर्णय किया गया।

निर्दई। निर्दय। निर्दया। निर्दयी। } गु० जिसमें दया नहीं है, कठोर, बेरहम।

निर्दिष्ट० गु० जो अच्छी विधि देखागया वा निरूपित ऊआ वा वर्णन ऊआ।

निर्दोष० } गु० दोष हीन,
निर्दोषी० } अकलङ्की, अदोष।

निर्द्वन्द० गु० बिना झगड़ा, बेखटके।

निर्धन० गु० धनहीन, दरिद्री।

निर्धार० } ना० पु० निश्चय,
निर्धारण० } निर्णय।

निर्धारित० गु० निश्चित, निर्णीत।

निर्वंश० गु० वंश रहित, असन्तान, लावल्द।

निर्बन्धु० गु० बन्धु रहित, अकेला।

निर्बल० गु० लाचार, बुड्ढा, जिसको सामर्थ्य नहीं है।

निर्बस० गु० वशरहित, असमर्थ।

निर्बीज० गु० बीज रहित, पुत्र हीन।

निर्बुद्धि० गु० बुद्धिहीन, मूर्ख।

निर्बूझ० गु० जो समझ में न आवे, मूर्ख।

निर्भय० गु० अभय, निडर।

निर्भर० गु० पूर्ण, पूरा।

निर्मम० गु० ममता रहित।

निर्मल० गु० मलहीन, स्वच्छ, शुद्ध, साफ़, फ़र्का।

निर्मलता० ना० स्त्री० पवित्रता, स्वच्छता, सफ़ाई।

निर्मली० ना० पु० बीज विशेष जिससे पानी को स्वच्छ करते हैं।

निर्माण० ना० पु० बनावट, रचना, बनाना, कर्त्तव, सार ।

निर्माल्य० ना० पु० प्रसाद, निवेदितवस्तु, स्वच्छता, शुद्धता ।

निर्मित० गु० रचित, बनाया गया, निर्माणकियागया ।

निर्मूल० गु० हीनमूल, बिना-जड़ ।

निर्मोह० } गु० मोहरहित,
निर्मोही० } उदासी ।

निर्यास० ना० पु० शिलाजीत, वृक्षकारस अर्थात् गोंद, क्वाथ ।

निर्याण० ना० पु० यात्रा, प्रस्थान ।

निर्लज्ज० गु० लज्जा रहित, बेहया, नकटा ।

निर्लिप्त० गु० स्पर्शहीन, जो लिप्त नहीं है ।

निर्लेप० } गु० जिसका चिह्न
निर्लेश० } नहीं वा लेशनहीं, बिनालाग, सर्व ।

निर्लोभ० गु० लोभ रहित, दाता ।

निर्वन्ध० गु० छूटाहुआ ।

निर्वाण० ना० पु० मोक्ष, अप-वर्ग, लय, गु० वैकुण्ठ वासी, मोक्षहोगया ।

निर्वाणसुख० ना० मोक्ष, मुक्ति, वैकुण्ठवास ।

निर्बाधा० गु० बाधा रहित, अकण्टक ।

निर्वाह० गु० निबाह ।

निर्वाहक० गु० निवाहकरने हारा ।

निर्विकल्प० गु० भेदरहित, अतर्क, कल्पनाहीन ।

निर्विकार० गु० विकारहीन, निर्बाध, अरोग ।

निर्विघ्न० गु० विघ्नरहित, सान-न्द, निर्बाधा ।

निर्वृत्ति० ना० स्त्री० मुक्ति, मृत्यु, आनन्द, सुखमार्ग, तरीक़, पथ्य।

निर्वैर० गु० वैरभावहीन।

निर्व्याज० गु० अचल, अस्वारथ।

निर्व्याधि० गु० व्याधिहीन, अरोग, अकण्टक।

निर्हर० ना० पु० हरनेवाला।

निलज० गु० निर्लज्ज, लज्जाहीन।

निलय० ना० पु० घर।

निवान० गु० नीचान।

निवाना० स० क्रि० नवाना।

निवार० ना० स्त्री० कोर पट्टी सूत की।

निवारक० गु० बचाने वाला, रोकने वाला।

निवारण० ना० पु० निषेध, रोक, बचाव।

निवारना० स० क्रि० रोकना, बचाना, बरजना।

निवारत० क्रि० बचावत, रोंकत, बर्जत।

निवारि० क्रि० बचाय कर, रोंकि, बरजि।

निवारित० गु० बचायागया, बर्जागया।

निवावना० स० क्रि० नवाना।

निवास० ना० पु० बसने का स्थान, बास, घर।

निवासी० ना० पु० बसने हारा, रहनेवाला।

निविड़० गु० अधिक, सघन, निछायत।

निवुकि० अ० क्रि० झपटि कूदि।

निवृत्ति० ना० स्त्री० रहाव, थकावट, विश्राम, चैन।

निवेदन० ना० पु० प्रार्थना, विनती, अर्ज़।

निवेदनपत्र० ना० पु० अर्ज़ी, विनय पत्र ।

निवेदित० गु० अर्पित, विनय कियागया ।

निवेशन० ना० पु० विवाह, शादी ।

निशङ्क० गु० निडर, निस्सन्देह, विन प्रयास ।

निशा० ना० स्त्री० रात्रि ।

निशाकर० ना० पु० चन्द्रमा ।

निशागम० ना० पु० रात्रिका आगम, संध्या, सांझ, शाम ।

निशाचर० ना० पु० राक्षस, चोर, उलूकादि, चन्द्रमा आदि नक्षत्र ।

निशाटन० ना० पु० निशाचर ।

निशि० ना० स्त्री० निशा ।

निशिचर० ना० पु० निशाचर ।

निशिनाथ० ना० पु० चन्द्रमा, चांद ।

निशिमुख० ना० पु० संध्या, सांझ ।

निशिभानु० ना० पु० चन्द्रमा ।

निशीथ० ना० पु० आधीरात ।

निशीश० ना० पु० चन्द्रमा, चांद ।

निश्चय० ना० पु० निर्णय, विश्वास, गु० ठीक ।

निश्चल० गु० स्थिर, अचल ।

निश्चित० गु० निर्णीत ।

निश्चिन्त० गु० चिन्तारहित, बिना खटके ।

निश्चेष्ट० गु० चेष्टारहित, मूर्च्छित

निश्छिद्र० गु० निर्दोष, छेद रहित ।

निश्रेणी० ना० स्त्री० निसेनी सीढ़ी, ज़ीना ।

निश्श्वास० ना० पु० श्वास प्राणवायु ।

निश्शेष॰ गु॰ अशेष, समस्त, सब।

निषङ्ग॰ ना॰ पु॰ तून, तरकश, मेल।

निषाद॰ ना॰ पु॰ गाने में पहिला स्वर, चाण्डाल, शङ्करवर्णी, केवट, मल्लाह।

निषिद्ध॰ गु॰ जोकर्त्तव्यनहीं, वर्जित।

निषिद्धता॰ ना॰ स्त्री॰ निवारण, कर्त्तव्य रहित, इन्कार।

निषेद॰ ना॰ पु॰ अदुख, दुविधा।

निषेध॰ ना॰ पु॰ इनकार, निवारण, कर्तव्यरहित।

निषेधित॰ गु॰ वर्जित, निवारित।

निष्क॰ ना॰ पु॰ हीरा, १६ द्रम्मका प्रमाण।

निष्कण्टक॰ ना॰ पु॰ उपाधि रहित, बेधड़क।

निष्कपट॰ गु॰ सत्य, सच्चा, छलहीन, भोला।

निष्कर्ष॰ ना॰ पु॰ निश्चय।

निष्कारण॰ गु॰ बिनाप्रयोजन, बेसबब।

निष्केवल॰ गु॰ एकही, सत्यकर।

निष्क्रमण॰ ना॰ पु॰ संस्कार विशेष।

निष्ठ॰ गु॰ स्थापित, तत्पर, उत्तम, उत्कर्ष।

निष्ठमति॰ ना॰ स्त्री॰ उत्तम बुद्धि, उत्तमज्ञान।

निष्ठा॰ ना॰ स्त्री॰ विश्वास, भरोसा।

निष्ठुर॰ गु॰ निठुर, निर्दय, कठोर, अप्रीति।

निष्ठुरता॰ ना॰ स्त्री॰ }
निष्ठुरत्व॰ ना॰ पु॰ } कठोरता, निर्दयता, निठुरता।

निष्पत्ति० ना० स्त्री० सिद्धि, समाप्ति ।

निष्पन्न० गु० कृत, बना, सिद्ध ।

निष्पादन० ना० पु० सम्पादन ।

निष्पाप० } गु० पापरहित,
निष्पापी० } निर्दोष ।

निष्प्रपञ्च० गु० छलहीन ।

निष्प्रयोजन० गु० व्यर्थ, विना प्रयोजन ।

निष्फल० गु० फलहीन, वृथा, बेफ़ायदह ।

निस० ना० स्त्री० निशा ।

निसक० गु० अशक्त, पौरुष-रहित ।

निसङ्क० गु० निशङ्क ।

निसङ्कट० गु० सङ्कटरहित ।

निसन्धि० गु० ठोस, सन्धि-रहित ।

निसरना० अ० क्रि० निकसना ।

निसास० गु० आहभरना ।

निसांसी० गु० तङ्ग, हैरा[n]

निसान० ना० पु० तूर्य्य, [...]
कारह ।

निसास० ना० पु० विश्वास [...]

निसि० ना० स्त्री० निशि ।

निसित० गु० पैनी० ते[...]
बाढ़िदार ।

निसेनी० ना० स्त्री० सीढ़[ी]
ज़ीना ।

निसोत० ना० पु० औषधि
विशेष, गु० ठोस ।

निस्तार० ना० पु० मुक्ति, मो[क्ष]
उद्धार ।

निस्तारा० ना० पु० निपटारा [...]

निस्तारना० स० क्रि० निस्ता[...]
रकरना ।

निस्तेज० गु० प्रताप हीन[...]
तेजरहित ।

निस्तोक० ना० पु० चुकौत[...]
निपटारा ।

निस्यन्द० ना० पु० निचो[...]
हिसाब ।

निस्पृह० गु० लालसाहीन ।

निस्व० गु० निर्धन, दरिद्री ।

निस्वना० गु० ध्वनि, शब्द ।

निस्सन्देह० गु० सन्देहरहित, बेखटके ।

निहङ्ग० गु० नङ्गा, अचिन्त ।

निहत्था० गु० औहथा, अस्त्ररहित, लूला, हाथ रहित ।

निहाई० ना० स्त्री० लोहेकी वस्तु विशेष जिस पर सोनाआदिगढ़ते हैं ।

निहाली० ना० स्त्री० रज, कपड़े ।

निहार० ना० पु० अन्धकार, कुहरा, रामायणे वया, जिमिनिहार में दिनकारदुरा, दृष्टि ।

निहारना० स० क्रि० देखना, विलोकना, झांकना ।

निहारा० स० क्रि० देखा ।

निहुरना० अ० क्रि० लचना, झुकना, दबना ।

निहुराना० स० क्रि० लचाना, झुकाना, दबाना ।

निहोरा० } ना० पु० कृपा, उपकार, विनती,
निहोरा० } फुसलाहट, खुशामद ।

निक्षिप्त० गु० जोनिक्षेप क्रिया जावे, त्यागित ।

निक्षेप० ना० पु० परित्याग, धरोहर ।

नींद० ना० स्त्री० औंघाई, निद्रा ।

नींदना० अ० क्रि० सोना, स० क्रि० सुकरना ।

नींदू० ना० पु० सोवैया ।

नींब० ना० पु० वृक्षविशेष, निम्ब ।

नींबू० ना० पु० लीमू, फलविशेष ।

नीक० गु० भला, अच्छा ।

नीका० } गु० सुन्दर, भला,
नीको० } अच्छा ।

नीच० गु० छोटा, कमीना, हीन, कुत्सित, निकम्मा, तले, हेठ।

नीचगामी० गु० जो नीचे जाता है, यथा जल।

नीचा० गु० ऊंचे के विरुद्ध, नशेब।

नीचाई० ना० स्त्री० छोटाई, नीचापन।

नीचे० अव्य० तले।

नीठ० गु० तुम्हारा।

नीति० ना० स्त्री० उचित, व्यवहार, रीति, क़ानून।

नीतिज्ञ० गु० धार्मिक, न्यायी।

नीद० ना० स्त्री० नींद।

नीदना० स० क्रि० नामानना, मुकरजाना।

नीप० ना० पु० कदमवृक्ष।

नीपूर० ना० पु० लिङ्ग।

नीवी० ना० स्त्री० कौड़ी, स्त्रियां आगे धरती है।

नीबू० ना० पु० निम्बू।

नीम० ना० पु० नींब।

नीमन० गु० निर्मल।

नीमावत० ना० स्त्री० नीम मन्दसंन्यासीकापन्थ।

नीर० ना० पु० जल, पानी।

नीरज० ना० पु० कमल, जलजातहो।

नीरथ० गु० निरर्थ, निष्फल

नीरद० ना० पु० मेघ।

नीरधर० ना० पु० मेघ, समु

नीरस० गु० निरस, रसही फीका।

नीरोग० गु० निरोग, आरो

नीरोगी० गु० चङ्गा, भ रोगहीन।

नील० गु० कृष्णवर्ण विशेष, काला, ना० पु० वस्तुविशेष जो इसके पत्तों से बनाते हैं, मुख्यवानर, सो खर्व, १००००००००००००००।

नीलक० गु० नीला, ना० पु० नीलरङ्ग का हरिण विशेष, बीजगणित में विशेष प्रमाण।

नीलकण्ठ० ना० पु० पक्षी विशेष, मोर, अग्नि, और श्रीशङ्करजी।

नीलगवय० ना० पु० नीलगाव, रोझ।

नीलगाव० ना० पु० रोझ।

नीलता० ना० स्त्री० } श्यामता,
नीलत्व० ना० पु० } कालापन।

नीलपर्वत० ना० पु० विन्ध्यका एकभाग जो उड़ैसा के दक्षिण है, हरिद्वार के समीप तीर्थ विशेष।

नीलपुष्पी० ना० स्त्री० विष्णुक्रान्ता, अलसी।

नीलबड़ी० ना० स्त्री० नीलकी बड़ी।

नीलम० } ना० पु० मणि
नीलमणि० } विशेष।

नीलरङ्ग० ना० पु० नीलम।

नीललोहित० ना० पु० श्री महादेवजी।

नीलवर्ण० गु० श्यामरङ्ग, आकाशीरङ्ग।

नीला० गु० जोनीलरङ्गकाहै।

नीलाई० ना० स्त्री० श्यामता, नीलापन।

नीलाण्डक० ना० पु० नीलगाव, रोझ।

नीलाथोथा० ना० पु० तूतिया।

नीलाम० ना० पु० बिक्री, बिकाव।

नीलाम्बर॰ ना॰ पु॰ नीलवर्ण वस्त्र, और श्रीबलदेवजी।

नीलार्त्त॰ ना॰ पु॰ पियाबासा।

नीलोत्पल॰ ना॰ पु॰ नीलकमल।

नीलोपल॰ ना॰ पु॰ नीलम।

नीवा॰ ना॰ पु॰ सुनाहट, मन्दाई।

नीसारना॰ स॰ क्रि॰ निसारना, निकालना।

नीहार॰ ना॰ पु॰ शिशिर, ओस, कुहिरा।

नूत॰ / नूतन॰ / नूत्न॰ } गु॰ नया, नवीन।

नूधा॰ ना॰ पु॰ तमाकू विशेष।

नून॰ ना॰ पु॰ लोन।

नूनी॰ ना॰ स्त्री॰ छोटेबालक का लिङ्ग।

नूपुर॰ ना॰ पु॰ स्त्रियों पैरका गहना अर्था बिछुआ वा नेवर पायज़ेब।

नृग॰ ना॰ पु॰ राजा विशेष सको श्रीकृष्णचन्द्र सरट तनते उद्ध किया था।

नृत्य॰ ना॰ पु॰ नाच, नाचन

नृत्यक॰ / नृत्यकारी॰ } पु॰ गु॰ ना नेवाला।

नृदेव॰ / नृदेवता॰ / नृप॰ / नृपति॰ / नृपाल॰ } ना॰ पु॰ रा बादशाह।

नृशंसी॰ गु॰ दुष्ट, कुवासी।

नृसिंह॰ ना॰ पु॰ चौथा वि का अवतार, और श्रे यों का शिरोमणि।

ने० अव्य० सकर्मक क्रिया के भूतकाल में कर्त्ता के अन्त में यह चिह्न आता है. यथा, उसने मारा।

नेई० ना० स्त्री० नींव, दीवार की, भीति की जड़।

नेक० } गु० तनिक, अल्प, थोड़ा।
नेकु० }

नेग० ना० पु० विवाह में जो दान दिया जाता है, अथवा जो नेगी नाऊ पाते हैं वा जो पटवारी गांव में पाता है।

नेटा० ना० पु० मोटा, रेंटा।

नेठमी० गु० स्थिर, एकठामी, क़ायम।

नेतक० ना० पु० नड़कुल।

नेता० ना० पु० नौवकाटहल।

नेति० अव्य० नाइति, नहीं।

नेती० ना० स्त्री० रुई जो मथानी में बांधते हैं, सूत जो नाक में डालकर मुख में निकालकर नाक को स्वच्छ करते हैं, उसका नाम।

नेम० ना० पु० नियम, संयम, प्रण, शोच।

नेमी० गु० संयमी, नियमी, प्रणी।

नेरे० अव्य० निकट।

नेव० ना० स्त्री० भीति की जड़, अव्य० नाइव।

नेवतना० स० क्रि० न्योता देना, भोजन के लिये किसी को बुलाना।

नेवता० ना० पु० बुलाना, निमन्त्रण।

नेवताना० स० क्रि० न्योता-दिलाना।

नेवर० ना० पु० घोड़े के पांव का रोग विशेष, भूषणविशेष।

नेवल॰ } ना॰ पु॰ नकुल जन्तु
नेवला॰ } विशेष जो सांप का वैरी होता है।

नेह॰ ना॰ पु॰ स्नेह, प्रीति, तेल।

नेही॰ गु॰ स्नेही, ना॰ पु॰ मित्र।

नेत्र॰ ना॰ पु॰ नयन, आंख, पट, कस्तूरी, ध्यान।

नेत्रपुत्तिका॰ ना॰ स्त्री॰ आंख की पुतली।

नेत्रलोत॰ ना॰ पु॰ बम्बुआ।

नेत्राम्बु॰ ना॰ पु॰ आंसू।

नेत्रोपमा॰ ना॰ स्त्री॰ बादाम, आंखों की उपमा।

नैऋत्य॰ ना॰ पु॰ पश्चिम और दक्षिण का कोण, राक्षस।

नैकट्य॰ ना॰ पु॰ निकटता।

नैक॰ गु॰ थोड़ा, अल्प।

नैजाना॰ अ॰ क्रि॰ झुकना, निहुरना।

नैना॰ ना॰ पु॰ नैन, पगहा।

नैपाल॰ ना॰ पु॰ तांबा, ... विशेष, नीति ... प्रतिपाल्य।

नैपाली॰ ना॰ पु॰ मनशि... नैपालवासी।

नैपुण॰ पु॰ निपुण।

नैपुण्य॰ ना॰ पु॰ निपुणता ...

नैमित्तिक॰ गु॰ समयी, निमि... त्तका।

नैमित्तिकदान॰ ना॰ पु... समयप्राय देना।

नैया॰ ना॰ स्त्री॰ नावछो... खेवट, डांड़ी।

नैयायिक॰ ना॰ पु॰ न्यायशा... का ज्ञाता, तार्किक।

नैर्मल्य॰ ना॰ पु॰ निर्मलता ...

नैवेद्य॰ ना॰ पु॰ देवता के ... जन की सामग्री, ... अर्पण।

नैष्ठिक॰ गु॰ विश्वासी, निष्ठा...

नैहर॰ ना॰ पु॰ स्त्रीका मैके...

नो॰ अव्य॰ नहीं।

नोखा॰ } नोखो॰ } गु॰ अनूठा, अजायब।

नोच॰ ना॰ पु॰ बकोट, चुटकी।

नोचना॰ स॰ क्रि॰ बकोटना, चुटकीलेना।

नोन॰ ना॰ पु॰ लोन।

नोना॰ स॰ क्रि॰ दुहनेकेसमय गायके पैरबांधना, ना॰ पु॰ सीताफलविशेष।

नोनापानी॰ ना॰ पु॰ लव-णाम्बु, समुद्रकाजल।

नोनिया॰ ना॰ पु॰ लोनिया।

नोय॰ क्रि॰ दुहतेसमय गायके पांवबांधना।

नौका॰ ना॰ स्त्री॰ नाव।

नौखण्ड॰ ना॰ पु॰ पृथ्वी के नौखण्ड।

नौगरी॰ ना॰ स्त्री॰ नवगिरी।

नौछावर॰ ना॰ पु॰ निछावर।

नौढ़ना॰ अ॰ क्रि॰ झुकना, नि-ऊरना, आधीनहोना।

नौढ़ाना॰ स॰ क्रि॰ झुकाना, निऊराना।

नौतना॰ स॰ क्रि॰ नेवतना।

नौता॰ ना॰ पु॰ नेवता।

नौमासा॰ ना॰ पु॰ गर्भसेनवें मासका उत्सव।

नौमि॰ क्रि॰ नमस्कारकरताहूं।

नौमी॰ ना॰ स्त्री॰ नवमी, नवीं-तिथि।

नौरतन॰ ना॰ पु॰ नवरत्न।

नौल॰ ना॰ पु॰ नवल।

नौसादर॰ ना॰ पु॰ ओषधि विशेष।

न्यक्कार॰ ना॰ पु॰ कुत्सा।

न्यग्रोध॰ ना॰ पु॰ बर्गदकावृक्ष।

न्यस्त॰ गु॰ सोंपाभया, सोंपित।

न्याय॰ ना॰ पु॰ धर्म, विचार, तर्क, शास्त्रवि॰ फ़ैसला।

न्यायक०ना० पु० न्यायकरने-हारा।

न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्कशास्त्र।

न्यायी०ना० पु० न्यायक, न्यायशास्त्र का जाननेहारा, न्यायक।

न्यार०ना० पु० चारा।

न्यारा०गु० अलग, निराला, अनूठा।

न्यारिया०गु० सचेता, चौकस।

न्यून०गु० छोटा, घाट, हीन, कम।

न्यूनकोण०ना० पु० छोटा-कोना।

न्यूनता०ना० स्त्री० घटती,

न्यूनत्व० ना० पु० कमी।

न्यूनवय०गु० कमउमर।

न्यूनाधिक०न० पु० छोटाबड़ा।

न्यौतना०स० क्रि० नेवतना।

न्यौता०ना० पु० नेवता

न्यौता।ना०स० क्रि० नेव

न्यौला०ना० पु० जन्तु

न्हस.भड़ी०ना० स्त्री० नि

[प]

पकड़० ना० स्त्री०

गिरिफ

पकड़ना०स० क्रि० गो

रोकना, गहना, अ

करना, धरलाना

पकड़ाना०स० क्रि० ग्र

राना, सौंपना, गह

पकना०अ० क्रि० रंधना,

का होना, पीबियान

पकवाई०ना० स्त्री० पका

काम वा पैसा

पकवान०ना० पु० पाक

घी में पकायागया, य

पूरी, समोसा

मिठाई।

पकवाना०स० क्रि० रंधा

पका कराना, पुरवाना

न्यायक०ना० पु० न्यायकरने-
हारा।

न्यायशास्त्र० ना० पु० तर्क
शास्त्र।

न्यायी०ना० पु० न्यायक, न्याय
शास्त्र का जानने हारा,
न्यायज्ञ।

न्यार०ना० पु० चारा।

न्यारा०गु० अलग, निराला,
अनूठा।

न्यारिया०गु० सचेता, चोकस।

न्यून०गु० छोटा, घाट, हीन,
कम।

न्यूनकोण०ना० पु० छोटा-
कोना।

न्यूनता०ना० स्त्री०, घटती,

न्यूनत्व० ना० पु० कमी।

न्यूनवय०गु० कमउमर।

न्यूनाधिक०न०पु०छोटाबड़ा।

न्यौतना०स० क्रि० नेवतना।

न्यौता०ना० पु० नेवता।

न्यौता।ना०स०क्रि० नेवता

न्यौला०ना० पु० जन्तुविशे

न्यस्त.भड़ी०ना०स्त्री०निछो

[प]

पकड़० ना० स्त्री० ग्रह
गिरिफ्त।

पकड़ना०स० क्रि० गोह
रोकना, गहना, ग्रह
करना, धरलाना।

पकड़ाना०स० क्रि० ग्रहण
राना, सोंपना, गहा

पकना०अ० क्रि० रंधना,
का होना, पीसियाना

पकवाई०ना० स्त्री०पकाने
काम वा पैसा।

पकवान०ना० पु० पाक
घी में पकायागया, य
पूरी, समोसा आ
मिठाई।

पकवाना०स० क्रि० रंधा
पका कराना, पुरवान